॥ॐ॥ ॐनमःसिद्धेभ्यः॥ अथस्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षानामग्रंथकीदेशभाषाम
यवचनिकालिख्यते॥ दोहा॥ प्रथमप्रणमनजिनधर्मकरसनमतिचरनजिने
श॥ विघनहरनमंगलकरनभवतमडरनदिनेश॥१॥ बानीजिनमुखतैंखि
री॥मरीगणधिपकांन॥ अक्षरपदमयबिस्तरीकरैसकलकल्यांन॥२॥गुरु
गणधरगुणधरसकलश्रुतधरपरंपरश्रीर॥ व्रततपधरतनुमनमनबंदौजस
सिरमोर॥३॥ स्वामिकार्तिकेयोमुनीवारद्वादशनाय॥कीयोकथनबिस्ता
रकरिप्राकृतछंदबनाय॥४॥ ताकीटीकासंस्कृतकरीसुभरसुभचंद॥सुगम
देशभाषामईकरूंतामजयचंद॥५॥पढौपढावौभव्यजन॥यथाज्ञानमथ
रि॥करोनिर्जराकर्मकीवारबारसुविचारि॥६॥ऐसैंदेवशास्त्रगुरुकूंनमः
स्काररूपमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकरिस्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षानामग्रंथकी

देशभाषामयवचनिकाकरिएहै॥तहांसंस्कृतटीकाकेअनुसारलेमेरीबुद्धिसा
रूंसंक्षेपगाथाकाअर्थलिखिवेगा॥तामैंकहींचूकहोयतौविसेषबुद्धिवंना
संवारिलीज्यौ॥अब यामैंप्रथमहीपीठिकालिखिवेकूंप्रतिज्ञाकरैहैं॥तहांप्रथमहींमंगलाचरण
गाथाएकमैंकरि बहुरिगाथादोयमैंबारअनुप्रेक्षाकानामकहेहैं॥पीछैंइगणीस
गाथामैंअध्रुवानुप्रेक्षाकावर्णनकरियहैं॥असरणअनुप्रेक्षाकावर्णनगाथ
नवमैंकीया॥पीछैंसंसारअनुप्रेक्षाकावर्णनगाथाबयालीसमैंकीयाहै॥तहां
चारगतिकेदुःखकावर्णनसंसारकीविचित्रताकावर्णन॥पंचप्रकारपरावर्त्त
नरूपद्रव्यभवकावर्णनहैं॥बहुरियहैंएकत्वानुप्रेक्षाकावर्णनगाथाछहमैंकी
या॥पीछैंअन्यत्वानुप्रेक्षाकावर्णनगाथातीनमैंकीया॥पीछैंअशुचित्वानुप्रेक्षाक
वर्णनगाथासातमैंकीयाहै॥पीछैंनिर्जरानुप्रेक्षाकावर्णनगाथातेरामैंकीया

है॥पीछैं लोकानुप्रेक्षा का वर्णन गाथा एकसौ ग्रठसठि मैं है॥तहांय लोक षट द्रव्य नैं कासमह है॥सो ग्राकास द्रव्य ग्रनंतो है॥ताके मध्य जीव ग्रजीव द्रव्य है॥ताकूं लोक कहिए है॥सोपुरुषाकार चौदहराजू ऊंचा घनरूप क्षेत्रफल की एं तीनसै॥तीर यालीसराजू होय है॥ऐसैं कहि करि पीछैं कह्या जो महजीव ग्रजीव द्रव्यनितै भरया है॥तहांप्रथम जीव द्रव्य का वर्णन कीया है॥ताके ग्रधिकारवैं जीवसमास कहे है॥पीछैं पर्याप्ति का वर्णन है॥बहुरि तीनलोक में जो जो जीव जहां तहां व सै है तिनका वर्णन करि तिनकी संख्या कही है॥ताका ग्रल्पबहुत्व कह्या है॥व हुरि ग्रायु काय का परिमाण कह्या है॥ग्रैसे बहुरि ग्रन्य चादी के ई जीव का स्वरूप ग्रन्यप्रकार मानै है॥तिनिका युक्ति करि निराकरण कीया है॥बहुरि ग्रंतरात्मा बहिरात्मा परमात्मा का वर्णन करि कह्या है॥जो ग्रंतरंग तत्व तो जीव है॥ग्रर ग्रन्य

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

सर्व बाह्य तत्व है॥ऐसैं करि जीव का निरूपण समास कीया है॥पीछैं ग्रजीव क निरूपण है तहां पुद्गल द्रव्य धर्म द्रव्य ग्रधर्म द्रव्य ग्राकास द्रव्य काल द्रव्य का वर्णन कीया है॥बहुरि द्रव्यनि के परस्पर कारण कार्य भाव का निरूपण कीया है॥बहुरि कह्या है जो द्रव्य सर्व ही परिणामी द्रव्य पर्याय रूप है ते ग्रनेकांत स्वरूप है॥ग्रनेकां त बिना कार्य कारण भाव नाही बणै है॥कारण कार्य बिना का है का द्रव्य ऐसैं क ह्या है॥बहुरि द्रव्य पर्याय का स्वरूप करि पीछैं सर्व पदार्थ कूं जाननेंवाला प रोक्ष स्वरूप ज्ञान का वर्णन कीया है॥बहुरि ग्रनेकांत वस्तु का साधनेंवा ला ग्रंश तज्ञान है ताके भेद नय है ते वस्तु कूं ग्रनेक धर्म रूप साधै है तिनिका वर्ण न है॥बहुरि कह्या है जो प्रमाण नय नितैं वस्तु कूं साधि मोक्षमार्ग कूं साधै है॥ऐसे तत्व के सुननेंवाले जाननेंवाले विरले है॥विषयनि के वसीभूत होनेंवाले बहुत है॥

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

ग्रेसैंकहिकरिलोकभावनांकावर्णनसंपूर्णकीयाहै॥ बहुरिग्रागैंबोधिदुर्ल्लभा-
नुप्रेक्षाकावर्णनग्रष्टगाथामैंकीयाहै॥ तहांनिगोदतैंलेकरिजीवग्रनेक-
पर्य्यायसदापायवोकरैहै तेसर्वसुलभहै॥ ग्ररसम्यग्ज्ञानचारित्रस्वरूपमोक्ष
कामार्गकापावनांग्रतिदुर्ल्लभहैग्रैसैंकह्याहै॥ ग्रागैंधर्मानुप्रेक्षाकावर्णन
एकसोछत्तीसगाथामैंहै॥ तहांनिचैगाथामैंतौश्रावकधर्मकावर्णनहै॥ तामैं
छवीसगाथाताईतौंग्रविरतसम्यग्दृष्टीकावर्णनहै॥ पीछैदोयगाथामैंदर्शन- ३१
तिमांकाइकतालीसगाथामैंव्रतप्रतिमाकातिनमैंपांचग्रणुव्रततीनगुणव्र-
तचारसिक्षाव्रतग्रैसैंबारव्रतनिका॥ दोयगाथामैंसामायिकप्रतिमांका
इकगाथामैंप्रोषधप्रतिमांका॥ तीनगाथामैंसचित्तत्यागप्रतिमाकादोयगा-
थामैंरात्रिभोजनत्यागप्रतिमाकाएकगाथामैंब्रह्मचर्यप्रतिमांकाएकगाथामैं ३२

ग्रारंभत्यागप्रतिमाकादोयगाथामैंपरिग्रहत्यागप्रतिमांका॥ दोयगाथामैंग्रनु म
तित्यागप्रतिमांकादोयगाथामैंउद्दिष्टग्राहारत्यागप्रतिमाका॥ ग्रैसैंग्यारांप्रति-
मांकावर्णनहै॥ बहुरिसित्तयालीसगाथामैंमुनिकेधर्मकावर्णनहै॥ तहांरत्नत्रये
करियुक्तिमुनिहोय॥ उत्तमक्षमांग्रादिदसलक्षणधर्मकूंपालै॥ तिनदशलक्षण
धर्मकाजुदाजुदावर्णनहै॥ पीछैग्रहिंसाधर्मकीवडाईकावर्णनहै॥ फेरकह्याहैजो
धर्मसेवनांसोपुन्यफलकेग्रर्थिनसेवनांमोक्षकेग्रर्थिसेवनां॥ बहुरिसंकाग्रा-
दिग्रावडगुणहैसोधर्ममैंनांहीरामऐं॥ निसंकितग्रादिग्रावडग्रंगसहितधर्मसे
वनांताकाजुदाजुदा वर्णनहै॥ बहुरिधर्मकाफलमहात्मवर्णनकीयाहै॥ ग्रैसैं
धर्मानुप्रेक्षाकावर्णनसमाप्तकीयाहै॥ बहुरिग्रागैंधर्मानुप्रेक्षाकीचूलिकारू
पपन्द्रहप्रकारतपहैतिनकाजुदाजुदावर्णनहैताकीगाथाइक्यानवहै॥ बहुरि

तीनगाथामेंकर्त्तानेअपनाकर्त्तव्यप्रगटकरिग्रंथसमाप्तकीयाहै॥स
वैगाथाच्यारसैनिवैदेग्रंथसेंजाननां॥ अथानंतरस्वामिकार्तिकेयनामाग्राचा
र्यग्रपनेज्ञानवैराग्यकीदृढ्तिहोनांनवीनश्रोताजनकेज्ञानवैराग्यकाउपजनांतथा
विसुद्धताहोनेंतैंपापकर्मकीनिर्जरापुन्यकाउपजावनांसिष्टाचारकापालनां
निर्विघ्नतेशास्त्रकीपरिसमाप्तिहोनांइत्यादिग्रनेकफलचाहताग्रपनेइष्ट
देवकूंनमस्काररूपमंगलपूर्वकप्रतिज्ञाकागाथासूत्रकहैहै॥ तिजुवण
तिलयदेवं॥ वंदित्तातिजुग्रणिंदपरिपुजो॥ वोच्छंग्रणुपेहाउभवियजणाणंदजणणी
णीं॥ यादेमनाथा॥ तीनभुवनकातिलकवजूंतीनभुवनकेइंद्रनिकरिपूं
जग्रैसादेवहैताहिमैंवंदिकरिनभव्यजीवनिकूंग्रानंदकीउपजावनहारीजैग्रनु
प्रेक्षातिनहिकहूंगा॥ तहांदेवग्रैसीसामान्यसंज्ञाहैक्रीडाविजिगीर ४

षाद्युतिमोदगतिकांतिइत्यादिक्रियाकरैताकूंदेवकहिए॥ तहांसामान्यविधैंतौ्या
रिप्रकारकेदेववाकल्पितदेवनींगिनिएहैं॥तिनितैंन्यारादिखावनेंकैग्रर्थित्रिभुवन
तिलकंग्रैसाविशेषणकीयातातैंग्रन्यदेवकाव्यवछेदनयाबजूंतीनभुवनके॰
तिलकइंद्रनींहै॥तिनितैंन्यारादिखावनेंकैग्रर्थित्रिभुवनेंद्रपरिपूज्यंग्रैसाविशेषणकी
यायातैंतीनभुवनकेइंद्रनिकरिनींपूज्यनींकग्रैसादेवहैताहिनमस्कारकीया॥इ
हांग्रैसाजाननां॥ग्रैसादेवत्वपनांग्रर्हत्सिद्धाचार्यउपाध्यायसाधुइनिपंचपर
मेष्ठीविषैंहीसंभवैहै॥जातैंपरमस्वात्मजनितग्रानंदसहितक्रीडातथाकर्मकेजी
तनेरूपविजगीषातथास्वात्मजनितप्रकाशरूपद्युतितथास्वांस्वरूपकीस्तुतित
थास्वरूपविषैपरमप्रमोदतथालोकालोकग्रवभासज्ञानरूपगतितथाशुद्धस्वरूप
कीप्राप्तिरूपकांतिइत्यादिदेवतपनांकीउत्कृष्टक्रियासोसर्वीएकदेसैसर्वदेश

ताकूं मंगलकहिए तथा मंग कहिए ५

रूपइनिहीविषैपाइहै॥ तातैंसर्वोत्कृष्टदेवपनोइनिहीविषैंप्राया तातैंइनिकौंमंग
लरूपनमस्कारयुक्तहै॥ मंकहिएपापतांकूंगालै॥ सुखताकूंदेताहि म॰
गलकहिए॥ सोग्रंथसेदेवकूंनमस्कारतैंशुभपरिणंमहोहै॥ तातैंपापकानाशहोहै
शांतभावरूपसुखप्राप्तिहोहै॥ बहुरिग्रनुप्रेक्षाकासामान्यग्रर्थबारबारचितव
नकरिनोहै॥ तहांचितवनग्रनेकप्रकारहै॥ तथाताकेकरनेवालेग्रनेकहैं॥ तिनि
तैंन्यारेदिखावनेंकैग्रर्थिभव्यजनानंदजननीः॥ ग्रैसाद्वेषएहै॥ तातैंभव्यजी
वनिकैमोक्षहोनांनिकटग्रायाहोयतिनिकैग्रानंदकीउपजावनहारीग्रैसीग्र
नुप्रेक्षाकरूंगा॥ बहुरिइहां ग्रनुप्रेक्षाः ग्रैसाबहुवचनहै॥ सोग्रनुप्रेक्षासामान्य
चितवनएकएकप्रकारहै॥ तौऊग्रनेकप्रकारहै॥ तिनिकानाम तथाभावनां
कीप्रेरणंहोयगाथाविषैंकहैहै॥ गाथा॥ ग्रधुवग्रसरणमणिया॥ संसारामेगमण ५

मसुइत्तं॥ग्रासवसंवरणामणिज्जरलोयाणुपेरावं॥२॥ इयजाणिउणभावह॥इत्थयम
एकभावणाणिच्चं॥मणवयएकायसुही॥एहाउद्देसदोभणियं॥३॥ग्रर्थ॥ भोभव्यजी
वहोएतेग्रनुप्रेक्षानाममात्रजिनदेवकहेतिनिहिजाणिकरिमनवचनकायकरिशुद्ध
ग्रागैकहैंगेतिसप्रकारनिरंतरभावोतेकौंना॥ग्रधुवं॥ग्रसरणं॥संसार॥एकत्व॥ग्रन्यत्व॥
ग्रशुचित्व॥ग्रास्रव॥संवर॥निर्जरा॥लोक॥दुर्लभ॥धर्म॥ग्रैसैंबारह॥छ॥ भावार्थ॥एबा
रहभावनांकेनामकहे॥ इनिकाविशेषग्रर्थरूपकथनतौयथास्थानहोयहीगा॥बहु
रिनामएसार्थिकहैतिनिकाग्रर्थकहा॥ ग्रधुवतौग्रन्यतांकूंकहिए॥जामैंसरणंन॰
हीसोग्रसरण॥ग्रमणकूंसंसारकहिए॥जहांइसरानहीसोएकपणं॥जहांसर्वतैंउ
दासोग्रन्यपणं॥मलिनताकूंग्रशुचिपणंकहिए॥जोकर्मकाग्रावनांसोग्रास्रव॥क
र्मकाग्रावनांरोकैसोसंवर॥कर्मकाक्षरनांसोनिर्जरा॥जामैंछहद्रव्यपाइएसोलोक॥

त्रतिकविनपाइएसोकुर्त्वेन॥संसारतैंउधारकरैसोवस्तुस्वरूपादिकधर्म॥त्रैसैंइनि॥
केत्रर्थहैं॥ब॥त्रागैंपुद्गलानुप्रेक्षाकूंकहैंतहांप्रथमहीत्रध्रुवकासामान्यस्वरूप
कहैंहैं॥गाथा॥जोकिंचिवित्थमणंतस्सविणासोहवेइणियमेण॥परिणामसरूवेणविण
य॥किंपिविसासयंत्रत्थि॥ध॥नाम्नार्थ॥जोक्योंउपज्यानाकानियमकरिनाशहोहै॥प॥
रिणामस्वरूपकरिकछूभीशाश्वतानांहीहै॥ब॥भावार्थ॥सर्ववस्तुसामान्यविशे
षस्वरूपहै॥तहांसामान्यतौद्रव्यकूंकहिए॥विशेषगुणकूंपर्यायकूंकहिए॥सोद्रव्य
करिकैतौवस्तुनित्यहीहै॥बहुरिगुणभीनित्यहीहै॥बहुरिपर्यायहैसोअनित्यहै
॥ताकूंपरिणामभीकहिये॥सोयहप्राणीपर्यायबुद्धीहै॥सोपर्यायकूंउपजतावि
नशतादेखिहर्षविषादुकरैहै॥तथाताकूंनित्यराख्याचाहैहैसोइसअज्ञानकरि
व्याकुलहोयहै॥ताकूंइहभावनाचिंतवनयुक्तहै॥जोमैंद्रव्यकरिसाश्वताआत्म ६

द्रव्यहौं॥बहुरिउपजैविनसैहैसोपर्यायकास्वभावहै॥यामैंहर्षविषादकहाकारीहै॥
सोजीवपुद्गलकासंयोगजनितपर्यायहै॥धनधान्यादिकहैतेपुद्गलकेपरिणाम
निकेस्कंधपर्यायहैं॥सोइनिकैमिलनांबिछुरनांनियमकरित्रवस्तुपहै॥थिरकीबुद्धि
करैहैंसोयहमोहजनितभावहै॥सोवस्तुस्वरूपजानिहर्षविषादादिकरूपनहोना॥
॥ध॥त्रागैंइसहीकूंविशेषरूपकरिकहैहैं॥गाथा॥जेजंमरणेणसमंसंपज्जइजुव्व
णंजरासहियं॥लच्छीविणाससहिया॥इयसव्वंभंगुरंमुणह॥५॥त्रर्थ॥जोभव्य
होयकजन्महैसोतौमरणकरिसहितहै॥योवनहैसोजराकरिसहितउपजैहै॥लक्ष्मी
हैसोविनाशसहितउपजैहै॥त्रैसैंहीसर्ववस्तुतुमजानहु॥भावार्थ॥जेतीत्रवस्थाज
गतमैंहैतेतीसर्वप्रतिपक्षभावकूंलीयेहैं॥यहप्राणीजन्महोयतबतौताकूंथिरमानि
हर्षकरैहै॥मरणहोयतबगयामानिशोककरैहै॥त्रैसैंहीइष्टिकीप्राप्तिमैंहर्षत्रप्रा

प्राप्तिमेंविषाद॥ अनिष्टकीप्राप्तिमेंविषाद॥ अप्राप्तिमेंहर्षकरैहैं॥ सोयकुमोहकामहात्म्य
है॥ ज्ञानीनिकूंसमभावरूपरहनां॥ बकुरिविरोधकरैहैं॥ गा॰ अथिरंपरियणसयणं
पुत्तकलत्तंसुमित्तलावण्णं॥ गिहगोहणायसव्वंणवघणविंदेणसारिच्छं॥ ६॥ या
संसारविषैपरिवारबंधुवर्गपुत्रस्त्रीमित्रशरीरकीसुवस्तुगृहगोधनइत्यादि
सर्ववस्तुअथिरहैं॥ जैसैंनवीनमेघकाबादलतत्कालउदयहोयविलायजायतैसैहैं॥ भावार्थ॥ एसर्ववस्तुअथिरजानिहर्षविषादनकरनां॥ ५॥ आगैंयाहीकाविशे
षकरैहैं॥ गा॰ सुरधणुतडिचंचलाइंदियविसयासुमित्तबंधूणा॥ दिट्ठपणा
ठासव्वेतुरयगयरहवराईया॥ ७॥ भावार्थ॥ याजगतविषैइंद्रियनिकेविषयहैते
इंद्रधनुषतथाबीजलेकेचमत्कारवत्चंचलहैं॥ मस्तीदीसैपीछैतुरतविलयजाय
है॥ बकुरितैसेंहीभलेचाकरनिकेसमूहहैं॥ बकुरितैसेंहीभलेघोरेहस्तीरथहैं॥ जैसैंस ७

नेहीवस्तुहैं॥ भावार्थ॥ यकुप्राणीअरुइंद्रियनिकेविषयभलेचाकरघोडेहाथीरथादिक
कीप्राप्तिकरिसुखमानैंहैंसोयेकुसारेक्षणविनश्वरहैं॥ अविनाशीसुखकाउपायक
रनायोग्यहैं॥ आगैंबकुरिबंधुजनसंगमकैसाहैसोदृष्टांतद्वारकरिकहैहैं॥ गा॰
पंथेपहियजणाणंजहसंजोउहवेइखणमित्तं॥ बंधुजणाणंचसतहा॥ संजोउअधुवो
होई॥ ८॥ भावार्थ॥ जैसैंमार्गविषैपथिकजननिकासंजोगक्षणमात्रहै॥ तैसैंसंसारविषै
बंधुजननिकासंयोगअथिरहैं॥ भावार्थ॥ यकुप्राणीबकुतकुटंबपरिवारपावैतब
अभिमानकरिसुखमानैंहैं॥ यामत्तकरिनिजस्वरूपकूंभूलैहै॥ सोयकुबंधुवर्गकासं
योगकेमार्गपथिकजनसारिखाहैसोअहीविछुरैहैं॥ माविषैंसंतुएसोयस्वरूपकूं
नभूलना॥ आगैंदेहसंयोगकूंअथिरदिखावैहैं॥ गा॰ असुलालिनविदेहे॥ एहा
एसुयणेहिंविविहनरकेहिं॥ खणिमित्तेणविविहदुह॥ जलनसिंकामयउव॥ ९॥

DR BHAU DAJI MEMORIAL

॥अर्थ॥देखोयइदेहस्नानतथासुगंधवस्तुनिकरिसवास्याकुवानीतथाअनेकप्रकारभोज
नादिमस्तनिकरिपाल्याकूवानीजलकानस्याकाचाघडाकीनांईइएमात्रमेंबिघटिजाय
है॥ ॥ क्लेसेत्रारीरविषेभिरबुद्धिकरनांवडीभूलिहै॥अरोगैलक्ष्मीकाअथिरपनांदि
खावैहै॥ ॥ जासासयाएसबी॥चक्कहरा एंपिपुलचेताए॥सोकिंबंधेइरईइयरज
णाएंअपुणाए॥१७॥अर्थ॥जोलक्ष्मीःकहिएसंपदापुण्यकर्मकेउदयसहितजेचक्रवर्ति
तिनिकेनीत्रास्वतीनांहीतौअन्यजेपुण्यउदयरहितथाअल्पपुण्यसहितजेपुरुषहैंति
निसहितकैसैंरागबांधैअपितुनांहीबांधै॥भावार्थ॥यासंपदाकाअनित्यजानकरियकुछ
णीप्रीतिकरैहैंसोअज्ञानहैं॥ ॥आगैयाहीअर्थकौविशेषकरिकहैहैं॥गाथा॥कञ्चविए
रमइलबी॥कुलीएधीरेविपंडिएसूरेपुञ्जेधमिठेवियसुस्वसुयएमहासत्ते॥१८॥अर्थ॥य
कुलक्ष्मीसंपदाकुलवानधैर्यवांनपंडितसुभटपुण्यधर्मयुक्तानलारूपवांनंजलाजनांम ८

हापराक्रमीइत्यादिकारूपुरुषनिविषैंरूनांहीराचैहैं॥भावार्थ॥कोईजानैगाकिमैंवडाकुल
काहूंमेरैवडाकीसंपदाहैकहाजातीरहैहै॥तथामैंधीर्यवांनहूंकैसैंगमाऊंगा॥तथापंडि
तहौंविद्यावांनहौंमेरीकौंनतोलैहैकोईमोकूंदेहीगा॥तथामैंसुभटहूंकैसैंकाहूंकौंलैनैंद्यौंगा
तथामैंपूज्यनीकहौंमेरीकौंनलेहैं॥तथामैंधर्मात्मांहौंधर्मतैंतौअबैंहैछतीकहांजाय
है॥तथामैंवडारूपवांनहौंमेरारूपदेखिहीजगतप्रसन्नहैसंपदाकहांजायहै॥तथामैं
सुजनहौंपरकाउपकारीहौंमेरीकहांजायगी॥तथामैंवडापराक्रीहौंसंपदावढाऊंगाछ
तीकहांजानैद्यौंगा॥सोयहूसर्वविचारमिथ्याहै॥यहूसंपदादेखतैंदेखतैंविलयजायहै॥का
हूकीरावीरहतीनांही॥ ॥आगैंकहैहैंजोलक्ष्मीपाईएताकोकहाकरिएसोईकहियैहै॥
॥गाथा॥तामुंजिऊजलबी॥दीऊउवाएंदयायहाएए॥जाजलतरंगचपला॥दोतिण्ण
दिणणिचिंहइ॥१९॥अर्थ॥यहूलक्ष्मीजलतरंगसारिखीचंचलहै॥जेतैंदोयतीनदिनता

ईचेष्टाकरैहैं। विद्यमानहैं तैतैभोगवोदयाप्रधानहोयकरिदानद्यो॥ व॥ भावार्थ॥ कोऊ॰
कृपणवुद्धीयालक्ष्मीकूंसंचयकरिथिरराष्याचाहैतातैंउपदेशरहैं॥ जोयहुलक्ष्मीचंचल
हैरहनेकीनांहीजेतैंथोरेदिनविद्यमानहैंतेतैंप्रभुकीभक्तिनिमित्ततथापरोपकारनिमि
त्तदानकरिथिरचोहतथाभोगवो॥ इहाप्रश्नजोभोगनेंमैंतोपापनिपजेहैं॥ भोगनेंकाउपदे
शकाहेकूंदीया॥ ताकासमाधान॥ सांचिरागनेंमैंप्रथमतौममत्वबहुतहोयतथाको॰
ईकारणकरिबिनत्रैतघविषयबहुतहोय॥ त्रासक्तपणेंकरिआयतीष्टपरिणममलि
ननिरंतररहैहैं॥ बहुरिभोगनेंमैंपरिणंमउदाररहैमलिनभररहै॥ उदारहूतासूंभोग॰
सामग्रीविषयसंचैतामैंजगतजसकरैतहांभीमनउज्वलरहै॥ कोईकारणअन्यकरि॰
बिनसैतोबिषावेदेबहुतनहोय इत्यादिभोगनेंमैंभीगुणदोयहैं॥ कृपणकैतोकछुदीगुण
नांही॥ केवलमनकीमलिनताकूंहीकारणहै॥ बहुरिसर्वथात्यागहीकरैतौताकूंभो ए

गनेंकाउपदेसनांहीहै॥ व॥ अबागैंबहुरियाहीअर्थकूंदृढकरैहैं॥ गाथा॥ जोपुणलच्छीसंचदि
णयभुंजदिणेयदेदियत्तेसु॥ सोअप्पाणंवंचदि॥ मणुयत्तंणिप्फलंतस्स॥ १३॥ अर्थ॥
२ बहुरिजोपुरुषलक्ष्मीकूंसंचयकरैहैं॥ पात्रनिकैनिमित्तदेहै॥ न भोगवैहैं सो अपनैआत्मा
कूंविगोहैं॥ तापुरुषकामनुष्यपणांनिःफलहैव्यर्थहैं॥ भावार्थ॥ जापुरुषनैंलक्ष्मी॰
पायसंचयहीकीयादाननभोगमैंखरचीतानैंमनुष्यपणांपायकहाकीया निःफल
हीखोयाआपा विगोया॥ व॥ बहुरिकहैहैं॥ गाथा॥ जोसंचिऊणलच्छी॥ धरणियले॰
संवचेदिअइदूरे॥ सोपुरिसोतंलच्छी॥ पाहाणसमाणियंकुणदि॥ १४॥ अर्थ॥ जोपुरु
षअपनीलक्ष्मीकूंअतिऊंडीपृथ्वीतलमैंगाडैहै॥ सोपुरुषतालक्ष्मीकूंपाषाणस
मांनकरैहैं॥ व॥ भावार्थ॥ जैसैंकोवेलीकीनीममैंमाणिकधरिएहैं॥ तैसैंयानैंलक्ष्मीकूं
गाडीतबपाषाणतुल्यभई॥ व॥ बहुरिकहैहैं॥ गाथा॥ अणवरयंजोसंचदि॥ लच्छी॰

णयदेहिणेयमुंजेदि अप्पणियावियलच्छी परलच्छिसमाणियातस्स ॥५
जोपुरुषलक्ष्मीकूं निरंतरसंचयकरैहै॥नदानदेहै॥नभोगवैहै॥सोपुरुषअन्यनीलक्ष्मीकूंपरकीसमानकरैहै॥भावार्थ॥लक्ष्मीपायदानभोगनकरैहैताकेयफुलक्ष्मीपैसैलैकहैंअन्यपुरुषवालाहैकोईअन्यभोगवैगा॥अवकुरिकहैहैं॥गाथा॥लच्छी संसत्तमलोजोअप्पणंधरेदिकट्ठेणसोराइहाइयाएकजंसाहेदिमूढप्पा॥ १६॥अर्थ॥जोपुरुषलक्ष्मीविषेआसक्तचित्तहूवासंताअपनेआत्माकूंकष्ट सहतासंताहै॥सोमूढात्मारागजानिकातथाकुटंबकाकार्यसाधैहै॥अवभावार्थ॥ लक्ष्मीविषेअतिरक्तचित्तहोयकरियाकैनयजाननेंकैअर्थितथारक्षाकैअर्थिअनेककष्टसहैहैसोपुरुषकैकेवलकष्टहीफलहोयहै॥लक्ष्मीकैंतोकुटंबकैभोगवैगेकैराजसेगा॥अवकुरिकहैहैं॥गाथा॥जोवट्टारइलच्छीवकुविहवुधीहिंणेय १७

तिप्पेदिसचारंभंकुवदि॥रतिदिणंतंपचिंतवदि॥१७॥णयमुंजदिवेलाए॥चिंतावट्टो॥ णसुवदिरयणीए॥सोदासत्तंकुद्धीविमोहिदोलच्छितरुणीए॥१८॥अर्थ॥जोपुरुषअनेकप्रकारकलाचतुरहैबुद्धिकरिलक्ष्मीनैंवधावैहै॥तृप्तिनहोयहै॥याकेवास्तेअसिमसिकृष्यादिकसर्वारंभकरैहै॥रातिदिनयाहीकेआरंभकूंचिंतवैहै॥वेलाभोजनकरैहैं॥चिंतामेंतिष्ठाहूवारात्रिविषेंसोवैनाहीहै॥सोपुरुषस्त्रीलक्ष्मीरूपीस्त्री कामोसाहूवाताकाकिंकरएणंकरैहै॥भावार्थ॥जोस्त्रीकाकिंकरहोयताकूंलोकविषेंमोहल्याअसानिंद्यनावकहैहैं॥जोपुरुषनिरंतरलक्ष्मीहीनिमित्तप्रयासकरैहैसोलक्ष्मीरूपीस्त्रीकामोहल्याहै॥अन्यप्रागैंजोलक्ष्मीकूंधर्मकार्यमेंलगावैहैंतै 17
कीप्रसंसाकरैहै॥गाथा॥जोवट्टमाणलच्छीअप्पाणवरयंदेहिधम्मकज्जेसु सोपंडिए॥ हिंथुव्वदितस्सविछंसद्दलहवेलच्छी॥१९॥अर्थ॥जोपुरुषपुण्यकेउदयकरिबधतीअ

जोलक्ष्मीताहिनिरंतरधर्मकार्यविषेदेहै॥सोपुरुषपंडितनिकरिस्तुतिकरनेंयोग्यहै॥वहुरि
ताहीकोलक्ष्मीसफलहै॥नानार्थ॥लक्ष्मीपूजाप्रतिष्टायात्रापात्रदानपरकाउपकारइत्या
दिधर्मकार्यविषेंखरचीहुईहीसेफलहै॥पंडितजनभीताकीप्रसंसाकरेहैं॥वहुरिक
हैहै॥गाथा॥एवंजोजाणित्ता॥विहवियलोयाणधम्मजुताणं॥निरवेक्खोतंदेहि॥तस्स
स्सवेजीवयंसहलं॥२०॥अर्थ॥जोपुरुषफलैंकरया॥ताकोंजाणिधर्मयुक्तजेनिर्धनलो
कतिनिकेंप्रार्थितिउपकारकीवांछासंरहितहूवातिसलक्ष्मीकोंदेहै॥ताकाजी
वनांसफलहोयहैं॥नानार्थ॥अपनाप्रयोजनसाधनिकैंप्रार्थितौधनदेनेंवालेजगत
मेंवहुतहैं॥वहुरिजेप्रतिउपकारकीवांछारहितधर्मात्मांतथादुखीदरिद्रीपुरुषनि
कोंधनदेहैंप्रेसेविरलेहैं॥उनिकाजीतव्यसफलहै॥॥आगेंमोहकामहात्म्यदि
षावैहैं॥गाथा॥जलवुवुयसारिच्छं॥धणजुव्वणजीवियंपिपिक्खंता॥मणतिहोविणिच्चं॥ ११

॥अइचलिउमोहमाहप्पो॥२१॥अर्थ॥यहप्राणीधनयोवनजीवितनिकूंजलकेवुदवुदासा
रिखेतुरतविलयजातादेखितेसतेभीनित्यमानेहैंसोयहजीवअविरजहैं॥यहुमोहका
महात्मवडावलवानहैं॥॥नानार्थ॥वस्तुकास्वरूपअन्यथाजनावनेंचूकारूपमह
पीवनांज्वरादिकरोग॥नेत्रविकार॥अंधकारइत्यादिअनेकहैपरंतुयहमोहसवतैं व
लवानहै॥जोपरमतत्वविनाशीकवस्तुकूंदेखैंहैतोकनित्यहीमनावैहै॥तथामिथ्या
त्वकामक्रोधशोकइत्यादिकहैं॥तेसवमोहहीकेभेदहैएसवही॥वस्तुस्वरूपविषे
॥अन्यथाबुधिकरावैहै॥॥आगैंयाकथनकोंसंकोचैहैं॥गाथा॥चईऊणमहामोहं
विसयेसुणिऊणभंगुरेसचे॥निव्विसयंकुणहमणं॥जेणसुहंउत्तमं॥लहइ॥२२॥
॥अर्थ॥भोभव्यजीवहोतुमसमस्तविषयनिकूंविनासीकसुणिकरिमहामोहकूंछो
डिकरिअपनेमनकूंविषयनितैंरहितकरहु॥जातैंउत्तमसुखकूंपावो॥॥नानार्थ॥

पूर्वोक्तप्रकारसंसारदेहभोगलक्ष्मीइत्यादिकनअथिरदिषाएतिनिकूंसुनिकरिनअपनां
मनकूंविषयनितैंछुडायनअथिरभावैगासोभव्यजीवसिद्धपदकेसुषकूंपावैगा ॥
॥दोहा॥इमदृष्टितैंवस्तुथिर मर्यथथिरनिहारि उपजतविनसतदेषिकैं हरषवि
षादनिवारि ॥१॥ इसेसंक्षेपतानुप्रेक्षाकास्वरूपकह्या ॥ ॥आगेअसरणानुप्रेक्षाकास्व
रूपकहैंहै ॥ श्री ॥ ॥१॥ ॥गाथा॥तच्चनवेकिंसरणं जच्चसुरिंदाणदीसए विलउ हरिह
रबंभादीया॥कालेणयकवलियाजच्च ॥१॥ अर्थ॥जिससंसारविषैंदेवनिकेइंद्रनिका
विनासदेषिएहैं॥बडेरिजहांरक्षकिएनारायण हरकहिएरुद्रब्रह्माकहिएबि
धाताआदिसहकरिबडेबडेपरईधारकसर्वहीकालकरिग्रसे तिससंसारविषैं
कहासरणंहोयकिछूनीहोय॥ब॥नाथा॥सरणंताकूंकहिएजहांअपनीरक्षा
होय सोसंसारमैंजिनकासरणंविचारिएतेहीकालकूंपायभक्षहोयहैंतहांकहे २२

काअसरणं॥त॥आगैयाकाद्रष्टांतकहैहैं॥ब॥गाथा॥सीहस्सकमेपडिदं॥सारंगेजहएरस
हेकोवि॥तहमिच्चुणयगहिदं॥जीवंपिएरस्सहेकोवि॥२॥अर्थ॥जैसैंवनविषैंसिंहके
पगतलेमृगाजोप्राणीताहिकोऊछीरायनेंवालानोंही॥तैसैंयासंसारमैंकालक
रिग्रसाजोप्राणीताहिकोऊछीरावितसकैनांही॥ब॥नाथा॥उद्यानमैंसिंहमृगकूं
गतलेंदेतहांकोनरावै॥तैसैंहीयाकालकाद्रष्टांतजाननां॥ब॥आगैयाही अर्थकों
दृढकरैहैं॥गाथा॥जयदेवोवियरक्खइमंतोतंतोयखेत्तपालोय॥मियमाणंपिमणु
स्सं॥तोमणुयाअरक्खाहोंति॥३॥अर्थ॥जोमरणकोंप्राप्तहोतैंमनुष्यकूंकोईदेव
मंत्रतंत्रक्षेत्रपालउपलक्षणतैंलोकजिनकूंरक्षकमानैंसोसर्वहीरावनेंवालेदोय
तोमनुष्यअरक्षमहोयकोईनीमरैनांही॥ब॥नाथा॥लोकजीवनेंकेनिमित्तदेवपूजा
मंत्रतंत्रऔषधिआदिअनेकउपायकरैहैं परंतुनिश्चयविचारिएतोकोईजीव

DR BHAU DAJI

तादीसेनोही॥ वृथामोहकरिविकल्पउपजावेहै॥ व॥ आगैंयादीअर्थकोंवक्रकरिदृढकरैहैं॥
॥गा॥ अइबलिउविरउद्दो मरणविहीणोणदीसएकोवि॥ किंजंतोविसया॥ रकपय १
रेहिंविविहेहिं॥ अ॥ अर्थ॥ यासंसारविषैंअतिबलवान॥ तथाअतिरौद्रअनेक॥ वक्र
रिअनेकरक्षाकेप्रकारगढकोटसुभटसस्त्रआदिउपायकीजिए॥ मरंतुमरणतैंको॥
ऊबचैनोही॥ सर्वउपायविफलजायहैं॥ व॥ आगैंजोसरणकल्पेताकूंअज्ञानता
तावैहैं॥ गा॥ एवंपेछंतोविकुगहभूइपिसाइजोइणीजरकंसरणंमण्णंमूढो॥
सुगढमिछत्तभावादो॥ अ॥ अर्थ॥ औसैंपूर्वोक्तप्रकारअसरणअक्षत्तदेवतानीमू
ढजनतीव्रमिथ्यात्वभावतैंसूर्यादिग्रहभूतव्यंतरपिशाचयोगिनीचेंडिकादिकयक्ष १ ३२५
णिभद्रादिकक्षेत्रपालमसाणादिकनिहिंसरणंमानैंहै॥ तावार्थ॥ यकुप्राणीउत्पन्नजाएहै जोमरणतैंको॥
ऊनीराखणहारानाही॥ तौऊग्रहादिककासैंरक्षाकल्पैहै॥ सोयकुतीव्रमिथ्यात्वकउद्र १३

= यकामहात्म्यहैं॥ व॥ आगैंमरणहैसोआयुकेक्षयतैंहैयहकहैहैं॥ गा॥ आउक्कएणं॥
मरणं॥ आउंदाउंसक्कदेकोवि॥ तम्हादेविंदोवियमरणउन्नस्कदेकोवि॥ ई॥ अर्थ॥ जा
तैंआयुकर्मकेक्षयतैंमरणहोहैं॥ वक्रिआयुकर्मकोईकूंकोईदेनेंकूंसमर्थनाही॥
तातैंदेवनिकाइंद्रभीमरणतैंनहिराखिसकैहैं॥ तावार्थ॥ मरणतौआयुपूरणभएहोय॥
वक्रिआयुकोईकाहूकूंदेनेंसमर्थनाही॥ तबरक्षाकरनेंवाला कौनयहविचारो॥ व॥ आगैंया
हीअर्थकोंदृढकरैहैं॥ गा॥ अप्पाणंपिचवंतंजइसक्कदिरक्किउसुरिंदो॥ वित्तोकिंछंड
दिसगंसचुत्तमभोगसंयुत्तं॥ अ॥ अर्थ॥ जोदेवनिकाइंद्रहूआपनेंकूंच्यवताराखनेंकूंसम्
र्थहोतातौसर्वउत्तमभोगनिकरिसंयुक्तजोस्वर्गकावासताकूंकाहेकूंछोडता॥ तावार्थ
॥ सर्वभोगनिकानिवासअपनेंवसकीनछोडे॥ व॥ आगैंपरमार्थसैंरणदिखावैहै॥ गा॥
॥देसणणाणचरित्तं॥ सरणंसेवेहिंपरमसद्धाए॥ अण्णंकिंपिणसरणं॥ संसारेसंसरंताणं॥

पमप्रर्थ॥ हे भव्यतत्परमश्रद्धाकरिदर्शनज्ञानचारित्रस्वरूपशरणसेवनकरि॥यासं
सारविषैंभ्रमतेजीवनिकूंभ्रमणकिछूनीसरणनांहीहै॥भावार्थ॥सम्यक्दर्शनज्ञानचा
रित्रआपनांस्वरूपहै॥सोएहीपरमारथरूपशरणहै॥अन्यसर्वअशरणहै॥निश्च
यश्रद्धानकरियइनहीशरणंपकडोश्रेसाउपदेसहै॥आगैइसहीकूंदृढकरैहै॥
गाथा॥अप्पाणंपियसरणं॥खमादिभावेहिंपरिणदंहोदि॥तीव्वकसायाविट्ठो॥अ
प्पाणंहणदिअप्पेण॥ए॥प्रर्थ॥जोआपकूंक्षमादिदसलक्षणरूपपरिणतकरैसो
सरणंहै॥बहुरिजोतीव्रकषाययुक्तहोयहैसोआपकरिआपकूंहणैहै॥भावार्थ॥प
रमारथविचारिएतोआपकूंआपहीराखनेवालाहैं॥तथाआपहीघातनेवालाहै॥जो
धार्किरूपपरिणमकरैहैतबशुद्धचैतन्यकाघातहोयहै॥बहुरिक्षमादिपरिणम
करैहैतबआपकीरक्षाहै॥इहिंभावनितैंजन्ममरणतैंरहितहोयअविनाशीप १५

दकंप्राप्तहोयहै॥३१॥दोहा॥बरक्तस्वभावविचारतैं॥सरणआपकूंआप॥अबहारैं
पणपरमगुरु॥अवतारसकलसंताप॥२॥ऐसैंअसरणअनुप्रेक्षाकानिरूपणकीया
॥ब॥आगैंसंसारानुप्रेक्षाकोंकहैहै॥तहांप्रथमहीदोयगाथानिकरिसंसारकासा
मान्यस्वरूपकहैहैं॥गाथा॥एकंचयदिसरीरं॥अण्णंगिण्हेदिएवणवीणो॥पुणपु
णअण्णअण्णं॥एहदिमुंचेदिबहुवारं॥१॥एवंजेसंसरणं॥णाणादेहेसुहोदिजीवस्स
॥सोसंसारोभण्णदि॥मिच्छकसायेहिंजुत्तस्स॥२॥प्रर्थ॥मिथ्यात्वकहिएसर्वथाए
कांतरूपवस्तुकूंश्रद्धनां॥बहुरिकषायकहिएक्रोधमानमायालोभयनिकरियुक्त
यहुजीवताकेजोअनेकदेहविषैंसंसरणकहिएभ्रमणहोयसोसंसारकहिए
॥सोकैसैंसोईकहिएहैं॥एकशरीरकूंछोडैअन्यग्रहणकरै॥फेरिनवाग्रहणकरि
फेरिताकूंछोडिअन्यग्रहणकरै॥ऐसैंबहुतबारग्रहणकीयाकरैसोहीसंसारहै

॥ इ ॥ नावार्थ ॥ शरीरतैं रहित अशरीरकी आसिद्धोवोकरैसोसंसारहै ॥ आगैं ऐसेसं
सारविषैंसंक्षेपकरि नरकगतिहैं ॥ तहां अनेकप्रकारदुःखहैं तहां प्रथमही नर
कगतिविषैंदुखहैं ताकूं छहगाथानिकरिकैहैं ॥ ॥ पढमे पाढवियेएनरएजायदि
जीवोसहेदिवक्कुडुरुकं ॥ पेचपयारंविविहं ॥ पएणोचमंअणुरुवकेहिं ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ यक
जीवपापकेउदयकरिनरकविषैंउपजैहैं ॥ तहां अनेकजातिकेपंचप्रकारकरिवकु
तउपमातैंरहितऐसेदुखसहैहैं ॥ भावार्थ ॥ जोजीवनिकीहिंसाकरैहैं झूठबोलैहैं
परधनहरैहैं परनारितकैहैं बहुतआरंभपरिग्रहविषैंआसक्तहोयहै बहुतक्रो
धीप्रचुरमानीअतिकपटीअतिकठोरमायीपापीचुगलरूपएदेवशास्त्रगुरु
कानिंदकअधर्मदुर्बुधी क्रतघ्नी बहुसोकदुःखकरनेहीकीप्रकृतिजाकीऐसा
होयसोजीवमरिकरिनरकविषैंउपजैहै अनेकप्रकारदुःखकूंसहैहै ॥ आगैंकहै २५

जेपंचप्रकारतिनिकूंकहैहै ॥ ॥ असुरोदीरियदुरकं सारीरमाणसंतहाविविहं
खित्तुब्भवंचतिव्वं अण्णुण्णकयंचपंचविहं ॥ ४ ॥ असुरकुमारदेवनिकरिउप
जायादुख ॥ बहुरिशरीरहीकरिनिपज्या बहुरिमनकरिभया तथा अनेकप्र
कारक्षेत्रसूंउपज्या बहुरिपरस्परकीयाचैसैंपंचप्रकारदुःखहै ॥ ॥ इति ॥ तीसरे
नरकताईतौअसुरकुमारदेवकृतदुखमात्रजानैहै सोनारकीनिकोंदेखिमर
स्मरणदुखदेवैहैं अनेकप्रकारदुखदीकरैहै बहुरिनारकीनिकाशरीरहीयामके
उदयतैस्वयमेवअनेकरोगनिसहितक्षुधातृषाबधबंधादुखमईहोयहैं बहुरिवि
भंगज्ञानकेमहाक्रूरदुःखरूपहीहोयहैं बहुरिनरकक्षेत्रमहाअशुभदुर्ग
धअनेकउपद्रवसहितहै बहुरिपरस्परवैरकेसंस्कारतैक्षेत्रजभवनमा
रनताडनकुंभीपाकआदिकरैहैं तहां काहूदुखउपमारहितहै ॥ आगैंआहो

दुःखका विशेषकरे है ॥ गाथा ॥ छिज्जइ तिलतिलमित्तो भिज्जइ तिलतिलतरसय
लो वज्जगीए कछिज्जइ ॥ एहि एपूयकुंडम्मि ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ जहां तिल तिलमात्र
छेदिए हैं ॥ वज्रसिकलकरि ए मे रवइतिनि कूं नीतिल तिलमात्र नेदिए हैं ॥ वज्र
रिवज्राग्नि विषैपचाइए हैं ॥ वज्रसिंधिके कुंडविषैषेपिए हैं ॥ ॥ वज्रसिकरि हैं ॥
गाथा ॥ इच्चेवमाइदुरवं ॥ जेहुरकंसदहिए यसमयम्हि ॥ तेसयलंवण्णेदुं ॥ सक्क
देसहस्सजीहोपि ॥ हे ॥ ॥ अर्थ ॥ इतिकहिए ऐसे एवमादिकहिए पूर्वगाथा मैंकहे
हैं तिनि कूंआदिदेकरि जेदुरवनरकविषैए ककालजीवसे हैं ॥ तिनि कूंकहैंने
कूंजाकेंहजारजीभ्रहोय सोभी समर्थनहोहै ॥ भावार्थ यामैंनरकके दुःखनिका वच
नअगोचरपनांकह्या है ॥ वज्रसिकरि हैं ॥ नरककाक्षेत्रतथा नारकीनिकापरिणाम
दुरवमई हीहै ॥ गाथा ॥ सच्चंपिहोदिखरए ॥ रवेत्तस्सकावेण दुरकंदेत्रसुहं ॥ कुविः १६

दाविसवकाले ॥ त्रलुणंहोतिणेरइमा ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ नरकविषैक्षेत्रस्वभावकरिसर्दी
हीकारणदुरवदायकहै ॥ त्रसुनहैं ॥ वज्रसिनारकीजीवसदाकालपरस्परक्रोधरू
पहै ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ क्षेत्रतौस्वभावकरिदुरवरूपहैही ॥ वज्रसिनारकीपरस्परक्रोधीरूवा
संतावरवाकूंमारेवरवाकूंमारेहै ॥ ऐसेनिरंतरदुःखीहीरहैहैं ॥ ८ ॥ वज्रसिकहैहैं ॥ गाथ
त्रणनवजोसुयणो ॥ सोवियणरएरइकुविदो ॥ एवंतिव्वविवागं ॥ वज्रकालंवि
सहदेदुरकं ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ पूर्वभवविषैजोस्वजनकुटंबकाथासोभी यानरकविषैक्रोधी
रूवाघातकरैहै ॥ मारकरतीहैविपाकजाकाऐसादुःखवज्रतकालपर्यंतनारक १
सहैहैं ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ ऐसे दुःखसागरपर्यंतसहैहै ॥ त्रायुपूरीकोएविनांतहोतैनिक
सनांनहोहै ॥ ८ ॥ त्रागैतिर्यंचगतिसंबंधीदुःखनिकूंसाढाचारगाथानिकरिक
हैहै ॥ गाथा ॥ तत्तोएगेसरिऊए ॥ जायदितिरिएसुवज्रवियप्पे ॥ सुतछविपावदिदुक

गन्नवियछेयणादीयं॥ए॥ अर्थ॥ तिसनरकतैंनीसरिकरितेनेकनेदनिनजेतिर्यंचति
निविषैंउपजैहैं॥तहांनीगर्भविषैंदुःखपावैहैं॥अरुसैंहूतैंसन्मूछैंनहोयछेदना
दिकादुःखपावैहैं॥वहुरिकहैहैं॥गाथा॥तिरिएहिंरवजमाणो॥दुहमएकसोहिंह॥
ममाणो॥विसइवसविसंतहो॥नयदुरकंविसहेनी॥मं॥२०॥अर्थ॥तिसतिर्यंचगतिमि
लैंजीवसिंहव्याघ्रादिककरिनभ्याहूवातथादुष्टमनुष्यम्लेछ्यादिकधीवरादिककर
रिमारयोहूवासर्वजायगांत्रासयुक्तहूवारोद्रध्यानकरदुखकूंचिंतवकरिसहैहैं॥वहु
रिकहैहैं॥गाथा॥अन्नुछंरवजंतातिरियापावंतिदारुणंदुरकं॥मायाविजवनरकदि
॥न्यलोकोतछरकेहि॥२१॥अर्थ॥जिसतिर्यंचगतिविषैंजीवपरस्परमायाहूवाउत्क
ष्टदुःखपावैहैं॥अरुवाकूंमायवरुवाकूंरवायजहांजिसकेगर्भमैंउपजाऐसीमां
तानीपुत्रकूंभक्षजायतौअन्यकौनराखै॥वहुरिकहैहैं॥गाथा॥तिचतिसाएतिसि ४७

दो॥तिव्वविभुरकावचुरिकदोसंतो॥तीव्वंपावदिदुरकं॥उयरुयासेहिंडम्मंतो॥२२॥
अर्थ॥तिसतिर्यंचगतिविषैंजीवतीव्रदुःखकरितिसाया॥तीव्रक्षुधाकरिमूषासंत
उदराग्निकरिजलतातीव्रदुःखपावैहैं॥आगेंइसकूंसंकोचैहैं॥गाथा॥एवंचउप्पयार
दुरकंविसहेहितिरियजोणीसु॥अर्थ॥ऐसैंपूर्वोक्तप्रकारतिर्यंचयोनिविषैंजीवअने
कप्रकारदुःखकूंपावैहैंतासिसहैहैं॥वहुरिआगेंमनुष्यगतिविषैंदुखहैतिनिकूंसाद
वारसोंगाथानिकरिकहैहैं॥गाथा॥तत्तोणीसरिऊणं॥लहिऊणपुलोएलमोदोहि॥२३॥
अर्थ॥तिसतिर्यंचगतितैंनीसरिमनुष्यहोयतोकेसाहोयलब्धअपर्याप्तजहांप
र्याप्तपूरेनपावै॥वहुरिआगेंगर्भविषैंउपजैतातीअवस्थाकहैहैं॥गाथा॥अहगब्भे
वियजायदि॥तब्भणिविडीकयंगपच्चंगो॥छिन्नहिंतिव्वदुरकं॥एगमणाएविजो
णीदो॥२४॥अर्थ॥अथवागर्भविषैंनीउपजैतौतहांभेलेसकुचिरहैहैंदुरूपादिहि

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

नरगतथा नरगानुपूर्व्यादि प्रत्येक जाके नरेसा रूप वास ते ताकुं स्वभावहीं। वज्र ऋषभनाराचसंहनन तीव्र दुःख कूं सहै हैं। वा वज्र किले सहित हाड हैं। गाथा। वालो विपियरचत्तो पर उच्छिट्ठेण वट्टदे दुट्ठिदो। एवं जायए सीले। गमे दि कालं महादुक्कं। २५। गर्भतैं सरे यो छै बालक अवस्था मैंहीं मातापिता मरि जाय तब पराई स्त्री ठिकरि वभासे ता मा गणेंहीं का स्वभाव जाका कैसे सुरवी रूप वास ता का लगमावै है। वज्र ऋषभ हैं ऐसा पाप का फल है। गाथा। यावेण जणेण ए सो दुक्कमवसे ए जायदे सहो। पुणरविकरे दि यावे ए यपुणं को वि ण भुंजे दि। २६। अर्थ। यकुले कजन्म सर्वहीपा पकेउदयतैं नरेसा ता वेदनी यनीचगोत्र असुभनाम अशायुदुःकर्म ताके वसतैं नरेसे दुःख सहै हैं। तो कुफेर पा पहीं करै हैं। पूजादान व्रततपध्यानादि लक्षण पुण्य कूं नाहीं उपजावै हैं। यकुवरा ऋग्पानहैं। गाथा। विरलो ऋजुदि पुणो सम्मादिट्ठी वए हिंसजुत्तो। उवसमभावे २७

सहियो णिंदणगरिहादिसंजुत्तो। २७। सम्यग्दृष्टिकहिए यथार्थश्रद्धान वज्र रिषभनाराचकेव्रतनिकरिसहित तथा उपशमभावनाकहिए मंदकषायरूपपरि णाम तथा निंदनकहिए आपनेदोषनप्रगटी यादिकरिसयुक्त नरेसा जीवपुण्य प्रकृतिनिकूं उपजावै है। सो नरेसा विरला होहैं। आगैं कहैहैं पुण्यकेभोगइष्ट वियोगदिखिएहैं। पुण्यउदयसविदीसइ दुट्ठविउयं ण लिट्ठसंजोयं। ण रहोविसादिमाणो य रज्जिउल्लुकयणाये। २८। पुण्यउदयसहित पुरुषकेभोगइष्टवियोग अनिष्टसंयोग देखिएहैं। देखो नरेसनि मानसहित नरतचक्रवर्तिनी छोटा भाई जो बाहुबली ताके हास्य। भावार्थ को ऊ जानेगा कि जो जिनकेव डापुण्यउदय है ति निकूं तौसुखै हैं। सो संसार मैं तौसुख काहू कूं नीनाहीं। भरत चक्रवर्तिसारिखो नरेश मानादिकरि दुखी हीभए तो और निकी कहा वास। १

आगेया हैं अर्थकौं दृढ करैहैं ॥ गाथा सयलि कुविसय जोउ वरु पुत्तस्स विएसवहरो
दि तेपुणु विनकस्सवि सव्वजे णिच्चिंदलहहि १९ अर्थ यासंसारमें समस्तजे पदा
र्थ तेई इए विषयकहिए जोगपवस्तु तिनि कायोगवंतपुण्यवानकूं नीसंदेहपणैं
नांही मिलैहैं अरे सापुण्य ही नांही हैं जाकरि सर्वहू मनोवांछित मिलै ॥ नावार्थ न
डेपुण्यवानकेभी वांछितवस्तुमेंकछुकमतोही रहै सर्वमनोरथतोकाहूकेपूरे
नांही सर्वसुखी कहितें होय ॥ आगेंकहैं हैं सर्वसामग्रीपायवोहू दुर्लभ तैहै ता
काविसेषकहैहैं ॥ गाथा कस्सविएछिकलत्तं अरुवकलत्तंएपुत्तसयत्तं अरह
तेसिंसंपत्तीतहविस्सरोवरुवेदेहो २० अर्थ कोईमनुष्यतोस्त्रीनाहीहै कोई
कैजेस्त्री हैतौपुत्रकी प्राप्तिनांही है कोईकैपुत्रकी प्राप्तिहैतौशरीरसोगसहित
हैं ॥ गाथा अरएरोउदेहो तोधणधण्णाएणेयसंपत्ती अरहधणधण्णहो दि १९

ऊ तोमरणंऊतिदुछेई २१ अर्थ जोकोईकैनिरोगदेहभीहोयतोधनधान्यकीप्रा
प्तिनांही है जोधनधान्यभीहोयतोसीघ्रमरणहोजायहैं ॥ गाथा कस्सविदुछकल
त्रं कस्सविदुव्वसणवसणिउंपुत्तो कस्सविपुत्तसिमवेधरू कस्सविदुट्ठोवि
दुच्चरिया २२ अर्थ यामनुष्यभवमेंकोईकैतोस्त्रीदुराचारिणीहै कोईकैपुत्र
वारीहैआदिकुविसनरतहै कोईकैसत्रुसमानकलही भाईहै कोईकैपुत्रीदु
राचारिणीहै ॥ गाथा कस्सविमरहिलाविएसदेहिदु
कस्सविअग्गिपलित्तं गिहकुटुंबंचडइक्केइ २३ अर्थ कोईकैतोभलीपुत्रभारि
जायहैं कोईकैइस्त्रीमरिजायहैं कोईकैघरकुटंबसबैही अग्निकरिबलि
जायहै ॥ ता ॥ गाथा एवंमाणुयगदीए णाणादुरवाडविसहमाणेविएविध
मोकुणदिनयं अरारंजेणेयपरिचयइ २४ ॥ अर्थ ऐसैपूर्वोक्तप्रकारमनुष्यगति

विषैनानाप्रकारदुखनिसहतानीयदुजीवधर्मविषैबुद्धिनाहीकरैहैं।पापारंभकूंनाहीछोडैहैं।बहुरिकहैहैं॥गाथा॥सयलोविहोदिधलोधएहीएो
तस्यईसरोहोदिरायाविहोदिनिच्चोनिच्चोवियहोदिएरएगहो॥२५॥अर्थ
धनसहितजोनिर्धनहोयहैंतैसेंहीनिर्धनहोयसोईस्वरहोयजायहैं।बहुरि
राजाहोयसोतौकिंकरहोजायहैं।बहुरिकिंकरहोयसोराजाहोजायहैं॥गाथा॥स
तूविहोदिमित्तो।मित्तोवियजायदेतकालम्हि।कम्मविवायवसादो।एसोसंसार
सब्भावो॥२६॥अर्थ।कर्मकेउदयकेवसतेंवैरीहोयसोतौमित्रहोयजायहैं।बहु
रिमित्रहैसोवैरीहोयजायहैं।यहुसंसारकास्वभावहैं॥भावार्थ।पुण्यकर्मके
उदयतैंवैरीभीमित्रहोयजायहैं।अरपापकर्मकेउदयतैंमित्रभीसुबुद्धिय
जाय।संसारमेंकर्महीबलवानहैं॥ठ॥आगैदेवगतिकास्वरूपकहैहैं॥गाथा॥ २०

अहवाविहवहिदेवो॥तस्सयजायेदिमाणसंदुक्कंदुक्कुएमहड्ढीएदेवाए
रिद्धिसंपत्ती॥२७॥अर्थ।अथवाबडाकष्टकरिदेवपर्यायपावैतौताकेभीबडेरि य
द्धिकेधारीदेवनिकीरिद्धिसंपदादेखिकरिमानसीदुःखपजैहैं॥गाथा॥इ
वियोगदुक्कंहोदिमरुढीएविसयतण्हादो॥विसयविसदोसदुक्कंजेसिंतेसिं
कुदोतित्ति॥२८॥अर्थ।महर्धिकदेवनिकेभीइष्टरिद्धिदेवांगनादिकका वियोग
होयहैंताकेसंबंधीदुःखहोयहैं।जिनकेविषयनिकेआधीनसुखहैं।तिनिके
काहेकूंतृप्तिहोय।इच्छावंधतीहीरहै।आगैंहीकरिदुःखतैंभीमानसीदुःख
बडाहैसोआगैंसेंकहैहैं॥गाथा॥सारीरियदुक्कादोमाणसदुक्कंदुवेइत्तउय
रंमाणसदुक्कछुद्दस्सहि।विसयाविहडावडाहुंति॥२९॥अर्थ।कोईजीवकै
शरीरसंबंधीदुःखबडाहोमानसीकदुःखकछुबहैतासूंकहैहैं।शरीरिकदुः

खतैमानसीकदुःखकेउपजावनदूरिदीसैं॥भावार्थ॥चिंतामनकीहोयतबसर्वेही सामग्री
दुःखरूपभासै॥ ८॥ गाथा॥ ऐवाएंपियसुरकं॥मणदूरविसएहिंकीरजहिंहिविसयवसंगो
सुरकं दुरकसविकारएंतेपि ३७॥ अर्थ॥ प्रगटपएंजोदेवनिकेमनोहरविषयवि
करिसुखविचारिएतौसुखनांहीहै॥जोविषयनिकेआधीनसुखहैसोदुखहीकाक 7
रणहैं॥भावार्थ॥अन्यविभूतितैंसुखमानिएसोभ्रममहै॥जोवस्तुसुखकेकारणमानि
एहैसोहीवस्तुकालांतरमेंदुःखकूंकारणहोयहैं॥ऐसैंविचारकिएकछूभीसुखनांही
ऐसाकहैहैं॥गाथा॥एवंसुदुरूसारे॥संसारेडरकसायरेघोरे॥किंकछविन्नविसुहं
विसारमाएंसुणिछयदो॥३२॥अर्थ॥ऐसैंसर्वप्रकारअसारजोयदुःखकासा
गरनयानकसंसारतावियैंनिश्चयएकोविचारकीजिएतोकिछूकदुसुखहैअपि
तुनांहीहैं॥भावार्थ॥चारिगतिरूपसंसारहैतहांचारिहीगतिदुःखरूपहैतबसुखकहां २२

नागैंकहैहैंजोयरूजीवपर्यायवुहीहै॥जिसयोनिमेंउपजेतहांहीसुखमानिलेहै॥॥
॥ छकियकम्मवसादो॥रायावियनसुइकीडउहोदि॥तत्थेवयकुणइरई॥पेक्खू
मोरस्समारुप्पं॥३०॥अर्थ॥मोआणीहोतुमदेमोमोहकामरातम्पयापकर्मकेवसतैंरा
जाभीमरिकरिविष्टाकाकीडाजायउपजैहै॥सोतहांहीरतिमानैंहैं॥क्रीडाकरैहै॥
नागैंकहैहैंयाप्राणीकेएकहीभवविषैंअनेकसंबंधहोयहै॥गाथा॥पुत्तोपिमाउआई॥
सोवियजाउविदेवरोहोदि॥मायाहोदिसवित्ती॥जाएएवियहोइनत्तारो॥३३॥एयम्मि
भवेएवइसंबंधा॥होंतिएवजीवस्सअण्णभवकिंनएईजीवाएंधम्मरहिदाएं॥३४॥
॥अर्थ॥एकजीवकेएकभवविषैंएतासंबंधहोयहैं॥तौधर्मरहितजीवनिकेअनेकभववि
षैंकहाकहिए॥तेसंबंधकौनकौन॥पूत्रतौभाईहूवा॥बडाभिसोजाईथासोदेवरभया॥व
डीमाताथीसोसोविभाई॥बडापिताथासोभ्रातारहूवा॥॥एतासंबंधनसेतत्तिल

कावेश्यांकेअरुधनदेवकेअरुकमलाकेअरुवरुणकेरूवा॥तिनिकीकथालिखिएहै॥
मालवदेसउज्जयनीनगरीराजाविक्रमसेनितहांसुदत्तनामाश्रेष्टीवसै॥सोसोलहकोटि
टिडम्मकोधनीसोवसंततिलकानामवेश्यासंआसक्तहोयतादिवसमैंथालीसोगमेंव
तीभई॥तबरोगसहितदेहभई॥तबघरमैंसंकादिदई॥वसंततिलकाआपकेघरही
मैंपुत्रपुत्रीकोजुगलजायो॥सोवेश्यांखेदखिन्नहोयदोऊबालककूंजुदेजुदेअनकम
लमैंलपेटिपुत्रीकूंतोदहलएदरवाजेखेपी॥सोतहांप्रयागवासीविणजारेलई॥अ
पनीस्त्रीकोसौंपी॥कमलानामधरयो॥बहुरिपुत्रकूंउत्तरदिसिदरवाजेखेप्यो॥तहांसा
केतपुरकेएकसुभद्रनामसेठनीस्त्रीसुव्रताकूंसौंप्यो॥धनदेवनामधरयो॥बहुरिपू
र्वोपार्जितकर्मकेवसतेदनदेवकमलाकेसंयोगरूवोस्त्रीभर्ताररूवा॥पीछेधनदेव
विणजनिमित्तउज्जयनीगया॥तहांवसंततिलकावेश्यासंलुब्धरूवा॥तबताकेसंयोग

सैंसर्वसंबंधतुणिकरिकमलाकूंजातीस्मरणरूवा॥तबउज्जयनीवसंततिलकाकेपय
सिगई॥तदावरुणपालनैंकूंतेथाताकूंकहतीभई॥देवालकतेरीमाथिभ्रमसरूपा
तेनए॥तेसुणि॥मेराभर्तारजोधनदेवताकेसंयोगतैंतरूवासोमेरानीपुत्रहै॥बहुरि
मेराधनदेवनाईताकातपुत्रतातैंमेराभतीजोहै॥तेरीमातावसंततिलकासोमेरी
मातायातैंतमेरानाईहै॥तधनदेवमेराभर्तारकालघकनाईतातैंमेरादेवरहै॥धन
देवमेरीमातावसंततिलकाकाभर्तारिताहैंमेराचितावाकानाईतातैंमेराकाक
है॥मैंवसंततिलकाकीसोकिताहैंधनदेवमेरापुत्रताकातपुत्रताहैंमेराभो
ताहै॥ऐसेंबालकसहितछहभ्राताभएबहुरिधनदेवसंततिलकामेरीमात
कोभर्तारताहैंमेराचिता॥तधनदेवकेनाईताहैंमेराकाका॥धनदेवतेयचिता
ताहैंमेरादादो॥तथाधनदेवमैंमेराभर्तारहैहीं॥तथाधनदेवकीअरुमेरीएकव

DR BHAU DAJI MEMORIAL

तैंवसंततिलकाकेपुत्रभयो॥वरुणनामथयो॥वरुरिएकैदिवसकमलामुनिनैंपूछ्यो॥संबंध
॥मुनियाकासर्वसंबंधकह्यासोकैसें॥उज्जयनीनगरीविषैंसोमसर्मानामब्राह्मण॥
केकास्मपीनामस्त्रीतिनिकैअग्निभूतिसोमभूतिनामदोयपुत्रभया॥तेदोऊपढि
करिन्मावसेऊते॥मार्गमैंजिनदत्तमुनिकूंअपनीमाताजोजिनमतीनामआर्जिकाकूं
शरीरसमाधानपूछ्योतीहिंगी॥वरुरिजिनमतिनामआर्जिकामुनिकूंसुनताभया॥आर्जिका
पुत्रकीवरूथीसोशरीरसमाधानपूछ्योतीहिंगी॥तरां॥दोऊभाईतैंहास्यकरी॥तोतरुए
केतोउहस्त्री॥अरुउहकेतरुएस्त्री॥विधातानेआछ्याविगरीतरच्या॥यातैंहास्यकेपा
पतैंसोमसर्माताेवसंततिलकावेश्यामैंकुई॥वरुरिन्मअग्निभूतिसोमभूतिदोऊभाई॥
मरिवसंततिलकाकेपुत्रपुत्रीयुगलभए॥तिननैंकमलावैंमदेवनामपाया॥वरुरि
करयपीब्राह्मणीयेवसंततिलकाकेधनदेवकासंयोगतैंवरुणनामपुत्रभयो॥ये २३

संततिलकाभाताताैंधनदेवमेराभाई॥तथामैंवेश्यांकीसोकिताकाधनदेवपुत्रता
तैंमेराभीपुत्रविषूंमेरीसासूहैंमैंताकेवेटाकीवरूधनदेवकेस्यांकानत्तारता
तैंमेरासुसरानैंसेधनदेवसदितछहनातेभए॥वरुरिमेराभाईधनदेवताकी॥
वेस्यास्त्रीतातैंमेरीभावजहैं॥तथादेवासकतेरामेराधनदेवपिताताकीवेस्यास्त्री
तातैंमेरीदादी॥तथामेरीमाताहैंदी॥तथामेरानत्तारधनदेवताकीवेश्यास्त्रीतातैं
मेरीसौकिहैं॥तथाधनदेवमेरीसौकिवेस्याकापुत्रत्तवमेराभीपुत्रताकीवेश्यास्त्री
तातैंमेरापुत्रकीवरू॥तथामैंधनदेवकीस्त्रीवेश्यायधनदेवकीमाताताैंमेरीसा
सू॥नैंसेंवेस्यासहितछहनाताभए॥याप्रकारएकहीभवविषैंजाणिवेकेप्रकार
छहनाताउदाहरणमात्रकह्या॥संसारकीविचित्रविडंबनाहै॥यामैंआश्चर्यनांही
आगैंपंचप्रकारसंसारकेनामकहैहैं॥॥॥संसारोपंचविधोदुष्टैरवेत्तहरेवः

कालेय॥ नवमवणोयचउछो पंचमदेसावसंसारो॥३५॥ एषां॥ संसारकरिएपरिभ्र
मणसोपंचप्रकारदे॥ द्रव्यैकहिएपुद्गलद्रव्यविषेंग्रहणात्मजनरूपपरिभ्रमण॥ व
क्षेत्रकहिएक्षाकासकेप्रदेशानिविषैंस्पर्शनिरूपपरिभ्रमण॥ वक्षकालेक
हिएकालकेसमयनिविषैंउपजनेविनसनेरूपपरिभ्रमण॥ वक्षरितैसैंही॥ भवक
हिजाएकात्रिकभवकायग्रहणात्मजनरूपपरिभ्रमण॥ नेसैंपंचप्रकारजानना॥
आगेइनिकास्वरूपकहेदे॥ तद्द्रव्यपरिवर्तनकूंकहेदे॥ ॥ यथहि
मुंचहिजीवा॥ पडिसमयंकम्मपुद्गला विविहा॥ एक्कमपुग्गलाविय॥ मिछत्त
कसायसजुत्तो॥ हुई॥ ॥ यकुजीवयालोकविषैतिष्टतेजेक्षनेकप्रकारपुद्ग
तिनिकूंज्ञानावरणादिकमेरूपतथाउदारिकादिशरीरनोकर्मरूपकरिसमय
समयप्रतिभिष्मात्वकषायनिकरिसंयुक्तहुवासतावांधेहैतथाछोडेहै॥ ॥ २४

॥ मिष्यात्वकषायकेवसकरिज्ञानावरणादिकमेकसमयप्रबधजैयोक्षनंतवरा
सितैंक्षनंतगुणासिद्धरासिकेक्षनंतवेभागपुद्गलपरिमाणएकात्मकंथरूपकर्मो
णवर्गणाकूंसमयसमयप्रतिग्रहणकरेदे॥ वक्षरिपूर्वेग्रहेथतेसत्तामेंदे॥ तिने
मेंसूएतेहीसमयसमयमें॥ क्षेसैदे॥ वक्षरितैसैंही॥ ऊदारिकादिशरीरनिकासमयस
वक्षशरीरग्रहणकेसमयतेलगाय॥ क्षापुकीस्थितिपर्यंतग्रहणकरेदेंवाछोडे
हैं॥ सोक्षनादिकालतेंलेकरिक्षनंतवार ग्रहणकरनांछोडनांहोदे॥ तद्दएक
परिवर्तनकाप्रारंभविषैंप्रथमसमयप्रवर्तविषैजेतेपुद्गलपरिमाणएजेसंस्थि
रूक्षवर्णगंधरूपरसतीव्रमंदमध्यमभावकरियेहोयतेसेहीतेतेदे॥ कोईस
मयविषैंकरियेग्रहणमेंक्षावेंतवएककर्मपावर्तनतथानोकर्मपावर्तनहोय
वीविषैंक्षनंतवारक्षोरजातिकेपरमाणंग्रहणहोयतेमणिएजेसेकेतै

सैंकेरियद्रव्यकूंअनंताकालवीतैंतावकूंएकद्रव्यप्रावर्त्तनकहिए॥ऐसैंसंख्याजीवनैंय ७
लोकविषैंअनंताप्रावर्त्तनकी॥एकअगोलेत्रपरिवर्त्तनकरैहै॥॥अथ॥सोकोविणा
ह्विदेसो॥लोयायासस्सणिरवसेससस्सजछएसजीवो॥जादोमरिदोयवहु
वारं३७॥॥अर्थ॥यालोकाकासकाप्रदेसनिमैंअैसाकोईनीप्रदेशानांहीहै॥जामैं
यहुसर्वहीसंसारीजीवबहुतवारउपजामतथामरयानांहीहै॥॥॥॥सर्वलोकाका
सकाप्रदेशनिविषैंयहुजीवअनंतवारउपजामनैंअनंतवारमरया॥अैसाप्रदे
सहीनांहीजामैंनांहीउपजामरया॥इहांअैसाजाननां॥जोलोकाकाशा
केप्रदेशअसंख्यातहैतांकैमध्यकेआठप्रदेसकूंवीचिसूक्ष्मनिगोदअप
र्याप्तिकजघन्यअवगाहनाकाधारीउपजे॥सोवाकीअवगाहनाअसंख्यातप्र
देसहै॥सोजेतेप्रदेशतेतीवारतौवाहीअवगाहनातहांहीपावै॥बीचिमैंअोरजा २५

यगांअन्यअवगाहनांतैंउपजैसोगिणतीमैंनांही॥यौअैंएकएकप्रदेशकरिवधतीअव
गाहनापावैसोगिणतीमैं॥सोअैसैंउत्कृष्टअवगाहनामहामत्यकीताईपूरणकरैतैसैंहीक
मकरिसर्वलोकाकाशप्रदेशनिकूंपरसैं॥तबएकक्षेत्रप्रावर्त्तनहोय॥आगैंकालपरिवर्त्ते
नकूंकहैहैं॥गाथा॥उवसप्पिणिअवस्सप्पिणिपढमसमयादिचरमसमयंतं॥जीवोकमे
णजमदि॥मरदियसव्वेसुकालेसु३८॥अर्थ॥उत्सर्पिणीवहुरिअवसर्पिणीकालकेप
हलेसमयतैंलगायअंतकेसमयपर्यंतमहुजीवअनुक्रमतैंसर्वकालविषैंउपजैतथा
मरैहैं॥तात्पर्य॥योजीवउत्सर्पिणीकेदूसरेसमयविषैंजनमैंअैसैंहीतीसरेसमयविषैं
जनमैं॥अैसैंहीअनुक्रमतैंअंतकेसमयपर्यंतजनमैं॥अन्यसमयनिविषैंविनाअनुक्रम
जनमैंसोगिणतीमैंनांही॥अैसैंहीअवसर्पिणीकेदसकोडाकोडीसागरकेसमयपूरण
करै॥तथाअैसैंहीमरणकरैसोइहुअनंतकालहोयताकूंएककालप्रावर्त्तनकहिए॥सा

गौनभवपरिवर्तनकूंकहैहैं॥ णेरयाहिगदीए॥ अवरट्ठिदीवरट्ठिदी जावे॥ सव्वट्ठिदि
सुविजम्महि॥ जीवो गेवज्जपज्जत्तेसु॥ अर्थ॥ संसारीजीवनाकनारकादिचारगतिकीज
घन्यस्थितितैंलगायउत्कृष्टस्थितिपर्यंतसर्वस्थितिविषैग्रैवेयकपर्याप्तजन्मे॥ ब
हुतवार॥ नरकगतिकीजघन्यस्थितिदशहजारवर्षकीहै॥ सोयाकेजेतेसमयहैं॥ तेतीव
रतौजघन्यस्थितिकीआयुलेजन्मे॥ पीछेएकसमयअधिकआयुलेजन्मे॥ पीछेदोय
समयाअधिकआयुलेजन्मे॥ ऐसैंही अनुक्रमतैंतेतीससागरपर्यंतआयुपूरण
करै॥ बीचिबीचिमैंघाटिवाधिकआयुलेजन्मैं तौगिणतीमैंनांही॥ ऐसैंही तिर्यंचगति
कीजघन्यआयुअंतर्मुहूर्तताकेजेतेसमयहैं तेतीवारजघन्यआयुकाधारकरोय
॥ पीछेएकसमयाधिकक्रमतैंतेतीनपल्यपूर्णकरै॥ बीचिबीचिमैंघाटिवाधियावैतेगिण
तीमैंनांही॥ ऐसैंही मनुष्यकीजघन्यतैंलगायउत्कृष्टतीनपल्यपूरण करै॥ ऐसैंही

देवगतिकीजघन्यआयुदशहजारवर्षतैंलगायग्रैवेयककेउत्कृष्टइकतीससागरताईसमय
धिकक्रमतैंपूरणकरैग्रैवेयककेआगेउपजनेवालेएकदोयभवलेमोक्षहीजायतातैंनगि
णयां॥ ऐसेंयाजघपरावर्तनकालमैंतेतकालहैं॥ अागैंभावपरिवर्तनकूंकहैहैं॥ पयडि
ठिएमहिसलिजीवो॥ विविहकसाएहिं दिदिणिमित्तेहिं॥ अणुभागणिमित्तेहियं॥ वहंतो
भावसंसारे॥ ५॥ अर्थ॥ भावसंसारविषैवर्तताजीवअनेकअनेकप्रकारकर्मकीप्रकृ
तिबंधकूंकारणवहुरिअनुभागबंधकूंकारणजेअनेकप्रकारकषायतिनकरिसै
नीबंधेहियकीवपरिणतैहैं॥ ता॥ अर्थ॥ कर्मकीएकस्थितिबंधकूंकारणकषायनिके
स्थानकअसंख्यातलोकप्रमाणहैं॥ तातैंएकस्थितिबंधस्थानकमैंअनुभागबंध
कूंकारणएकमात्रनिकेस्थानकअसंख्यातलोकप्रमाणहैं॥ बहुरियोगस्थानहैंते
जगतश्रेणीकेअसंख्यातवेंभागहैं॥ सोयहजीवतिनकूंपरावर्तनकरैहैंसोकैसैं॥ को

ईसैंनी मिथ्यादृष्टी पर्य्याप्तिक जीवरवयोग्यसर्वजघन्यज्ञानावरण प्रकृतिकी स्थिति अंतः
कोटाकोटीसागर प्रमाण बांधे। ताके कषायनिके स्थान असंख्यातलोकमात्र हैं ता
मैंसर्वजघन्यस्थानए करूपपरिणमैं तामैंतिसए कस्थानमैं असंख्यातलोकमात्र अनुभागबंधके कारणस्व
रूप असंख्यातलोकप्रमाण हैं। तिनिमैंसूं एक समयवर्ती जघन्यरूपपरिणमैं। तहां तिसयो
ग्यसर्वजघन्यही योगस्थानरूपपरिणमैं। तब जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागस्था
नरूप अनुक्रमतैं पूरणककरैं बीचिमैं अन्ययोगस्थानरूपपरिणमैं सो गिणती मैंनांही। ऐसे
सैंयोगस्थान इसरारूपपरिणमैं। तहां भी तैसेही योगस्थान सर्वपूरणकरैं। बहुरि
तीसरा अनुभागस्थान लेय तहां भी तैसेही योगस्थान अनुक्रमतैं ऐसैं असंख्यातलो
कप्रमाण अनुभागस्थान अनुक्रमतैं पूरणकरे। तब दूसरा कषायस्थान लेणां।
तहां भी तैसेंही क्रमतैं असंख्यातलोकप्रमाण अनुभागस्थान तथा जगत्श्रेणी

के असंख्यातभागयोगस्थान पूर्वोक्तक्रमतैं अनुगततैं तीसरा कषायस्थान लेणां ऐसे
सैंही चतुर्थादि असंख्यातलोकप्रमाण कषायस्थान पूर्वोक्तक्रमतैं पूरणकरे। तब ए
कसमय अधिक जघन्यस्थितिस्थान लेणां। तामैंभी कषायस्थान अनुभागस्थान पू
योगस्थान पूर्वोक्तक्रमतैं अनुगतैं। ऐसैं दोयसमय अधिक जघन्यस्थितितैं लगायती
सकोडाकोडीसागरपर्यंत ज्ञानावरणकर्मकी स्थिति पूरणकरैं। ऐसैं ही सर्वमूलकर्म
प्रकृतितथा उत्तरप्रकृतिनिका क्रम जानना। ऐसैं परिणमैं तैं अनंतकालवीतैं तिस
कूंनैं लाकीएक भाववर्तनहोय। ऐसैं अनंतभाववर्तनय करि जीव अनुगतता आ
मांहैं। आगैं पंचपरिवर्तनका कथन संक्षेपैं है॥ गाथा॥ एवं अणंतकालं॥ पंचप्र
यारेनमेइसंसारे॥ णाणादुक्खाणिहाएं॥ जीवोमिच्छत्तदोसेण॥ ५१॥ अर्थ॥ याप्रकार
पंचप्रकारसंसारविषैं इस जीवकूं अनादिकालतैं मिथ्यात्वदोषकरि क्रमैं है। कैसा है सं

DR BHAU DAJI MEMORIAL LIBRARY

सारमनेकप्रकारके दुखनिकानिधानहैं॥ छ॥ अबागैं ऐसेसंसारतैछूटनेकाउपदेसकहैहैं
॥गाथा॥ इहसंसारंजाणिय॥मोहंमच्चायरेण चईऊणं॥तंऊयहससहावे॥संसरणंतेण
एणसेइ॥४२॥ अर्थ॥ ऐसैपूर्वोक्तप्रकारसंसारकूंजाणिसर्वप्रकारउद्यमकरिमोहकूं
छोडिकरिहेभव्यहोजिसआत्मस्वभावकूंअंगीकरावे॥जाकरिसंसारकाभ्रमणकाना
सहोय॥ छ॥दोहा॥पंचपरावर्त्तनमई॥दुःखरूपसंसार॥मिथ्याकर्मउदैयहै॥ तरमैंजीव
अपार॥२॥ ऐसैसंसारअनुप्रेक्षाकाचितवनकास्वरूपकह्या॥अबैकत्वानुप्रेक्षाका
स्वरूपकहैहैं॥ छ॥गाथा॥इक्कोजीवोजायदि॥इक्कोगब्भंमिगिण्हदेदेहं॥इक्कोबालजुवा
णो॥इक्कोचुज्जोजरागहिदो॥१॥अर्थ॥जीवहैसोएकहीउपजैहैं॥सोहीएकगर्भविषैदे
हकूंग्रहणकरैहैं॥सोहीएकबालकहोयहैं॥सोहीएकजुवानहोयहैं॥सोहीएकवृ
द्धजराकरियहीतहोयहैं॥भावार्थ॥एकहीजीवनानापर्यायनिकूंधारैहैं॥बहुरिकहैहैं॥ २७

गाथा॥इक्कोरोईसोई॥इक्कोतप्पेइमाएसेइक्को॥इक्कोमरदिवराओ॥एरयइक्कंसहरिइक्को
वि॥२॥ अर्थ॥एकहीजीवरोगीहोयहैं॥सोईएकजीवशोकसहितहोयहैं॥सोहीएकजीवमां
नसीकदुःखकरितप्रायमांनहोयहैं॥सोहीएकजीवमरैहै॥सोहीएकजीवहीनहोयनरक
केदुःखसहैहैं॥भावार्थ॥जीवएकैलाअनेकअवस्थाकूंधारैहैं॥बहुरिकहैहैं॥गाथा॥इक्को
संचदिपुण्णं॥इक्कोभुंजेदिविहसुरसोक्खं॥इक्कोखवेदिकम्मं॥इक्कोविय पावए मोक्खं॥३॥अ
र्थ॥एकहीजीवपुण्यकासंचयकरैहैं॥सोहीएकजीवदेवगतिकेसुखभोगवैहैं॥सोहीएकजी
वकर्मकीनिर्जराकरैहै॥सोहीएकजीवमोक्षकूंपावैहैं॥भावार्थ॥सोहीजीवपुण्यउपजा
यस्वर्गजायहैं॥सोहीजीवकर्मनासकरिमोक्षजायहैं॥बहुरिकहैहैं॥गाथा॥सुयणोपिछं
तोविऊ॥एउकलेसंपिसक्कदेगहिउं॥एवंजाणंतोविऊ॥तोविममत्तंएछुडेइ॥४॥
अर्थ॥स्वजनकहिएकटुंबहैसोभीयाजीवमेंदुखआयेताकूंदेवतासेताभीदुखकालो

सत्रीग्रहणकरनेकूं असमर्थ होयहैं ऐसैं जानता नीपगटपणैं याकुटंबतैं ममत्वनाहू छोडैहैं ॥ भावार्थ ॥ दुःखका आपनोगवैहै ॥ कोईवटायसकैनांही ॥ याजीवकैऐस
अज्ञानहैं जो दुःखसहता नीपरकैममत्वकूं नांही छोडैहै ॥ आगैकहैहैं याजीवकैनि
श्चयसैंधर्मदीसुजनहैं ॥ गाथा ॥ जीवस्सणिच्छयादो ॥ धम्मोदहलक्खणोहवेसुयणो ॥
सोणेयदेवलोए सोविय दुक्करकयंकुणइ ॥ ५ ॥ भावार्थ ॥ याजीवकैअपनांहि निश्च
तैएकउत्तमक्षमादिलक्षणधर्मदीहैं काहेतैंजातैंसोधर्मदीदेवलोककूं प्राप्तकर
हैहैं ॥ वहुरिसोधर्मदीसर्वदुःखका नाशरूपमोक्षकूंकरैहै ॥ भावार्थ धर्मसिवायऔर
कोऊहितूहैनांही ॥ बा ॥ आगैकहैहैं जोऐसैंएकलजीवकूंशरीरतैं भिन्नजानहु ॥ गाथा
सद्धायरेएजाणहु इक्कुंजीवसरीरदोभिन्नं ॥ जिम्हिदुमुणिदेजीवो ॥ होइअसंसय
णोहेयं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ जोनयहोतु मजीवकूंसरीरतैंभिन्नसर्वप्रकारतैंयमकरिजानहु ॥ २९

जाकेजानेंअवरोअसर्वपरद्रव्यक्षणमात्रमेंत्यजनेंयोग्यहोयहैं ॥ भावार्थ जबअपनो
स्वरूपकूंजानैंतबपरद्रव्यहेयहीभासैतातैंअपनांस्वरूपहीकाजाननेंका महाउपरे
दोहा ॥ त्राहैं ॥ गाथा ॥ एकजीवपरजायवहु ॥ धारैंस्वपरनिदानपरतजिआपाजानिकैं ॥ करोभ
वकल्यान ॥ ब ॥ ऐसैंएकत्वानुप्रेक्षाकास्वरूपकोंकह्या ॥ आगैंअन्यत्वअनुप्रेक्षाका
वर्णनकरिहैं ॥ गाथा ॥ अण्णंदेहंणिएहि जाणणीअप्पणायसोहिकम्मादो ॥ अण्णंदोहिक
लत्तं अण्णोवियजायदेपुत्तो ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ यहुजीवसंसारविषैंदेहग्रहणकरैहैं सोआ
पतैंअन्यहैं वहुरिमातादेहसोभीअन्यहैं वहुरिस्त्रीहैसोअन्यहैं वहुरिपुत्रहैसोअन्य
उपजैहैं ॥ यहुसर्वकर्मसंयोगतैंहोयहै ॥ गा ॥ एवंवाहिरदव्वे जाणहितूवाहुअप्पणोण
भिण्णं जाणंतोयहुजीवो तबेवहिरचइदोमूढो ॥ ८ ॥ अर्थ ॥ ऐसैंपूर्वोक्तप्रकारसर्वबा
ह्यवस्तुकूंआत्मस्वरूपतैंन्यारा जानैंहैं तोऊअपनयकैंजाणैतासंतानीयहुमूढमो

हीजीवतिनिपरद्रव्यनिविषैहीरागकरैहैंसोयहबडीमूर्खताहै॥ ७॥ जोजाणिऊ
णदेहं॥जीवसरूवाउतच्चदो भिण्णं॥अप्पाणंपियसेवदि॥कज्जकरंतस्सअणंत॥ ७॥
॥भावार्थ॥जोजीवआपनेस्वरूपतेंदेहकूंपरमार्थतैंभिन्नजानिकरिआत्मस्वरूप
कूंसेवैहैं॥ध्यावैहैंताकेअन्यत्वभावनाकार्यकारीहै॥भावार्थ॥जोदेहादिकपरद्रव्यकूं
न्यारेजानिआपनेस्वरूपकासेवनकरैहै॥ताकेन्यारापनाभावनाकार्यकारीहै॥ ७॥अथ
निजआतमतें भिन्नपर॥जोनैंजेनरदेख॥निजमैरमैंवमैंअपर॥तेसि बलथैपतलु
॥ए॥ऐसैंअन्यत्वअनुप्रेक्षाकावर्णनकीया॥५॥आगैंअशुचित्वानुप्रेक्षाकावर्णनकरैहैं॥
॥सयलकुहियाणपिंडं॥किमिकुलकलियंअसुइदुगंधमलमुत्तणिग्गेहं॥देहं॥
जाणेहअसुइमयं॥१॥अर्थ॥हेअज्ञानीयादेहकूंअपवित्रमईजाणि॥कैसाहैदेहस
मस्तजेकुत्सितकहिए निंदनीकवस्तुतिनिकापिंडकहिएसमूहहैं॥वहुरिकैसा ३०

हैं॥कृमिकहिएउदरकेजीवलटतथाअनेकप्रकारनिगोदादिकजीवतिनिकरिभस्मा
दैं॥वहुरिअत्यंतदुर्गंधहैं॥वहुरिमलतथामूत्रकाघरहैं॥ ७॥सर्वअपवित्रवस्तु
कासमूहयादेहकूंजाणे॥ ७॥आगैंकहैंहैंयहदेहअन्यसुगंधवस्तुकूंभीसंयोगतैंदु
र्गंधकरैहैं॥ ७॥सुहुपवित्तेरवे॥सरससुगंधमणोहरंजेपि॥देहणिवंतेजायहि॥घिण
वणंसुहुदुगंधं॥ ७॥अर्थ॥यादेहकैविषैंहे पेलगाएजेअतिपवित्रसुरसगंधमनकेहर
णहारेद्रव्यतेभीघिणावणैंअतिअतैंदुर्गंधहोयहैं॥ ७॥यादेहकैचंदनकपू
रादिकूंलगाएतेदुर्गंधहोयजाय॥जेलेमिष्टान्नादिरससुगंधसहितथाएतेभला
दिकरूपपरिणमैं॥अन्यजीवस्तुयादेहकेस्पर्शतैंअस्पर्शहोयजायहै॥वहुरिया
देहकेंअसुचिहिपणावैहैं॥ ७॥मणअणाएअसुइमयं॥विहिएदेहंविलिम्मिमं
जाणं॥तेसिंविरमणकज्जे॥तेपुणतच्छेवअणुरत्ता॥ ७॥भावार्थ॥हेभव्यजीवमनुष्यनिक ७

देहकर्मनैं असुचिवण यादै। सोयहां कैसैंउ तेज्ञासंनावनाजाणिज्यो। इनिमनु
क्षनिकूं वैराग्यउपजावनेंके अर्थिकैसास्त्रादै वकुरिएअनुक्त कैसेंनीदेहमैंअनु
रागीहोयुदैं सोयस्त्रअग्यानदै। वकुरियाहीअर्थकूंदृढकरैहैं॥ ॥ एवंविदेपिदे
हं। पिछंतावियकूंएंतिअणुरायं। सेवंतिआयरेणयं। अलसुपुव्वंतिमणंता
॥४॥ अर्थ। कैसापूर्वोक्तप्रकारअसुचिदेहकूंपतक्षदेखतांभीएमनुष्यतहां अ
नुरागकरैहैं। जैसैंपूर्वैकैसैंकैकभीनथा था। कैसाभोगतेसंतेआदरतैंयाकूंसे
वैहैं। सोइहवडास्त्रअग्यानदै॥ ब॥ आगैयादेहसूंविरक्तहोयतासैंअसुचिभाव
नासफलदै॥ गाथा॥ जोयरदेहविरत्तो। णियदेहेणयकरेहिअएरायं। अप्पस
रूवेसुरत्तो। असुइत्तेभावएसस्स॥५॥ नायार्थ॥ जोभव्यपरदेहजोस्त्रीआदिक
कीदेहतातैंविरक्तहूवासंता निजदेहविषैंअनुरागनांहीकरैहैंतासैंअसुचिना
वनांसार्थिकहोयदै॥ नावार्थ॥ केवलविचारहीतैंभावनांप्रधाननांदीदेहकूंअसुचि
विचारिवैराग्यप्रगटहोयतासैंनास्त्रांसत्यार्थीकहिए॥ ब॥ गा॥ था॥ स्वपरदेहकूंअसुचि
लखि। तजैतासअनुराग॥ ताकेसांचीभावनां। सोकहिएषडभाग॥१॥ कैसैंअसुचि
त्वानुप्रेक्षाकास्वरूपकह्या॥ ब॥ आगैआस्त्रवानुप्रेक्षाकावर्णनदै॥ गाथा॥ मणवयण
कायजोया। जीवपएसाणफंदणविसेसा। मोहोदएणजुत्ता। विजुदावियआस
वाहोंति॥६॥ अर्थ॥ मनवचनकायजोगदैतेही आस्त्रवदै। कैसेदैंतेयोगजीव
केप्रदेशनिकाजोस्पंदनकहिएचलणांकंपनांतिसकेतिसकेविशेषदैंतेहीयोग
दै। वकुरिकैसेदैंतेमोहकर्मकाउदयजेमिथ्यात्वकषायतिनिकरिसहितदैं वकु
रिमोहकेउदयकरिरहितनीहैं॥ नाया॥ मनवचनकायकेनिमित्तपायजीवकेप्रदेश
निकाचलाचलसोनांसोयोगभयदैं। इनिहीकूंआस्त्रवकहिएतेगुणस्थानकीपरं

रिणाटी विषैसूक्ष्मसांपरायदसमांगुणस्थान ताईतौ मोहका उदय रूप यथा संभव
मिथ्यात्वकषायनिकरि सहित होय है। ताकूं सांपरायिक आश्रव कहिए। बहुरि रूप
रि तेरकां गुणस्थान ताईं मोह के उदय करि रहित है। ताकूं ईर्यापथ कहिए। इ॥ अ 1
मैं जे मोहके उदय सहित आश्रव है तेही आश्रव है। ऐसा विशेष करि कहे है।
मोहविवागवसादो॥ जेपरिणामा हवंति जीवस्स॥ तेआसवा मुणिज्जहु मिच्छत्ता
ईअणेयविहा॥ ८॥ अर्थ॥ मोहकर्म के उदय तैं जे परिणाम या जीवके होय है तेही आ 1
श्रव है। हे भव्य तूं प्रगट पणें ऐसें जाणि। ते वे परिणाम मिथ्यात्व अविरत प्रमाद कषाय
के प्रकार है॥ भावार्थ॥ कर्मबंधके कारण आश्रव है। ते मिथ्यात्व अविरत प्रमाद कषाय
योग ऐसे पूर्वे च प्रकार है। तिनमें स्थिति अनुभाग रूप बंधको कारण मिथ्यात्वा
दिक चार ही है। सो एक मोहकर्मके उदय तैं होय है। बहुरि योग है ते समय मात्र बं ३२

धकूं करे है॥ कछु स्थिति अनुभागकूं करे नांही तातैं बंधकारण मैं प्रधान नांही॥ ब॥ आ
गैं पुण्य पापके नेदकरि आश्रवके दोय प्रकार करे है॥ गाथा॥ कम्मं पुण्णं पावं हवेइ तेसिं च
हो ति सुहअसुहा॥ मंदकसाया सुहा॥ तिव्वकसाया असुहा जाण॥ ३॥ अर्थ॥ कर्म है सो पुण्य
तथा पाप ऐसें दोय प्रकार है। ताकूं कारण भी दोय प्रकार है। प्रशस्त अर इतर करि
ए अप्रशस्त॥ तहां मंदकषाय परिणाम ते तो प्रशस्त है॥ शुभ है। बहुरि तीव्रकषाय
परिणाम ते अप्रशस्त॥ अशुभ है। ऐसें प्रगट जानकूं॥ भावार्थ॥ सातावेदनीय शुभ
आयु उच्चगोत्र शुभ नामा प्रकृति तो पुण्य रूप है। अवशेष घातिया अघा
ति या असातावेदनीय नरकायु नीचगोत्र अशुभ नामा प्रकृति ये पाप रूप है॥
तिनकों कारण आश्रव भी दोय प्रकार है। तहां मंदकषाय परिणाम तो पुण्य
आश्रव है। तीव्रकषाय परिणाम पापास्रव है॥ ब॥ आगैं मंद तीव्रकषाय कूं

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

गटदृष्टांतकरिकैहैं॥गा॥सव्वबविपियवपएं डुव्वएजेडेएविखमकरएं॥सव्वेसिं
गुणगहएं मंदकषायाएहिउंता॥अ॥ सर्वजायगांत्रुतथामित्रआदिविषै
तौंप्यारादितरूपवचन डुर्वेनसुणिकरिडुर्जनविषैंनीचुमांकरएं॥वकुरिसर्व
जीवनिकेगुणग्रहीयहएवचना एतेमंदकषायनिकेउदाहरणहैं॥ब॥गाधा॥अप
पसंसणकरणं॥जुत्तेसुविदोसगहणंसीलत्तं॥वेरधरणंचसुइरं॥तिव्वकसाय १
णलिंगाणि॥पू॥अर्थ॥अपणीप्रसंसाकरणंपूजपुरुषनिकानीदोषग्रहणक
रणंकास्वभाव॥तथाथणेंकालताईवैरधारणं॥एतीव्रकषायनिकेचिह्नहैं॥
॥आगैंकहैहैंऐसेजीवकेनआश्रवकाचिंतवननिरफलहैं॥गाथा॥एवंजाणंतो
बिडपरिचयणीयेविजोणपरिहरई॥तस्सासच्चाएफुडिरवासच्चाविणि
रत्थयाहोदि॥ई॥ऐसैंप्रगटपणैंजाणतासंतानीजोत्यजनेयोग्यपरिएं ३३

मनिकूंनाहीछोडैहैं॥ताकेसाराश्रवाकाचिंतवननिरर्थकहैंकार्यकारीनांही॥
॥अ॥आश्रवानुप्रेक्षाकाचिंतवनकरिप्रथमतौतीव्रकषायछोडनांपीछेशु
द्धात्मस्वरूपकाध्यानकरएं॥सर्वकषायछोडनांतथाशुद्धचिंतवनसफलहैं
केवलवार्त्ताकरएंमात्रहीतौसफलहैनांही॥आगैंयाहीअर्थकूंदृढकरैहैं॥
॥गाथा॥एदेमोहजभावा॥जोणरिवजेइउवसमेलीएो॥हेयमिदिमणमाणे॥अ ७
सवआणएपेहणंतस्स॥७॥अर्थ॥जोपुरुषएतेपूर्वोक्तमोहकेउदयतैंनएजोमि
थ्यात्वादिकपरिणतिनिकूंछोडैहै॥कैसाहूवासंतातउपसमपरिएंमजोवी
तरागभावताविषैंलीनहूवासंतातथाइनिभावनिकूंहेयकरिएत्यागनेंयो
गएहैं॥ऐसैंजानतासंतातांकेनआश्रवानुप्रेक्षाहोहैं॥ब॥भावार्थ॥आश्रवपंचप्रक ७ टी०
रकूंचितवैतेजैविकार तेपावैनिजरूपकूंयहभावनासार है॥ऐसैंआश्रव २

नुप्रेक्षाकावर्णकीया ॥ आगेसंवरानुप्रेक्षाकावर्णनकरेहैं ॥ गाथा ॥ समणेदेसवयं महव्वयंतहजए
कसायाणं ॥ एदेसंवरणामा ॥ जोगाभावोतहचेव ॥ १ ॥ अर्थ ॥ सम्यक्त्वदेशवृतमहा
व्रततथाकसायनिकाजीतनां ॥ तथायोगनिकानामाक ॥ एतेसंवरकेनामहैं ॥ तीहंके
पूर्वेंआश्रवमिथ्यात्वअविरतप्रमादकषाययोगरूपपंचप्रकारकहाथातिसका
अनुक्रमतैंरोकनांसो ही संवरहैं ॥ सो कैसैंमिथ्यात्वकाअभावतौचतुर्थगुणस्थान
विषैंनया ॥ तहांमिथ्यात्वकासंवरनया ॥ अविरतकाअभाव ॥ एकदेशतौदेशवि
रतविषैंनया ॥ अरसर्वदेसप्रमत्तगुणस्थानविषैंनया ॥ तहांअविरतकासंवरण
या ॥ बहुरिप्रमत्तगुणस्थानविषैंप्रमादकाअभावनया ॥ तहांताकासंवरण
या ॥ तथातीसरेहीगुणठांणविषैंकषायकाअभावनया ॥ तहांताकासंवरण
या ॥ अयोगीजिनविषैंयोगनिकाअभावनया ॥ तहांताकासंवरनया ॥ ऐसैंसं ३४

वरकाक्रमहै ॥ आगैंयाहीकूंविसमकरिकहैहैं ॥ गाथा ॥ गुत्तीसमिदीधम्मो ॥ अणेकेक ७
तहयपरीसहजउ वि ॥ उक्किट्ठचारित्तसंवरहेदू विसेसेण ॥ २ ॥ अर्थ ॥ कायमनोवचन
गुप्ति ॥ ईर्यानामाएषणआदाननिक्षेपणा ॥ एपंचसमिति ॥ उत्तमक्षमादि
कदशलक्षणधर्म ॥ अनित्यादिबारहअनुप्रेक्षा ॥ क्षुधादिबाईसपरीसहकाजीत
नां ॥ सामायकआदिउत्कृष्टपंचप्रकारचारित्र ॥ ए तेविशेषकरिसंवरकेकारणहैं ॥ ब
आगैंइनिकोंस्पष्टकरिकहैहैं ॥ गाथा ॥ गुत्तीयोगनिरोहो ॥ समिदीयपमायवज्जणंचे
व ॥ धम्मोदयाहवाणं ॥ अनुत्तचिंताअणुपेहा ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ योगनिकानिरोधसोतौगु
प्तिहैं ॥ प्रमादकावर्जनांयतैंप्रवर्त्तनांसोसमितिहै ॥ जामेंदयाप्रधांनहोयसोध
र्महै ॥ भलेतत्वकहिएजीवादिकतत्व ॥ तथा निजस्वरूपकाचिंतवनसोअनुप्रेक्ष ७
हैं ब ॥ नाप ॥ सोचियरीसहविजउ छुहादियीडाणआइरुद्दाणं ॥ सवणाणंचमु

णीएं॥उवसमभावेणजेसहएं॥४॥अर्थ॥जोक्रोधतीव्रउग्रयानकक्षुधाआदिपीडातिः
निकाउपसमभावकरिएवीतरागभावकरिसहनंसोग्यानीजेमहामुनितिनि
केपरीषहनिकाजीतनांकहिए॥३॥गाथा॥अप्पसरूवेवछु॥चत्तरायादिएहिः
दोसेहिं॥सत्ताएंमिलिलीनं॥तेजाणसुउत्तमंचरणं॥५॥अर्थ॥जोभव्यतूताहिजा
नमचारित्रजाणिजोआत्मस्वरूपजोवस्तुताकारागादिदोषनिकरिरहितथ
मंशुद्धध्यानविषैलीनहोनां॥ब॥आगैंकहैहैं॥जैसेसंवरकूंजोआचरैनाही
हैसोसंसारमैंभ्रमैहैं॥गाथा॥एतेसंवरहेउ॥वियारमाणो॥विजोएआयरईसोम
मईचिरंकालं॥संसारेदुःखसंतत्तो॥६॥अर्थ॥जोपुरुषपूर्वोक्तसंवरकेः
कारणनिकूंविचारतासंतोजोआचरैनाहीहैं॥सोदुःखनिकरितसायंमानरू
वासंताथएंकालसंसारमैंभ्रमणकरैहैं॥ब॥आगैंकहैहैं॥जोकैसेपुरुषकैसंव 35

रहोहैं॥गाथा॥जोपुणविसयविरत्तो॥अप्पाणंसव्वदासंवरइ॥मणहरविसएहिं
तो॥तस्सफुडंसंवरोहोदि॥७॥अर्थ॥जोमुनिइंद्रियनिकेविषयनितैंविरक्तहूंचा
संतामनकूंप्यारेजेविषयतिनितैंआत्माकोंसदाकालनिश्चयतैंसंवररूपकरै
हैं॥ताकैप्रगटयहैंसंवरहोयहैं॥भावार्थ॥इंद्रियमनकूंविषयनितैंरोकैआपनेंशु
द्धस्वरूपविषैरमावैताकैसंवरहोय॥ब॥दोहा॥एहिसभितिहमभावनां॥जयः
नरीसहकारः॥चारितधारैंसंगतजि॥सोमुनिसंवरधारः॥८॥ऐसैंसंवरनामं ८
अनुप्रेक्षाकावर्णनकीया॥आगैंनिर्जराअनुप्रेक्षाकावर्णनकरिएहै॥गाथा॥वारसविहे॰
णतवसा॥णियाणरहियस्सणि॥ज्जरणहोदि॥विरागभावणादो॥निस्संकाइस्स
णणिस्स॥९॥अर्थ॥जोज्ञानीहोयताकैबारप्रकारतपाकरिकर्मनिकीनिर्जरा
होयहै॥कैसेज्ञानीकैहोय॥जोनिदानकरिएइंद्रियविषयनिकीइच्छाकरि

हितहोय। वकुरिअहंकारअभिमानकरिरहितहोय। वकुरिकाहेतैंनिर्जराहोय। वै
राग्यभावनांजोसंसारदेहभोगतैंविरक्तपरिणमतातैंहोय। तावा। तपकरिनि
र्जराहोय सोज्ञानसहिततपकरैताकैहोय। अज्ञानसहितविपर्ययतपकरेज ।
मैंहिंसादिकहोयतैंसेतपतैं उलटाकर्मकाबंधहोयहैं। वकुरितपकरिमदकरै
परकूंन्यूंनगिणैं। कोईपूजादिकनकरैतासूंक्रोधकरै। ऐसेतपतैंबंधहीहोय
। गर्वरहिततपतैंनिर्जराहोय। वकुरितपकरियालोकपरलोकविषैंख्यातिला
भपूजाइंद्रियनिकेविषयभोगचाहैताकैबंधहीहोय निदानरहिततपैतैंनिर्जे
राहोय वकुरिसंसारदेहभोगविषैंअत्यासक्तहोय तपकरै ताकाअभिप्रायशु
द्धहोयनाहीताकैनिर्जरानहोय। वैराग्यभावकरांहीतैंनिर्जराहोयअैसाजानना ।
आगैंनिर्जराकहाकहिएसोकहैहैं। गाथा। सव्वेसिंकम्माणं सत्तिविवाओहवेइ ३६

अएकजाउतदणंतरंतुसडएं। कम्माएंणिज्जराजाए। ३। अर्थ। समस्तजेज्ञा
नावरणादिकअष्टकर्मतिनिकीसक्तिकहिएफलनेंकीसामर्थ्यताकाविपा
ककहिएपकनांउदयहोयनांताकूंअनुभागकहिए। सोउदयअाएंकैअनंत
रहीताकासटनकहिएझडनांखिरनांहोयताकूंकर्मकीनिर्जराहैअयंतज्ञा
णिजीथा। कर्मउदयहोयहिरजायताकोनिर्जराकहिए। सोयकुनिर्जराहोय
प्रकारहैसोहीकहैहैं। ब। गाथा। सापुणदुविहाणेया। सकालपत्तावेयकय
माणं। चाउगदीणंपढमा। वयजुत्ताणंहवेविदिया ३। अर्थ। सोपूर्वोक्तनिर्जरा
दोप्रकारहै। एकतोस्वकालप्राप्त। एकतपकरिकरीहुईहोयतामेंपहलीस्व
कालप्राप्तितो च्यारिहीगतिकेजीवनिकैहोयहै। वकुरिव्रतकरियुक्तहैं तिनि
कैदूसरीतपकरिकरीहोयहै। भावार्थ। निर्जराहोयप्रकारहैंतहांजोकर्मस्थि

तिपूरीकरिउदयहोयरसवेकरिखिरैसोतौसविपाककहिए।यऊतौसर्वहीज
वनिकैहोयहै।बहुरिलपकरिकर्मविनांखितिपूरीनएहीपकैकरिजायतां
कूंअविपाकनिर्जरासोनीनामकहिएहै।सोयऊहतधारीनिकैहोयहै।ब।।आगै
निर्जरावधतीकारणनैंहोयसोकहिएहै।।गाथा।।उपसमभावतवाएं।जहजह
वट्टीहवेइसारूएं।तहतहणिज्जरवट्टी।विसेसदोधम्मसुक्कादो।।४।।मु
निनिकैजैसैंतैसैंउपसमभावतथातपकीवधवारीहोयतैसैंनिर्जराकीवा
धवारीहोयहै।बहुरिधर्मध्यानशुक्लध्यानतैंविसेषतैंवधतीहोयहै।आ
गैइसहीकैस्थानकहैहैं।।।।मिछादोसहिट्ठी।असंखगुणकम्मणिज्ज
रोदि।ततोअणुवयधारी।ततोयमहव्वईएगारी।५।पढमकसायचउण्ह
विजोजणंतहयखवइसीलोय।दंसणमोहतियस्सय।तत्तोउपसमगो

चत्तारिवीयखवगोयखीणमोहोसजोयणाथोजोईया।एदेवचरिंउवा
रिंअसंखगुणकम्मणिज्जरया।३।अर्थ।प्रथमोपशमसम्यक्तकीउत्पत्तिविषै
करणत्रयवर्तीविशुद्धपरिणामयुक्तमिथ्यादृष्टीकै जोनिर्जराहोयहै।तातैं
संयतसम्यग्दृष्टीकै असंख्यातगुणीनिर्जराहोयहै।यातैंदेशव्रतीश्रावकैं
असंख्यातगुणीहोयहै।यातैंमहाव्रतीमुनिकै असंख्यातगुणीहोयहै।
यातैंअनंतानुबंधीकषायकाविसंयोजनकहिए अन्यप्रत्यासौंक्रोधादिक
रूपपरिणामवनांताकै असंख्यातगुणीहोयहै।यातैंदर्शनमोहकाक्षय
करनेवालेकै असंख्यातगुणीहोयहै।यातैंउपशमश्रेणीचालेतीनगु
णस्थानविषैं असंख्यातगुणीहोहै।यातैंउपशांतमोहगारवांगुणस्थान
वालेकै असंख्यातगुणीहै।यातैंक्षपकश्रेणीवालेतीनगुणस्थानवि

DR BHAU DAJI MEMORIAL

मैं असंख्यात गुणी होय है। यातैं क्षीण मोह बारमां गुण स्थान विषैं असंख्यात गुणी है। यातैं सयोग केवली के असंख्यात गुणी होय है। यातैं अयोग केवली के असंख्यात गुणी होय है। उपरि उपरि असंख्यात का गुणकार है। याही तैं याकूं गुण श्रेणी निर्जरा कहिए। अर गुणकार रहित अधिक रूप निर्जरा जाते होय सो कहे हैं॥ गाथा॥ जो विसहदि दुवयणं। साहम्मियहीलणं च सग्गजिणिंदगणहरायरियं तस्सहवे णिज्जरा विउला॥ अर्थ॥ जो मुनिदुर्वचन सहे तथा साधर्मी जे अन्य मुनि आदि कृति निंदा करी या अन दूषण सहे। तथा देवादिक कृत करी या उपसर्ग सहे। कषाय रूप वैरी निकूं जीतिकरि सैं करे। ताके विपुलाकार निर्जरा होय॥ तथा कोई कुवचक हैं तो ताकूं कषाय न करे। तथा आप कूं अतीचार रहित 35

सागैत कथा चार्यादिक कठोर वचन कहि प्रायश्चित्त देय निरादर करे ताकूं निरकषा यण सहे तथा कोई उपसर्ग करे ताकों कषायन करे। ताकै विपुल निर्जरा होय है॥ ब॥ गाथा॥ णिमोयण क्खमणइ। जो उपसग्ग परीसहं तिव्वं॥ पावफलं मेएदं। मया॥ विजसंचिदं पुव्वं। ए॥ अर्थ॥ जो मुनि उपसर्ग तथा तीव्र परीसह कूं क्षमा मानैं जो मैं पूर्व जन्म में पाप कर्म संचय कीया था। ताका यह फल देहै सो जोगनां। यामें आकुल न होना। जैसें काहू का कर्ज काढ्या होय सो पैला मांगै तब देना या में व्याकुल ताक हो। क्षमा सैं माने ताकै निर्जरा बहु होय है॥ ब॥ गाथा॥ जो चिंतेइ सरीरं। ममत्तजए यं विनस्सरं असुइं। देसए एगत्त चरित्तं। सुहजए यं णिम्मलं यं मलं णिच्चं॥ अर्थ॥ जो मुनि या शरीर कूं ममत्त मोह क्षय उपजावन हारा तथा विनाशीक तथा अपवित्र मानै। बहुरि दर्शन ज्ञान चारित्र कूं सुख का उपजावन हारा निर्मल तथा त

नित्य मानैं ताकै निर्जरा वहु होय ॥ भावार्थ ॥ शरीर कूं मोह का कारण अथिर अशु
चि मानैं तब याका सोच रहै ॥ अपने स्वरूप मैं लागैं तब निर्जरा होय ऐसो य ब
॥ गाथा ॥ अप्पाणं जो णिंदइ गुणवंताणं करेदि बहुमाणं ॥ मणइंदिया णविज
ई ससरूवपरायणो होउ ॥ २२ ॥ भावार्थ ॥ जो साधक अपने स्वं स्वरूप विषैं तत्परो
यकरि अपने कीये दुःकृत की निंदा करै ॥ बहुरि गुणवान पुरुषनि का प्रत्यक्ष
परोक्ष बडा आदर करै ॥ बहुरि अपने मन इंद्रियनि कूं जीतनहारा वर्तावै तो
नहारा होय ताकै निर्जरा बहु होय ॥ भावार्थ ॥ मिथ्यात्वादि दोषनि का निरादर
करै तब वे काहे कूं रहैं झडि ही पडै ॥ ब ॥ गाथा ॥ तस्स य सहलो जोगो ॥ तस्स वि
पावस्स णिज्जरा होदि ॥ तस्स विपुण्णबंधो ॥ तस्स हु सो संकमपरो हि ॥ २३ ॥
र्थ ॥ जो साधक जैसैं पूर्वोक्त प्रकार निर्जरा के कारण निर्विषैं प्रवर्तै ताकै जा ३१

नसफल है ॥ बहुरि तिसही कै पापकर्म की निर्जरा होय है ॥ पुण्यकर्म का अनुभाग
बधै है ॥ बहुरि तिसही कै उत्कृष्ट सुख होय है ॥ भावार्थ ॥ जो निर्जरा का कारण निर्वि
षैं प्रवर्तै ताकै पाप का नास होय ॥ पुण्य की वृद्धि होय ॥ स्वर्गादिक के सुख भोगि
मोक्ष कूं आसन्न होय ॥ आगैं उत्कृष्ट निर्जरा करि निर्जरा का कथन कूं पूरण क
रै है ॥ गाथा ॥ जो समसुखणिलीओ ॥ वारंवारं सरेयप्पाणं ॥ इंदियकसायविजई ॥
जई तस्स हवेणिज्जरा परमा ॥ २३ ॥ भावार्थ ॥ जो मुनि वीतरागभावरूप सुखमयी
का नाम परमचारित्र है ॥ सो या विषैं तौलीनकरि एकतन्मय होय ॥ वारवार आत्मा
कूं समरै ध्यावै ॥ बहुरि इंद्रियनि का तथा कषायनि का जीतनहारा होय ताकै
उत्कृष्ट निर्जरा होय है ॥ भावार्थ ॥ इंद्रियनि का वा कषायनि का निग्रह करि परम वीत
रागभावरूप आत्मध्यान विषैं लीन होय ताकै उत्कृष्ट निर्जरा होय है ॥ ब ॥ दोहा

पूरववांधेकर्मजे॥क्षेरेतपोवलथाय॥सोनिर्जेराकहायहै॥धरिहैंतेनिर्जराय
॥१॥ऐसैंनिर्जराअनुप्रेक्षाकावर्णनकीया॥ब॥आगैंलोकानुप्रेक्षाकाकथनवर्णनक
रिहैं॥छ॥तामैंप्रथमहीलोककाआकाराद्दिककहैंगे॥तहांकछुगणितप्रयोज
नकारीजाणिसंक्षेपसाधनाचार्थगणितकाअभ्यासप्रश्निकेअनुसारलिखिए
हैं तहांप्रथमतौपरिकर्माष्टककहैं तामैंसंकलनकहिए॥जोदेनांजैसैंआवक ७
वासातकाजोडदीएपहराइए॥बहुरिव्यकलनकहिएबाकीकाढनां॥जैसैंआ
वसातकाजोडदीएपहराइए॥बहुरिएकाएकरूपजैसैंआवकूंसातकरिएतौछपनहो
वमैंतीनघटायेंपाचरहैं॥बहुरिगुणकारजैसैंआवकूंदोयकाआगदीएंआठपाए॥बहुरिवर्गकहि
यबहुरिआगाकारजैसैंआवकूंदोयकाआगदीएंआठपाए॥बहुरिवर्गकहि
एदोयराशिवराबरिकीएगुणिएजेतेहोयतेतावूंवर्गकरिए॥जैसैंआवकावर्गचै ६
सठि॥बहुरिवर्गमूलचौसठिकावर्गमूलआठ॥बहुरिघनकहिएतीनराशि ४०

वराबरिकीएगुणैं॥जोपदोयसोजैसैंआवकाघनपाचसैंबारा॥बहुरिघनमूलपौ
जैसैंपाचसैंबाराकाघनमूलआठ॥ऐसैंपरिकर्माष्टकजाननां॥बहुरित्रैराशि
कहैंजहांएकप्रमाणराशि॥एकफलराशि॥एकइछाराशि॥जैसैंदोयरुपयोंकी
जिनसिसोलसेंस्त्रीये॥तौआवरुपयांकीकेतीआवै॥ऐसैंप्रमाणराशिदोय
फलराशिसोलहै॥इछाराशिआठ॥तहांफलराकूंइछाराशिकरिगुणैं॥एकसै ७
आवाईसहोय॥ताकूंप्रमाणराशिदोयकाआगदोयकाआगहीएंचौसविसर
आवैऐसैंजाननां॥बहुरिक्षेत्रफलविषैंजहांचरोवरिकेमंडकरिए॥ताकूंक्षेत्र
फलकहिए॥जैसैंखेतमैंडोरीमापिएतबकाचवासीवीसबांधीघाकरिए॥ताकूं
खेत्रफलसंज्ञाहै॥जैसैंअसीहाथकीडोरीदोयताकेवीसगजांकरिए॥आरे
आठहाथकाएकगजा॥ऐसैंखेतमैंएकडोरीलांबा चौडाखेतदोयताकेच्या

इत्यादि हाथकेलांबेचौडेषंडकीजिए॥तबवीसकूंवीसगुणांकीएंचारिसेभये
सोदीकचवासीभई॥याकेवीसविसचेभए॥ताकाएकवीघाभया॥तेसैंदीजा
हांचौकूंटानिकूंटागोलक्षाहिमेतहांयताकावरावरिकाषंडकरिमापिले
त्रफलल्यायएहै॥तैसैंदीलोककाक्षेत्रकूंयोजनादिककीसंख्याकरिजैसाहे
त्रहोयतैसाविधानकरिक्षेत्रफलल्यावनेकाविधानगणितसास्त्रतैंजानना॥
यहांलोककेक्षेत्रविषैंतथाऊर्धनिकीगणिनाविषैंक्षलोकिकगणितकई
सहैं॥तथाउपमागणितक्षावहै॥तहांसंख्यासंखके तीनभेदजघन्यमध्यउत्कृ
ष्ट॥क्षसंख्यातासंख्यातजघन्यमध्यउत्कृष्टक्षेसैंनवभेदभए॥वकुरिक्षनंत
केनवभेदपरीतानंतयुक्तानंतक्षनंतानंततांकेजघन्यमध्यउत्कृष्टकरिन
वभेदक्षेसैंइकईस॥तहांजघन्यपरीतान्तसंख्यातल्यावनेंकैक्षर्थिलाप ४१

लाषयोजनकेजेबूदीपप्रमाणव्यास॥हजारयोजनऊंडेआरकुंडकरिए॥एक
कानामक्षनवस्व॥स्रासलाका तीजाप्रतिशलाका॥चौथामहासलाका॥ति
निमेंसरसूनवस्वकुंडकूंसरसूंसिधाऊभरिए॥तिनिमेंछियालीसक्षकषभा
एसरसूमावै॥तिनिकूंसकल्पमात्रसेचालिए॥एकदीपमेंएकसमुद्रमेंक्षे
सेंगेरतेजायेएजहांवहसरसूंहीतैतिसदीपवासमुद्रकीसूचीप्रमाणक्षनव
स्वकुंडकीजेताभैंसरसूंभरिए॥वकुरिसलाकाकुंडमेंएकसरसूंक्षनयल्याय
गेरिए॥वकुरितैसैंदीतिसद्वीपक्षनवस्वकुंडकीसरसूंएकदीपमेंएकसमुद्रमें
गेरतेजाइए॥क्षेसैंवारतैंतिसक्षनवस्वकुंडकीसरसूंजहांदीसैंतहांतिस
दीपवासमुद्रकीसूचीप्रमाणकेसिक्षनवस्वकुंडकरितैसैंदीसरसूंभरिए॥व
कुरिएकसरसूंसलाकाकुंडमेंक्षन्यल्यायगेरिए॥क्षेसैंकूंतैंछियालीसक्षंका २

प्रमाणएसलाकाकुंडभरिचुकैतवएकशलाकाअरै॥ऐसेंहीअनवस्थकुं
डहोताजायशलाकाअरतेजायशलाकनरतेजाय॥तवछियालीशअंक
प्रमाणशलाकाकूंनरिचुकै॥तवएकमहाशलाकाकुंडअरै॥ऐसैंकरतैंछि
यालीसअंकनिकैघनप्रमाणअनवस्थकुंडभए॥तिनिमैंअंतकाअनवस्थ
जिसद्वीपवासमुद्रकीसरसूंसोवैजेताप्रमाण
जघन्यपरीतासंख्यातकहिए॥यामैंयेकसरसूंघटाएंउत्कृष्टसंख्यातकहिए॥
दोयसरसूंप्रमाणजघन्यसंख्यातकहिए॥बीचकेसर्वमध्यसंख्यातकेभेदहैं
॥बहुरितिसजघन्यपरीतासंख्यातकीसरसूंकीराशिकूंएकएविरलैएकएक
परितिसीहीराशिकूंथापिपरस्परगुणे॥तांअंतमैंजोराशिनिपजै॥ताकूंजा
घन्ययुक्तासंख्यातकहिए॥यामैंएकरूपघटाएंउत्कृष्टपरीतासंख्यात ४२

कहिए॥मध्यकेनानाभेदजाननें॥बहुरिजघन्ययुक्तासंख्यातकूंजघन्ययुक्त
संख्यातकरिएकवारपरस्परगुणिए॥जोपरिमाणआवैसोजघन्यअसंख्या
तासंख्यातजाननें॥यामैंएकघटाएंउत्कृष्टयुक्तअसंख्यातहै॥मध्ययुक्त
असंख्यातबीचकेनानाभेदजाननें॥अबसजघन्यअसंख्यातासंख्यात
प्रमाणतीनराशिकरेंएकशलाका॥एकविरलना॥एकदेय॥तहांविरलनराशि
कूंविरलैएकएकजुदाजुदाकरना॥एकएककेऊपरिएकएकदेयराशिधरना
तिनिकूंपरस्परगुणिए॥तबसबेगुणकारहोयचुकै॥तबएकरूपशलाकारा
शिमैंसूंघटावना॥बहुरिजोराशिभयातिसपरिमाणविरलनदेयराशिकरे
॥तहांविरलनकूंबखेरिएकएककजुदाकरिएकएकऊपरिदेयराशिदेना॥तिनिकूं
परस्परगुणनकरना॥जोराशिनिपजै॥तबएकशलाकाराशिमैंसूंफेरैघटावै

नां चउरिंद्रीयराशि निपज्याता केयपरिमाण विरलनदेयराशिकरनां विरलनकूंना
वेरिदेयकूंएकएकपरिस्थापिपरस्परगुणनकरनां एकरूपसलाकामैंसूंघट
टावनां जैसैं विरलनदेयराशिकरि गुणाकारकरताजानां ग्रालाकामैंसूंघटा
ताजानां जबग्रालाकाराशि निष्ठोषहोयजाय तबजोकिछूपरिमाणएन्याया
सोमध्यन्नसंख्याता न्नसंख्यातका भेदहै चउरिंद्रितिनितैंतितनेंपरिमाण
ग्रालाकाविरलनदेयतीनराशिकेकरिकरनां तिनिकूंपूर्ववत्करेग्रालाकारा
शिनिःशेषहोयजाय तबजोमहापरिमाणएन्याया सोनीमध्यन्नसंख्यात
संख्यातका भेदहैं चउरिंद्रितिसरराशिकूंपरिमाणकेरिग्रालाकाविरलनदेय
राशिकरनां तिनिकूंपूर्वोक्तविधानकरिगुणनैंतबजोमहाराशिन्याया सो
इहनीमध्यन्नसंख्याता संख्यातका भेदन्याया न्नरग्रालाकात्रयनिष्ठापंन ४३

एकवारन्याया चउरिंद्रराशिमैंन्नसंख्याता संख्यातपरिमाण छहराशिग्रोर
मिलावनी लोकत्रमांण धर्मद्रव्यकेप्रदेसन्नधर्मद्रव्यकेप्रदेस एकजीवकेप्र
देस एकएकासकेप्रदेस चउरिंद्रितिसलोकतैंन्नसंख्यातगुणें न्नप्रतिष्ठितप्र
त्येकवनस्तीजीवनिकीपरिमाण चउरिंद्रितिसतैंन्नसंख्यातगुणेंसप्रति
ष्ठितप्रत्येकवनस्पतिजीवनिकापरिमाणएछहराशिमिलायपूर्वोक्तप्रकार
ग्रालाकाविरलनदेयराशिकेविधानकरिग्रालाकात्रयनिष्ठापनकरनां तबजे
महाराशिनिपज्यासोनीमध्यन्नसंख्याता संख्यातकाभेदहैं तामैंसारिराशि
ग्रोरमिलावनें कल्पकालवीसकोडाकोडीसागरकेसमयचउरिंद्रिस्थितिबं
धकूंकारणकसायनिकेस्थानन्नअनुभागबंधकूंकारणकषायनिकेस्थान
योगनिकेन्नविभागप्रतिछेदन्नैसीसारिराशिमिलायन्नरपूर्वोक्तविधान

कशिलाकात्रयनिष्टापनकरनो॥ जैसैकरसैंजोपरिमाणहोय सोजघन्यपर १
तानंतराशिनया यामैसूएकरूपघटाएंउत्कृष्टअसंख्यातैंहूं वीचिमैंमध्य असंख्यात
केनानाभेदहैं॥ बहुरिजघन्यपरीतानंतराशिकाविरलनकरिएकपरिएकएकज
घन्यपरीतानंतस्थापनकरिपरस्परगुणैंजोपरिमाणहोय सोजघन्ययुक्त १
नंतजानना॥ तामैंएकघटाएंउत्कृष्टपरीतानंतहैं मध्यपरीतानंतकेवीचिमैं
नानाभेदहैं॥ बहुरिजघन्ययुक्तानंतकूंजघन्ययुक्तानंतकरिएकवारपरस्प
रगुणैंजघन्यअनंतानंतहैं॥ यामैंसूएकघटाएंउत्कृष्टयुक्तानंतहैं॥ मध्ययु
क्तानंतकेवीचिमैंनानाभेदहैं॥ अबउत्कृष्टअनंतानंतकूंल्यावनेकाउपायक
हैंहैं॥ तहांयेजेअनंतानंतकापरिमाणत्रैराशिकाविधिकरिहोय एतीनराशिक
रिअनुक्रमतैंपहलैंकह्या तैसैंत्रैराशिकात्रयनिष्टापनकरैं॥ तबमध्यअनंतानं ४४

तकाभेदरूपराशिनिपजै॥ ताविषैंजघन्यराशिमिलावो॥ सोराशि॥ निगोदराशि
प्रत्येकवनस्पतिसहितनिगोदराशि॥ पुष्पलराशि॥ कालकेसमय॥ आकाश
केप्रदेश॥ एछहराशिमध्यअनंतानंतकेभेदरूपमिलाय॥ त्रैराशिकात्रयनिष्टापन
पूर्ववत्विधानकरिकरनो॥ तबमध्यअनंतानंतकेभेदरूपराशिनिपजै॥ ता
विषैंकेवलधर्मद्रव्य॥ अधर्मद्रव्य॥ एकजीव॥ अगुरुलघुगुणकेअविभागप्रतिछेदमिला
यनोमहापरिमाणराशिनया ताकूंफेरिपूर्वोक्तविधानकरित्रैराशिकात्रयनि
ष्टापनकरियेतबजोकोईमध्यअनंतानंतकाभेदरूपराशिनया ताकूंके
वलज्ञानकेअविभागप्रतिछेदनिकासमूहपरिमाणविषैघटायफेरिमि
लाइए तबकेवलज्ञानकेअविभागप्रतिछेदरूपउत्कृष्टअनंतानंतपरि
माणराशिहोयहै॥ बहुरिउपमाप्रमाण॥ आवश्यकारकसिद्धराहैं॥ पल्य

सागर सूच्यंगुल प्रतरंगुल घनांगुल जगत्श्रेणी जगत्प्रतर जगत्घन त
हां पल्यतीनप्रकारहैं व्यवहारपल्य उद्धारपल्य अद्धापल्य तहां व्यवहार
ल्यतौ रोमनिकीसंख्यामात्रही है बहुरि उद्धारपल्य निकरिदीपसमुद्रनिकीसं
ख्या गणिए है बहुरि अद्धापल्यकरि कर्मनिकी स्थितिदेवादिककी आयुकी
स्थिति गणिए है अर बहुनिका परिमाण जाननेकूं परिभाषा करै है तहां अंग
लपुद्गलके परमाणूनिका स्कंध तौ एक अवसन्नासन्न नामा है तातैं आठ
आवगुणें इक मतैवारहस्वानुजाननें सन्नासन्न एटरेणु त्रसरेणु रथ
रेणु उत्तमभोगभूमिबालकका अग्रभाग मध्यमभोगभूमिका जघन्य
भोगभूमिका कर्मभूमिका लीख सरसव यव अंगुल एवारहैं सो अंगुल
गुलनया सो उत्सेधअंगुल है सोया करि नारकी तिर्यंच देव मनुष्यनिका शरा ४५

रीरका प्रमाण वर्णनकी जिए है अर देवनिके नगर नगरमंदिरनिके वर्णनकी
निए है बहुरि उत्सेधअंगुलतैं पांचसैं गुणें प्रमाणांगुल है यातैं द्वीपसमुद्र
पर्वत आदिनिका परिमाण वर्णनेंहै बहुरि स्वात्मांगुल जहां जैसा मनुष्यनि
का होय तिसपरिमाण जानना बहुरि छहअंगुलका पाद होय दोयपादका
एक विलस्ति होय दोय विलस्तिका एक हाथ होय दोयहाथका एक वीत
होय दोयवीतका एक धनुष होय दोयसहस्रधनुषका एक कोस होय चारि
कोसका एक योजन होय सो इहां परिमाणांगुलकरि नियमा अन्यत्रैसा जानना
प्रमाण योजन तौ ईका गोडा चौडा लंबाए करवाडा तामैं उत्तमभोगभूमि विषैं उपज्या
जोजन मैं तैलगाय सात दिन ताईकामी दाका बाल काग्रभाग तिनिकरि छे
दिस मोनप्रत्यंत गादा भरना तामैं रोम पैंतालीस अंकनिपरिमाण मावै तिन

निकूं एक एक रोम खंड कूं सो सो वर्ष गए काढ़ै जितने वर्ष होय सो व्यवहार पल्य
कहिजे तिनि वर्ष निके असंख्यात समय होय हैं। बहुरि तिनि रोमके एक एक के
असंख्यात को द्वितीय के समय होय तेते तेते खंड कीजिए सो उद्धार पल्यके रो
म खंड होय तेते समय उद्धार पल्यके हैं। बहुरि इनि उद्धार पल्यके एक एक रोम
खंड के असंख्यात वर्ष के समय जेते होय तितने खंड कीजिए असा पल्यके रो
म खंड हैं। ताके समय इतने ही हैं। बहुरि दस कोड़ाकोड़ी पल्यका एक सा ग
र होय हैं। बहुरि एक प्रमाणांगुल असा प्रमाणांगुल लंबा एक प्रदेश प्रमाण चौड़ा ऊंचा
क्षेत्र कूं श्रेण्यंगुल कहिए हैं। याके प्रदेश असा पल्यके अर्द्धछेदनिकूं विरलनि
करि एक एक असा पल्यति निपरिस्थापि परस्पर गुणिये जो प्रमाण आवै
तेयाके प्रदेश हैं। बहुरि याका वर्ग कूं प्रतरांगुल कहिए। बहुरि घनश्रेण्यंगुलके घ

नकूं घनांगुल कहिए। एक श्रेणि चौड़ा तेता ही लांबा ऊंचा कूं घनश्रेणि कहिए।
बहुरि सात राजू लांबा एक प्रदेश प्रमाण चौड़ा ऊंचा क्षेत्र कूं जगत्श्रेणी कहिए। या
की उत्पत्ति ऐसे जो असा पल्यके अर्द्धछेदनिका असंख्यातवां भाग का प्रमाण कूं वि
रलन करिए एक एक परि घनांगुल देय परस्पर गुणे जो राशि निपजै सो श्रेण्यं
गुली है। बहुरि जगत्श्रेणी का वर्ग सो जगत्प्रतर कहिए। बहुरि जगत्श्रेणी का घन
सो जगत्घन कहिए। सात राजू चौड़ा लांबा ऊंचा कूं जगत्घन कहिए। यह लोक के
प्रदेशनिका परिमाण है। सो नीमध्य असंख्यात के भेद हैं। ऐसैं एगणितसंदोपक रि
कहे। बहुरि गणितकाकथन त्रिलोकसार तैं जानना। ऊ
र्ध्व तौस्तोक पुद्गल परमाणु क्षेत्र मैं असा का का प्रदेश का काल मैं समय नाम मैं अ
विभाग प्रतिच्छेद इनि च्यारौं ही कौं परस्पर प्रमाण संज्ञा है सो यातिसंख्यातौ है

अवधिसंबंधिद्रव्यमें तौभद्रास्कंधक्षेत्रमें आकाशकालमेंतीनूंकाल जावमेंके
वलज्ञानसेंसेंजाननां। वक्रिकालमेंएकआवलीके जघन्ययुक्तअसंख्यात
समयहैं असंख्यातआवलीकामूर्त्तहै तीसमूर्त्तकादिनरातिहैं तीस
दिनरातिकाएकमासहैं। बारा मासकाएकवर्षहैं इत्यादिजाननां आगैअ
धमद्वीलोकाकाशकास्वरूपकहैहैं। सद्वायासमेणंतं तस्सयवक्रम
क्षसंद्विपोलोउ सोकेणविणेयकउं एमधरिउंहिरिहरादीहिं॥१॥ आ
काशद्रव्यहैं ताकाक्षेत्रप्रदेशअनंतहैं ताकावक्रमध्यदेसकहिए वीचिहीवी
चिकाक्षेत्रताविषैतिष्टैअसालोकहै सोकाकूकरिकीयानांहीहैं तथाकोई
हरिहरादिकरिधास्याराख्यानांहीहैं। केईअन्यमतीकहैहैं जोलोक
कीरचनाब्रह्माकरैहै तथाप्रलयहोयहैंतबसर्वस्महोयजामहैं ब्रह्मकीस ४७

सामात्रहैरेजायहैं वक्रिब्रह्मकीसत्तामेंसृष्टकीरचनांहोयहैं इत्यादिअ
नेककल्पितकहैहैं ताकानिषेधइससूत्रतैंजाननां। लोककाकूकरिकीया
नांही काकूकरिधास्यानांही काकूकरिविनसैनांही जैसाहैतैसासर्वज्ञनैरे
ख्याहैसोवक्रस्वरूपहैं आगैंइसलोकविषैंकदाहैसोकहैहैं। अणो
णपवेसेणय दव्वाणं अवणं नवेलोउ दव्वाणं णिच्चत्तो लोयस्सविमुणह
णिच्चत्तं २ जीवादिकद्रव्यनिकाप्रस्परएकक्षेत्रावगाहरूपप्रवेशक
रिए मिलापरूपअवस्थानसोलोकहैसोद्रव्यहैं तेनित्यहैयातैंलोकभी
नित्यहैअैसाजानकरना। अटद्रव्यनिकासमुदायसोलोकहैं तेद्रव्यनित्य
हैं तातैंलोकभीनित्यहैही ब आगैंकोईतर्ककरैजोनित्यहैं तौउपजैविनसैको
नहैं ताकासमाधानकासूत्रकरैहैं। परिणामसहावादो पडिसमयंप

DR BHAU DAJI MEMORIAL

रिणमंतिदव्वाणि॥तेसिंपरिणमादो॥लोयस्सविमुणहपरिणमं॥३॥नीयो॥॥
यालोकमेंछहद्रव्यहैं॥तेपरिणमस्वभावहैयातैंसमयसमयपरिणमैंहैंतिन
केपरिणमनतैंलोककैनीपरिणमजानहु॥ब॥नीयो॥॥इमतैंहैपरिणमी
है॥लोकहैसोद्रव्यनिकासमुदायहैं॥यातैंद्रव्यनिकेपरिणमहैसोलोककैनी
परिणमन्याया॥कोईपूछैपरिणमकहा॥ताकाउत्तरपरिणमनामपरिजा
यकाहै॥जोएकअवस्थारूपद्रव्यथासोपलटिद्रव्यावस्थारूपहोनां॥जैसैंमांटी
पिंडअवस्थारूपथीसोपलटिघटवस्यांअैसैंपरिणमकास्वरूपजाननां॥सो
लोककाअाकारनित्यहै॥अरद्रव्यनिकीपर्यायपलटैहैं॥यातअपेक्षापरिणमक
हिए॥अागैंयालोककाअाकारमनमैंविचैधारिभासादिकहैहैं॥॥ सत्तेक
पंचद्रक्का॥मूलेमज्झेतहेवबंभेतेलोयंतेरज्जुपुव्वापरदोयविच्चारो॥४॥ ४८

लोककाअधवपश्चिमदिसाविषैमूलकहिएनीचैतौसातराजूकाविस्तारहै॥
वहरिमध्यकहिएवीचिएकराजूकाविस्तारहै॥वहुरिऊर्ध्वब्रह्मस्वर्गकैअा
तमाचराजूकाविस्तारहै॥वहुरिलोककाअंतविषैंएकराजूकाविस्तारहै॥
॥॥ लोकनीचैकैनागविषैंपूर्वपश्चिमदिशाविषैंसातराजूचौडाहैं॥तहांतै
अनुक्रमसेंघटताघटतामध्यलोकएकराजूरह्या॥अैसैंहोतैंऊर्ध्वगमनअ १
धरिएतैंसाअाकारभया॥अागैंदक्षणउत्तरविस्तारवांकाकहैहैं॥॥
॥दक्षणउत्तरदोपुण मैत्तेसत्तविरुज्जुहवेतिसवछ॥उदोचउदसरज्जू॥सत्तविर
रज्जुघणोलोउ॥५॥॥॥ लोकहैसोदक्षणउत्तरदिसाकूंसर्वउंचाईपर्यंतसातरा
जूविस्तारहैं॥ऊंचाचौदहराजूहै॥वहुरिसातराजूकाघनप्रमाणहैं॥ब॥॥॥द
क्षीणउत्तरकूंसर्वत्रसातराजूचौडाहै॥ऊंचाचौदहराजूहै॥अैसालोककाघन

फलकरिए तवतीनसैतियालीसराजूहोय समानक्षेत्रखंडकरिएककेऐराजूचौडाल
वाऊंचाखंडकरिएताकूंघनफलकहिए ॥ ब ॥ आगैंऊंचाईकेनेदकहैं ॥ मेरुस
हिछत्ताए सत्तविरज्जूरूवेंहोलोई ॥ उड्ढमिउद्दलोई ॥ मेरुसमोमज्झिमोलोई ॥ ई ॥
॥ अर्थ ॥ मेरुकेनीचेंकेजागविषैंसातराजूअधोलोकहैं ॥ उपरिसातराजूऊर्द्धलोकहै
॥ मेरुसमानमध्यलोकहै ॥ भावार्थ ॥ मेरुनीचेसातराजूअधोलोक ॥ ऊपरिसातराजू
र्द्धलोक ॥ बीचिमेरुसमानसंतांमेंराजूलाषजोजनमध्यलोक ॥ ऐसैंतीनलोकका विचि
त्रजानना ॥ ब ॥ आगैंलोकसद्दकाअर्थकरैहैं ॥ गाथा ॥ दीसंतिजछज्जीवा
दीयासन्नएलोई ॥ तस्ससिहरंमिसिद्धा अत्तविहीणाचिरायंतो ॥ भावार्थ ॥ जि
हांजीवआदिकपदार्थदेषिएहै ॥ तालोककहिए ताकेशिषरउपरिअनंतेसिद्धवि
राजैहैं ॥ भावार्थ ॥ लोकदर्शनेनाभावाकरणमेंधातुहैताकेआश्रयार्थविषैंअका

रप्रत्ययतैंलोकशब्दनिपजैहैं ॥ तातैंजामेंजीवादिकद्रव्यदेषिएताकूंलोककहि
ए ॥ वक्रिताकेऊपरिअनंतविषैंकर्मरहितशुद्धजीवअनंतगुणनिकरिसहि त
अविनाशीअनंतविराजैहैं ॥ ब ॥ आगैंयालोकविषैंजीवआदिद्रव्यहैं ति
निकावर्णनकरैहैं ॥ तहांप्रथमहीजीवद्रव्यकूंकहैहैं ॥ गाथा ॥ एइंदिएहिभरिदो
पंचपयारेहिसव्वदोलोई ॥ तसनाडीएबितसा एवाहिराहैंतिसव्वत्थ ॥ भावार्थ
॥ यहलोकपृथ्वीअपतेजवायुवनस्पतिऐसेपंचप्रकारकायकेधारकजेएकेंद्रिय
जीवतिनिकरिसर्वक्षेत्रभर्याहै ॥ वक्रिवसजीवत्रसनाडीविषैंहीहैवाहिनांही
है ॥ तीसरा ॥ जीवद्रव्यउपयोगलक्षणसमानपरिणामकीअपेक्षासामान्यकरिएक
है ॥ तथापिवस्तुनिन्नप्रदेशाकरिअपनेअपनेस्वरूपकूंलीएंन्यारेन्यारेअनंतेहैं
तिनिमेंजेएकेंद्रियहैंतेतौसर्वलोकमैंहैं ॥ वक्रिवेंद्रियतेंद्रियचतुरिंद्रियपंचेंद्रिय

सहैतेत्रसनांहीहीविभेदहै॥अागैंवादरसूक्ष्मादिभेदकहैहैं॥गाथा॥पुलावियपुलावि
॥थूलाजीवाइंतिसाहारा॥छविहसुहुमाजीवा॥लोयायासेविसव्वत्थ॥१॥अर्थ॥
जेजीवआधारसहितहैं॥ते तोस्थूलकहिएवादरहैतेपर्याप्तभीहै॥वफुरिअपर्या
प्तभीहै॥वफुरिजेलोकाकाशविषैसर्वत्रअप्रअप्राधारसहितहैं॥तेजीवसूक्ष्महैतेछ
हप्रकारहैं॥ब॥अैसेवादरसूक्ष्मकौनकौनहैंसोकहैहैं॥गाथा॥पुढवीजलजिवा
उ॥चतारिविहोतिवायरासुहुमा॥सासारणपत्तेया॥वणप्फदीयचमाछविहा॥१॥
नाथार्थ॥पृथ्वीजलअग्निवायुएचारतोबादरभीहैतथासूक्ष्मभीहैं॥वफुरिपांचई
वनस्पतिहैंसोप्रत्येकसाधारणभेदकरिदोयप्रकारहैं॥ब॥अागैंसाधारणप्रत्ये
ककेवादरसूक्ष्मएककहैहैं॥गाथा॥साहारणविहुविहा॥अणाइकालाइसा
इकालाय॥तेचियवादरसुहुमा॥सेसापुणवायरासव्वे॥१॥नाथार्थ॥साधारणजीव ५०

दोयप्रकारहै॥अनादिकालाकहिएनित्यनिगोद॥साद्दिकालाकहिएइतरनिगोद॥तेदो
ऊवादरभीहै॥सूक्ष्मभीहै॥वफुरिशेषाकहिए प्रत्येकवनस्पतीमात्रसतेसर्ववादर
हीहैं॥ना॥पूर्वोक्तसाथाजोसूक्ष्मछहप्रकारहै॥तेपृथ्वीजलतेजवायुतौपहलीगा
थाहीमेंकहे॥वफुरिनित्यनिगोदइतरनिगोदएदोयअैसेंछहप्रकारतोसूक्ष्मजाननें॥
वफुरिछहप्रकारतोए॥अरअवसेषसर्वतेवादरजाननें॥अागैंसाधारणकास्वरूपक
हैहैं॥गाथा॥साहारणणिजेसिं॥आहारुस्सासकायआउणि॥तेसाहारणजीवाणं॥
ताणंतप्पमाणाणं॥२॥अर्थ॥जिनिअनंतप्रमाणजीवनिकेआहारश्वासकाय
आयुसाधारणकहिएसमानहैं॥तेसाधारणजीवहैं॥ना॥एकजीवआहारक
रतैंहीअनंतानंतजीवनिकाआहार॥एकजीवसासोश्वासलेसोहीअनंतानंत
जीवनिकासासोश्वास॥एकजीवकासरीरसोहीअनंतानंतकाशरीर॥एकजीव

का अायु सोही अनेता अंतका अायु॥ जैसैं समान तातैं साधारण नाम जानना॥ अ
गैं सूक्ष्म बादर का स्वरूप कहैं हैं॥ गाथा॥ णय जेसिं पडिखलणं॥ पुढवी तोएहिं
अगिवाएहिं॥ तेजाए सुक्ष्मकाया॥ इयरा पुण थूलकाया॥ २३॥ अर्थ॥ नि
निजीव निका पृथ्वी जल अगनि पवन इनि करि रुकना नहीं होय तेजीव सूक्ष्म जान
फु॥ बकुरि जे इनि करि रुकें ते बादर जानफु॥ ब॥ अागैं प्रत्येक कौ बात्रस कूं कहैं हैं॥
गाथा॥ पत्तेया विहु विहा॥ णिगोदसहिदा तहेवरहिया य॥ डुविहा होंति तसा वि
॥ बितिचउरकात हेव पंचरका॥ २४॥ अर्थ॥ प्रत्येक पंवनस्पति॥ भी दोय प्रकार हैं॥
निगोद सहित॥ तैसैं ही निगोद रहित हैं॥ बकुरि त्रस भी दोय प्रकार हैं॥ बेइंद्रिय तेंद्रि
य॥ चतुरिंद्रिय॥ जैसैं तो विकलत्रय॥ बकुरि तैसैं ही पंचइंद्रिय हैं॥ ब॥ भावार्थ॥ निसक
नस्पति के अाश्रय निगोद पाईए सो सो तो साधारण हैं॥ याकौं सप्रतिष्ट तनीक

हिए॥ बकुरि जिसके अाश्रय निगोद नांही॥ ताकूं अप्रतिष्ट कहिए॥ याकूं अप्रति
ष्ट तनीक कहिए हैं॥ बकुरि बेंद्रिय अादिक कूं त्रस कहिए॥ अागैं पंचेंद्रिय नि के भेद
कहैं हैं॥ गाथा॥ पंचरका विय तिविहा॥ जलथल अायासगामिणो तिरिया॥ मनुया
ते हि विहा॥ मणेण जुत्ता अजुत्ता य॥ २५॥ अर्थ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंच हैं ते जलचर थ
लचर नभचर जैसैं तीन प्रकार हैं॥ बकुरि ते अप्रत्येक मनकरि युक्त सैनी नीहैं ते अ
मनरहित असैनी नीहैं॥ ब॥ बकुरि इनि के भेद कहैं हैं॥ गाथा॥ तेविपुणो चियदुवि
हा॥ गब्भजजम्मा तहेवसमुछा॥ जोगजुवा गब्भजुवा॥ थलयरनभगामिणो सणी
ई॥ भावार्थ॥ तेछह प्रकार कहे॥ जे तिर्यंच ते गर्भज नहीं हैं॥ बकुरि सम्मूर्छन नहीं हैं॥ ब
कुँ इनि विषैं जे जोगजमिके तिर्यंच हैं ते थलचर नभचर ही हैं॥ जलचर नांही हैं॥ ब
कुरि ते सैनी ही हैं॥ असैनी नाही हैं॥ ब॥ अागैं अाए वे जीवसमास निकूं कहैं हैं

तहांपिच्यासी भेदतिर्यंचनिकेहैं ताकी॥ गा॥ छ विग जलजुक्खा तिविहासंमू
छिमो वितेवीसा॥ इहिपणसीदीभेदा॥ सव्वेसिंहोंति तिरियाणं॥२७॥ अर्थ॥ सर्वही
तिर्यंचनिकेपिच्यासीभेदहैं॥ तहां गर्भजनके आवते तौपर्याप्तअपर्याप्तकरि
सोलहभए॥ बहुरिसम्मूर्छिनकेतेईसभेदतेपर्याप्तअपर्याप्तलब्ध्यपर्याप्तकरि
एहत्तरिभए॥ ऐसैपिच्यासीहैं॥ नीवर्ण॥ पूर्वैकदेशैकर्मभूमिकेगर्भज जलचर थल
च चरनैभ्रचरतेसैनीअसैनीकरिछहभेद॥ बहुरिभोगभूमिकेथलचरनभश्चरसैं
नीए आवहीपर्याप्तअपर्याप्तभेदकरिसोलह॥ बहुरिसम्मूर्छिनके पृथ्वीअप
तेजवायु॥ नित्यनिगोदइतरनिगोदकेसूक्ष्मबादरकरिचारह॥ बहुरिवनस्प
तीसप्रतिष्ठितअप्रतिष्ठितऐसैचौदहतौए केंद्रियकेभेद॥ बहुरिविकलत्रय
चर तीन॥ बहुरिपंचेंद्रियकर्मभूमिकेजलथलचरनभश्चरसैनीअसैनीकरिछह ५२

भेद॥ ऐसैसंवमिलितेईसताकेपर्याप्तअपर्याप्तलब्ध्यपर्याप्तकरिउणहत्तरि
भए ऐसैपिच्यासीहोवै॥ ब॥ आगैमनुष्यनिकेभेदकहैं॥ गाथा॥ अज्जवमिलेछ
खंडे॥ भोगभूमीसुविकुभोगभूमीसु॥ मएकवीसवेतिदुविहा॥ णिवित्तिअपुण्णा
पुण्णा॥२८॥ अर्थ॥ मनुष्यआर्यखंडविषैंतथाम्लेछखंडविषैंतथाभोगभूमिवि
षैं॥ तथाकुभोगभूमिविषैंतेआहीपर्याप्तनिर्वृत्यपर्याप्तकरिआठभेदभए
ब॥ बहुरि॥ गा॥ संमुछियामणुस्सा॥ अज्जवखंडेसुहोंतिणियमेण॥ तेपुणलद्धि
अपुण्णा॥ णारयदेवावितेदुविहा॥२९॥ अर्थ॥ सम्मूर्छिनमनुष्यआर्यखंडही
केविषैंनियमकरिहोयहैं॥ तेलब्ध्यपर्याप्तकहिएहैं॥ बहुरिनारकतथादेवतेप
र्याप्तकनिर्वृत्यपर्याप्तकभेदकरिदोयभेदहैं॥ ऐसैंतिर्यंचकेभेदपिच्यासीमनु
ष्यकेभेदछ॥ नारकदेवकेदोय॥ सबमिलिभया एवेभेदभए॥ ब॥ बहुरितिनिकोंसा

DR BHAU DAJI MEMORIAL डाक्टर भाऊदाजीदुस्तारकरसंस्थानम्

मानताकरिनेलेकरिकहिएसंक्षेपकरियेसंग्रहकरिकहिए॥ताकूंसमासकहिए॥सो॥
यहांबहुतजीवनिकासंक्षेपकरिकहनांसोजीवसमासजाननां॥ऐसैंजीवसमास
निकूंकहे॥अागैंपर्याप्तकावर्णनकरैहैं॥गा॥घा॥अाहारसरीरेंदियस्सासुस्सास
भासमणुसाएं॥परिणयैवावारेसुय॥जाउछचैवसत्तीउ॥२०॥अर्थ॥जोअाहार
शरीरइंद्रियसासोछ्वासजाभाषन॥इनिकापरिणमनकीप्रवृत्यविषैंसामर्थसो॥
छहप्रकारहैं॥तात्पर्यअात्माकैयथायोग्यकर्मकाउदयहोतैंअाहारादिकग्रह
णकीशक्तिकाहोनांसोसक्तिरूपपर्याप्तकहिएसोछहप्रकारहैं॥ब॥अागैंशक्ति
काकार्यकहैहैं॥गाथा॥तस्सेवकारणेणं॥पुग्गलखंधाणजाकुणियत्तिसाय
जातीभणदिसुत्तेजिणवरिंदेहिं॥२१॥अर्थ॥तिसशक्तिप्रवृत्तिकीपूर्णताकूंका
रणजेपुद्गलकेस्कंधतिनिकाप्रगटपणैंनिष्पत्तिकहिए॥पूर्णताहोनांताकूंय॥ ५३

र्याप्तअैसाजिनेंद्रदेवनैंकह्याहै॥अागैंपर्याप्तनिर्वृत्यपर्याप्तककालकूंकहैहैं॥
गाथा॥पज्जत्तिंगिगहत्तो॥मणुपज्जत्तिंणजावसमएहि॥ताणिवत्तिअपुण्णो॥मण
पुण्णोभणदेपुणो॥२२॥अर्थ॥मनुजीवपर्याप्तकूंग्रहणकरताकेताजेतेमनपर्या
प्तकूंपूरणनकरैतेतैंनिर्वृत्यपर्याप्तकहिए॥बहुरिजबमनपर्याप्तपूर्णहोयत
बपर्याप्तकहिए॥तात्पर्यइहांसैनीपंचेंद्रियजीवकीअपेक्षाममबुद्धिकरिअैसैंकथ॥
नकीयाहै॥अन्यग्रंथनिमैंजेतैंशरीरपर्याप्तपूर्णनहोयतेतैंनिर्वृत्यपर्याप्तहैं
॥ऐसैंकथनसर्वजीवनिकाकह्याहै॥अागैंलब्ध्यपर्याप्तकास्वरूपकहैहैं॥गा॥
॥अस्सासठारसमेभागे॥जेमरदिएयसमाणे॥एकाविय जातीलद्धियपू
णोहवेसोदु॥२३॥अर्थ॥जोजीवसासकेअठारवैंभागमैंएकभीपर्याप्तपूरणनक
रैसोजीवलब्ध्यपर्याप्तकहिए॥ब॥अागैंएकेंद्रियादिजीवनिकेपर्याप्तनिकी

संज्ञी कहैहै ॥ लद्धियपुन्नेपुन्ने पज्जतीएयरकवियरसणीणं ॥ चउपण छक्क
कमसो पज्जतीए वियाणेह २४ ॥ ए केंद्रियके च्यारि विकलत्रयके पांच सैनी
पचेंद्रियके छह ऐसें क्रमसैं पर्याप्त जानूं ॥ बहुरि लब्ध्यपर्याप्त कहैसो अपर्याप्त है ॥
याके पर्याप्त नांही ॥ ए केंद्रियादिक के क्रमतैं पर्याप्त कहे ॥ इहां असैनी कानां
मलीया नहीं तहां तौ सैनीके छहकहे तैं पांच जानने ॥ बहुरि निर्वृत्यपर्याप्त ग्रहण
की एही है पूर्ण होसी ही तातैं जो संस्या कही है सो ही है ॥ बहुरि लब्ध्यपर्याप्त यद्य
पि ग्रहण कीया है तथापि पूरण होय सक्या नांही तातैं ताकूं अपूर्णक सा ऐसा
सूचै है ॥ ब ॥ ऐसें पर्याप्त का वर्णन कीया ॥ आगैं प्राणनिका वर्णन करै हैं ॥ तहां प्रथ
मही प्राणनिका स्वरूप वा संस्या कहै है ॥ गा ॥ ॥ मणवयणकायइंदिय णिस्सा
सुस्सासआउसहियाणं ॥ जेसिं जोए जम्मदि मरदि विउगम्मि ते विदहपाणा ॥ २५ ॥ ५५

॥ अर्थ ॥ जे मनवचनकायइंद्रियसासोछासआयुहैतिनिके संयोगतैं तौ उपजैजी
वै ॥ बहुरि इनिके वियोगतैं मरैते प्राणकहिए तेदस हैं ॥ गा ॥ जीवजैसा प्राणधा
रणअर्थ है सो व्यवहारनयकरि द्रव्यप्राण है तिनिमैं यथायोग्य प्राणसहितजी
वै हैं ताकूं जीवसंज्ञा है ॥ आगैं एकेंद्रियादि जीवनिके प्राणनिकी संस्या कहै हैं ॥
॥ अ ॥ एयके चउपाण विति चउविंद्रियअसण्णिसण्णीणं ॥ छहसत्तअट्ठनवयं दस्सु
ण्णंकमेपाणा ॥ २६ ॥ अर्थ ॥ ए केंद्रियके च्यारि प्राण हैं ॥ बेंद्रियतेंद्रियचउरेंद्रियअ
सैनीपचेंद्रियसैनीपचेंद्रियनिके पर्याप्तनिके अनुक्रमतैं छहसात आठनवदश
प्राण है ॥ ब ॥ ए प्राण पर्याप्त अवस्थाविषैं कहे आगैं इनिही जीवनिके पर्याप्त अव
स्थाविषैं कहै हैं ॥ गा ॥ इगिविगलपुण्णाणं इगितिचउरक्खेतिपंचगुणं ॥ तिय
चउपण छद्दसनय क्कमेणपाणमुणेयव्वा ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ होयप्रकारके अपर्याप्त

जेएकेंद्रियद्वींद्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रियअसैनीतथासैनीपंचेंद्रियइनिकेतीनच्यारि
पांचछहसातअसैनअनुक्रमतैंप्राणजाननें ॥ निर्वृत्त्यपर्याप्तलब्ध्यपर्याप्त
केंद्रियकेतीनवेंद्रियकेच्यारितेंद्रियकेपांचचतुरिंद्रियकेछह असैनीसैनीपंचें
द्रियकेसात असैसैप्राण जाननें ॥ आगैविकलत्रयजीवनिकाविकाणांकहैं
हैं ॥ वितिचउररकाजीवा हवंतिणियमेणकम्मभूमीसु चरमेदीवेअड्ढे ॥ च
रमसमुद्देविसट्ठेसु ॥२०॥ अर्थ ॥ द्वींद्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रिएविकलत्रयकहीवे
तेजीवनियमकरिकर्मभूमिविषेंहीहोयहैं तथाअंतकाआधाद्वीपतथाअं
तकास्वयंभूरमणसमुद्रविषेंहोयहैं भोगभूमिविषेंनहोयहैं ॥ पंचभरतपंचऐरा
वतपंचविदेहए कर्मभूमिकेक्षेत्रहैं ॥ तथाअंतकास्वयंप्रभद्वीपकेवीचिस्वयंप्र
भपर्वतहै तातैंपरैंआधाद्वीपतआअंतकास्वयंभूरमणसमुद्रएतीजाय ५५

गाविकलत्रयहैं ॥ औरजायगानांही ॥ आगैंआढाईद्वीपबाह्यतिर्यंचहैंतिनि
कीअवस्थाहैंमनुष्यक्षेत्रसारिषीहैंअसैंकहैंहैं ॥ गाथा ॥ माणुसखित्तस्सबहिचरमेदी
वस्सअद्धमेजाव ॥ सव्वेविपतिरिच्छा हिमवदितिरिएहिंसारिच्छा ॥२१॥ अर्थ ॥ मनु
ष्यक्षेत्रतैंवारैंमानुषोत्तरपर्वततैंपरैंअंतिकाद्वीपजोस्वयंप्रभनामताकाआधाकेउ
रैंवीचिकेसर्वद्वीपसमुद्रकेतिर्यंचहैंतेहैमवतक्षेत्रकेतिर्यंचनिसारिमैंहैं ॥ आ
नावाधैहैमवतक्षेत्रमैंजघन्यभोगभूमिहैसोमानुषोत्तरपर्वततैंपरैंअसंख्यात
द्वीपसमुद्रअथास्वयंप्रभनांमांअंतकाद्वीपताईसमस्तमैंजघन्यभोगभूमिकी
रचनांहैं तहांकेतिर्यंचनिकीआयुकायाहैमवतक्षेत्रकेतिर्यंचनिसारिषीहै ॥
आगैंजलचरजीवनिकाविकाणांकहैहैं ॥ गाथा ॥ लवणेएक्कालोएअंतिमज
लहिम्मिजलयरासंति सेससमुद्देसुपुणेएजलयरासंतिणिमणु ॥२२॥

लवणोदसमुद्रविषैबडूरिकालोदसमुद्रविषैं॥तथाअंतकास्वयंभूरवणसमुद्रवि
षैंजलचरजीवहैं॥बडूरिअवशेषवीचिकेसमुद्रनिविषैंनियमकरिजलचरजी
वनाहींहैं॥ब॥आगैंदेवनिकेविकाएकहैहैं॥तहांप्रथमभवनवासीव्यंतरनिकेक
हैहैं॥॥॥॥खरभायपंकभाए॥भावणिदेवाणंहोंतिभवणाणि॥विंतरदेवाणंत
हा॥डुएहंपियतिरियलोए॥३१॥अर्थ॥खरभागपंकभागविषैंभवनवासीनिके
भवनहैं॥तथाव्यंतरदेवनिकेनिवासहैं॥बडूरिऊनिदोऊनिकेतिर्यग्लोकविषैंनी
निवासहैं॥॥॥॥मेरुलीएपुढवीरयणाएकलासयंअसीहजारयोजनकीमोटीता
केतीनभागतामेंखरभागसोलहहजारयोयनकातताविषैंअसुरकुमारविनांभव
कुमारभवनवासीनिकेभवनहैं॥तथाराक्षसकुलविनांसातकुलव्यंतरनिके
निवासहैं॥बडूरिदूसराएकभागचौरासीहजारयोजनकातामेंअसुरकुमार

भवनवासीतथाराक्षसकुलव्यंतरबसैंहैं॥बडूरितिर्यग्लोकजोमध्यलोकअसं
ख्यातेद्वीपसमुद्रतिनिमैंभवनवासीनिकेनी भवनहैं॥बडूरिव्यंतरनिकेनीनिवा
सहैं॥ब॥आगैंज्योतिषीतथाकल्पवासीतथानारकीनिकीवसतिकहैहैं॥॥॥
जोइसियाएविमाणा॥रज्जुमित्तेखितिरियलोए॥चिकप्पसुरावुढ्ढिया॥अट्ठलो
एहोंतिएरइया॥३२॥अर्थ॥ज्योतिषीदेवनिकेविमानएकराजूप्रमाणतिर्यक्लो
कअसंख्यातद्वीपसमुद्रहैतिनिकेउपरितिष्टैहैं॥बडूरिकल्पवासीऊर्द्धलोकविषैं
हैं॥बडूरिनारकीअधोलोकविषैंहैं॥ब॥आगैंजीवनिकीसंख्याकहैहैं॥तहांतेज
वातकायनिकेजीवनिकी॥॥॥॥थावरएकतिजुदा॥घणअंगुलियाअसंख्व
भागेदु किंचूणलोयमित्ता॥तेऊवाऊजहाकमसो॥३३॥॥॥॥अग्निकायवातका
यकेबादरपर्याप्तसहितजीवहैं॥तेघनअंगुलीकेअसंख्यातवेंभागतथाक्यों

घाटिलोकके प्रदेशप्रमाणे यथाक्रम जानने ॥ गाथा ॥ अग्निकायके घनअं
गुलीके असंख्यातवें भाग वातकायके क्षेत्र घाटिलोक प्रदेशप्रमाणे है
॥ आगे पृथ्वी आदिककी ॥ गा ॥ पुढवीयतोयसरीरा ॥ पत्तेयापियपइट्ठियाइ
यरा होंति असंखासेढी ॥ पुण्णपुण्णायतस्सयतसा ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ पृथ्वीकायक
अपकायक प्रत्येकवनस्पतिकायक प्रतिष्ठितवा अप्रतिष्ठित तथा त्रसए सा
रेपर्याप्त अपर्याप्त जीवहैं ते जुदे जुदे असंख्यात जगत्श्रेणी प्रमाणहै ॥ बा ॥ गा ॥
बादरलद्धियपुण्णा असंखलोगाहवंतिपत्तेया ॥ तह अपुण्णसुहुमा ॥ पु
ण्णविहसेसगुणगणया ॥ ३५ ॥ नाथा ॥ प्रत्येकवनस्पतिकायक तथा बादरल
ब्धिपर्याप्तक जीवहैं ते असंख्यातलोकप्रमाणहै ॥ तैसेही सूक्ष्म अपर्याप्तक
असंख्यातलोकप्रमाणहै ॥ बकुरि सूक्ष्मपर्याप्तक जीवहैं ते संख्यातगुणेहैं ॥

॥ गा ॥ सिद्धासेतिअणंता ॥ सिद्धाहिंतोअणंतगुणगुणिया ॥ होंतिलिंगेदा
जीवा ॥ णागमणंतंअणायं ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ सिद्धजीव अनंतहैं ॥ बकुरि सिद्धमि
लें अनंतगुणेनिगोदजीवहैं ॥ बकुरि सिद्धनिकें अनंतवें भाग अव्यजीवहैं ॥
॥ गा ॥ समुच्छियाकुमणुया ॥ सेटियसंखिज्जभागमित्ताकुगब्भमणुया ॥
सव्वे ॥ संखिज्जाहोंतिणियमेण ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ सम्मूर्छनमनुष्यहैं ते जगत्श्रेणी
के असंख्यातवें भागमात्रहैं ॥ बकुरि गर्भजमनुष्यहैं ते नियमकरि संख्यात
हीहैं ॥ छ ॥ आगे संतरनिरंतरकूकहैं ॥ गा ॥ देवानिरयाविय ॥ लद्धियपु
ण्णकुसेतराहोंति ॥ समुच्छियाविमणुया ॥ सेसासव्वेनिरंतरया ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ देव
तथानारकीबकुरि ॥ अपर्याप्त ॥ बकुरि सम्मूर्छनमनुष्यए तेतो सांतरकहिए
अंतरसहितहैं ॥ अवशेष सर्वजीवनिरंतरहैं ॥ नाथा ॥ पर्याप्तयेअपर्याप्त

MEMORIAL
Dr BHAU DAJI

वैक्रियवाहीपर्याप्तपावै जे तेवी चिमैं अंतर है ताकूं सांतर कहिए सोइयों होत
जीव अपने अंतर कह्या है। जो देवतथा नारकीतथा मनुष्यतथा लब्धिअपर्या
सक जीवकी उत्पत्ति कोई काल मैं नहोय सो तो अंतर कहिए बहुरि अंतररहित
ऐसो निरंतर कहिए सो वैक्रियकमिश्रकाययोगी जे देवनारकी तिनिका तो वा
रा मुहूर्तका कह्या है कोई ही न उपजै तो वारा मुहूर्त ताईं न उपजे बहुरि सम्मूर्छि
म मनुष्य कोई ही नहोय तो पल्यके असंख्यातवें भागकाल ताईं नहोय ऐसें
अन्यग्रंथनि मैं कह्या है अवशेष सर्व जीव निरंतर उपजै है। ताते जीवनिकी सं
ख्या करि अल्पबहुत्व कहै है। मणुयादो णेरइया णेरइयादो असंखगुणा
गुणिदा सव्वेहवंति देवा पत्तेयवणप्फदी णंतगुणा। मनुष्यनितैं
नारकी असंख्यातगुणे हैं। नारकीनितैं सर्व देव असंख्यातगुणे हैं। देवनितैं ५८

प्रत्येकवनस्पतिजीव असंख्यातगुणे हैं। पंचरका चउरका लद्धियपज्जत्ता तेहवंतेयरका वेयरका दियकमसो विसेसहिदा कमसो सव्वसंखाय। पंचेंद्रियचौइंद्रियतेइंद्रियवेइंद्रियएते अपर्याप्तकजीवसंख्याकरि विशेषाधिक है। किछू अधिक कूं विसेषाधिक कहिए सो एक अनुक्रमतें वधते वधते हैं। चउरका पंचरका वेयरका तहय जाणतेयरका। एतैं देय जाति जुदा जुदा जाननी। याअर्थिया कमेण वा। चौइंद्रियपंचेंद्रियवेइंद्रियतेइंद्रिएपर्याप्त सहितजीव अनुक्रमतें अधिक अधिक जानने। परिवज्जियसुहुमाएइं सेसतिरक्काएपुण्णदेहाएं इक्को भागो हो दि संखातीदा अपुण्णाएं। सूक्ष्मजीवनिकूं छोडि अवशेष पर्याप्ततिर्यंच हैं। तिनिके एक भागतो पर्याप्त है बहुरि एक भाग असंख्यातें अपर्याप्त हैं। तथा बादरजीवनि विषैं पर्या

सथोरहैं॥ अपर्याप्त बकुत है॥ ब॥ गा॥ सुहुमापज्जत्तगाएंएगोनागोहवेइणियमेण॥ सं
खिज्जारवलुनाग॥ तेसिंपज्जत्तिदेहीएं॥ ४३॥ अर्थ॥ सूक्ष्मपर्याप्तजीवसंख्यातभागहै
॥ इतिमैंअपर्याप्तकएकभागहै॥ बा॥ सूक्ष्मजीवनिमैंपर्याप्तबकुतहैं॥ अपर्याप्तथो
रेहैं॥ ब॥ गा॥ घा॥ संखिज्जगुणदेवा॥ अंतिमपदलादोअणुदेवेजो॥ तत्तो असंख
गुणिदा॥ सोहमंजावपडिपल्ले॥ ४४॥ अर्थ॥ देवहैतेअंतमपलजो॥ अणुत्तविमो
णतातैंसेअरनीचेआनतपटलपर्यंतसंख्यातगुणेहैं॥ तातैंपीछैंसौधर्मपर्यंत
असंख्यातगुणेपटलपटलप्रतिहैं॥ ब॥ गा॥ घा॥ सत्तमनारयहितो॥ असंखगुणिदाह
वेतिएइया॥ जावयपढमणारय॥ बकुछुरकाहवेतिहेविछा॥ ४५॥ अर्थ॥ सातवांनरक
तैंनीचैंतैंलेउपरिपहलानरकताईंजीवअसंख्यातअसंख्यातगुणेहैं॥ बकुरिअप
मनरकतैंलेनीचैंनीचैंबकुछुरहैं॥ ब॥ गा॥ कप्पसुरजावणभा॥ वितरदेवातहे॥ ५०॥

वजोडसिया॥ वेहोंतिअसंखगुणा॥ संखगुणहोंतिजोडसिया॥ ४६॥ अर्थ॥ कल्पवा
सीदेवनितैंभवनवासीदेवव्यंतरदेवएदोयराशितोअसंख्यातहैं॥ बकुरिज्योति गुणं
षीदेवव्यंतरदेवनितैंसंख्यातगुणेहैं॥ ब॥ अगेडकेंद्रियादिकजीवनिकीआ
युकहैहै॥ गा॥ पत्तेयाएंआऊ॥ बासंसहस्साणिदहहवेपरमे॥ अंतोमुकत
कुसाहारणसव्वसुहुमाएं॥ ४७॥ अर्थ॥ प्रत्येकवनस्पतिकीउत्कृष्टआयुदसह
जारवर्षकीहै॥ बकुरिसाधारणनित्यइतरनिगोदसूक्ष्मबादरतथासर्वहीसूक्ष्म
पृथ्वी अपतेजवातकायकजीवनिकीउत्कृष्टआयुअंतर्मुहूर्तकीहैं॥ अ॥
गैबादरजीवनिकीकहैहैं॥ ब॥ गा॥ बावीससत्तसहस्सा॥ पुढवीतोयाणंअ
युसंहोहि॥ अगणिंतिकिरिएं॥ तिण्णिसहस्साणिबाऊएं॥ ४८॥ अर्थ॥ पृथ्व
कायकजीवनिकीउत्कृष्टआयुबाईसहजारवर्षकीहैं॥ अपकायकजीव

निकी उत्कृष्ट आयु सात हजार वर्ष की है। अग्निकाय के जीवनिकी उत्कृष्ट आयु तीन
दिन की है। वायुकायिक जीवनिकी उत्कृष्ट आयु तीन हजार वर्ष की है। आगे
वैक्रियआदिक की कहे हैं। ब।।।।। बारस वास सवियके।। एगुणवण्णा दिणाणि
तेयरके। चउरके छ मासा।। पंचरके तीनपल्लाणि।। अण।।।। वैक्रिम जीवनिकी
उत्कृष्ट आयु बारा वर्ष की है। तेंद्रियजीवनिकी उत्कृष्ट आयु गुणचास दिन की है
चौइंद्रियजीवनिकी उत्कृष्ट आयु छह महीना है को।। पंचेंद्रियजीवनिकी आयु
उत्कृष्ट भोगभूमि अपेक्षा तीनपल्य की है। ब।। आगे सर्व ही तिर्यंच मनुष्यनि
की जघन्य आयु कहे हैं। ब।।।। सव्व जहण्ण आयु। लद्धियपुण्ण सव्वजीवाणं
मुहुत्तमहीणमद्धं तं। यजतिजुदाणं णिक्किट्ठं।। अण।।।। लब्धिअपर्याप्तक सर्व ही
जीवनिकी जघन्य आयु अधमहीन मुहूर्त है। यह क्षुद्रभव मात्र जानना एक उछ्वास ६०

के आकार के भाग मात्र है। बहुरि निवृत्ति के लब्धिअपर्याप्त होय है। त्रैसैं कर्मभूमि के तिर्यंच मनुष्य
तिनि सर्व ही पर्याप्त जीवनिकी जघन्य आयु मी अधमहीन मुहूर्त है। सो पहले तैं करि
अधम अंतर्मुहूर्त है। ब।। अब देवनारकी की कहे हैं।।।। देवाणं णारयाणं।। सायरसंख्या
ईवंतितेतीसा। लक्खिदरं च जहण्णं वासाणं दससहस्साणि।। अण।।।। देवनिकी तथा नार
की जीवनिकी उत्कृष्ट आयु तेतीस सागर की है। बहुरि जघन्य आयु दसहजार वर्ष की
है।।।। यहसामान्य देवनिकी अपेक्षा कहे हैं विशेष त्रैलोकसार आदि ग्रंथनितैं जान
नी।ब।। आगे एकेंद्रिय आदि जीवनिकी शरीर की अवगाहना उत्कृष्ट जघन्य दरशा
वनि करि कहे हैं।।।। अंगुलअसंख्यभागो। एयक्कचउक्कदेहपरिमाणं।। जोयणसहस्स
महियं।। पउमंउक्कस्सयं जाण।। अण।।।। एकेंद्रियचतुष्क कहिए पृथ्वीअपतेजवायु
यक जीवनिकी अवगाहना जघन्यतथा उत्कृष्ट घनअंगुल के असंख्यातवें भाग है इसा

सूक्ष्मतथाबादरपर्याप्तिअपर्याप्तिकाशरीरछोटाबडाहैं।तौऊघनांगुलकैअसंख्य
तवैभागहीसामान्यकरिकह्या।विशेषगेमटसारतैंजाननां।बहुरिअंगुलउत्सेध
अंगलआवयवप्रमाएअेणी।प्रमाएंगुलनलेणी।ब।बहुरिप्रत्येकवनस्पतिका
यकविषैउत्कृष्टअवगाहनायुक्तकमलहै।ताकीकिछूअधिकहजारयोजनहैं।ल
ब।वारसजोयणसंखो।कोसतियंगुलेंद्रियासमुद्दिट्ठा।भमरोजोयणमेगं।सह
स्ससमुद्दिदोमच्छे ५२ । वेंद्रियविषैसंखबडाहैताकीउत्कृष्टअवगाहनांबारा
जोजनलेवाहै।तेंद्रियविषैगोम्मिकाकहिएकानमिजूंखावडाहैताकीअवगाहनां
तीनकोसलांवाहैं।बहुरिचौइंद्रियविषैबडाभ्रमरहैताकीअवगाहनांउत्कृष्टएक
योजनलाखवाहैं।बहुरिपंचेंद्रियविषैबडामच्छहैंताकीउत्कृष्टअवगाहनांहजारयो
जनलाखवाहैं।एजीवअंतकास्वयंभूरवणद्वीपतथास्वयंभूसमुद्रमैंजाननां।ब।अवनार ६१

कीनिकीउत्कृष्टअवगाहनांकहैहैं।गाथा।पंचसयाधणुदेहा।सत्तमनरएहवंतिएण
रईया।तत्तोउस्सेहेणय।अद्धद्धाहोंतिछवरुवरि ५३।अर्थ।सातवांनरकविषैनार
कीजीवनिकादेहपांचसैधनुषऊंचाहैतासैंउपरिउपरितेहकीउचाईआधीआधीहैं
।भावार्थ छठामैंअढाईसैधनुष।पांचवांमैंसवासैधनुष।चौथामैंसाढावासविधनु
ष तीसरामैंसवाछकतीसधनुष।दूसरामैंपंद्राधनुषदस अंगुलां।पहलामैंसातध
नुषतेराअंगुलां अैसैंजाननां।इनिमैंपटलगुणचासहैं।तिनिविषैंन्यारीन्यारीविशेष
त्रैलोक्यसारतैंजाननां।ब।अबदेवनिकीअवगाहनांकहैहैं।गाथा।असुराएंगपण
वीसं।सेसेएवंभवणयदहदंडं।वितरदेवाएतहा।जाइसियासत्तधएकदेहा।५४।
अर्थ।भवनवासीनिविषैंअसुरकुमारकेनिकीदेहकीउचाई पचीसधनुषहैं।बाकी
भवनिकीदशधनुषहैं।बहुरिव्यंतरदेवनिकीभीतैसैंहीदेहकीउचाईदशधनुषकीहै

वकरिज्योतिषीनिकीदेहकीउचाईसातधनुषकीहैं॥ब॥अवस्वर्गकेदेवनिकीकहैहैं॥गा॥
॥उगुडगचडुचउडुगडुगकप्पसुराणंसरीरपरिमाणं॥सतछप्पंचचउक्कं॥चउरोअद्धद्धही
णेयं॥५५॥अर्थ॥सौधर्मईसानयुगलकेदेवनिकीदेहसातहाथऊंचाहैं॥सनत्कुमार
माहेंद्रयुगलकेदेवनिकेदेहछहहाथऊंचाहैं॥ब्रह्मब्रह्मोत्तरलांतवकापिष्टशुक्रमहा
रस्वर्गकेदेवनिकादेहपांचहाथऊंचाहैं॥शुक्रमहाशुक्रसतारसहस्रारइनिचारिस्व
र्गकेदेवनिकादेहचारिहाथऊंचाहैं॥आणतप्राणतआरणअच्युतयुगलकेदेवनिकादेहसाढत्त
नहाथऊंचाहैं॥आरणअच्युतयुगलकेदेवनिकादेहतीनहाथऊंचाहैं॥गा॥हेहि
ट्ठिममज्झिमउवरिमगेवजोत्तरविमाणचउदसए॥अहुदुवेदुतिहीणंअद्धद्धयंउ
वरिंमुद्दी॥अर्थ॥नीचलेग्रीवेयकविषैंदेवनिकादेहअढाईहाथऊंचाहैं॥मध्यमग्रीवे
यकविषैंदेवनिकादेहदोयहाथऊंचाहैं॥उपरिलेग्रीवेयकविषैंदेवनिकादेहडेढ़ो ६२

ढहाथऊंचाहैं॥नवअनुदिशपंचअणुत्तरविषैंदेवनिकादेहएकहाथकैंहैंऊंचा॥ब॥आगै
मरतऐरावतक्षेत्रविषैंकालकीअपेक्षातैंमनुष्यनिकीशरीरकीउचाईकहैहैं॥गा॥अव
सप्पिणिएपढमेकालेमणुयाणिकोसउच्छेहा॥छद्धे हस्सविअवसाणेहवंपमाणंवि
वज्जयं॥५७॥अर्थ॥अवसर्प्पिणीकापहलाकालविषैंआदिमैंमनुष्यनिकादेहतीन
कोसाऊंचाहैं॥बहुरिछठवाकालकाअंतमैंमनुष्यनिकादेहएकहाथऊंचाहै॥बहुरिते
छठवाकालकाजीववस्त्रादिकरिरहितहोयहै॥ब॥आगैएकेंद्रियजीवनिकाजघन्यदे
हकहैहैं॥ब॥॥गा॥सव्वजहण्णोदेहो॥लद्धिअपुण्णाणसव्वजीवाणं॥अंगुलअसंखभा
गो॥अणेयभेयोहवेसोवि॥५८॥अर्थ॥लब्ध्यपर्याप्तकसर्वजीवनिकादेहघनअंगु
लकेअसंख्यातवेभागहैं॥सोयहसर्वजघन्यहैं॥सोयाभैंभी॥अनेकभेदहैं॥गा॥एकेंद्रि
यजीवनिकाजघन्यदेहभी छोटाबड़ाहैं॥सोघनांगुलकेअसंख्यातवेभागभैंभीअने

कनेदहैं॥सोगोमटसारविषैं॥अवगाहनांकेचौसठिभेदनिकावर्णनहैंतहांतैंजानना॥ब॥
॥आगैंवेंद्रियअपर्याप्तिकाजघन्यअवगाहनांकहैहैं॥गा॥ विदितचउपंचरकाणं॥जहण्णदे
होहवेइपुण्णाणं॥अंगुलअसंखभागो॥संखगुणेसोविउवरुवरिंपुण्णं॥अर्थ॥ वेंद्रि
यतेंद्रियचौंद्रियपर्याप्तजीवनिकाजघन्यदेहघनांअंगुलकैअसंख्यातवैंभागहैं॥
सोजीउपरिउपरिसंख्यातगुणेहैं॥ब॥ बादरवेंद्रियकादेहतैंअसंख्यातगुणेंतेंद्रियका
देहहै॥तेंद्रीयतेंसंख्यातगुणेंचौंद्रीयकादेहहैं॥ब॥ आगैंजघन्यअवगाहनांका
धारकवेंद्रियआदिजीवकोनकौंनहैसोकहैहैं॥ब॥गाथा॥ अणधरीयंकुंथुमछा
काणयसालिसिछोय॥पज्जताएतसाएंजहण्णदेहोविणिद्दिट्ठो॥६॥अर्थ॥वेंद्रीय
यभैतीअणधरीजीव॥तेंद्रियभैंकुंथुजीव॥चौंद्रियभैंकाणमक्षिका॥येवेंद्रियभैंत्रा
लिसिछकानामाभया॥इनित्रसपर्याप्तकजीवनिकेजघन्यदेहकह्याहै॥ब॥आगैंजीव ६३

DR BHAU DAJI

केलोकप्रमाणअरदेहप्रमाणपणेंकहैहैं॥गाथा॥ लोयंपमाणोजीवो॥देहपमाणोविय
छदेखंते॥उग्गाहणसत्तीदो॥संहरणविसप्पधम्मादो॥६१॥अर्थ॥जीवहैंतेलोकप्रम
णहैं॥वकुसिदेहप्रमाणजीहैं॥जातैंसंकोचिविस्तारधर्मयातैंपाइएहैं॥जैसीअवगाह
नांकीशक्तिहैं॥ब॥लोकाकासकेअसंख्यातप्रदेसहैं॥सोजीवकेजीएतेही प्रदेशहैं
केवलसमुद्घातकेकाललोकपूरणहोयहैं॥वकुसिसंकोचिविस्तारसक्तियातैंहैंतातै
जैसीदेहपावैतिसदीप्रमाणरहैहैं॥अरसमुद्घातकरैतबदेहवालाजीप्रदेशानीक
रैहै॥ब॥आगैंकेईअन्यमतीजीवकूंसर्वथासर्वगतकहैहैं॥तिनिका निषेधकूं
थाकहैहैं॥गाथ॥ सव्वगओजदिजीवो॥सव्वच्छिविमुक्कसंपत्ती॥जायज्जएसादिही ए
यंतएकमाणे॥तदोजीवो॥६२॥अर्थ॥जोजीवसर्वगतहीहोयतौसर्वक्षेत्रसंबंधीसुख
दुःखकीप्राप्तियाकेभईकहिएसोतौनांहीदेखिएहैं॥अपनेंसरीरमैंहीसुखदुखकी

आत्मदेशिएहैं॥ तातैं आपनेसरीरप्रमाणही जीवहैं॥ ब॥ आगैं केई अन्यमती गुणगुणी
के सर्वथा भेद मानि जीवकैं सर्वथा अर्थांतर भेद मानैं हैं॥ तिनिका मत निषेदैहैं॥ गा॥
जीवो एगणसहावो जह अग्गी उहणसहावेण अत्थंतरभूदेणहिणाणेणाणी
सोहवेणाणी॥ ६३॥ टी॥ जातैं जीवहै सो ज्ञानस्वभावहै॥ जैसैं अग्नि स्वभावदीक
रिउष्णदेतैसैं॥ तातैं अर्थांतरभूत कहिए आपतैं भिन्नदेशवर्ती ज्ञानकरि ज्ञा
नी नांही है॥ ब॥ नैयायक आदि हैं ते जीवकै अरज्ञानके प्रदेशनिका भेद मानि अरकहैं हैं
जो आत्मातैं भिन्नज्ञानहै सो समवायतैं तथा संसर्गतैं एकमया है॥ तातैं ज्ञानी कर
हिए हैं॥ जैसैं धनतैं धनी कहिए तैसैं सो इह मानना असत्य है॥ आत्माकै अरज्ञानके
अग्नि अरउष्णताकै जैसैं अभेदभावहै तैसैं तादात्म्यभावहै॥ ब॥ आगैं भिन्नमा
ननैं दूषण दिखावैहैं॥ ब॥ जदि जीवादो भिण्णं सव्वपयारेणहवदि तं णाणं॥ ६४

गुणगुणिभावोयत्तहा॥ इदरेणपणंससदे दुत्तं॥ ६४॥ अ॥ जो जीवतैं ज्ञान सर्वथा भि
न्न ही मानियै तौ तिनिदोऊनिकै गुणगुणीभाव इहिंही तैं न ह्वै॥ ब॥ बहुरि यह जीव
द्रव्यहै यह याका ज्ञानगुणहै ऐसा भाव न ठहरै॥ ब॥ आगैं कोई पूछै जो गुण अरगुण
भेदविनाठोयनां मवैसैं कहिए ताका समाधान करैहैं॥ गा॥ जीवस्सविणाणस्स
विगुणगुणिभावेणकीरएभेओ॥ जेणाणदितेणणं एवंणेयंकहंहोदि॥ ६५॥ न्यायदं॥
जीवकै अरज्ञानके गुणगुणीभाव करि भेदकथंचित् कीनिएहैं॥ बहुरि जो जाणैसो
ज्ञानीहोय ज्ञानहै ऐसैं भेदकैसैं होय॥ न्या॥ सर्वथा भेदहोयतौ सो जाणैसो ज्ञानहै
ऐसा अभेदकैसैं कहिए॥ तातैं कथंचित् गुणगुणीभावकरि भेदकीकहिएहैं॥ प्रदे
शभेद नांही॥ ब॥ आगैं चार्वाकमती ज्ञानकूं पृथ्वीआदिका विकार मानैहैं ताकूं नि
षेदैहैं॥ ब॥ एगेणभूयविकारं जोमण्णदि सोविभूदगरिहट्ठो॥ जीवेणविणा

एणलंकिकेणविहीसएकत्त ईई॥ जोचार्वाकमतीआमकूंप्रथ्वीआदिजेपंचभू
तनिकाविकार मानेहैं सोचार्वाकमतकरिए विसाचताकरियहाहै गहिलाहैं जा
तैंजीवविनाज्ञानकहां कोईकरिकरूदेषियेहैं करूजीनांदीदेषिएहैं ॥ आगैयाग
कूंइषणवत्तावैहै॥ब॥ सद्धेयएपचरकेजोजीवंणेयमणदेमूढो सोजीवंणमुणं
तोजीवाभावकहंकुणदि ई॥ यकजीवसतस्रूपआरचैतन्यरूपस्वसंवेदनप
त्यक्षप्रमाणकरिप्रसिद्धहै ताहिचार्वाकनांदीमानेहैं सोभर्मदै जोजीवकूंनांही
जाणेहैं नांहीमानेहैं तौजीवकाअभावकैसेंकरैहैं॥ जोजीवकूंजानैंहीनां
हीसोअजावजीनहींकरिसकै अभावकाकहनैवालाजीतोजीवहीहै जातैंसद्भा
वविनांअभावकोज्ञानजाय ब आगैयादीकूंमुक्तिकरिजीवकासद्भावदिषावै
हैं॥ब॥ जदिएयत्तवेदिजीवो ताकेवेदिसुखदुक्काणि इंदियविसयासद्धे ई५

कोवाजाणदिविसेसेणईणअर्थ॥ जोजीवनहोयतौअपनेसुखदुखकूंकौनजानै
तथाइंद्रियनिकेस्पर्शनआदिविषयहैं तिनिसर्वनिकूंविशेषकरिकौनजानैं॥ब॥
॥चार्वाकप्रत्यक्षप्रमाणमानेहैं सोजोअपनेसुखदुःखकूंतथाइंद्रियनिकेविष
यकूंजानैंसोप्रत्यक्ष सोजीवविनाप्रत्यक्षप्रमाणकौनकेहोय ताभैंजीवकासद्भाव
अवश्यसिद्धहोयहै॥ब॥आगैआत्माकासद्भावजैसैंवेदैतैसैंवरहैं॥ब॥ सो
कम्मफलंजीवो सुखदुखमयंहवेइसंकप्पो॥तंचियवेदइजीवो॥देहेमिलिदोविसव
त्थईणं॥जीवं॥जीवहैसोसंकल्पमईहैं॥बकरिसकल्पहैसोसुखदुःखमयहै॥तिससुख
दुःखमयीसंकल्पकूंजाणैसोजीवहैं॥जोदेहविषैसर्वत्रमिलिरह्याहै तोऊजानैंवा
लाजीवहै॥ब॥आगैजीवदेहसंमिल्याहूवासर्वकार्यनिकूंकरैहैयहकहैहै॥
देहमिलिदोविजीवो सद्धकम्माणिकुव्वदे जम्हा॥तम्हायमवट्टमाणो एयत्तेवुच्चदे

होएहे॥७०॥अर्थ॥ जातैं जीवहैसोदेहतैं मिल्याहूवाहीसर्वकर्मनोकर्मरूपसर्वकार्यनि
कूंकरैहै॥ तातैंतिनिकार्यनिविषैंप्रवर्त्ततासंतांकूंलोकदेहकैअरजीवकैदोऊकैएक
पणांमानैहैं॥ अर्थलोककूंदेहअरजीवन्यारेतौदीसैनांही॥दोऊमिलेऊयेदीसैहैं॥सं॰
योगतैंहीकार्यनिकीप्रवर्त्तिदीसैहै॥तातैंदोऊकूंएकहीमानैहैं॥ब॰॥आगैंजीवकूंदे
हतैंभिन्नजाननेकूंलक्षणदोयांवैहैं॥ब॰॥गा॰॥देहमिलिदोविपेछहि॥देहमिलिदोवि
णिसुणहेसहो॥देहमिलिदोविछुजहि॥देहमिलिदोविगछेइ॥७१॥अर्थ॥ जीवहैसोदे
हसंमिल्याहीनेत्रनिकरिपदार्थनिकूंदेखैहैं॥बहुरिदेहसंमिल्याहीकाननिकरि
सबहनिकूंसुणैहै॥बहुरिदेहसंमिल्याहीमुखतैंस्वादलेहैं॥बहुरिदेहसौं
मिल्याहीपगनिकरिगमनकरैहैं॥भावदेहमैंजीवनहोयतौजडरूपकेवलदेहही
कैदेखनांसुननांसूंघनांस्वादलेनांगमनकरनांएक्रियानहोयतातैंजानिएदेहमैं ६६

न्यारोजीवहैं॥सोहीएक्रियाकरैहैं॥ब॰॥आगैंऐसैंदेहजीवकौंमिलेहीमानतालोकभेद
कूंजानैहैं॥ब॰॥गा॰॥ राउहंनिच्चोहंसिद्धीहंचेवउच्चलोवलिउ॥इहिएयंतावियो॥
एहंनेयंनवुज्झेहि॥७२॥अर्थ॥ देहकैअरजीवकैएकयएंकीमानिकरिसहितलोकहै॥
सोऐसैंमानैहैं॥ जोमैंराजाहौं॥मैंचाकरहौं॥मैंश्रीहौं॥मैंउच्चलहौं॥मैंदरिद्रीहौं॥नि
बलहौं॥मैंबलवानहौं॥ऐसैंएकांतमानतासंतादेहजीवदोऊनिकैभेदनांहीजानैहैं
॥ब॰॥आगैंजीवकैकर्तापणांआदिकूंआरिगाथाकरिकैहैं॥ब॰॥गा॰॥ जीवोसयंक
त्ता॥सयंकम्माणंकुव्वदेजम्हा॥कालाइलद्धिजुत्तोसंसारंकुणहिमोसयंच॥७३॥
॥अर्थ॥तातैंयहजीवसर्वज्ञेकर्मनोकर्मतिनिकूंकरैहैतातैंकर्त्तोजीहैं॥सोआपकैसंस
रकूंकरैहैं॥बहुरिकालआदिलब्धिकरिमुक्तहूवासंताआपकैमोक्षकूंभीआपही
करैहैं॥ब॰॥कोईजानैगकियाजीवकैसुखदुःखआदिकार्यनिकूंईश्वरआदिअ

न्पकरैहैं।मोक्षभैसैंनांही हैं।आपहीकर्त्ताहैंसर्वकार्यनिकूं आपही करैहैं।संसारभी आपही करैहैं।कालल ब्धिआवेतबमोक्षभी आपही करैहै सर्वकार्यनिप्रतिद्रव्यक्षेत्रकाल भावरूपसामग्रीनिमित्तहैंही॥ब॥पुनः॥गाथा॥जीवोविहवइभुत्ता कम्मफलंसोवि भुंजदेजम्हा॥कम्मविवायंविविहं।सोवियभुंजेदिसंसारे॥७४॥अर्थ॥जातैंजीवहैसो कर्मकाफलयासंसारविषैभोगवैहैं।तातैंभोक्ता भीयहहीहैं।बहुरिसोकर्मकाविपा कसंसारविषैंसुखदुःखरूपअनेकप्रकारहैंतिनिकूंभी भोगवैहै॥ब॥पुनः॥गाथा॥ जीवोविहवइपावं।अइतिव्वकसायपरिणदोणिच्चं।जीवोहवेइपुण्णं।उवसमभावेण संजुत्तो॥७५॥अर्थ॥ यहजीवअतितीव्रकषायकरिसंयुक्तहोयतबयहहीजीवपाप रूपहोयहै।बहुरिउपसमभावजो मंदकषायताकरिसंयुक्तहोयतबयहहीजीवपु ण्यरूपहोयहै।भावार्थ॥क्रोधमानमायालोभनकाअतितीव्रपनातैंतौंपापपरिणम ६७

होयहै॥अरुइनिकामंदपणैंतैंपुण्यपरिणमरूपहोयहै।तिनिपरिणममिसहित पुन्यजीवपापजीवकहिएहैं।एकहीजीवद्रोऊपरिणममुक्तरूवाकूंपुन्यजीवपा पजीवकहिएहैं।सोसिद्धांतकीअपेक्षाऐसीहै।जोसम्यक्तसहितजीवहोयतांकै तौतीव्रकषायनिकीजडकटैतैंपुण्यजीवकहिए।बहुरिमिथ्यादृष्टीजीवकैभे दज्ञानविनांकषायनिकीजडकटैनांही॥तातैंवाकैंतैंकदाचितउपसमपरिण मनीहोयैतोताकूंपापजीवही कहिएऐसाजानना॥ब॥पुनः॥गाथा॥रयणत्तयसंजुत्तो ।जीवोविहवेइउत्तमंतीत्थं।संसारतरइजदो॥रयणत्तयदिव्वनौएणवाए॥७६॥अर्थ॥ जातैंयहजीवरत्नत्रयरूपनावकरिसंसारतैंतिरैहैं।पारहोयहैं।यहहीजीवरत्नत्र यकरिसंयुक्तनयासंताउत्तमतीर्थहैं॥भावार्थ॥तीर्थनामजोतरैतथाजाकरितरिए सोहै।सोयहजीवसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रतैंइनरत्नत्रयसोईभईनावताकरित

DR BHAU DAJI MEMORIAL

रैहै। तथा अन्यकूं तरनेंका निमित्त होयरैहै। तातैं तीर्थयह जीवही है॥ब॥ आगैं अन्य प्रकार
जीवका भेद कहैहैं॥ब॥गाथा॥ जीवाहवंतितिविहा॥विहिरप्पातहयअंतरप्पायपरम
प्पाविय दुविहा॥अरहंतातहयसिद्धाय॥७७॥अर्थ॥ जीवतीनप्रकाररैहै॥बहिरात्मा
अंतरात्मा परमात्मा भेदसैं॥बहुरि परमात्माभी दोयप्रकाररैहैं॥अरहंत तथासिद्धभे
दसैं॥ब॥अब इनिका स्वरूपकहैहैं॥तहां बहिरात्माकैसा सोकहैहैं॥गा॥ मिछत्त
परिणदप्पा॥तिव्वकसायेसुसुट्ठुआविट्ठो॥जीवंदेहंएक्कं॥मलंतोहिवहिरप्पा
॥७८॥अर्थ॥जोजीवमिथ्यात्वकर्मका उदयरूपपरिणम्यांहोय॥बहुरितीव्रकषायअ
नंतानुबंधीकरिसुष्टुकहिए अतिसयकरियुक्तहोय॥इसनिमित्ततैं जीवकूं अरदेह
कूंएकमानताहोयसोजीवबहिरात्माकहिए॥ब॥बाह्यपरद्रव्यकूं आत्मामानैं
सोबहिरात्माहै॥सोइहमानकांमिथ्यात्वअनंतानुबंधीकषायकेउदयकरिहोहै ६८

तातैंभेदज्ञानकरिरहितरुवांसेतादेहकूं आदिदेकरिसमस्तपरद्रव्यविषैं अहंकार मम
कारकरियुक्तरुवांसेताबहिरात्माकह्या वैहै॥ब॥आगैं अंतरात्माकास्वरूपतीनग १
थाकरिकहैहै॥ब॥गाथा॥ जेजिणवएणेयकुसला॥भेयंजाणंतिजीवदेहाणं॥णिज्झिय
उछहमया॥अंतरप्पायतेतिविहा॥७९॥अर्थ॥जेजीवजिनवचनविषैंप्रवीणहैं॥व
रुजीवकेअरदेहकेभेदजाणेहैं॥अबरुजीवसेहैं आठमदजिनिनैं तेअंत
रआत्माहैं॥तेउत्कृष्टमध्यजघन्यभेदकरितीनप्रकाररैहैं॥भावार्थ॥जेजीवजिनवानी
केनेत्रैप्रकार अभ्यासकरिजीवअरदेहकास्वरूपभिन्नजानैं तेअंतरात्माहैं॥ति
निकेजातिलाभकुलरूपतपबलविद्याऐश्वर्यए आठमदकेकारणहैं॥तिनिविषैं अहंकारममकानांहीनयजैहै जातैंए सर्वपरद्रव्यकेसंयोगजनितहैं॥तातैंइनि
विषैंगर्वनांही करैतेतीनप्रकारहैं॥ब॥अबइतीनिप्रकारविषैंउत्कृष्टकूंकहैहैं

गाथा॥पंचमहव्वयजुत्ता॥अप्पासुकेविसंवियाणिच्चं॥णिज्जियसयलपमाया॥उक्किट्ठा॥अंत
रादोहोंति॥८७॥अर्थ॥जेजीवपांचमहाव्रतकरिसंयुक्तहोय॥वहुरिधर्मध्यानशुक्लध्या
नविषैंनिरंतरलीनहोय॥वहुरिजीतेहैंसकलनिद्रादिप्रमादजिनिनैं॥तेउत्कृष्ट
अंतरात्माहैं॥ताकेमध्यमअंतरात्माकूंकहैहैं॥गाथा॥सावयगुणेहिजुत्ता॥पमत्तविर
दायमज्झिमाहोंति॥जिणवयणेअणुरत्ता॥उवसमसीलामहासत्ता॥८८॥अर्थ॥जेजीव
श्रावककेव्रतनिकरिसंयुक्तहोय॥वहुरिप्रमत्तगुणस्थानवर्तीमुनिहोयतेमध्यमअं
तरात्माहैंकैसेहैं॥तेजिनवचनविषैंअनुरक्तहैलीनहैं॥आज्ञासिवायप्रवर्तननक
रैहैं॥वहुरिउपसमभावकरिएमंदकषायतिसरूपहैंस्वभावजिनिका॥वहुरिमहाप
राक्रमीहैपरीसहादिकैसहनेमैंदृढहैं॥उपसर्गआएंप्रतिज्ञातैंटलैनाहीहैंऐसेहैं
॥इत्यादिकजघन्यअंतरात्माकूंकहैहैं॥गाथा॥अविरदसम्मादिट्ठी॥होंतिजहण्णाजि

णिंदपयत्ता॥अप्पाणंणिंदंता॥गुणगहणेसुदुअणुरत्ता॥८७॥अर्थ॥जेजीवअ
विरतसम्यग्दृष्टीहैं॥सम्यग्दृष्टीतौजिनिकेपाईएहैं॥अरचारित्रमोहकेउदयकरि
तथारिसकैनांहीं॥ऐसेजघन्यअंतरात्माहैं॥तेकैसेहैंजिनेंद्रकेचरणनिकेभक्तहैं॥जि
नेंद्रतिनकीवाणीतथातिनिकेअनुसारीनिर्ग्रंथगुरुतिनकीभक्तिविषैतत्परहैं॥
वहुरिअपनैंआत्माकूंनिरंतरनिंदतेसंतेहैं॥जातैंचारित्रमोहकेउदयतैंव्रतधारेजाय
नहीं॥अरतिनिकीभावनांनिरंतररहैहैं॥तातैंअपनैंविभावपरिणामनिकीनिंदाकरतेर
हैंरहैहैं॥वहुरिगुणनिकेग्रहणविषैंभलैप्रकारअनुरागीहैं॥जातैंजिनिमैंसम्यग्द
र्शनआदिगुणदेखैतिनितैंअत्यंतअनुरागरूपप्रवर्तेहैं॥गुणनितैंअपनांआत्मस्व
रूपहितजान्यां॥तातैंगुणनितैंअनुरागीहोयहैं॥ऐसेतीनप्रकारअंतरात्माकह्या
सोगुणस्थाननिकीअपेक्षातैंजाननां॥भावार्थ॥चौथागुणस्थानवर्तीतौजघन्यअं

तरात्मोपचवाच्चत्रावतीमध्यअंतरात्मोसातवांतैलगयवारवांताईतुतरुष्टअंतरात्म
जाननो॥ब॥अथपरमात्माकास्वरूपकहैहैं॥ब॥गाथा॥ससरीराअरहंता॥केवलणाए
णमुणियसयलबा॥णाणसरीरासिद्धा॥सबुत्तमसुखसंपत्ता॥छ०॥अर्थ॥जेत्रारी
रसहितअरहंतहैंकेसेहैंकेवलज्ञानकरिजानेहैंसकलपदार्थजिनिनैं॥तेपरमात्मा
हैं॥वकुरित्रारीरकरिरहितहैंज्ञानही हैंत्रारीरजिनिकै तेसिद्धहैं॥केसेहैंसर्वउत्कृष्ट
त्तमसुखकूंप्राप्तभयेहैं॥तेत्रारीररहितपरमात्माहैं॥भावार्थतेरमां चौदमांगुणस्था
नवर्तीअरहंतत्रारीररहितपरमात्माहैं॥अरसिद्धपरमेष्ठीत्रारीररहितपरमात्माहैं
॥ब॥अबपरसइकाअर्थकूंकहैहैं॥गाथा॥णिस्सेसकम्मणासे॥सप्पसहावेणजात
मुपत्तीकम्मजभावरवएविय॥सावियपत्तीपराहोदि॥छ०॥भावार्थजोसमस्तकर्मका
नात्राहोतेसंतैंआपनेस्वभावकरिउपजैसोपराकहिये॥भावा॥परमात्मसइकाच्च ७७

र्थअरैसाहैं॥जोपराकहिएउत्कृष्टाकहिएलक्ष्मीजाकेदोयअरैसाआत्मांकूंपरमात्मा
कहिए॥सोसमस्तकर्मकानात्राकरिस्वभावरूपलक्ष्मीकूंप्राप्तभए॥त्रैसेसिद्धते
परमात्माहैं॥वकुरिघातियाकर्मनिकानात्राकरिअनंतचतुष्टयरूपलक्ष्मीकूंप्रास
भएत्रैसेअरहंततेजीवपरमात्माहैं॥तेहीवकुरिउदयीकअघातिभावनिकामात्राक
रिजीवपरमात्माभएकहिए॥ब॥आगेकेईजीवनिकूंसर्वथासुखही कहैहैंतिनिका
मतकूंनिषेधैहैं॥गाथा॥जईपुणसुहसहावा॥सव्वेजीवाअणाइकालेवि॥तोतवा
चरणविहाणं॥सव्वेसिंणिप्फलंहोदि॥छ०॥भावार्थजोसर्वजीवअनादिकालविषैंजो
शुद्धस्वभावहैंतोसर्वहीकेतपश्चरणकाविधानहै॥सोनिःफलहोयहैं॥पुनः॥गाथा॥
ताकिंगिण्हदिदेहं॥णाणाकम्माणिताकहेकुणदि॥सुद्दिदावियअसुद्दिदावियणाणा ७८
रूवाकहंहोति॥छई॥अर्थ॥जोजीवसर्वथाशुद्धहैतोदेहकूंकैसैंग्रहणकरैहैं॥वकुरिना

नाप्रकारकेकर्मनिकूंकैसैंकरैहै॥ बहुरिकेईसुखीहैकेईदुःखीहैं॥ऐसैंनानाप्रका
रकैसैंहोयहै॥ तातैंसर्वथाशुद्धनांहीहैं॥ब॥आगैंशुद्धताअशुद्धताकाकारणकहै
हैं॥ब॥ सव्वेकम्मणिबद्धा संसारमाणअणाइकालम्हि॥पत्तातोदियबंधं
सुद्धासिद्धा हवांहोंति॥६॥ भावार्थ॥जीवहैतेसर्वहीअनादिकालतैंकर्मकरिबंधे
हुएहैं॥ तातैंसंसारविषैंभ्रमणकरैहैं॥ पीछैंकर्मनिकैबंधनिकूंतोडिसिद्धहोयहै
तबशुद्धहै॥अरनिश्चलहोयहैं॥ब॥आगैंजिसबंधकरिजीवबंधैहैतिसबंधका
स्वरूपकहैहैं॥ब॥ जोअलोणपवेसोजीवपएसाणकम्मबंधाएसव्वबंधा
एचिलओसोबंधोहोदिजीवस्स॥६८॥ भावार्थ॥जोजीवकेप्रदेशनिकाअरुकर्मके
बंधनिकापरस्परप्रवेशहोनांएकक्षेत्ररूपसेबंधहोनांसोजीवकेप्रदेशबंधहैसो
यहूहीप्रकृतिस्थितिअनुभागरूपजेसर्वबंधतिनिकीमीलयकहिएएकरूप ७१

होनांहैं॥ब॥ आगैंसर्वद्रव्यनिविषैंजीवद्रव्यहीउत्तमपरमतत्वहैऐसाकहैहैं॥ब॥
॥ उत्तमगुणाणधामोसव्वदव्वाणउत्तमंदव्वं॥तच्चाणपरमतच्चं॥जीवंजाणेहिणि
च्छयदो॥६९॥ भावार्थ॥जीवद्रव्यहैसोउत्तमगुणनिकाधामहै॥ज्ञानआदिउत्तमगुण
यातीमैंहैं॥ बहुरिसर्वद्रव्यनिमैं द्रव्ययहीप्रधानहैं॥सर्वद्रव्यनिकूंजीवद्रव्यहीप्र
काशैहै॥ बहुरिसर्वतत्वनिमैंपरमतत्वजीवहीहै॥अनंतज्ञानसुखआदिकागोक्त
यहहीहै॥ऐसैंहेभव्यनिश्चयतैंजाणि॥ब॥आगैंजीवहीकैउत्तमतत्वपणांकैसैं
हैंसोकहैहैं॥॥ अंतरतच्चंजीवो॥बाहिरतच्चंहवंतिसेसाणि॥एएणविहीणंदव्वं
हेयाहेयंणयाणेदि॥७०॥ भावार्थ॥जीवहैसोतौअंतस्तत्वहैं॥बहुरिवाकीकेसर्वद्र
व्यहैतेबाह्यतत्वहैं॥तेज्ञानकरिरहितहैं॥सोजोज्ञानकरिरहितहैसोद्रव्यहेयउपादेय
वस्तूकूंकैसैंजानैं॥भावार्थ॥जीवतत्वबिनांसर्वशून्यहै॥तातैंसर्वकाजाननेंवाजात

थाहेयउपादेयकाजाननेवालाजीवद्रव्यपरमतत्वहै ॥ब॥ अबआगेजीवद्रव्यकास्वरूपकहिकै
फिरअबपुद्गलद्रव्यकास्वरूपकहैहैं ॥ब॥ गाथा॥ सव्वेलोयायासो॥पुद्गलदव्वेहिंसव्व
दोसरिदो॥सुद्धमेहिंबायरेहिंय॥णएणविहसत्तिजुतेहिं॥९२॥अर्थ॥ सर्वलोकाका
सहैसोसूक्ष्मअरबादरजेपुद्गलद्रव्यतिनिकरिसर्वप्रदेशनिविषैभरयोहै॥कैसे
हैपुद्गलद्रव्यनानाशक्तिकरिसहितहैं॥भावार्थ॥शरीरआदिअनेकप्रकारपरिणमन
शक्तिकरियुक्तजेसूक्ष्मबादरपुद्गलद्रव्यतिनिकरिसर्वलोकाकाशभरयोहै॥पुनः॥गा
था॥ जेइंदिएहिंगेझं॥रूवरसगंधफसपरिणामं॥तंचियपुद्गलदव्वं॥अणंतगुणंजीव
रासीदो॥९३॥भावार्थ॥ जोरूपरसगंधस्पर्शपरिणमस्वरूपइंद्रियनिकेग्रहणकर
नेयोग्यहैं तेसर्वपुद्गलद्रव्यहैं तेसंसारीजीवराशितैंअनंतगुणेद्रव्यहैं॥ब॥अब
पुद्गलद्रव्यकेजीवकाउपकारीपणाकूंकहैहैं॥गा॥ जीवस्सवकुणयाउवयारं॥ ७२

कुणदिपुग्गलदव्वं॥देहेचइंदियाणिय॥वाणीउस्सासनिस्सासं॥९३॥भावार्थ॥पुद्गलद्र
व्यहैसोजीवकेवकृतउपकारउपकारकरैहैं॥देहकरैहैं॥इंद्रियकरैहैं॥वकृरिवचनक
रैहैं॥उश्वासनिश्वासकरैहैं॥भावार्थ॥संसारीजीवकेदेहादिकपुद्गलद्रव्यकरिरचित
हैं॥इनिकरिजीवकाजीतव्यहैं यहउपकारहैं॥छ॥पुनः॥गाथा॥ अक्खंपिएवमाई॥उ
वयारंकुणदिजीवसंसारं॥मोहंअणाइणियंपियपरिणामंकुणदिजीवस्स॥९४॥
अर्थ॥ पुद्गलद्रव्यहैसोजीवकेपूर्वोक्तकूंआदिकरिअनेकउपकारकरैहै॥जैसे
संसारीजीवकैहैतैतैंयहैंहीपरिणमकरैहैं॥मोहपरिणामपरद्रव्यनितैंममत्वपरि
णामतथाअज्ञानमईपरिणामअनादिसैंदुरवसुरवजीवितमरणआदिअनेकपरिणाम
करैहैं॥इहांउपकारग्राहकाअर्थकिछूपरिणामविश्रामकरैहैं सोहीसर्वलेणे॥ब॥
अबआगैजीवजीवकूंउपकारकरैहैं ऐसाकहैहै॥गाथा॥ जीवाविउजीवाणं॥उवयारं

DR. BHAU DAJI MEMORIAL डाक्टर भाऊदाजी स्मारक संग्रहालय

कुणदिसघ्घपच्चरकं॥तच्छविपहाणहेऊ पुणोपावंचणियमेण ॥१५॥ जीवहैतेभी
वनिकैपरस्परउपकारकरैहैं सोयहसर्वकैप्रत्यक्षहीहै सिरदारचाकरकै चाकरसि
रदारकै॥आचार्यसिष्यकै शिष्याचार्यकै पितामाता पुत्रकै पुत्रपितामाताकै मि
त्रमित्रकै स्त्रीभरतारकैइत्यादिप्रत्यक्षदेखिएहैं सोतहांपरस्परउपकारकैविषैंपुण्य
पापकर्मनियमकरिप्रधानकारणहै ॥ आगैपुद्गलकैबड़ीशक्ति है ऐसाकहैहैं
॥ आकाविअपुद्धादीसद्दिपुग्गलदव्वसएससीसत्ती॥केवलणाणसहावं विणा
सिदोजाहूजीवस्सा॥१६॥ अर्थ॥ पुद्गलद्रव्यकीकोईऐसीअपूर्वशक्तिदेखिएहैं जो
जीवकेकेवलज्ञानस्वभावहै सोनीजिसशक्तिकरिविनास्पाजायहै॥ ऐसे
शक्तिजीवकीहै॥तामैंकेवलज्ञानशक्तिऐसीहै जाकीव्यक्तिहोयतबसर्वपदार्थनि
कूंएककालजानैं ऐसीशक्तिकूंपुद्गलनष्टकरैहैं नहोनेदेहैसोयहपूर्वशक्तिहै ७३

॥ ऐसैंपुद्गलद्रव्यकानिरूपणकीया॥अबधर्मद्रव्यअधर्मद्रव्यकास्वरूपकहै
हैं॥ गाथा॥ धम्ममधम्मंदव्वं जाणसुणाणेणकारणंकमसो॥जीवाणपुग्गलाणं
विणिविलोगप्पमाणाणि॥१७॥ अर्थ॥ जीवअरपुद्गलद्रव्यनिकूंगमन
अरस्थानकासहकारीअनुक्रमतैंकारणहैं॥तेधर्मद्रव्यहैंतेदोऊंलोकाकाशपरि
माणअंशाकूंधरैहैं॥ भावार्थ॥जीवपुद्गलकूंगमनसहकारीकारणतोधर्मद्रव्यहै अरस्थि
तिसहकारीकारणअधर्मद्रव्यहै॥तेदोऊंलोकाकाप्रमाणहैं॥ आगैंआकाशद्रव्य
कास्वरूपकहैहैं॥ गाथा॥सयलाणंदव्वाणं जंदाइंसक्कदेहिअवगासं॥तंआयासं
उविहा लोयालोयाणभेदेण॥१८॥ अर्थ॥ जोसमस्तद्रव्यनिकूंअवकासदेनेकूं
समर्थहैं सोआकाशद्रव्यहै सोलोकअलोककैभेदतैंदोयप्रकारहैं॥ जामैं
सर्वद्रव्यऐसैंअवगाहनेगुणकूंधरैहैं सोयहआकाशद्रव्यहै सोजामैंपांच

द्रव्यरूप सो तौलोकाकासहै ॥ अरजामैं अन्य द्रव्यनकी सो अलोकाकासहै ॥ जैसैं देाय नेदरूपहै ॥ आगैं आकासा द्रव्यविषैं सर्व द्रव्यनिकूं अवगाहनदेनेंकी शक्तिहै तैसैं अवकासदेनेंकी शक्ति सर्वही द्रव्यनिमैंहै असैं कहैहै ॥ सद्धाएं दव्वाएं अवगाहणदाएसत्तिपरप्पछं ॥ जहन्नसमपाणियाएं जीवपएसाएनाए वकुआएं एए ॥ सर्वही द्रव्यनिकैपरस्पर अवगाहनादेनेंकी शक्तिहैय हनिश्चयनैं जानूं जैसैं नखकै अरजलकै अवगाहनशक्तिहै तैसैं जीवकै असंख्यातप्रदेशनिकै जाणूं ॥ जैसैं जलकूंपात्रविषैं नरितामैं नखडारिएसो समावै ॥ वकुरितामैं मिश्रीडारिएसो मीसमावै ॥ तथा तामैंसूईबेधिएसो मीसमावै तैसैं अवगाहशक्ति जाननी ॥ इहांकोई पूछै सर्वही द्रव्यनिमैं अवगाहनशक्तिहै तौ आकाशकाअसाधारणगुणकैसैं हैं ॥ ताकासमाधान ॥ जोपरस्परौ अ

वकाशसर्वही देहैं ॥ तथापि आकाशद्रव्यसर्वतैं बडाहै ॥ तातैं याविषैं सर्वसमावै यहअसाधारणताहै ॥ ब ॥ जदिएहवदिसासत्ती सद्दावन्नूदादिसव्वदव्वाएं ॥ एक्केकासपएसे ॥ कहंतासव्वाएिवट्टंति ॥ २०९ ॥ जोसर्वद्रव्यनिकैस्वभावनतसो अवगाहनशक्तिनहोयतौ एकएकआकाशकाप्रदेशविषैसर्वद्रव्यकैसैंप्रवर्तै ॥ ए कआकाशकाप्रदेशविषैं अनंतापुद्गलकैपरमाणुद्रव्यतिष्ठैहैं ॥ एकजीवकाप्रदेश एकधर्मद्रव्यकाप्रदेश एकअधर्मद्रव्यकाप्रदेश एककालाणुं द्रव्य ॥ जैसैंसर्वतिष्ठै हैं सोबहुप्रदेशाएकपुद्गलकापरमाणुंवरावरिहैं सोअवगाहनशक्तिनहोयतौ ॥ कैसैंतिष्ठै ॥ ह ॥ आगैंकालद्रव्यकास्वरूपकहैहैं ॥ व सद्धाएं दव्वाएं परिणमे जोकरेदिसोकालो ॥ एक्केकासपएसे ॥ सोवट्टदिएक्केकोचेव ॥ २११ ॥ भाषा ॥ जोसर्वद्रव्यनिकैपरिणामकरैहैं सोकालद्रव्यहै सो एकएक आकाशकेप्रदेशनिविषैंएकएक

कालाणुद्रव्य अवर्तेहैं। सर्वद्रव्यनिकैं समसमैं यें मय पर्याय उपजैहैं अर विनसैहैं। सो ऐसें परिणमकूं निमित्तकालद्रव्यहै। सो लोकाकाशके प्रदेश एक एक विषैं एक एक कालाणु तिष्ठैहैं यह निश्चयकालहै। ब। आगैं कहैहैं कि परिणमनेकी शक्ति स्वभावभूत सर्वद्रव्यनिमैं हैं। अर द्रव्यनिमित्तमात्रहैं। ब। गा। णियणियपरिणामाणं। णियणियदव्वंपि कारणंहोदि। अण्णेवाहिरदव्वं णिमित्तमित्तंविया णेह। १०३। अर्थ। सर्वद्रव्य अपनैं। अपनैं परिणमनिकैं उपादानकारणहैं। अर चाकडादिक निमित्तकारणहैं। तैसैं सर्वद्रव्यनिकैं परस्पर उपकारहैं। सो सहकारीकारणभावकरिहै। ब। गा। सव्वाणंदव्वा णं। जोजव्वारोहवेइ अण्णाणं। सोचियकारणभावो। हवदिहु सहयारिभावेण। १०३। अर्थ। सर्वहीद्रव्यनिकैं जोपरस्पर उपकारहै। सो सहकारीभावकरिकारणभावहो यहैं यह प्रगटहै। ब। आगैं द्रव्यनिकैं स्वभावभूत नानाशक्तिहै। ताकूं कोनिषेधि सकैहैं ऐसैं कहैहैं। ब। गा। कालायलद्धिजुत्ता। णाणासत्तीहिं संजुदा अत्था। परिणम माणहिसयं। णसक्कदेको विवारेदुं। १०४। अर्थ। सर्वहीपदार्थ कालआदिलब्धिका रिसहित अर नानाशक्तिकरिसंयुक्तहैं। तैसैंही स्वयं परिणमैहैं। तिनिकूं परिणमनें कूंकोई निवारनेकूं समर्थ नाहीं। ना वार्ता। सर्वद्रव्य अपनैं अपनैं परिणमकूं पर द्रव्य हे त्रकालसामग्रीकूं पायअापही भावरूप परिणमैहैं। तिनिकूं कोई निवारिनसकैहै। ब। आगैं व्यवहारकालका निरूपण करैहैं। ब। गाथा। जीवाणपुग्गलाणं। जेसुहुमा वादरायपज्जाया। तीदाणागतभूदा। सोववहारो हवे कालो। १०५। अर्थ। जीवद्रव्य अरपुद्गलद्रव्यकेसूक्ष्मतथाबादरपर्यायहैंते अतीतभए अनागत आगामीहोय गे। अरवर्तमानहैं सो ऐसा व्यवहारकालहोयहै। भा। जोजीवपुद्गलकेसूक्ष्मस्थूल पर्यायहैंते अतीतभए तिनिकूं अतीतकाल नामकह्या। बहुरि जो आगामीहोयगे।

तिनिकूं अनागतनामक कह्या। बहुरि जेवर्तैहैं तिनिकूं वर्तमाननामक कह्या। इनिकूं जेती
बार लगै है तिसही कूं व्यवहारकालनामक करि कहिए है। सो जघन्य तौ पर्यायकी स्थि
ति एकसमयमात्र है। बहुरि मध्यउत्कृष्टअनेकप्रकार है। ब। तहां आकाशके ए
कप्रदेशतैं दूजे प्रदेशपुद्गलका परमाणु मंदगतिकरि जायतेता कालकूं समयक
हिए। ऐसे जघन्ययुक्त असंख्यातसमयकी एक आवली कहिए। संख्यात आव
लीके समूहकूं एक उछ्वास कहिए। सात उछ्वासका एक स्तोक कहिए। सात स्तोक ७
एक कौंलव कहिए। साढा अडतीस लवका एक घडी कहिए। दोय घडीका मुहूर्त क
हिए। तीस मुहूर्तका दिन कहिए। पंद्रह अहोरात्रिका पक्ष कहिए। दोय पक्ष ७
मास कहिए। दोय मासके ऋतु कहिए। तीन ऋतुका अयन कहिए। दोय अयनका
वर्ष कहिए। इत्यादि पल्यसागरकल्पकालरूप व्यवहारकाल अनेकप्रकार है। ब। ७६

आगैं अतीत अनागत वर्तमानपर्यायनिकी संख्या कहै है। ब॥ गाथा॥ तेसु अतीताणं
ता॥ अणंतगुणिदाय भाविज्जाया॥ एकोविवट्टमाणो॥ एत्तियमेत्तोविसोकाले ७
॥१७६॥ अर्थ॥ तिनि द्रव्यनिके पर्यायनिविषैं अतीतपर्याय अनंत हैं। बहुरि अना
गतपर्याय तिनितैं अनंतगुणे हैं। वर्तमानपर्याय एक ही है। सो इतेपर्यायहैं ते
तादी सो व्यवहारकाल है। ब। ऐसैं द्रव्यनिका निरूपण की या॥ अब द्रव्यनिके कार्य
कारणभावका निरूपण करै है। ब॥ गाथा॥ पुव्वपरिणामजुत्तं॥ कारणभावेण वट्टदे दव्वं
॥ उत्तरपरिणामजुदं॥ तंचिय कज्जं हवेणियमा॥ १७७॥ अर्थ॥ पूर्वपरिणामसहित द्र
व्य है सो कारणरूप है। बहुरि उत्तरपरिणामकरि युक्त द्रव्य है सो कार्यरूप नियमक
रि है। ब॥ आगैं वस्तुके तीन कालविषैं ही कार्यकारणभावका निश्चय करै है। ब॥
॥ गाथा॥ कारणकज्जविसेसा॥ तिस्सु विकालेसु हवंति॥ एक्केक्कमियसमय॥ पुव्वुत्त

रूपभावमासेजइ।१००।।प्र।। वस्तूनिकेपूर्वरूपउत्तररूपपरिणामकूंपायकरितीनूंहीक
लविषैएकएकसमयविषैंकारणकार्यकेविशेषहोयहैं।भा।। वर्त्तमानसमय
पर्यायहैंसोपूर्वसमयसहितवस्तूकाकार्यहैं तैसैंहीसर्वपर्यायजाननी ऐसैं
समयसमयकार्यकारणभावरूपहैं।ब।। आगैंवस्तूहैसो अनेकधर्मस्वरूपहैं
ऐसा निर्णयकरैहैं।भा।। सेतिएणंताएंताएंतातीसुविकालेसुसद्दव्वाएि।स
द्दपिअएयंतं तत्तोजणिदंजिणंदेहिं।१०१।।प्र।। सर्वेऽमीहैंतेतीनूंहीकालमैं
अनेतानंतकहिए अनेकधर्मनिसहितहैं।अनेकपर्यायनिसहितहैं।तातैंजि
नेंद्रैंवस्तूसर्वहीवस्तूअनेकांतकहिए अनेकधर्मस्वरूपकह्याहैं।ब।। भावार्थ
प्रमाणनयकरिसप्तभंगनैंसाधिअनेकांतात्मकवस्तूकास्वरूपकह्याहैं।ब।।
आगैंकहैहैं जोअनेकांतात्मवस्तूहैसो अर्थक्रियाकारीहै।।भा।। जेवबुध्य ७७

एयंतेतेवियकुंकरेदिणियमेणवड्ढधम्मुदंभवंकज्जकरंदीसएलोए।१०२
।।प्र।। जोवस्तूअनेकांतहैअनेकधर्मस्वरूपहैसोहीनियमकरिकार्यकूंकरैहैं।
लोकविषैंवस्तूधर्मकरियुक्तपदार्थहैंसोहीकार्यकरनेंवालेदेखिएहैं।ब।।भाव
लोकविषैंनित्यअनित्यएकअनेकएकअनेकरूपइत्यादिअनेकधर्मयुक्तवस्तूहै
सोहीकार्यकारीहोयहै।जोटीकेघटआदिअनेककार्यभएहैं।जोसर्वथामाटीएक
रूपतथानित्यरूपतथाअनेकअनित्यरूपहीहोयतोघटआदिकार्यभएनांही तैसे
हीसर्ववस्तूजाननां।ब।।आगैंसर्वथाएकांतवस्तूकैकार्यकारीपणांनांहीहैं ऐसैंक
हैहैं।ब।।गाथा।। एयंतेपुणदव्वेकज्जंणकरेदिलेसमेतेपि जेपुणकरेदिकज्जं तंवुच्च
दिकेरिसंदव्वं।११०।।प्र।। वड्ढरिएकांतस्वरूपऽमैंसोलेशमात्रभीकार्यकूंनांहींक
रैहै वड्ढरिजोकार्यहीनकरैसोकैसाकऽमैंवस्तूरूपसाहै।।भा।। जोअर्थक्रियास्वरू

DR BHAU DAJI

महोयसो ही परमार्थरूप वस्तु कह्यो है ॥ अर जो अर्थक्रियारूप नांही सो आकास के फू-
लकी ज्यों सून्यरूप है ॥ आगैं सर्वथा नित्य एकांत विषैं अर्थक्रियाकारीपणां का अभा-
व दिखावे है ॥ ब ॥ गा ॥ परिणमेएण विहीणं णिच्चं दव्वं विणस्सदेणेय ॥ णेउभयत्थ
या ॥ एवं कज्जं कह कुणदि ॥ २१७ ॥ अर्थ ॥ परिणामकरि हीण जो नित्य द्रव्य सो विनसै
नांही तथा उपजै नांही सदा एकरूप है ऐसा है तैं कार्य कैसें करै ॥ भावार्थ ॥ सर्वथा नि-
त्य एकरूप वस्तु उपजै विनसै नांही तब कार्य कैसें करै ॥ अर जो उपजै विनसै तौ नित्य प
णां नांही रहै ॥ अर सैं कार्य न करै सो वस्तु नांही है ॥ ब ॥ पुनः क्षणस्थायी के कार्य का
अभाव दिखावे है ॥ गाथा ॥ पज्जायमित्ततच्चं विणस्सरं खणे खणे विणसं ॥ अण्ण
दव्वविहीणं ॥ एयक्कं किं पिसा हेहि ॥ २१८ ॥ अर्थ ॥ जो क्षणस्थायी पर्यायमात्र तत्व
क्षण क्षणमें अन्य अन्य होय ऐसा विनस्वर मानिए तौ अन्वयी द्रव्य करि रहित हूवा ७८

संता कार्य कि छूनी नांही सधै है ॥ भावार्थ ॥ क्षणस्थायी विनश्वर के काहे का कार्य ॥ ब ॥
आगैं अनेकांत वस्तु के कार्यकारणभाव कैसें है सो दिखावे है ॥ ब ॥ गाथा ॥ एवए
यक्कजिहेसा ॥ तीसु विकालेसुहोति वहूणं ॥ एक्केक्कमियसमये ॥ पुव्वुत्तरभा
वमासिज्ज ॥ २१९ ॥ अर्थ ॥ जीवादिक वस्तु तिकै तीनूंही काल विषैं एक एक समय
विषैं पूर्वोत्तर परिणामकी आश्रय करि नवे नवे कार्य विसमहोय है ॥ नवे नवे प-
र्याय उपजै है ॥ ब ॥ आगैं पूर्वोत्तर भावके कारणकार्यभाव कूं दृढ करै है ॥ ब ॥ गा-
पुव्वपरिणामजुत्तं कारणभावेण वट्टदे दव्वं ॥ उत्तरपरिणामजुदं तच्चियकज्जं
हवेणियमा ॥ २२० ॥ अर्थ ॥ पूर्वपरिणामकरि युक्त द्रव्य है सो तो कारणभाव करि व-
र्तै है ॥ बहुरि सोही द्रव्य उत्तरपरिणामकरि युक्त होय सो कार्य होय है ॥ यह नियम तैं ज
एं ॥ जैसें माटी का पिंड तो कारण है ॥ ताका घटादिक पर्याय सो कार्य है ॥ तैसें पूर्व

र्यायसहितवस्तुकारणरूपहैं विद्यमानपर्यायसहितनयातवसोहीकार्यरूपनयाऐसैंनियमहैं छ। ऐसैंवस्तुकासरूपकहिअबजीवद्रव्यकैसीतैसैंही अनादिनिधनकार्यकारणभाव सायैहैं छ ॥ जीवोअणाइणिहणो परिणयमाणेसुद्धएवएवेभावं सामग्गीसुवट्टि कज्जाणिसमासदेयछा ११६ ॥ जीवद्रव्यहैसोअनादिनिधनहैसोनवेनवेपर्यायनिरूपप्रगटपरिणमैहैं सोपहलैंद्रव्यक्षेत्रकालभावकीसामग्रीविषैंप्रवर्तैहैं। पीछैंकार्यकूंपर्यायनिकूं प्रासहोयहैं ॥ भावार्थ ॥ जैसैंकोईजीवपहलैंसुभपरिणमरूपप्रवर्तैपीछैंस्वर्गपावै तथापहलैंअसुभपरिणामरूपप्रवर्तैपीछैंनरकआदिपर्यायपावै ऐसैंजानना ॥ बहुरिजीवद्रव्यअपनैंद्रव्यक्षेत्रकालभावविषैंतिष्ठताहीनवेपर्यायरूपकार्यकूंकरै ऐसैंकहैहैं ॥ ससरूवत्थोजीवो कज्जंसाहेरिवट्टमाणंपि ॥ विद्वेएकम्मिवि दोणियदव्वेसंविहोचेव ११७ ॥ जीव ७१७

द्रव्यहैसोअपनैंचैतन्यस्वरूपविषैंतिष्ठताअपनैंहीक्षेत्रविषैंतिष्ठताअपनैंहीद्रव्यमयीतिष्ठताअपनैंपरिणमनरूपसमयविषैंअपनीपर्यायस्वरूपकार्यकूंसाधैहैं ॥ भावार्थ ॥ परमार्थतैंविचारिएतवअपनैंद्रव्यक्षेत्रकालभावस्वरूपहोतासंताजीवपर्यायस्वरूपकार्यरूपपरिणमैहैं परद्रव्यक्षेत्रकालभावहैसोनिमित्तमात्रहैं बहुरिअन्यस्वरूपहोयकार्यकरैतौतामैंदूषणदिआवैहै ॥ ससरूवत्थोजीवो अण्णसरूवम्हिगच्छएजदिहि अण्णमेलणादो एकसरूवंहवेसव्वं ११८ ॥ जोजीवअपनैंस्वरूपविषैंतिष्ठतापरस्वरूपविषैंजायतोपरस्परमिलनैंतैंसर्वद्रव्यएकस्वरूपहोयजायअरुवडादोषआवै सोएकस्वरूपकदाचित्होयनांहीयहप्रगटहै बहुरिसर्वथाएकस्वरूपमाननैंमैंदूषणदिआवैहैं ॥ अहवावेअसरूवं एकंसव्वंपिमण्णएजदिहि चेदालवेअणएं तोएविसेसोहवेकोई

जोसर्वथाएकहीवस्तुमानिब्रह्मकास्वरूपसर्वमानियेतौब्राह्मणक्षत्रचांडा
लकाकिछूभीभेदनवहरै एकब्रह्मस्वरूपसर्वजगतकूंमानियेतौनानारूपवहरै
वकुरिक्षविद्याकरिनानादीखतामांनैंतौअविद्याकीउतपत्तिकौंनतैंभईकहिए जो
ब्रह्मतैंभईकहिएतौब्रह्मतैंभिन्नभई किअभिन्नभई किसतरूपहैकिअसतरूप
हैकिएकरूपहैकिअनेकरूपहै ऐसैंविचारकियेंकछूवहरनांनांही तातैंवस्तुकास्व
रूपअनेकांतहीसिद्धहोयहैंसोहीसत्यार्थहै ब अरोंएकमात्रतत्वकूंमाननेमैंदू
षणदिखावैहैं एकपरिमाणंतच्चं अस्तिविहीणंचमण्णदेजदिहि तोसंवं
धाभावो तत्तोविणकज्जसंसिद्धि १२० जोएकवस्तुसर्वगतव्यापकनमानि
येअरअसकरिरहितअएकपरिमाणतत्वमानिएतौदोयअंसकैतथापूर्वोत्तरअंश
सकैसंबंधकाअभावतैंअएकमात्रवस्तुतैंकार्यकीसिद्धनांही होयहैं निरंशत्व ८॥

णिकनिरन्वयवस्तुकैंअर्थक्रियाहोयनांही तातैंसासतिनित्यअन्वयीवस्तुकथं
चित्मांननांयोग्यहै॥छ॥आगैंद्रव्यकैंएकत्वपणंअरअनेकत्वपणंनिश्चयकरैहैं
गा॥ सत्ताणेदत्ताणं दव्वसरूवेणहोदिएयत्तं॥ णिमणियगुणेणयेणहि सत्ता
णिविहीतिणिद्दिट्ठा॥ १२१॥अर्थ॥सर्वेही द्रव्यनिकैंद्रव्यस्वरूपकरितोएकत्वपणांहैं
॥वकुरिक्षअपनेंअपनेंगुणकैंभेदकरिसर्वद्रव्यभिन्नभिन्नहैं॥ यातैंद्रव्यकालक्षण
उत्पादव्ययध्रौव्यस्वरूपसत्तहै॥सोद्रव्यस्वरूपकरितौसर्वकैंएकपणांहैं॥वकुरिक्ष
अपनेंअपनेंगुणचेतनपणांजडपणांअरादिभेदस्वरूपहैं तातैंगुणकैंभेदतैंसर्वद्र
व्यन्यारेन्यारेहैं॥तथाएकद्रव्यकैंत्रिकालवर्तीअनंतपर्यायहैं॥सोसर्वपर्यायनि
विषैंद्रव्यस्वरूपकरितोएकताहै॥जैसैंचेतनकैंपर्यायसर्वेही चेतनस्वरूपहैं॥व
कुरिपर्यायअपनेंअपनेंस्वरूपकरिभिन्नभीहैं॥भिन्नकालवर्तीभीहैं॥तातैंभिन्न

भिन्न जीकहिए तिनिकेप्रदेशभेदभी मांही तातैं एक कही द्रव्यकेअनेकपर्याय होहैं। याभेदवि
रोधनांही। ब॥ आगैं द्रव्यकैगुणपर्यायस्वभावरूपएंहि भावैहै। ब॥ गा॥ जो अबोपडि
समयं॥ उप्पादव्वयधुवत्तसब्भावो॥ गुणपज्जयपरिणामो, सोसंतोभणंदसमये १२२
॥ अर्थ॥ जोअर्थकहिएवस्तुहैसोसमयसमयउत्पादमयध्रुवपणंस्वभावरूपहै॥
गुणपर्यायपरिणामस्वरूपसत्वसिद्धांतविषैंकहैहै॥ ब॥ गा॥ अथ जेजीवआदिवस्तु
हैतेउपजनोविनसनोअरुथिररहनोइनितीनभावमईहैं सोवस्तुगुणपर्यायप
रिणामस्वरूपहैंसोही सत्तहै। जैसैंजीवद्रव्यकाचेतनगुणहैं तिसकास्वभावविभावरू
पपरिणमनहै तैसैंसमयसमयपरिणमैहैं तेपर्यायहैं तैसेंही पुद्गलकास्पर्शरसग
धवर्णगुणहैतेस्वभावविभावरूपसमयसमयपरिणमैहैं तेपर्यायहैं। ऐसैंसर्वद्रव्य
गुणपर्यायपरिणामस्वरूपप्रगटहै॥ आगैं द्रव्यनिकेव्ययउत्पादकहाहै सोकहैहैं ब ८२

गा॥ पडिसमयंपरिणमो॥ पुव्वोणस्सेदिजायदेअण्णो॥ विहुविणसोपढमो॥ जवकालो
मणदेविदिट्ठं॥ १२३॥ अर्थ॥ जोवस्तुकापरिणामसमयसमयप्रतिपरछैंतोविनसैहैं॥
अरअन्यनउपजैहैं॥ सोपहलापरिणमरूपवस्तुकातोनासैहैव्ययहैं॥ अरअन्यद्रव्य
रापरिणमनपहलाताकाउत्पादकहिए॥ ऐसेव्ययउत्पादहोहै॥ ब॥ आगैं द्रव्यकेध्रु
वपणकानिश्चयकरैहैं॥ गा॥ णोउप्पज्जदिजीवो॥ दव्वसरूवेणणेयणसेदि॥ तेचेव
दव्वमित्तं॥ णिच्चंतंभणजीवस्स॥ १२४॥ अर्थ॥ जीवद्रव्यहैसोद्रव्यस्वरूपकरिनाशकूंप्रा
प्तनहोयहै॥ अरनांहीउपजैहै॥ सोद्रव्यमात्रकरि जीवकेनित्यपणंजाणं॥ भावार्थय
हहीध्रुवपणहैं॥ जोजीवसत्तारूपचेतनताकरिउपजैविनसैनांही॥ तबाजीव
कोईहीनांहीउपजैहैं विनसैभीनांहीहैं॥ आगैं द्रव्यपर्यायकास्वरूपकहैहैं॥
॥ अत्थयरूवंदव्वं॥ विसेसरूवोहवेइपज्जाओ॥ दव्वंपिविसेसेण॥ उपज्जदिए

 जीवादिकवस्तु अन्वयरूपकरिइमहैसोहीविशेषरूपकरि
पर्यायहै बहुरिविशेषरूपपर्यायकरिइम नीनिरंतरउपजैविनसैहै॥ अ
न्वयरूपपर्यायनिविषैंसामान्यभावकूंइमकहिए॥ अरविसेषभावहैतेपर्यायहै
सोविशेषरूपकरिइम नीउत्पादव्ययस्वरूपकहिएऐसानांहीक्रियपर्यायइमतें
जुदेहीउपजैविनसैहैं॥ अभेदविवक्षातेंइमहीउपजैविनसैहै॥ नेरविवक्षातैंजुदे
नीकहिए ब अागैंगुणकास्वरूपकहैहैं॥गाथा॥ सरिसोपरिणामोसोजो॥ अणाइ
णिहणोहवेगुणो॥ सोहिसोसामण्णसरूवो॥ उप्पज्जंदिएसदेणेय॥१२५॥ अर्थ॥
जोइमकापरिणामसदृश कहिएपूर्वउत्तरसर्वपर्यायनिविषैंसमानहोयअनादि
निधनहोयसोगुणहै सोसामान्यस्वस्वरूपकरिउपजैविनसैनांहीहै॥ छ॥ ये
जेसेंजीवइमका चैतन्यगुणसर्वपर्यायनिमैंविद्यमानरहैहै अनादिनिधनहै॥ १ ८२

सोसामांन्यस्वरूपकरिउपजैविनसैनांहीहै॥ विशेषरूपकरिपर्यायनिविषैंविनसै
रूपहोयहीहैं॥ ऐसागुणहैं॥ तेसेंही अपनांअपनांसाधारणअसाधारणसर्वइ
मनिमैं जाननां॥ ब॥ अागैंकहैहैं गुणनीविशेषरूपकरिउपजैविनसैहै॥ गुणपर्यो
यनिकाएकपणांहैसोही इष्टहै॥गाथा॥ सोविविणस्सदिजायदि॥विसेसरूवेणसव्वदव्वे
सु दव्वगुणपज्जयाणं॥ येयतंचखुपरमट्ठं॥ १२६॥ अर्थ॥ जोगुणहैसोनीइमनिविषैंवि
शेषरूपकरिउपजैविनसैहैं॥ ऐसेंइमगुणपर्यायनिकाएकत्वपणांहैं॥ सोहीपर
मार्थरूपवस्तुहै ब॥ अागैंगुणकास्वरूपऐसानांहीहै॥ जोवस्तुतेंन्याराहीनित्यरू
पसदारहैहैं॥ गुणगुणीकेकथंचित्अभेदपणांहैं॥ तासेंजेपर्यायउपजैविनसैहैतेर
गुणगुणीकेविकारहैं॥ तातेंगुणहीउपजैहैतेविनसतेनीकहिए॥ ऐसाहीनित्या
नित्यात्मकवस्तुकास्वरूपहै॥ ऐसेंइमगुणपर्यायनिकीएकतासोही परमार्थ

DR BHAU DAJI MEMORIAL

रूपवस्तुकहैं॥ब॥आगैं॥प्रासंकाउपजैहैं॥जोद्रव्यनिविषैंपर्यायविद्यमानउपजैहैकिअवि
द्यमानउपजैहै॥ऐसीआशंकाकूंदूरिकरैहैं॥गाथा॥जहिदचेपज्जाया॥विविज्जमाणा
तिरोहिदासंति॥तादुप्पत्तीविहला॥पडपिहिदेहेवदत्तच्च॥२२७॥अथ॥जोद्रव्यविषैं
पर्यायहैतेभीविद्यमानहैं॥प्रतिरोहितकहिएढकेहैं॥ऐसेमानिएसोउत्पत्तिकरना
विफलहैं॥जैसैंकोईपुरुषकपडासूंढकाथा॥ताकोउघाडनवकहियहउपज्यासो॥
ऐसाउपजनाकहनोतौपरमार्थनांही॥विफलहै॥तैसैंद्रव्यमैंपर्यायढकीकूंहीउघा
डीकूंउपतीकहनांपरमार्थनांही॥तातैंपर्यायप्रविद्यमानहीउत्पत्तिकहिए॥प्रबया
हीकूंदृढकरैहैं॥॥॥सद्दाणंदव्वाणं॥पज्जायाणंप्रविज्जमाणाणंउप्पत्ती॥काला
ईलद्धीए॥अणाइणिहणम्मिदव्वम्हि॥२२८॥अथ॥अनादिनिधनद्रव्यविषैंकालप्रा
दिलब्धिकरिसर्वपर्यायनिकीअविद्यमानहीकीउत्पत्तिहैं॥ब॥॥अनादिनिधन

द्रव्यविषैंकालप्रादिलब्धिकरिपर्यायप्रविद्यमानकरिए॥अणहुतीउपजैहै॥ऐसैं
नांहीकिसर्वपर्यायएकहीसमयविद्यमानहैं॥तेदूकेउघडतेजायहैं॥समयसमय
क्रमतैंनवेनवेहीउपजैहैं॥द्रव्यत्रिकालवर्तीसर्वपर्यायनिकासमुदायहै॥का
लभेदकरिक्रमतैंहीपर्यायहोयहैं॥ब॥आगैंद्रव्यपर्यायनिकैकथंचित्भेदक
थंचित्अभेददिखावैहैं॥गाथा॥दव्वाणपज्जयाणं॥धम्मविवरकाएकीरभेएणं॥वच्चु
सहावेणपुणो॥एहिभेदोसकदेकाउं॥२२९॥गाथार्थ॥द्रव्यकैअरपर्यायकैधर्मधर्मी
कीविवक्षाकरिभेदकीजिएहैं॥वहुरिवस्तुस्वरूपकरिभेदकरनेकूंकोहीसमर्थ
रूजिएहैं॥ब॥ द्रव्यपर्यायकैधर्मीकीविवक्षाकरिभेदकरिएहैं॥द्रव्यधर्मी
हैपर्यायधर्महै॥वहुरिवस्तुकरिअभेदहीहै॥केईनैयायिकादिधर्मधर्मीकैस
र्वथाभेदमानैहैंतिनिकामतप्रमाणवाधितहै॥ब॥आगैंद्रव्यपर्यायकैसर्वथाभे

भेदमानैहैं तिनिकूं दूषणदिखावैहैं ॥ या जदि वत्थुदो विभेदो पज्जायदो वा णमणेयमूदो ॥ तोनिरवेक्कासिद्धि दोएंह मिथ्यात्वदेणियमा ॥१३७॥ अ० द्रव्यपर्य्यायकै भेदमानैंताकूंकहैहैं हेमूढ जीव द्रव्यके अरपर्य्यायके वस्तु तैं भिन्नमानैंहैं तोद्र व्यअरपर्य्यायदोऊकै निरपेक्षासिद्धि नियमकरि प्राप्तहोयहैं ॥ भा० द्रव्यपर्य्या यन्यारेन्यारेवस्तुवहरैहैं धर्मधर्मीपणांनहीवहरैहैं ॥ ब० आगैं विज्ञानहीएक अरद्वैतकहैहैं वाह्यपदार्थनहीमानैंहैं तिनिकूं दूषणवतावैहैं ॥ गा० जदिस वमेवणाणं णाणसरूवेहिं संविदएकं तोएविकिंपिवणेयं णेयेणविणाकहं णाणं ॥१३८॥ अर्थ ॥ जोसर्ववस्तुएकज्ञानहीहैंसोहीनानारूपकरिसंस्थितहैंनि श्चैहैं तोअरसेंमानैंज्ञेयकछूनीनवहरया ॥ वकरिज्ञेयविनांज्ञानकैसेंम्हरे ॥ भा० विज्ञानाद्वैतवादीवौधमतीकहैहैं ॥ जोज्ञानमात्रहीतत्वहैंसोहीनानारूप

तिष्टैहैं ॥ ताकूंकहिएजोज्ञानमात्रहीहै तोज्ञेयकिछूनींनांही ॥ अरज्ञेयनांहीतव ज्ञानकैसैंकहिए ज्ञेयकूं जाणैंसोज्ञानकहावे ज्ञेयविनांज्ञाननांही ॥ ब० पुनः ॥ गा० ॥ घडपडजडदव्वाणि हिणेयसरूवाणिसुण्णसिद्धाणि णाणंजाणेदिजदो णम्हादो भिण्णरूवाणि ॥१३९॥ अर्थ ॥ घटपटआदिसर्वजड द्रव्यज्ञेयस्वरूपका रिनलैप्रकारअसिद्धहै ॥ तिनिकूं ज्ञानजाणैहैं ॥ तातैंतेआत्मातैंभिन्नरूप न्यारेतिष्टैहैं ॥ ज्ञेयपदार्थजड द्रव्यन्यारेन्यारे आत्मातैंभिन्नरूपअसिद्धहै ॥ तिनिकूंलोपकैसैंकरिए जोनमानिए तोज्ञाननींनवहरै ॥ जानैंविनांज्ञानकाहे का ॥ पुनः ॥ गा० ॥ जेसद्दलोयसिद्धा देहगेहादिवाहिरंअत्थ जोतेपिएणंमण्णि एमुणदिसोणाएणमेपि ॥१४०॥ अर्थ ॥ जोदेहगेहआदिवाह्यपदार्थसर्वलो कप्रसिद्धहै ॥ तिनिकूंनीजोज्ञानहीजानैं सोवहवादीज्ञानकानामभीजाणैंनांही ॥

॥भावार्थ॥ बाह्यपदार्थकूं नीज्ञानही माननेंवालाज्ञानकास्वरूपतौनांही जाण्यांसोदूरिही
रह्यौ॥ज्ञानकानाममानीनांही जाणैंहैं॥ब॥ आगैंनास्तिवादी प्रतिकहैहैं॥गाथा॥ अवीहि
पिवमाणो॥जीवाजीवादिवक्कु विहंअच्छ॥जोनाणदिए छिकिंचिवि सोऊजाणंमहाजुत्तो
॥१३५॥ अर्थ॥ जोनास्तिकवादी जीवअजीवआदिवक्कुतप्रकारकेअर्थनिकूंप्रत्यक्षनें
त्रनिकरिदेखतोसंतोभी कहैं॥जोकछूमानतांही हैंसो असत्यवादीनिमैंमहाअसत्यवादी
हैं॥भावार्थ॥दीखतीवस्तुकूंमानतांही नांवतौवैसोमहाऊंधाहैं॥छ॥पुनः॥गाथा॥जंसच्चेपियस
तं॥तासोविअसंतउकहंहोदि॥एछिन्नि किंचित्तो॥अहवासुण्णंकहंमुणदि॥१३५॥
सत् ॥अ॥ जोसर्ववस्तूंरूपेहेविद्यमानहै॥सोवस्तुअसत्रूपअविद्यमानकैसेंहोय॥अ
थवाकछूमानतांही हैतौअैसीकहनेंवालाजाननेंवालाभीनांही वहतौतबशून्यहै॥अैस
कौनजानैं॥छ॥पुनः॥यहीगाथापाठांतरकहिएहैं॥गा॥जंसच्चेपिअसंतं॥तासो॥ १५५

वियसंतउकहंजणदि॥एछिन्नि किंपितच्चे॥अहवाशूण्णंकहंमुणदि॥१३६॥गाथा॥जो
सर्वहीवस्तुअसत्रूपहैतोसोअैसैंकहनेंवालानास्तिकवादीभीअसत्रूपवस्तुमात
वकिछूभीसत्यनांही है॥अैसैंकैसैंकहैहैं॥अथवाकछूभीनांही तोशून्यहै॥अैसैंकैसैं
जानैंहैं॥ता ए॥अथापक्षतोहैअरकहैंकिछूभीनांही॥सोयहकहनांतौवडाअज्ञानहै
तथासत्यतत्वकहनांसोप्रलापहीहै॥कहनेंवालाही नांही तबकहैकौन॥सो ना
स्तिकवादीप्रलापीहैं॥ब॥ पुनः॥ किंवहुणाउत्तेणय॥जेतीयमेंताणिसंतिएण
माणि॥तेत्तियमेत्ताअत्था॥संतियणियमेणपरमछ॥१३७॥भा॥ ब॥ बहुतकहनेंकरि
कहा॥जेतानामहैतेताहीनियमकरिपदार्थपरमार्थरूपहैं॥भावार्थ॥जेतेवस्तुकेनाम
हैतेतासत्यार्थपदार्थहैं॥बहुतकहनेंकरिपूरीपडी॥ब॥अैसैंपदार्थकास्वरूपकहा
अबतिनिपदार्थनिकाजाननेंवालाज्ञानहैं॥ताकास्वरूपकहैहैं॥गा॥ एएए

धर्मेहिजुदो॥अप्पाणंतहयरंपिणिबयदो॥जेजाणेदिसजोगं॥तेणएंभणएसमए॥१३८॥ जो नानाधर्मनिकरिसहितआत्मांतथापरद्रव्यतिनिकूंआपनेंयोग्यकूंजाणैंसोनिश्चयतैं सिद्धांतविषैंज्ञानकहिएहै॥भा॥ जोआपकूंतथापरकूंआपनेंआचरणकेंलयोग्यआगमतथाल्पकेअनुसारिजाननेंयोग्यपदार्थकूंजानैंसोज्ञानहै॥ब॥यहसामान्यज्ञानकास्वरूपकह्या॥अबसर्वप्रत्यक्षजोकेवलज्ञानताकास्वरूपकहैहैं॥ब॥गा॥ जेसव्वेपियया सदिद्दव्वपज्जायसंजुदंलोय॥तंहयआलोयंसव्वं॥तेणएंसव्वप्पच्चक्खं॥१३९॥भापार्थ॥ जोज्ञानद्रव्यपर्यायसंयुक्तलोककूंतथाअलोककूंसर्वकूंप्रकासैजानैंसोज्ञानसर्वप्रत्यक्षकेवलज्ञानहैं॥ब॥आगैंज्ञानकूंसर्वगतकहैहैं॥गा॥ सव्वेजाणदिजम्हा॥सव्वगयंतंयिवुच्चदेजम्हा॥एययुएविसरदिएणएं॥जीवेंचयऊएआसण्ण॥१४०॥भापार्थ॥ जातैंज्ञानसर्वलोकालोककूंजानैंहै॥तातैंज्ञानकूंसर्वगतकहिएहै॥बहुरिज्ञान

हैसोआत्माजीवकूंछोडिकरिअन्यज्ञेयपदार्थतिनिविषैंनजायहैं॥भा॥ ज्ञानसर्वलोकालोककूंजानैंहै॥यातैंसर्वगतसर्वव्यापककहिएहैं॥अरजीवद्रव्यकागुणएहै॥तातैंजीवकूंछोडिअन्यपदार्थमैंजायनांहीहैं॥ब॥आगैंज्ञानजीवकेप्रदेशनिविषैंतिष्ठतासोसर्वकूंजानैंहै॥तेसैंकहैहैं॥ब॥गा॥ एएणएणजादिएयंलोयंपिएणजाहिएणेदेसम्हि॥णियणियदेसवियाएं॥ववहारोएणएएयाएं॥१४१॥भापार्थ॥ज्ञानदैसोज्ञेयविषैंनांहीजायहैं॥बहुरिज्ञेयभीज्ञानकेप्रदेशनिविषैंनांहीआवैहैं॥अपनेंअपनेंप्रदेशनिविषैंतिष्ठेहैं॥तोऊज्ञानकेअरज्ञेयकेज्ञेयज्ञायकव्यवहारहै॥भावार्थ॥जैसेंदर्पणअपनेविकाएहैं॥घटादिकवस्तूअपनेंविकाएहैं॥तोऊदर्पणकीस्वच्छतातैंसोहिनांमैंदर्पणंघटआदिआयरीवैठैहैं॥तैसैंहीज्ञानज्ञेयकाव्यवहारजाननां॥ब॥आगैंमनपर्ययअवधिज्ञानअरमतिश्रुतज्ञानकासामर्थ्यकहैहैं॥ब॥गा॥ मण

पञ्चयविसाएणंइंदीएणंचदेसयचक्कं॥मदिसुदिएणंकमसोविसदपरोक्कंपरोक्कं
च॥१४२॥अर्थ॥मनपर्ययज्ञानवक्रूरिअवधिज्ञानएदोऊतौइंद्रापत्यक्षहै।वक्रूरिमति
ज्ञानहैसोविसदकहिएप्रत्यक्षभीहै।अरपरोक्षभीहै।अरश्रुतज्ञानहैसोपरोक्षही
है।ब॥भावार्थ॥मनपर्ययअवधिज्ञान।तौएकदेशप्रत्यक्षहै।जातैंजेताअपनाविष
यहैतेताविसदस्पष्टजानैहैं।सर्वकूंनजानैंतातैंएकदेशाकहिए।वक्रूरिमतिज्ञानहै
सोइंद्रियमनकरिउपजैहै।तातैंअवहारकरिइंद्रियनिकेसंबंधतैंविसदभीकहि
ए।औरतैंप्रत्यक्षभीहै।अरपरोक्षपरमार्थतैंहैही॥वक्रूरिश्रुतज्ञानहैसोपरोक्षही है
जातैंयक्रविसदस्पष्टजानैनांही।ब॥आगैंइंद्रियज्ञानयोग्यविषयकूंजानैहैंऐसैंक
हैहैं।ब॥गा॥इंदियजेमदिणाणं॥जुग्गंजाणेदिपुग्गलंदव्वं॥माणसणाणेचपुणो॥सु
यविसयंअक्खविसयंच॥१४३॥अर्थ॥इंद्रियनितैंउपज्याजोमतिज्ञानसोअपनेयो ८७

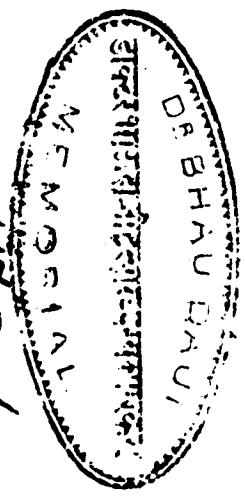

ग्यविषयजोपुद्गलद्रव्यताकूंजाणैहैं॥जिसइंद्रियकाजैसाविषयहैतैसैंहीजानैहैं॥
वक्रूरिमनसंबंधीज्ञानहैसोश्रुतविषयकहिएसास्त्रकावचनसुणैंताकेअर्थकूं
जानैंहै॥वक्रूरिइंद्रियकरिजानैंताकूंभीजानैहैं॥ब॥आगैंइंद्रियज्ञानकेउपयोग
कीअनुक्रमतैंप्रवृत्तिहैऐसैंकहैहैं॥ब॥गा॥पंचेंदियणाणाणं॥मणेएगंचहो॥
दिउवजुत्ते॥मणणाणेउवजुत्तो॥इंदियणाणंएकायेहि॥१४४॥अर्थ॥पांचूंहीइंद्रि
यकरिज्ञानहोहै।सोतिनिमैंसूंएकइंद्रियद्वारकरिज्ञानउपयुक्तहोयहै॥पांचूंहीए
ककालउपयुक्तहोयनांही॥वक्रूरिमनज्ञानकरिउपयुक्तहोयतवइंद्रियज्ञाननां
हीउपजैहैं॥ब॥इंद्रियमनसंबंधीज्ञानहैसोइनिकीप्रवृत्तियुगपतनांही॥ए
ककालएकहीइंद्रियसूंउपयुक्तहोयहै।जबयद्जीवयटकूंजानैतिसकालपटकूं
नांहीजानैंऐसैंक्रमसूंज्ञानहै॥ब॥आगैंइंद्रियमनसंबंधीज्ञानकीक्रमतैंप्र

प्रवृत्तिकरी तहां पदार्थनिका उपजैहै।। जो इंद्रियनिका ज्ञान एक काल है कि नांही ताकी आशंका
दूरिकरनेकूं कहैहैं।। गाथा।। एक्कंकालेएगं।। एगेएजीवस्सहोदिउवजुत्तं।। णाणाणा
णाणिपुणो।। लद्धिसहावेणवुच्चंति।। १४५।। टीका।। जीवकेउपयुक्तकहिएउपयोगकी
प्रवृत्तिरूपतौएककालएककोज्ञानउपयुक्तहोयहै।। बहुरिलब्धिस्वभावकरिए।
ककालनानाज्ञानकहैहैं।। ब।। जो इंद्रियहैसोभावइंद्रियदोयप्रकारकहीहै।। ल
ब्धिरूपउपयोगरूप।। तहां ज्ञानावर्णकर्मकेक्षयोपशमतैं आत्माकेजाननेकी
शक्तिहोयसोलब्धिकहिए।। सो तौ पांचइंद्रियअरमनइनिकैद्वारेजाननेकीशक्ति
एककालही तिष्टैहैं।। बहुरिवहुरितिनिकी व्यक्तरूपउपयोगकीप्रवृत्तिहै।। ज्ञेयसं
उपयुक्तहोयहै।। सोएककालएककोसंहोयहैं।। ऐसीही क्षयोपशमकी योग्य
ताहै।। ब।। आगैवस्तुकेअनेकात्मपणाहैतोऊअपेक्षातैंएकात्मकपणांभीहै ८८

ऐसेंदिखावैहैं।। गाथा।। जंवचुअणेयंतं।। एयंतंतंपिहोदिसविसेसकं।। सुयणाणेणणयेणं
हिंयनिरविक्खंदीसएणेव।। १४६।। भाषार्थ।। जोवस्तुअनेकांतहै सोअपेक्षासहितए
कांतभीहै।। तहां श्रुतज्ञानजोप्रमाण ताकरिसाधिएतोअनेकांतहीहै।। बहुरिश्रुत
ज्ञानप्रमाणकेअंशजेनयतिनिकरिसाधिए।। तबएकांतभीहै।। सोअपेक्षारहितनां
हीहै।। जातैंनिरपेक्षनयमिथ्याहै।। निरपेक्षवस्तुकारूपनांहीदेखिएहैं।। बहुरि प्र
माणतौवस्तुकासर्वधर्मकूंएककालसाधैहैं।। अरनयहैतेएकएकधर्महीकूं ग्रह
णकरैहैं।। तातैंएकनयकेदूसरीनयकीअपेक्षाहोयतौवस्तुसधै।। अरअपेक्षारहि
तनयवस्तुकूंसाधैनांही।। तातैंअपेक्षातैंवस्तुअनेकांतभीहैं।। अरएकांतभीहै।। ऐ
सैंजाननांही सम्यग्ज्ञानहैं।। ब।। आगैश्रुतप्रमानपरोक्षपणैं सर्वकूं प्रकासैहैंयहक
हैहैं।। गाथा।। सव्वंपिअणेयंतं।। परोक्खरूवेणजंयणासेदि।। तंसुयणाणंभणदि संसय

पक्षदीहिंपरिचत्तं॥१४७॥ नायार्थ॥ जो ज्ञानसर्ववस्तकूं अनेकांतपरोक्षरूपकरिप्रकाशै
सो जाणेंकहैसो श्रुतज्ञानहै॥ सोकैसाहै॥ संसयविपर्ययअनध्यवसायकरिरहित
हैं॥ ऐसासिद्धांतमेंकहैहैं॥ ब॥ नावी॥ जोसर्ववस्तकूंपरोक्षरूपकरिअनेकांतप्रका
शै॥ सोश्रुतज्ञानहै॥ सास्त्रकेवचनसुननेतैंअर्थकूंजाणैंसोपरोक्षही जानैं॥ अरसास्त्रमें
सर्वही वस्तुका अनेकांतात्मकस्वरूपकह्याहै॥ सो सर्वही वस्तुकूं जानैं॥ बहुरि गु
रूनिकेउपदेसपूर्वक जानैंतब संसयादिकनीनरहैं॥ ब॥ आगैं श्रुतग्यानकेविकल्पजेजे
तेनयहैंतिनिकास्वरूपकहैहैं॥ लोयाणंववहारं॥ धम्मविवक्खाइंजोपसाहेदि॥ सु
यणाणस्सवियप्पो॥ सोविणउलिंगसंभूदो॥१४८॥ अर्थ॥ जोलोकनिकाव्यवहारकूंवा
वस्तुकाएकधर्मकीविवक्षाकरिसाधैसोनयहै॥ सोकैसाहै॥ श्रुतज्ञानकाविकल्पकहि
एभेदहैं॥ बहुरिकैसाहैं॥ लिंगकरिउपज्याहै॥ बी॥ वस्तुकाएकधर्मकीविवक्षासे ८७

लोकव्यवहारकूंसाधै॥ सोश्रुतज्ञानका अंस ग्रानय हैं॥ सोसाध्य जोधर्मता कूंहेतुकरिसाधै
हैं॥ वस्तु सत्स्वरूपहै॥ ऐसैं नयहेतुतैंउपजैहैं॥ ब॥ आगैंएकधर्मकूं नयकैसैं ग्रहणक
रैहैसोकहैहैं॥ ब॥ गा॥ णाणीधम्मजुदंपिय॥ एयंधम्मंपियवुच्चदेअत्थो॥ तस्सेय
विवक्कादो॥ णिद्दिट्ठविवक्खहिसेसाणं॥१४९॥ अर्थ॥ नानाधर्मकरियुक्तपदार्थहैं
तौऊएकधर्मरूपपदार्थकूंकहै॥ जातैंएकधर्मकी जहांविवक्षाकरैतहांतिसहीध
र्मकूंकहै॥ अवशेषसर्वधर्मकी विवक्षा नांहीकरैहैं॥ ब॥ जैसैं जीववस्तुविषैं
अस्तित्वनास्तित्वनित्यत्वअनित्यत्वएकत्वअनेकत्वचेतनत्वअमूर्त्तत्वआदि
अनेकधर्महैं॥ तिनिमैंएकधर्मकीविवक्षाकरिकहैजोजीवचेतनस्वरूपहीहै॥ इत्या
दितहांअन्यधर्मकी विवक्षा नांहीकरैतहांऐसा न जाननां जोअन्यधर्मनिका अ
भावहैं॥ प्रयोजनकैआश्रयएकधर्मकूंमुख्यकरिकहैहै॥ अन्यकी विवक्षा नाहीहै

ब॥ आगैं वस्तुका धर्मकूं अर तिसके वाचक सद्दकूं अर तिसके ज्ञानकूं नय कहैं हैं॥
सो विय इक्को धम्मो॥ वाचय सद्दो वि तस्स धम्मस्स तं जाणइ॥ तेणं एंते तिण्णि वि॥ णय
विसेसाय॥ १५०॥ अर्थ॥ जो वस्तुका एक धर्म॥ वक्ष्यति सो धर्मका वाचक शब्द॥ वक्ष्य
ति सो धर्मकूं जाननेवाला ज्ञान ए तीनूंही नयके विशेष हैं॥ ब॥ तिस वस्तुका
ग्राहक ज्ञान अर ताका वाचक शब्द अर वस्तु इनिकूं जैसैं प्रमाण स्वरूप कहिए तैसैं
ही नय कहिए॥ ब॥ आगैं पूछ्या है कि वस्तुका एक धर्मही ग्रहण करै अैसा जो एक नय
ताकूं मिथ्यात्व कैसैं कह्या है॥ ताका उत्तर कहैं हैं॥ अर्थ॥ तेसा विरका सुणया॥ नि र
विरका ते विउ णया हो॥ ति सय लव वहार सिद्धी सुणया दो हो हिं णिय मेण॥ १५१॥
अर्थ॥ ते पहले कहे जेती नय का नय ते परस्पर अपेक्षा सहित होयतब तो सुनय है॥
वक्ष्यते ही जब अपेक्षा रहित सर्वथा एक एक ग्रहण की जे तब दुर्नय हैं॥ वक्ष्यसु ए०

नय निते सर्व व्यवहार वस्तुके स्वरूपकी सिद्धि होय है॥ ब॥ नय हैं ते सर्वही सापेक्ष तो
सुनय हैं॥ निरपेक्ष कुनय॥ तहां सापेक्षतैं सर्व वस्तु व्यवहारकी सिद्धि हैं॥ सम्यग्ज्ञान
स्वरूप है॥ अर कुनय निते सर्व व्यवहार का लोप होय है॥ मिथ्याज्ञान रूप है॥ ब॥ आगैं
परोक्ष ज्ञानमैं अनुमान प्रमाण जी हैं॥ ताका उदाहरण पूर्वक स्वरूप कहैं हैं॥ ब॥
जं जाणिज्जइ जीवो इंदिय वावार काय चिट्ठाहिं॥ तं अणुमाणं णाणं॥ तं पि ए
णयं वक्खिट्ठं जाणं॥ १५२॥ अर्थ॥ जो इंद्रिय निके व्यापर अर काय की चेष्टा निका
रि शरीरमैं जीवकूं जानिए सो अनुमान प्रमाण कहैं है॥ सो यह अनुमान ज्ञान है॥ सो
भी नय है सो भी अनेक प्रकार है॥ ब॥ यहले श्रुतज्ञानके विकल्प नय कहे थे॥ यहां अ
नुमान का स्वरूप कह्या जो सरीरमैं तिष्ठता जीव प्रत्यक्ष ग्रहण मैं नांही आवे यातैं
इंद्रिय निका व्यापार स्पर्शनां स्वादलेनां बोलनां सूंघनां चाखनां देखनां सुननां।

आदितथाकायचेष्टागमनआदिकचिह्ननितैंजानिएकिशरीरमैंजीवहैसोयहअनुमानहै
।।जातैंसाधनतैंसाध्यकाज्ञानहोयसोअनुमानकहिएहै।।सोयहजीनयहीहैपरोक्ष१।
माणकेभेदनिमैंकह्याहैसोपरमार्थकरिनयहीहै।।सोस्वार्थपरमार्थकेभेदतैंतथाहे
तुविज्ञानिकेभेदनितैंअनेकप्रकारकह्याहै।।ब।।आगैंनयकेभेदनिकूंकहैहैं।।ब।।गा
था।।सोसंगहेणउक्तो।।दुविहोवियदव्वपज्जाएहिंतोतेसिंविविसेसादोयेणगमयपुद्दी
वेणएं।।२५३।।भावार्थ।।सोनयसंग्रहकरिएसामान्यकरितोएकहै।।बहुरिविशेषकरि
इव्यनयपर्य्यायनियअनेकभेदहोयहै।।बहुरितिनिहीकेविशेषतैंनैगमकूंआदिदे
करिहैंसोएनहैयेतेज्ञानहीहै।।ब।।आगैंइव्यनयकास्वरूपकहैहैं।।ब।।गा था।।जोसा
हरिसामण्णं।।आविण्णदेविसेसरूवेहिं।।एणएणजुत्तिबलादो।।दव्वंबोसोएणहोहि
।।२५४।।अर्थ।।जोनयवस्तुकूंविशेषरूपनितैंआविनाभूतसामान्यस्वरूपकूंजान १ ९२

प्रकारयुक्तिकेबलतैंसाधैसोइव्यार्थिकनयहै।।भावार्थ।।वस्तुकास्वरूपसामान्यविशे
षात्मकहै।।सोविशेषविनासामान्यनांहीं।।जैसासामान्यकूंयुक्तिकेबलतैंसाधैसोइ
व्यार्थिकनयहैं।।ब।।आगैंपर्य्यायार्थिकनयकूंकहैहैं।।गा था।।जोसाहेदिविसेसे।।बहु
विहसामण्णसंजुत्तेसहवे।।साहणलिंगवसादो।।यज्जायविसयोणयोहोंति।।२५५।।अर्थ।।
जोनयअनेकप्रकारसामान्यकरिसहितसर्वविशेषनिकूंसाधनजोलिंगताकेवसतैं
साधैसोपर्य्यायार्थिकनयहै।।भावार्थ।।सामान्यसहितविशेषनिकूंहेतुतैंसाधैसोपर्य्यो
यार्थिकनयहैं।जैसैंसत्सामान्यकरिसहितचेतनअचेतनएणविशेषहैं।।बहुरि
चितसामान्यकरिसंसारीसिद्धजीवएणविशेषहैं।।बहुरिसंसारीएणसामान्यकरि
सहितत्रसस्थावरजीवएणविशेषहैइत्यादि।।बहुरिअचेतनसामान्यकरिसहित
पुद्गलआदिपांचइव्यविशेषहैं।।बहुरिपुद्गलसामान्यकरिसहितअणुस्कंधघट

पटत्रादिवित्रोमंहै॥इत्यादिपर्य्यायार्थिकनयहेतुतैंसाधैहैं॥व॥त्रागैंइमार्थिकना
यकानेदनिकूंकहैहैं॥तहांप्रथमहीनैगमनयकूंकहैहैं॥व॥गाथा॥जोसाहेदिक्रवीरं
॥वियप्परूवंनविस्समछेच॥संपडिकालाविऊ॥सोफुणयोएगमोणेयो॥२५६॥
र्थ॥जोनयत्रतीततथानविष्यत्तथावर्त्तमानकूंविकल्परूपकरिसंकल्पमात्रसाधै
सोनैगमनयहैं॥भावार्थ॥इमहैसोतीनकालकेपर्य्यायनितैंत्रन्वयरूपहै॥ताकूंत्र
पनांविषयकरित्रतीतपर्य्यायकूंनीवर्त्तमानचलसंकल्पमेंलेत्रागामीपर्य्यायकूं
नीवर्त्तमानचलसंकल्पमेंलेवर्त्तमानमेंनिष्पन्नकूंतथात्रनिष्पन्नकूंनिष्पन्ना
रूपसंकल्पमेंले॥त्रैसेज्ञानकूंतथावचनकूंनैगमनयकहिएहैं॥याकेत्रनेकभे
दहैं॥सर्वनयकेविषयकूंमुष्यगौणकरित्रपनांसंकल्परूपविषयकरैहै॥इहां
उदाहरणत्रैसा॥जैसैंइसमनुष्यनामाजीवइमकेसंसारपर्य्यायहैं॥त्ररसि ६२

पर्य्यायहै॥यहमनुष्यपर्य्यायहैं॥त्रैसैंकहतांसंसारत्रतीतत्रनागतवर्त्तमानतीनकाल
संवेधीजीहै॥सिद्धपणांत्रनागतहीहै॥मनुष्यपणांवर्तमानहीहै॥परंतुइसनयकेव
चनकरित्रप्रायमेंविद्यमानसंकल्पकरिपरोक्षत्रनुभवमेंलेकहैयाइव्योंमेंमेरेज्ञा
नमेंत्रवारएपर्यायनांसैंहैं॥त्रैसेसंकल्पकूंनयवामनयकाविषयकहिए॥इनिमें
संग्रहगौणकोईकूंकहै॥व॥त्रागैंसंग्रहनयकूंकहैहैं॥गाथा॥जोसंगहेदिसद्धं
देसंवाविविहसद्दपजायं॥त्रएगमलिंगविसिट्ठं॥सोविएहसंगहोहोदि॥२५७
॥त्रर्थ॥जोनयसर्ववस्तुकूंतथादेसकहिएवस्तुकेभेदकूंत्रनेकप्रकारइव्यपर्य्याय
सहितत्रन्वयलिंगकरिविशिष्टसंग्रहकरै॥एकस्वरूपकहैसोसंग्रहनयहैं॥भावार्थ॥
वस्तुसर्वद्रव्यपर्यायक्रमभणहुएसत्करिइव्यपर्यायनिसंत्रन्वयरूपएकसत्
मात्रहैत्रैसैंकहै॥तथासामान्यसत्स्वरूपइमात्रहैं॥तथाविसेषसत्रूपपर्य्या

डाक्टर भाऊदाजी इंस्टीट्यूट
DR. BHAU DAJI
MEMORIAL

यमात्रसै॥तथाजीववस्तुचितसामान्यकरिएकहैं॥तथासिद्धसामान्यकरिसर्वसि
द्धएकहैं॥तथासंसारिसासामान्यकरिसर्वसंसारीजीवएकहैं॥इत्यादितथाअजी
वसामान्यकरिपुद्गलादिपांचद्रव्यएकअजीवद्रव्यहै॥तथापुद्गलसासामान्यक
रिअणुस्कंधघटपटादिएकद्रव्यहै॥इत्यादिसंग्रहनयरूपकरिकहैसोसंग्रह
नयहै॥ब॥अबीव्यवहारनयकूंकहैहैं॥गा॥जंसंगहेणगहिदं॥विसेसरहिदं
पिभेददेसद्दं॥परमाणुपज्जंते॥ववहारणउंभवेसोवि॥१५॥नाभार्थ॥जोनयसं
ग्रहनयकरिविशेषरहितवस्तुकूंग्रहणकीयाथातिनकूंपरमाणुपर्यंतनिरंतर
भेदसोव्यवहारनयहै॥ब॥नावार्थ॥संग्रहनयसत्सर्वकूंग्रह्यातहांव्यवहारभेद
करैजोसत्द्रव्यपर्यायहै॥बहुरिसंग्रहद्रव्यसामान्यकूंग्रहैतहांव्यवहारभेद
करै॥द्रव्यजीवअजीवदोयभेदरूपहैं॥बहुरिसंग्रहजीवसामान्यकूंग्रहै॥तहांव ९३

व्यवहारभेदकरै॥जीवसंसारीसिद्धदोयभेदरूपहैं॥इत्यादि॥बहुरिपर्यायसामान्यकूंसं
ग्रहणकरैतहांव्यवहारभेदकरै॥पर्यायअर्थपर्याय॥व्यंजनपर्यायभेदरूपहै
॥तैसैंहीसंग्रहपुद्गलसामान्यकूंग्रहणकरै॥तहांव्यवहारअणुस्कंधघटपट
आदिभेदरूपकरैं॥ऐसैंजाकूंसंग्रहग्रहैतामैंभेदकरताजाय॥जहांफेरिभेदन
होयसकै॥तहांताईसंग्रहव्यवहारकाविशेषहै॥ब॥ऐसैंतीनद्रव्यार्थिकनयके
भेदकहै॥अबपर्यायार्थिकके भेदकहैहैं॥तहांप्रथमही॥ऋजुसूत्रनयकूंकहैहैं
॥गा॥जोवट्टमाणकाले॥अत्थपज्जायपरिणदंतंभणइ॥सेतंसारिसंच॥तेवि
णयंरिजुणयंजाण॥१५॥अर्थ॥जोनयवर्तमानकालविषैंअर्थपर्यायरूप
परिणयाजोअर्थ॥ताहिसर्वकूंसत्रूपसाधैसोऋजुसूत्रनयहै॥नावार्थ॥वस्तुस
मयपरिणमैहैं॥सोएकसमयवर्तमानपर्यायकूंअर्थपर्यायकहिएहैं॥सो

याकूंऋजुसूत्रकोंनयकाविषयहैं॥तिसमात्रहीवस्तुकूंकहैहैं॥वर्त्तमानसमयहीकूंवर्त्तमान
कालकूंनीव्यवहारमैंवर्त्तमानकहिएहैं॥सोतिसवर्त्तमानकालस्थायीपर्य्यायकूं
नीसाधै॥तहांस्थूलऋजुसूत्रसंज्ञाहै॥अरसेंतीनतौपूर्वोक्तद्रव्यार्थिकअरऋजुसू
त्रएचारिनयतौअर्थनयकहिएहैं॥आगैंतीनसद्दनयहैंतिनिकूंकहैहैं॥तहां
प्रथमहीसद्दनयकूंकहैहैं॥गाथा॥सद्दोसिंवछूएं॥संखालिंगादिवकृपयारेहिं॥
जोसद्दिणएहुं॥सद्दणयेतंवियाणेह॥१६॥भाषार्थ॥जोनयसर्ववस्तुनिकै
संख्यालिंगआदिवकृतप्रकारकरिनानापणाकूंसाधैसोशब्दनयजाणणां॥जो
संख्याएकवचनद्विवचनबहुवचनलिंगस्त्रीपुरुषनपुंसककाक्चनआदिका
दूमैंकालकारकपुरुषउपसर्गलेलेंसोइनिकरियाकरणकेप्रयोगपदार्थकूंने
दरूपकरिकहैहैं॥सोसद्दनयहैं॥जैसैंपुष्यतारकानक्षत्रएकज्योतिषीकेवि

मानकेतीनलिंगकहे॥तहांव्यवहारमैंविरोधदीषैजोसोहीपुरुषसोहीस्त्रीनपुंस
ककैसैंहोय॥तथापिसद्दनयकायहहीविषयहैं॥जोजैसासद्दकहैतैसाहीवस्तु
र्थकूंजेदरूपमानना॥ब॥आगैंसमभिरूढनयकूंकहैहैं॥गाथा॥जोएगेगंवस्तु
छंपरिणतिन्नेयेएसाहएणएं॥मुख्यछंवाजासदि॥अभिरूढंतेणयंजाणए॥२
॥१६॥भाषार्थ॥जोनयवस्तुकूंपरणमकेभेदकरिएकएकन्यारान्यारोभेदरूपसाधै
अथवातिनिमैंमुख्यैअर्थग्रहणकरिसाधैसोसमभिरूढनयजाणणां॥ब॥भावार्थ॥आ
द्दनयवस्तुकूंपर्य्यायनामकरिभेदनांहीकरै॥अरयहसमभिरूढनयहैंसोएक
वस्तुकेपर्य्यायनामहैं॥तिनिकेभेदरूपन्यारेन्यारेपदार्थग्रहणकरै॥तहांजिसः
कूंमुख्यकरिकहै॥तिसकूंसदातैसाहीकहैं॥जैसैंगऊसद्दकेवकृतअर्थथेतथ ।
गऊपदार्थकेवकृतनामहैंतिनिकूंयहनयन्यारेन्यारेपदार्थमानेहैं॥तिनिमैंसं

सुरभक रिगऊकूंपकऊगो ताकूंचालता बैठतांसोवतांगऊकहीकहै वोकरै ऐसास
मझिरूढहूँ ॥ब॥ आगैएवंभूतनयकूंकहैहै ॥ब॥गा॥ जेणसहावेणजहा परिण
दरूवमिलमयत्तादो ॥तप्परिणमंसाहदि सोएउसो विपरमत्थो ॥१६२॥ अ
वस्तुजिसकालजिसस्वभावकरिपरिणमनरूपहोयतिसकालतिसपरिणमैतैत
न्मयहोयहैं ॥तातैंतिसहीपरिणामरूपसाधैकहैं सोनयएवंभूतहैं यहनयपर
मार्थरूपहैं ॥वा॥ वस्तुका जिसधर्मकीमुख्यताकरिनामहोय तिसहीअर्थके
परिणमनरूपजिसकालपरिणमैं ताकूंतिसनामकरिकहैं सोएवंभूतनयहैं ऐ
याकूंनिश्चयनयभीकहिएहैं जैसैंगऊकूंचालैजिसकालगऊकहै अन्यकाल
कबूंनकहै ॥ब॥ आगैंनयनिकाकथनकूंसंकोचैहैं ॥ब॥गा॥ एवंविहहिएएहिं
॥जोवबुववहरेदिलोयमि ॥दंसएणाणचरित्तं सोसाहदिसगमोक्खंच ॥१६३॥ ६५

॥अथ॥ जोपुरुषयाप्रकारनयनिकरिवस्तुकूंव्यवहाररूपकरैहैसाधैहैं अरप्रवर्त्तो
वैहैं सोपुरुषदर्शनज्ञानचारित्रकूंसाधैहैं वकुरिस्वर्गमोक्षकूंसाधैहैं ॥ब॥गा॥
प्रणमनयकरिवस्तुकास्वरूपयथार्थसाधैहै सोजोपुरुषप्रमाणनयनिकास्वरू
पजानिवस्तुकूंयथार्थव्यवहाररूपप्रवर्त्तावैहैं तिसकेसम्यग्दरशनज्ञानचारि
त्रकीअरताकाफलस्वर्गमोक्षकीसिद्धिहोयहैं ॥ब॥आगैंकहैहैं जोतत्वार्थकासुननां
जाननां धारणंभावणंकरनेंवालेविरलेहैं ॥गा॥ विरलाणिसुणहितच्चं विरल ७
जाणंतितच्चदोतच्चं विरलाभावाहितच्चं विरलाणंधारणंदोपि ॥१६४॥ जो
गतविषैतत्वकूंविरलेपुरुषसुणैहैं वकुरिसुनिकरिभीतत्वकूंयथार्थविरलेजानैं
हैं वकुरिजानिकरिभीविरलेतत्वकीभावनाहियेकरिफेरिफेरिअभ्यासकरैहैं व
कुरिअभ्यासकीएभीतत्वकीधारणंविरलेनिकैहोयहैं ॥गा॥ तत्तावैकायथा

र्थस्वरूपकासुननांजाननांभावनांधारणंउसरीतरइर्त्नेभईहै॥इसपंचमाकालमेंतत्व
केयथार्थकहनेवालेभीदुर्लभनहैं॥अरधारणेवालेभीदुर्लभनहैं॥ब॥आगेकहैहैं॥
जोकहेतत्वकूंसुनिकरिनिश्चलभावतैंभावैसोतत्वकूंजाणैं॥ब॥गाथा॥तत्वंकहिज
माणं॥णिच्चलभावेणगिण्हदेजोहि॥तेचियभावेइसया॥सोवियतच्चंवियाणेई॥
॥१६५॥भावार्थ॥जोपुरुषगुरुनिकरिकह्या॥जोतत्वकास्वरूप॥ताकूंनिश्चलभावकरि
रिग्रहणकरैहैं॥वकुरितिसकूंअभावनांछोडिनिरंतरभावैहै॥सोपुरुषतत्वकूं
जाणेहैं॥ब॥आगेंकहैहैंतत्वकीभावनांनांहीकरैहैं॥सोस्त्रीआदिकेवसकीननां
हीहैंसर्वलोकहै॥ब॥गाथा॥कोणवसोइछिजणे॥कस्सणमयणेणखंडियंमाणं॥
कोइंदिएहिंणजिउ॥कोएकसाएहिंसंतत्तो॥१६६॥अर्थ॥यालोकविषैंस्त्रीजन
केवशीभूतकोंननांहीहै॥वकुरिकामकरिजाकामनखंडनभयाऐसाकोंनहैं ९९

वकुरिइंद्रियनिकरिनजीत्याऐसाकोंनहैं॥वकुरिकषायनिकरितप्तायमानोंनांही
ऐसाकोंनहैं॥भावार्थ॥विषयकषायनिकेवशितोसर्वलोकहैं॥अरतत्वकीभावनां
करनेवालेहैं॥ब॥आगेंकहैहैं॥जोतत्वज्ञानीसर्वपरिग्रहकात्यागीहोहैं॥सोस्त्रीआ
दिकेवशिनांहीहोहै॥ब॥गाथा॥सोणवसोएछिजणे॥सोणजिणइंदियेहिमोहेण॥
जोणयगिण्हदिगंथं॥अब्भंतरबाहिरंसव्वं॥१६७॥भावार्थ॥जोपुरुषतत्वकास्वरुप
जाणिबाह्यअभ्यंतरसर्वपरिग्रहकूंनांहीग्रहणकरैहैं॥सोपुरुषस्त्रीजनकेवश्य
नांहीहोहैं॥वकुरिसोहीपुरुषइंद्रियनिकरिजीत्यानहोयहै॥वकुरिसोहीपुरुष
मोहकर्मजेमिथ्यात्वकषायतिसकरिजीत्यानहोयहै॥भावार्थ॥संसारकाबंधनप
रिग्रहहैं॥सोसर्वपरिग्रहकूंछोडैसोहीस्त्रीइंद्रियकषायादिकनकेवशीभूतनां
हीहोहैं॥सर्वत्यागीहोयशरीरकाममत्वनराखैतत्वनैजस्वरूपमैंहीलीनहोयहै॥

॥ब॥ आगैं लोकानुप्रेक्षा का चितवनका महात्म प्रगट करैहैं॥ ब॥ गा॥ एवं लोयसरू
हावं॥ जोझायदि उपसमेक्कसब्भावो सो खवियकम्मा॥ पुंजंतसेवसिद्धामणीव्व दी
॥१६॥ अ॥ जो पुरुष षड्प्रकार लोकस्वरूपकूं नयसमएकस्वभावरूप कुवासंता
ध्यावैहैं॥ चितवनकरैहैं॥ सो पुरुष क्षेपैहैं नासकि एहैं कर्मकै पुंजज्ञानैं॥ जैसे तिस
लोकही का सिषामणि होयहैं॥ ता॥ जैसैं साम्यभावकरि लोकानुप्रेक्षा का चितव
नकरै सो पुरुष कर्मकानाशकरि लोककै सिखर जायतिष्ठैहैं॥ तहां अनंतज्ञानो
पयोगाधारहितस्वाधीनज्ञानानंदस्वरूपसुखकूं भोगवैहैं॥ ब॥ इहांलोकभावना
काकथनविस्तारकरिकरनेंकाअभिप्राय जैसाहो॥ जो अन्यमतीलोककास्वरूपत
था जीवकास्वरूप॥ तथाहि ताहितकास्वरूप अनेकप्रकार अन्यअसत्यार्थप्रमा॥ ए७
णविरुद्धकहैहैं॥ सोकेई जीवतौ सुनिकरि विपरीतश्रद्धाकरैहैं॥ केई संसयरूपहो

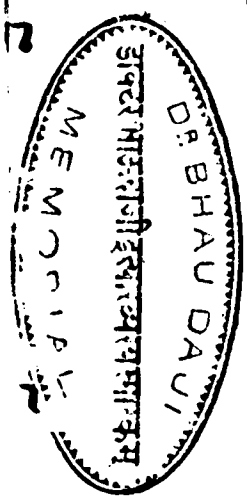

॥ बहैं॥ केई अनध्यवसायरूपहोयहैं॥ तिनिकै विपरीत श्रद्धातैं चित्तथिरता कूं नप
वैहैं॥ अरचित्तथिरनिश्चितरूपांवितां यथार्थध्यानकीसिद्धिनांही॥ ध्यानवि
नाकर्मकानासहोयनांही॥ तातैं विपरीतश्रद्धानदूरिहोनेंकै अर्थि यथार्थलो
ककातथाजीवादिपदार्थनिकास्वरूपजाननेंकै अर्थि विस्तारकरिकथन
कीयाहैं॥ ताकूं जानिजीवादिकस्वरूपपहचानिअपनेंस्वरूपविषैं निश्चलचित
वानिकर्मकलंकनानिमजीवमोक्षकूं प्राप्तहोइ॥ जैसाश्रीगुरुनिकाउपदे
शहैं॥ ब॥ कुंडलेपा॥ लोकाकारविचारिकैं॥ सिद्धस्वरूपचितारि॥ रागविरोधविडा
रिकैं॥ आतमरूपसवारि॥ आतमरूपसवारिमोहपुरक्षोसदाही॥ व्याधि
आधिजरमरनआदि दुखकैनकराही॥ श्रीगुरुसिखधारिटारिअज्ञानमांनकू
सोका॥ मनथिरकारनयहविचारिनिजरूपसुलोका॥ २॥ जैसैं लोकानुप्रेक्षा

कानिरूपणकीया ॥ब॥ ॥गा॥ ॥ ॥

णो॥णयन्नप्पाणंकरंविजाणेदि॥न्नरुमणसहिदोहोदि॥ऊतहचितिरिक्कोरु
वेरुद्दो॥ध्र॥न्नर्थ॥विकत्रयतैनीसरिपंचेंद्रियनीहोयतो न्नसैनी मनरहितो
होय॥तो न्नापन्नरपरकानेदहीजाणेंनांही॥वकुरिकदाचित्तमनसहितसै
नीनीहोय॥तोतिर्यंचहोयतोरोद्रक्रूरपरिणामीविलावघूघूसर्प्पसिंहम
छन्नादिहोयदै॥ना वार्थ॥कदाचित्पंचेंद्रियनीहोयतोन्नसैनीहोयसैनीपणं
कुर्ल्लनहैं॥वकुरिसैनीनीहोयतोक्रूरतिर्यंचहोय॥ताकेपरिणामनिरंतर
पापरूपहीरहैं॥ब॥न्नागेंन्नैसेक्रूरपरिणामीनिकैनरकपातहोयहैं॥तैसै
कहैहैं॥गाथ॥सोतिचन्नसुहलेसो॥णरयेणिवडेइइकदेही मे॥तच्छविडुक
मुजहि॥सारीरंमाणसंपउरं॥५॥न्नर्थ॥क्रूरतिर्यंचहोयसो तीव्रन्नसुभपरि
णामकरिन्नसुभलेश्यासहितमरिनरकमेंपडैहैं॥कैसोहैनरकदुःखदायक ६१५

हैं॥न्नयानकहै॥तहां सरीरसंबंधीतथामनसंबंधीप्रचुरदुःखभोगवैहैं॥ब॥
न्नागेंकहैहैंतिसनरकतैंनीसरितिर्यंचहोयदुःखसहैहैं॥ब॥गाथ॥ तत्तोणी
सरिऊणंसुणरवितिरिएसुजायदेपावं॥तच्चविडुक मणंतं॥विसहदिजीवो
न्नणेयविहं॥ई॥न्नर्थ॥तिसनरकतैंनीसरिकरिजीतिर्यंचगतिविषेउपजैहैं
॥तहांजीपापरूपजैसैंहोयतैसैंयहजीवन्ननेकन्नकारकादुःखन्ननंतवि
त्रोषकरिसहैहैं॥ब॥न्नागेंकहैहैंकिमनुष्यपणापावणंदुर्ल्लभहैं॥सोजीमि
थ्यातीव्रहोयपापउपजावैहैं॥ब॥गाथ॥ रयणंचउप्पएपिवमणुयत्तंसुठुदुल्ल
हंलहिएमिच्छोहवेइजीवो॥तच्चविपावंसमज्जेदि॥७॥न्नर्थ॥तिर्यंचतैंनीसरिम
नुष्यगतिपावणंन्नतिदुर्ल्लभहैं॥जैसैंचौपथमेंरत्नपड्याहोयसोवड्याग्यतै
हाथिलागेतैसैंदुर्ल्लभहैं॥वकुरिन्नैसेंदुर्ल्लभमनुष्यपणांनीपायकरिमिथ्या

दृष्टीहोयपापउपजावेहैं॥भावा॥मनुष्यगतीहोयअरुम्लेछखंडआदितथामिथ्या
दृष्टीनिकीसंगतिविषैउपजिपापहीउपजावेहैं॥बहुरागोंकहैहैंमनुष्यगती
होयअरुआर्यखंडविषैजीउपजैतौउत्तमकुलआदिकापावणोदुर्लभ न
हैं॥गाथा॥अरुलहईअज्जवंतेतहएविपावेइउत्तमंगोत्तंउत्तमकुलेविय
त्तेधणहीणोजायदेसीवो॥८॥अर्थ॥मनुष्यपर्यायपायआर्यखंडमैंजीजन्म
पावैतौउंचकुलपावणोदुर्लभनहैं॥बहुरिकदाचित्ऊंचकुलविषैजन्म
पावैंतौधनहीनदरिद्रीहोय॥तासोकछूसुक्रतचएैनांही॥पापहीमेंली
नरहैं॥बहुरि॥गा॥अरुधणसहितोहोदिक्खइंदियपरिपुण्णतदोकुलहा॥अ
हइंदियसंपुण्णो॥तहविसरोइहवेदेहो॥९॥भा॥बहुरिजोधनसहितपणां
गीपावैतोइंद्रियनिकीपरिपूर्णतापावनोदुर्लभनहैं॥बहुरि॥गा॥अहणी १००

रोउहोदिक्खातहविणपावेयजीवेयंसुरंये॥अरुचिरकालंजीवदि॥तासीलंणो
वपावेई॥१०॥भा॥अथवाकदाचित्निरोगशरीरहोयतोजीवितकहिएआयु
दीर्घनपावै॥यहपावनांदुर्लभनहैं॥बहुरिअथवाजोकदाचितदीर्घआयुजीचिरक १
लकहिएदीर्घपावैतौशीलकहिएउत्तमप्रकृतिमंदकषायरिणामनपावैंसुद्ध
स्वभावपावनांदुर्लभनहैं॥पुनः॥गा॥अहदोसिलजुत्तोतहविणपावेइ
साहुसंसग्गंअरुतंपिकहविपावदिसम्मंतहविअइदुलहं॥११॥भा॥
बहुरिसुद्धस्वभावजीकदाचित्पावैतौसाधपुरुषकासंसर्गसंगतिनांहीपा
वैहैं॥बहुरिसोजीकदाचित्पावैतौसम्यक्तपावनांअतिदुर्लभ
नहैं॥बहुरि॥गा॥सम्मत्तेवियलद्धेचारित्तेणेवमिएहदेजीवे॥अरुकहा
विचेपिणिएहदिनोपालेदुक्खसंकेदि॥१२॥भा॥बहुरिसम्यक्तजीकदाचित्

पावे तो यह जीव चारित्र नाही ग्रहण करे है। बहुरि कदाचित् चारित्र भी ग्रहण करे है। तो तिस कूं निर्दोष पालि न सके है। ब। पुनः ॥ गा ॥ रयणत्तये विलद्धे ॥ तीव्व कसाए करेदि जुद्ध जीवो ॥ तो दुगई सुगइदि ॥ पण्ण रयणा तई होऊ ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ जो यह जीव कदाचित् रत्नत्रय भी पावे ॥ अर जो तीव्र कषाय करे तो तास कूं प्राप्त भया रत्नत्रय जाका ॥ ऐसा होय करि दुर्गति कूं गमन करे है। ब। बहुरि ऐसा मनुष्यपणां ऐसा दुर्लभ है। जामैं रत्नत्रय की प्राप्ति होय ॥ असे कहे है ॥ ब ॥ गा ॥ रयणत्तय जल हि पडियं ॥ मणुयत्तं तं पि हो दि अइदुलहं ॥ एवं सुणिऊ ण ॥ इत्ता ॥ मिच्छकसाए पवज्जह ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ यह मनुष्यपणां जैसें रत्न समुद्र मैं पड्या फेरि पावणां दुर्लभ होय ॥ तैसें दुर्लभ है। ऐसें निश्चय करि ॥ अर हे भव्य जीवो ये मिथ्यात्व ॥ अर कषाय निकूं छोडो ॥ ऐसा उपदेश श्री गुरु नि का है। ब ॥ आगें १५१

करे है। जो कदाचित् ऐसा मनुष्यपणां पाय शुभ परिणाम नितैं देवपणां पावे तो तहां चारित्र नाही पावै है। ब ॥ गा ॥ अहवा देवो होदि ॥ तत्थ विपावेदि कहव समत्तं ॥ ता तप्पचरणं णत्थदि ॥ देसजमं सीललेसं पी ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ अथवा मनुष्यपणां तैं कदाचित् शुभ परिणाम तैं देव भी होय तो ॥ बहुरि कदाचित् तहां सम्यक्त्व भी पावे तो तहां तपश्चरण चारित्र न पावे है। देशव्रत श्रावक व्रत तथा शीलव्रत ब्रह्मचर्य काले सभी न पावे है। ब ॥ आगें कहे है कि इस मनुष्यगति ही विषैं तपश्चरण दिक है। ऐसा नियम है। ॥ गा ॥ मणुयगईए वितओ ॥ मणुयगईए महव्वयं सयलं ॥ मणुयगईए झाणं ॥ मणुयगईए विणिव्वाणं ॥ १६ ॥ ब ॥ हे भव्य जीव हो इस मनुष्यगति ही विषैं तो तप का आचरण होय है। बहुरि इस मनुष्यगति ही विषैं समस्त महाव्रत होय है। बहुरि इस मनुष्यगति ही

विषैधर्मकथा न होयहै॥ बहुरि इस मनुष्यगतिही विषै निर्वाण कहिए मोक्ष
की प्राप्ति होयहै॥ आगैं कहैहैं जो ऐसा मनुष्यपणा पाय विषय निमैं रमैहै॥
ते रत्न खोवैहैं॥ ७॥ गाथा॥ इय दुलहं मणुयत्तं॥ लहिऊणं जे रमंति विसएसु
ते लहइ दिव्वरयणं॥ मूढ़ा णिएं मित्तं पजालेहि॥ २७॥ भावार्थ॥ ऐसा मनुष्यपणां म
हा पायकरि जे इंद्रिय विषय निविषैरमैहै॥ ते दिव्य मोक्ष कर न कूं पायकरि
नरकी कैं आर्थि ए धकरैहै॥ भावार्थ॥ अति कठिन पावनेयोग्य यह मनुष्यपर्यो
य न मोक्ष कर न तुल्य हेता कूं विषय निविषैरमि करि खोवनां योग्य नां
ही॥ ८॥ आगैं कहैहैं जो मनुष्यपणां नरया मैं रत्नत्रय कूं पाय बडा आदर करो
॥ ८॥ गाथा॥ इय सव्वदुलहदुलहं॥ दंसणणाणं तहा चरित्तं च मुणिऊणं यसंसा
रे॥ महायरं कुणह तिण्हंपि॥ २८॥ छप्पय॥ ए सर्व दुर्लभ न सं दुर्लभ न जाणी॥ बहुरि

DR BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी हिंदुस्थान संग्रहालय

त्रय निज्ञान तप्या चारित्र संसार विषैं दुर्लभ न सं दुर्लभ न जाणि॥ ए रत्नत्रय ज्ञानचारित्र इनतीनि वि
षैं हे प्रभु जीव हो बडा आदर करो॥ भावार्थ॥ निगोद तैं नीसरि पूर्वकरे तिस अनुक्रम तैं दु
र्लभ न सं दुर्लभ न जाणें॥ बहुरि तहां नीसम्यक् दर्शनज्ञानचारित्र की प्राप्ति अति दुर्लभ
जाणें॥ तिस कूं पायकरि हे प्रभु जीव निकूं महा आदर करनां योग्य है॥ ८॥ छप्पय॥ व
सि निगोद चिरकालि सिरयो दसरि धरि तसु निवडि॥ पवन चौर अग्नि गोद लहि जरन म
रन सडि॥ लट गिंडोल उटकुण मकोड तन नमर न मण कर॥ जल विलोल मसु तन सु
कोल न मचर सरउरग पर॥ फिरि नरक पात अति कष्ट सहि कष्ट कष्ट नर तन महत॥ त
हां पाय रतनत्रय विगत जे फिरि दुर्लभ न अवसर लहत॥ ९॥ ऐसें बोधि दुर्लभ अनु
प्रेक्षा का निरूपण कीया॥ २१॥ आगे धर्म न प्रेक्षा का निरूपण करैहै॥ तहां धर्म का फल
सर्व ज्ञानवंतनां कूं प्रगट करैहै॥ गाथा॥ जो जाणदि पच्चक्खं॥ तियालगुणपज्जयएहिं

संजुत्तो॥लोयालोयेसयले॥सोसव्वएहूहवेरेउ॥१॥नाषार्थ॥जोसमस्तलोकअरअलोककूं
तीनकालगोचरसमस्तगुणपर्य्यायनिकरिसंयुक्तप्रतक्षजाणैंसोसर्वज्ञदेवहैं॥ब॥
गा॥॥यालोकविषैंजीवद्रव्यअनंतानंतहैं॥तिनितैंअनंतानंतगुणैंपुद्गलद्रव्यहै॥
एकएकआकाशाधर्मअधर्मद्रव्यहैं॥असंख्यातकालाणुद्रव्यहै॥लोककेपरैंअ
नंतप्रदेशीआकाशाद्रव्यअलोकहैं॥तिनिसर्वद्रव्यनिकेअतीतकालअनंतसम
यरूपआकीमीकालतिनितैंअनंतगुणैंसमयरूप॥तिसकालकेसमयसमयवर्ती १
एकद्रव्यकेअनंतअनंतपर्य्यायहैं॥तिनिसर्वद्रव्यपर्य्यायनिकूंयुगपत्एकसम
यविषैंप्रत्यक्षसप्यारेप्यारेजैसेहैं॥तैसेजाणैंऐसाजाकेज्ञानहैं॥सोसर्वज्ञहैसो
हीदेवहैं॥अमकूंदेवकहियेसोकहनेमात्रहैं॥इहांकहनेकातात्पर्यऐसाजोधर्मक १
स्वरूपकहिएगा॥सोधर्मकास्वरूपयर्थार्थइंद्रियगोचरनांही॥अतींद्रियहैजा २१३

कोफलस्वर्गमोक्षहैं॥सोभीअतींद्रियहैं॥बद्मस्थकाइंद्रियज्ञानहैं॥परोक्षहैसोया
केगोचरनांहीसोजोसर्वपदार्थनिकूंप्रत्यक्षदेखैंसोधर्मकास्वरूपभीप्रत्यक्षदेखै
॥सोधर्मकास्वरूपसर्वज्ञकेवचनहीतैंप्रमाणहैं॥अल्पबद्मस्थकाकह्या प्रमां
णनांही॥सोसर्वज्ञकेवचनकीपरंपरातैंछद्मस्थकहैसोप्रमाणहैं॥तातैंधर्मकास्व
रूपकहनेकूंआदिविषैंसर्वज्ञकास्थापनकीया॥ब॥आगैंजैसर्वज्ञकूंनमानैंहैंति
निकूंकहैहैं॥बा॥गाथा॥जरिणहवदिसवण्हू॥ताकोजाणदिअादिदियंअबंइंदिय
णाणेणमुणदि॥थूलंविअसेससमपज्जायं॥२॥अर्थ॥हेसर्वज्ञकास्थापनावादीजोस
र्वज्ञहोयतोअतींद्रियपदार्थजेइंद्रियगोचरनांही॥ऐसेपदार्थकूंकोनजानैं॥इं
द्रियज्ञानतोस्थूलपदार्थइंद्रियनितैंसंबंधरूपवर्त्तमानहोयताकूंजानैंहैं॥ता
केभीसमस्तपर्य्यायहैंतिनिकूंनांहीजानैंहैं॥भावार्थ॥सर्वज्ञकाआज्ञावभीमांसक

नास्तिक कहैहै ताकूं निषेध्यो है सो सर्वज्ञ होय तो अतीन्द्रियपदार्थकों कोन जानै अ
धर्म अधर्मका फल अतीन्द्रियहै ताकूं सर्वज्ञ विनो कोन जानै तातैधर्म अर धर्मका फ
ल कूंचाहता पुरुषहै सो सर्वज्ञ कूं मानिकरि ताके वचनतैं धर्मका स्वरूप निश्चयकै
स्वीकार करो ऐसें ही आगिली गाथामैं कहैहैं ब॥ गाथा॥ तेणवइ भोय छोड़ि
ओ॥ संगासत्ताणतरुअसंगाए॥ पढमोवारहमेउ॥ दहमेउजासिद्धोविदिट्ठ॥ अ
र्थ॥ तिससर्वज्ञकरिउपदेश्याधर्महैसो दोयप्रकारहैं॥ एक तो संगासक्तकहिए ग्रहस्थ
का अर एक असंगकहिए मुनिका तहां पहला ग्रहस्थका धर्मतो बारहभेदरूपहै॥ व
करि दूजा मुनिका धर्म दशभेदरूपहैं॥ ब॥ आगैं ग्रहस्तके धर्मके बारहभेदनिके नामदोय
गाथामैं कहैहैं॥ ब॥ गाथा॥ सम्मेदंसणसुद्धो॥ रहिउमजाइथूलदोसेहिं॥ वयधारीसा
मायेइउ॥ मबवईपासुआहारी॥ ५॥ रायेभोयणविरउ॥ मेहुणसारंभसंगचत्तोय क १०५

आणुमोयविरउ॥ उद्दिट्ठाहारविरदोय॥ ५॥ गाथा॥ सम्यग्दर्शनहै शुद्ध जाकै॥ मद्य ७
हिंस्थूलदोषनितैंरहित॥ व्रतधारी॥ सामायेकवान॥ पर्वत्रती॥ प्रासुकआहारी
॥ रात्रिभोजनविरत॥ मैथुनत्यागी॥ आरंभत्यागी॥ परिग्रहत्यागी॥ कार्य्यानुमो
दविरत॥ उद्दिष्टआहारविरत॥ ऐसें बारहभेदहैं॥ पहला भेदतो पचीसमलदोष
रहित शुद्धअविरतसम्यग्दृष्टीहैं॥ बकरि ग्यारहभेद प्रतिमानिके व्रतनिनिकरिसहित
व्रतीश्रावकहैं॥ ब॥ आगैं इनिबारहनिका स्वरूप पृथक्तिकाव्याख्यानकरैहैं तहां प्र
थमही अविरतसम्यग्दृष्टीकाकहैहैं॥ तहां तीपहलैं सम्यक्तकी उत्पत्तिकी योग्यत ७
कानिरूपणकरैहैं॥ गाथा॥ चदुगदिभवोससण्णी॥ सुविसुद्धोजगमाणपज्जत्तो॥ संसारतडे
णियडे॥ णेणीपाबेइसम्मत्तं॥ ई॥ भा॥ ऐसा जीवसम्यक्तकूंपावैहैं॥ प्रथमतो भव्यजी
वहोयजातैं अभव्यके सम्यक्तहोयनांही॥ बकरि भव्यहूंकी गतिविषैं सम्यक्त उपजैहै

तहां मीमनःसहितसैनी कैउपजैहै। असैनी कैउपजैनांही। तहां नी सुद्धपरिणामी होय शुद्ध
लेश्यासहितहोय। अशुभलेश्यामैंनी शुभलेश्यासमांनकषायनिकेस्थानकहोयति
निकूं विशुद्धउपचारकरिकहिए सेकैसपरिणामनिविषैंसम्यक्त्वउपजैनांही वकु
जाग तांकेहोय सूतांकैउपजैनांही। वकुरि पर्य्याप्तपूरणहोय अपर्य्याप्तअवस्था
मैउपजैनांही। वकुरि संसारकातट जाकैनिकट आयाहोयनिकट अर्द्धपुद्गलपरावर्तनकालपहलैसम्यक्त्वउपजैनांही। वकुरि ज्ञानीहोयसाकारउपयोग
वानहोय। निराकारदर्शनपयोगमैंसम्यक्त्वउपजैनांही। ऐसे जीवकैसम्यक्त्वकी उ
त्पत्तिहोयहैं। ब आगैंसम्यक्त्वतीनप्रकारहैं। तिनिमैंउपशमसम्यक्त्व। अरक्षा
यकसम्यक्त्वकीउत्पत्तिकैसैं है सोकहैहैं। गाथा सत्तण्हंपयडीणं उवसमदो हो
दि उवसमं सम्मत्तं खयदोयहोयखवईयं केवलिमूलेमणुस्सस्स ७ मो ७ मिथ्या १ १०५

त्वसम्यग्मिथ्यात्वसम्यक्प्रकृतिअनंतानुबंधीक्रोधमानमायालोभइनिसातमोह
कर्मकीप्रकृतिकेउपशमतैंतौउपशमिकसम्यक्त्वउपजैहैं। वकुरिइनिहीसातप्र
कृतिनिकेक्षयहोनेतैंक्षायकसम्यक्त्वउपजैहैं सोयहक्षायकसम्यक्त्वकेवलीकहि
एकेवलज्ञानीतथाश्रुतकेवलीकेनिकटकर्मभूमिकेमनुष्यकेहीउपजैहैं। तां
इहांकैसाजाननांजोक्षायकसम्यक्त्वकाप्रारंभतौकेवलीश्रुतकेवलीकेनिकट
मनुष्यकेहीहोयहैं। अरनिष्ठापवैअन्यगतिमैंनीहोयहैं। ब आगैंक्षायोपशमि
कसम्यक्त्वकैसैं होयहै सोकहैहैं। गाथा अणउदयादोछण्हं सजाइरूवेणउद
यमाणएणं समत्तकम्मउदए खयउवसमियंहवेसम्मं। पूर्वोक्तसात
प्रकृतिनिमैंसेंछहप्रकृतिनिकाउदयनहोयतथासजातिकहिएसमानजातीय
प्रकृतिरूपकरिउदयरूपहोय। वकुरिसम्यक्त्वप्रकृतिकर्मकाउदयहोतैंक्षा

योपसम्यक्त्व होयहै॥भावार्थ॥मिथ्यात्वसम्यग्मिथ्यात्वकातौउदयकाअभावहो
य॥अरसम्यक्त्वप्रकृतिकाउदयहोय॥अरअनंतानुबंधीक्रोधमानमायालो
भकाउदयकाअभावहोय॥तथाविसंयोजनकरिअप्रत्याख्यानावरणआ
दिकरूपकरिउदयमानहोय॥तबक्षायोपशमिकसम्यक्त्वउपजै॥ब॥इति
नेंहीसम्यक्त्वकीउत्पतिकाविशेषकथनगोमट्टसारलब्धिसारग्रंथतैंजाननां॥ब॥
आगैंउपसम्यक्षायोपसमिकसम्यक्त्वअरअनंतानुबंधीकाविसंयोयनअ
रदेससंयतउनिकापावनांअरछूटिजानांउत्कृष्टकरिकहैहैं॥गाथा॥गिएहरिमु
चदिजीवो॥विसमत्तेअसंखवाराउ॥पढमकसायविणासंदेसावयंकुणदिउ
क्कस्सं॥ए॥अर्थ॥यहजीवउपसमिकक्षायोपसम्यक्तएहोयतौसम्यक्तअरअनं
तानुबंधीकाविनासविसंयोजनअप्रत्याख्यानादिकरूपपरिणामावनां॥अर १०६

देसाव्रतउनिच्यारिनिकूंअसंख्यातवारग्रहणकरैहैं॥अरछोडैहैं॥यहउत्कृष्ट
करिकह्याहै॥भावार्थ॥पल्यकाअसंख्यातवाभागपरिमाणजोअसंख्यातहोती
वारउत्कृष्टएतेंग्रहणकरेअरछोडै॥पीछैंमुक्तिपाम्हैहोय॥ब॥आगैंअसैंस
मयप्रकृतिकेउपसमहोयक्षयोपसमतैंउपजासम्यक्तकैसैंजाणिए॥अैसात
त्वार्थश्रद्धानकूंनवगाथाकरिकहैहैं॥ब॥गाथा॥जीवादिचमणेयंतं॥णियमासं
दहदिसत्तभंगेहिं॥लोयाणमएहवसारो॥ववहारपवहणट्ठंच॥१०॥जोआय
रेणमणहि॥जीवाजीवादिणयविहंअढं॥सुदणाणेणाणएहियसोसद्दट्ठीहवे
सुद्धो॥११॥भावार्थ॥जोपुरुषसप्तभंगनिकरिअनेकांतवस्तुकानियमतैंश्रद्धान
करै॥जातैंलोकनिकेप्रश्नकेवशतैंविधिनिषेधतैंवचनकेसातहीभंगहोय
हैं॥तातैंव्यवहारकेप्रवर्त्तनकेअर्थिजीसातभंगकरिवचनकीप्रवृत्तिहोयहैं

॥ब॥ बहुरि जो जीवअजीवआदि नवपदार्थनि कूं श्रुतप्रमाण करि तथा तिस
केनेद जेनयतिनि करि अपनां आदरयत्न उद्यम करि मानैं श्रद्धान करै॥ सो शुद्ध
सम्यक्दृष्टी है॥ ७॥ तीसरा वस्तुका स्वरूप अनेकांत है जामैं अनेक अंत कहिए
धर्म होय सो अनेकांत कहिए॥ तेधर्म अस्तित्व नास्तित्व एकत्व अनेकत्व नि
त्यत्व अनित्यत्व भेदत्व अभेदत्व अभेक्षत्व अनभेक्षत्व दैवसाधित्व पौरुषसा
धत्व हेतुसाधत्व आगमसाधत्व अंतरंगत्व बहिरंगत्व इत्यादि तो सामान्य
है बहुरि द्रव्यत्व पर्यायत्व जीवत्व अजीवत्व स्पर्शत्व रसत्व गंधत्व वर्णत्व
उष्णत्व शीतत्व अमूर्त्तत्व मूर्त्तत्व संसारित्व सिद्धत्व अवगाहत्व गति
हेतुत्व स्थितिहेतुत्व वर्त्तनाहेतुत्व इत्यादि विशेषधर्म है सो तिनिके पक्ष
केवश तैं विधि निषेधरूप वचनकैसा तनैं ग्रहोय है तिनिकै स्यात् ऐसा पद १०७

लगावणां स्यात् नामकथंचित् कोई प्रकार ऐसे सा अर्थ में है॥ तिसकरि वस्तुकूं
अनेकांतसाधणां तहां वस्तु स्यात् अस्तित्वरूप है॥ ऐसैं कोई प्रकार अपनैं द्र
व्यक्षेत्रकाल भावकरि अस्तित्वरूप कहिए है॥ बहुरि वस्तु स्यात् अस्तित्व ना
स्तित्वरूप है॥ ऐसैं वस्तु मैं दोऊ ही धर्म पाईए है॥ अर वचनकरि क्रमतैं जाय
है॥ बहुरि स्यात् अवक्तव्य है॥ ऐसैं वस्तु मैं दोऊ ही धर्म एककाल पाईए है॥ त
थापि एककाल वचनकरि कहे न जाय है तातैं कोई प्रकार अवक्तव्य है॥ बा
हुरि अस्तित्वकरि कह्या जाय है दोऊ एककाल है तातैं कह्या न जाय॥ ऐसैं अव
क्तव्य भी है॥ अर अवक्तव्य भी है॥ तातैं स्यात् अस्तित्व अवक्तव्य है॥ ऐसैं ही
नास्तित्व अवक्तव्य करना॥ बहुरि दोऊ धर्म क्रमकरि कह्या जाय युगपत क
ह्या न जाय तातैं स्यात् अस्तित्व नास्तित्व अवक्तव्य कहना ऐसैं सातही भं

Dr. BHAU DAJI MEMORIAL

गकोईप्रकारसंभवैहैं॥ जैसैंहीएकत्वअनेकत्वआदिसामान्यकर्मनियसिातनं
गविधिनिषेदतैंलगावणं॥ जैसैंजैसैंजहांअपेक्षासंभवैसोलगावणी॥ वहुरि
तैसैंहीविशेषत्वधर्मजैजीवत्वअजीवत्वआदिलगावणं॥ जैसैंजीवनांमांवस्तु
हैसोस्यातजीवत्वस्यात्॥ अजीवत्वइत्यादिलगावणं॥ तहांअपेक्षाजैसैंजो अ
पनोजीवत्वधर्मआपमेंहैंतातैंजीवत्वहैं॥ परअजीवकाअजीवत्वधर्मयामेंनाहं ।
तोऊअपनेअन्यधर्मकूंमुखैंकरिकहिएताकीअपेक्षाअजीवत्वहैइत्यादिल
गावणं॥ तथाजीवअनंतहैंताकीअपेक्षाअपनोजीवत्वआपमेंपरकाजीव
त्वयामेंनांहीहैं॥ तातैंताकीअपेक्षाअजीवहैं॥ जैसैंनीसधैहैं इत्यादिअनादि
निधनअनंतजीवअजीववस्तुहैंति निकूंअपनेअपनेइत्यत्वपर्यायत्व
नेतथर्महैं॥ तिनिसहितसप्तभंगतैंसाधनां॥ तथातिनिके स्थूलपर्यायहैंतेनी १७८

चिरकालस्थायीअनेकधर्मरूपहोयहैं॥ जैसैंजीवसंसारी॥ सिद्ध॥ वहुरिसंसारीमैं
त्रसथावरतिनिमैंमनुष्यतिर्यंचइत्यादि॥ वहुरिपुद्गलमैंअणुस्कंधतथाघट
पटआदिसो इनिकेनीकथंचित्वस्तुपणांसंभवैहैं॥ सोनीतैसैंहीसप्तभंगतैं
साधणं॥ वहुरितैसैंहीजीवपुद्गलकेसंयोगतैंभये॥ आश्रववंधसंवरनिर्जरा
पुण्यपापमोक्षआदिभावतिनिमैंनीवहुतधर्मपणांकीअपेक्षातथापर
स्परविधिनिषेधतैंअनेकधर्मरूपकथंचित्वस्तुपणांसंभवैहैं॥ सोसप्तभंग
तैंसाधणं॥ जैसैंएकपुरुषमैंपितापुत्रमामांजाणिजाकाकातीजायणंआदि
धर्मसंभवैहै॥ सोआपनीआपनीअपेक्षातैंविधिनिषेधकरिसातभंगतैंसाध
णं॥ जैसानियमकरिजाननां॥ जोवस्तुमात्रअनेकधर्मस्वरूपहैं॥ सोसर्वकूं।
अनेकांतजाणिप्रमाणकरै॥ वहुरितैसैंहीलोकविषैंव्यवहारप्रवर्तावैसोसप्त

ग्रहीहै॥ बहुरि जीवअजीव आश्रव बंध पुण्य पाप संवर निर्जरा मोक्ष ए नव पदार्थ
हैं॥ ति निकूं तैसेही सप्तभंग तें साधने॥ ता के साधन श्रुतज्ञान नां मां प्रमाण हैं॥ अरत १
के भेद द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक ति निकी नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र सा
प्रति सूत्र ए वे मूल नय हैं॥ बहुरि ति निकी उत्तरोत्तर भेद जे ते वचन के प्रकार हैं ते
ते हैं॥ ति निकूं प्रमाण सप्तभंगी॥ अर नय सप्तभंगी के विधान करि साधिए है॥ ति
निका कथन पद्धति तें लोकन्याय नां मैं की या है॥ बहुरि ति सका विशेष कथन तत्वा
र्थसूत्र की टीका तें जानना॥ जैसें प्रमाण नय करि जीवादि पदार्थ निकूं जानि
करि श्रद्धान करै सो शुद्ध सम्यग्दृष्टी होय है॥ ब॥ बहुरि इहां इह विशेष जानो ज १
नना॥ जो नय है ते वस्तु के एक एक धर्म के ग्राहक हैं॥ ते अपने अपने विषय रूप
धर्म कूं ग्रहण करने वि मैं समान हैं तो कु पुरुष अपने प्रयोजन के वशतें ति नि १९०ए

कूं मुख्य गौण करि कहै हैं॥ जैसें जीव नां मा वस्तु है॥ ता मैं अनेक धर्म हैं॥ तो कु चेतन प
णां आदि ग्राहण धारण अजीव तें असाधारण है॥ ति ति अजीव नि तें न्यारा
दिखावने के प्रयोजन के वसतें मुख्य करि वस्तु का जीव नां मथया॥ जैसें ही मुख्य
गौण करने का सर्व धर्म के प्रयोजन के वसतें जानना॥ इसही आशय तें अध्या
त्म कथनी विषें मुख्य कूं तो निश्चय कह्या है॥ अर गौण कूं व्यवहार कह्या है॥ तहां
अनेक धर्मतो प्रधान करि निश्चय का विषय कह्या॥ अर नेक नय कूं गौण करि व्य
वहार कह्या॥ सो द्रव्य तो अनेक है॥ तातें निश्चय का आश्रय द्रव्य है॥ बहुरि पर्यो
य नेक रूप है तातें व्यवहार का आश्रय पर्याय है॥ तहां प्रयोजन जैसा जो नेक
रूप वस्तु कूं सर्वज्ञ का जानने है॥ तातें जो जानें सोही प्रसिद्ध है॥ यातीं तें लोक मैं व्य १
वहार ही है॥ जीव के नर नार कादि पर्याय हैं तथा राग द्वेष क्रोध मान माया लो

मत्रादिपर्य्यायहैं॥तथाज्ञानकेभेदरूपमतिज्ञानादिकपर्य्यायहैं॥तिनिपर्य्यायनि
हीकूंलोकजीवकहैं॥तातैंइनिपर्य्यायनिविषैअभेदरूपअनादिअनंतएक॥
भावजोचेतनताधर्मताकूंग्रहणकरि॥ताकूंनिश्चयनयकाविषयकहिकरिजीव
द्रव्यकाज्ञानकराया पर्यायाश्रितजोभेदनयताकूंगौणकीया॥तथाअभेददृष्टि
मेयहदीषैनांही॥तातैंअभेदनयकीइहांअप्रधानकरावनेकूंकही॥सोपर्य्यायनयहै
सोभवद्भारहैं॥अभूतार्थहैं॥असत्यार्थहैं॥सोभेदबुद्धिकाएकांतनिराकरणक
रनेकैंअर्थयह कहनांजाननां॥ऐसा नांहीकि यहभेदहैं॥सोअसत्यार्थकह्या
सोवस्तुकास्वरूपहीनांहीहैं॥जोऐसैंसर्वथा मानैतौअनेकांतमैंसमज्यानां
हीं॥सर्वथाएकांतश्रद्धानतैंमिथ्यादृष्टीहोयहैं॥जहांअध्यात्मसास्त्रनिविषैं
निश्चयव्यवहारनयहैं॥कतहांभी तिनिहोऊनिकापरस्परविधिनिषेधतैंसप्तभं ११०

गकरिवस्तुसाधणां॥एककूंसर्वथासत्यार्थमानैं॥अरएककूंसर्वथाअसत्यार्थमां
नैंतौमिथ्याश्रद्धानहोयहैं॥तातैंतहांभीकथंचित् जाननांकरिअभवस्तुका
आत्मविषैआरोपणकरिप्रयोजनसाधिएहैं॥तहांउपचारनयकहिएहैं॥सोय
हजीव्यवहारहीविषैगर्भितहैं॥जातैंऐसैंकहाहैं॥जो जहांप्रयोजनअरनिमि
त्तहोयतहांउपचारप्रवर्तैहैं॥घृतकाघडाकहिएतहांमांटीकाघडाकेआश्रय
घृतभर्याहोयतासूंव्यवहारीजननिकूंआधारआधेयभावदीषैहैं॥ताकूंप्रधान
करिकहिएहैं॥जो घृतकाघडाहैं॥ऐसैंहीकहैंलोकसमहैं॥अरघृतकाघडाभग ७
वेतवतिसकूंलेआवैं॥तातैंउपचारविषैभी प्रयोजनसंभवैहैं॥ऐसैंहीअभेद
नयकूंमुख्यकरैतहांअभेददृष्टिमैंभेददीषैनांही॥तवतिसभेदहीकूंकहैसोअ
सत्यार्थहैं॥तहांभीउपचारसिद्धहोयहैं॥यहमुख्यगौणकाभेदकूंसम्यग्दृष्टी

जानैहैं। मिथ्यादृष्टी अनेकांततो वस्तुकूं जानैनांही अरसर्वथाएकधर्मपरिदृष्टिपै
डै। तव तिसही कूं सर्वथावस्तु मानि अन्यधर्मकूं कैतौसर्वथागौणकरि असत्या
र्थ मानैं। कै सर्वथा अन्यधर्मका अभावही मानैं तव मिथ्यात्व दृढहोयहैं सोयहमि
थ्यात्वना मांकर्मकी प्रकृतिकेउदयतैं अतत्वार्थ श्रद्धानहोयहै। तातैं तिसप्रकृति
काकार्यहै। सोभी मिथ्यात्वही कहिएहै। अरतिसप्रकृतिका अभावनयेंतत्वार्थो
कायथार्थश्रद्धानहोयहै। सोयह अनेकांतवस्तुकेविषैं प्रमाणनयकरि सातभंग
गकरिसाधारूवासम्यक्त्वका कार्यहै। तातैं याकूंभी सम्यक्त्वही कहिए। ऐसैं जै
नमां। जिनमतकीकथनी अनेकप्रकारहै। सो अनेकांतरूपसमझनां। अरयाका
फल अज्ञानकानासहै। हेयउपादेयकीबुद्धि अरवीतरागताहै। सोयसकथनी
का मर्म यावनांचडेभागपैतैं होयहै। इसवचनकालमैं अवारइसकथनीकानिमित्त ११२

सुलभनांही है। तातैं सास्त्रसमझनैकानिरंतरउद्यमराविसमझनांयोग्यहै। जातैंया
कै आश्रयमुख्यपणैं सम्यग्दृष्टिकी प्राप्तिहै। यद्यपि जिनेंद्रकीप्रतिमांकादर्शन त
था अभावनां अंगकादेखनां इत्यादिसम्यक्त्वकी प्राप्तिकूंकारणहै। तथापि सास्त्र
काश्रवनकरनांपढनांभावनांकरनां धारणां हेतुयुक्तिकरिस्वमतपरमतकाभेदजा
निनयविवक्षाकूंसमझनां। वस्तुकाअनेकांतस्वरूपनिश्चयकरनां। यहमुख्य
कारणहै। तातैं अजीवनिकूंयसकाउपाय निरंतरराखणांयोग्यहै। व आगैं
कूदैहैं जोसम्यग्दृष्टीअंअनंतानुबंधीकषायकाअभावहोयहै। ताकेपरिणां
मकैसेहोयहै। ब। गाथा। जोणयकुवहिगचं पुत्तकलित्ताइसव्वअबेसु। उपस
मभावेभावहि अप्पाणंमुणहितिएमित्तं। १२। अर्थ। जोसम्यग्दृष्टीहोयसोई
पुत्रकलित्रआदिसर्वपरद्रव्यतथापरद्रव्यनिकेभावनिविषैं गर्वनांहीकरैहै। प

रूप व्यतैं आपकै केवडाय नांमानैं तौ सम्यक्त काहेका। बहुरि उपसमभाव निकूं नाचैहै
अनंतानुबंधी संबंधी तीव्र रागद्वेषपरिणामकै अभाव तैं उपशमभाव निकी भा
वना निरंतर राखैहै। बहुरि आपनैं आत्मा कूं त्रिणसमान हीण मानैहै। जातैं आपनां स्व
रूप तौ अनंतज्ञानादि रूप सहै। सो जैतैं ति सकी प्राप्ति न होय। तैतैं आप कूं त्रिण वरा
बरि मानैहै। काहू विषैं गर्व नाही करैहै। तथा पुनः। गाथा। विसयासत्तो विसया सत्ता
रंजेसु वट्टमाणेवि मोहविलासोएसो इदिसद्धम्मस्सदेहयं। १३। भाषार्थ। अविरत
सम्यग्दृष्टी यद्यपि इंद्रिय विषय निविषैं आसक्त है। बहुरि त्रस थावर जीवके घात
जामैं होय। ऐसे आरंभ विषैं सर्वविषैं वर्त्तमान है। अप्रत्याख्यानावरण आदि
कषाय निके तीव्र उदय तैं विरक्त न हूवा है। तौऊ ऐसा जानैहै कि यह मोहकर्म
के उदय का विलास है। मेरे स्वभाव मैं नाही है। उपाधि है रोगवत् है त्यजनेयोग्य है ११२

वर्तमान कषाय निकी पीडा न सही जाय है। तातैं असमर्थ हूवा विषय निका सेवनां त
थावर हू आरंभ मैं प्रवर्त्तना हो है। ऐसा मानैहै। बहुरि कैसा है सो कहै हैं। गा
था। उत्तमगुणगहणरओ उत्तमसाहूण विणयसंजुत्तो साहम्मियअणुराई सोस
द्दट्ठीहवेपरमो। १४। भाषार्थ। बहुरि कैसा है सम्यग्दृष्टी उत्तमगुण जे सम्यग्दर्शनज्ञानचा
रित्रतप आदिकति निविषै तौ अनुरागी होय। बहुरि ति गुण निके धारक जे उत्त
मसाधु ति निका विनय करि संयुक्त होय। बहुरि आपसमान जे सम्यग्दृष्टी साधर्मी
ति निविषैं अनुरागी होय। वत्सल्य गुण सहित होय। सो उत्तम सम्यग्दृष्टी होय है।
एतीनि भाव न होय तौ जानिए याकै सम्यक्त का भाव यथार्थ पणां नांही। बहुरि
सम्यग्दृष्टी के जाणपणैं कूं कहै है। बा। गाथा। देहविलिय पिजीवं लिय णाणगुणं
ण मुणदि जोनिलं। जीवविलिय पिदेहं कंचुवसरिसं वियाणेई। १५। अर्थ। यहजी

DR BHAU DAJI
LIBRARY

वदेहतैं भिन्न रूपहै तौऊ अपणैं ज्ञानगुण जाणैहैं तातैं आपकूं देहतैं भिन्न ही जाणैं
हैं जैसैं देहतैं जामा भिन्नहै तैसैं जीवतैं देह भिन्नहै ऐसैं जाणैहैं ब वहुरि कहैहैं
॥ गा ॥ णिज्जियदोसंदेवं सव्वजीवाणदयावरं धम्मं वज्जियगंथंचगुरुं एसो सम्म
दिट्ठि ९६ ॥ जोजीवदोषवर्जितको देव मानैं वहुरि सर्वजीवनिकी
दयाकूं श्रेष्ठधर्म मानैं वहुरि निर्ग्रंथ गुरुकूं गुरु मानैं सो प्रगट पणैं सम्यग्दृष्टी हैं ब
॥ गा ॥ सर्वज्ञवीतरागअवारहदोषनिकरि रहित देवकूं मानैं अन्यदोष सहित रा
गद्वेषि तिनिकूं संसारी जाणैं तेमोक्षमार्गी नांही ऐसा जानि देवपूजैनांही तथा अ
हिंसारूप धर्म जानैं जे यज्ञादि देवतानिकै अर्थि पशुघात करि चढावै ताकूं धर्म मा
नैहैं तिसकौं पापही जानि आपति सविषैं नांही प्रवर्तैं वहुरि जे ग्रंथसहित अनेक
भेष अन्यमती निकेहैं तथा कालदोषतैं जैनमतमैंभी भेष भये हैं तिनि सर्वनिकूं ११३

भेषीपाखंडी जानैं वंदैपूजैनांही सर्वपरिग्रहतैं रहित होयति निहीकूं गुरु मानिवं
दैपूजैं जातैं देवगुरुधर्मकै आश्रय ही मिथ्यासम्यक्त्व देशव्रतैहैं सो कुदे
वकुधर्मकुगुरुका वंदनांपूजनांतो दूरिही रहो तिनिकेसंसर्गहीतैं श्रद्धानवि
गडैहैं तातैं सम्यग्दृष्टी तिनिकी संगतिभी न करैं स्वामिसमंतभद्राचार्यनैं
न करणं श्रावकाचारमैं ऐसैं कह्याहैं जोसुदृसम्यग्दृष्टीहै सोकुदेवकुत्सितआ ७
गमअरकुलिंगीभेषीनिकूं नयतैं तथाकेछूआसातैं तथास्नेहतथालो
भतैंभी प्रणामतथा तिनिका विनयनकरै धर्मकी प्राप्तितो दूरिही रहो ऐसैं
जाननां ब आगैं मिथ्यादृष्टीकेसा दोषैं सो कहैहैं ब ॥ गा ॥ दोससहियंपि
देवं जीवहिंसाइसंजुदंधम्मं गंथासत्तंचगुरुं जोमण्णइसोकुकुदिट्ठी १७
॥ गा ॥ जोजीवदोषनिसहित कूंतो देव मानैं वहुरि जीवहिंसादिसहित कूंध

र्मनमानें। वकुरि परिग्रहके विषैं आसक्तकूं गुरु मानैं सो प्रगट पणें मिथ्यादृष्टी है॥ ब॥ भावार्थ
॥ भाव मिथ्यादृष्टी तौ अदृष्ट सिद्धा मिथ्याती हैं॥ बहुरि जो कुदेव रागद्वेष मोहादि आ
वारद्दोषनि सहित कूं देव मानि पूजे वंदे हैं॥ अर हिंसा जीवघात आदि करि धर्म मानैं हैं
वहुरि परिग्रहके विषैं आसक्त ऐसे जे यतीनि कूं गुरु मानैं हैं॥ ते प्रगट पणें मिथ्यादृ
ष्टी हैं॥ ब॥ आगें कोई कहै कि अंतरादि देवलक्ष्मी देहैं उपकार करैं हैं॥ तिनि कूं पूजनें
वंदनें ता कूं कहै हैं॥ ब॥ गाथा॥ एयकोडिदेइ लवी॥ एकोडु जीवस्स कुणइ वयारं॥
वयारं अवयारं॥ कम्मंपि सुहासुहं कणइ॥ १५॥ भावार्थ॥ याजीव कूं कोई अंतरादि देव
लक्ष्मी नांही देहैं॥ बहुरि कोई अन्य उपकार भी नांही करैं हैं॥ जीवके पूर्व संचित शुभ अ
शुभ कर्म हैं तेही उपकार तथा अपकार करैं हैं॥ ब॥ भावार्थ॥ कोई ऐसें मानैं हैं जो अंतरादा
दिदेवह मकूं लक्ष्मी देहैं हमारा उपकार करैं हैं॥ सो तिनि कूं हम पूजें वंदें हैं॥ सो यह मि

थ्या बुद्धि है॥ अथ मतौ अवार काल में प्रत्यक्ष कोई अंतरादि आय कौ देता देखा नांही
उपकार करता दीखै नांही॥ जो ऐसें होय तौ पूजनेंवाले दरिद्री रोगी दुखी काहे कूं रहे
तातैं ए था कल्पना करैं हैं॥ बहुरि परोक्ष भी ऐसा नियम रूप सेवधरी सै नांही जो पू
जैं तिनिकै अवश्य उपकारादि करै या॥ तातैं यह मोही जीव वृथा ही विकल्प उपजा
वै है॥ जो पूर्वकर्म शुभ अशुभ संचित है॥ सो ही या प्राणी के सुख दुख धन दरिद्र जीवन म
रन कूं करैं हैं॥ ब॥ आगें या ही कूं दृढ करैं हैं॥ ब॥ गाथा॥ जत्ती एपुन्न माएो॥ अंतरदेवो
विदेहि जस्सिलवी॥ तोकिंथम्मंकीरइ॥ एवंचिंतेइ सद्दिट्ठी॥ १६॥ भावार्थ॥ सम्यग्दृष्टी ऐसें
विचारै जो अंतरदेव ही भक्ति करि पूज्या हुवा लक्ष्मी देहैं तौ धर्म काहे कूं कीजिए॥ भाव
र्थ॥ कार्य तौ लक्ष्मी तैं है सो अंतरदेव ही पूजतैं लक्ष्मी देतौ धर्म काहे कूं सेवना॥ बहुरि
मोक्षमार्ग के प्रकरण मैं संसारी कार्य लक्ष्मी का अधिकार भी नांही॥ तातैं सम्यग्दृष्टी तौ

जेण विणा लोएण जम्हि काले जम्मं वा अहवा मरणं वा २९ तेत्तस तम्हि देसे तं त

मोक्षमार्गी है संसारकी लक्ष्मी कूं हेय जाणैं हैं ताकी वांछा नहीं करै है जो पुण्यका उदय तैं मिलै तौ मिलो न मिलै तो मति मिलो मोक्षके साधनेकी भावना करै हैं तातैं संसारी देवादिक कूं कादे कूं पूजै वंदै कदाचित् नाहीं पूजै वंदै है ब आगैं सम्यग्दृष्टी के विचार होय सो कहै हैं ब जं जस्स जम्हि देसे तेण विहाणेण तम्हि काले को सक्कइ चालेदुं इंदो वा अह जिणो दो वा २५ ताका अर्थ जो जिस जीवके जिस देस विषैं जिस कालविषै जिस विधानकरि जन्म तथा मरण उपलक्षणतैं सुख दुख रोग दरिद्र आदि सर्वज्ञदेव नैं जाण्या है जो जैसैं ही नियमकरि होयगा ब सोही तिस प्राणीके तिस ही देसमैं तिस ही कालमैं तिस ही विधानकरि नियमतैं होय है ताकूं इंद्र तथा जिनेंद्र तीर्थंकरदेव कोई भी निवारि नांही सकै है ताका अर्थ सर्वज्ञदेव सर्व इव्य क्षेत्र काल भावकी अवस्था जाणैं हैं सो सर्वज्ञके ज्ञानमैं प्रतिभास्या है सो नियमकरि हो ११५

यता मैं हीणाधिक किछू होता नांही ऐसैं सम्यग्दृष्टी विचारै है ब आगैं ऐसैं जाणैं सो सम्यग्दृष्टी है अर यामैं संसय करै सो मिथ्यादृष्टी ऐसैं कहै हैं ब ए वे जोणि इयरो ज णदिट्ठा णिस्संसयं जाण सो सद्दिट्ठि सुद्धो जो संकदि सो कुदिट्ठी २६ ताका या प्रकार निश्चय तैं सर्व इव्य जीव पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल इनिकूं वर्तरूप इनि इव्यनिकी सर्व पर्यायनिकूं सर्वज्ञके आगमके अनुसारि जाणैं हैं श्रद्धान करै है सो शुद्ध सम्यग्दृष्टी होय है ब वर्तरूप ऐसैं श्रद्धान न करै संका संदेह करै है सो सर्वज्ञके आगमतैं प्रतिकूल है प्रगट पणैं मिथ्यादृष्टी है ब आगैं कहै हैं जो विशेष तत्वकूं नांही जाने है अर जिन वचनविषैं आज्ञा मात्र श्रद्धान करै है सो भी श्रद्धावान कहिए है

जो एवि जाणइ तत्तं सो जिणवयणेण करदि सद्दहणं जं जिणवरेहिं णिग्गं तं सत्तं महंस मिदामि २७ ताका अर्थ जो जीव अपनैं ज्ञानावरण कर्मके विशेष क्षयोपशम विना

तथाविशिष्टगुरुकेसंयोगविनातत्वार्थकूंनाहीजानिसकैहैं॥सोजीवजिनवचनविषै
ऐसैंश्रद्धानकरैहैं जोजिनेश्वरदेवनैंजोतत्वकह्याहैं॥सोसर्वहीमैंभलेप्रकारइष्टक
रिकूंहूं॥सोऐसैंनीश्रधावानहोयहैं॥भावार्थ॥जोजोजिनेश्वरकेवचनकीश्रद्धाकरैहै
सोसर्वज्ञदेवनैंकह्याहै॥सोसर्वमैंइष्टहैं॥ऐसैंसामान्यश्रद्धातैंनीआज्ञासम्यक्
त्वीकेहैं॥ब॥आगैंसम्यक्त्वकामहात्मतीनगाथाकरिकहैहैं॥ब॥गा॥रयणाण
महारयणं॥सव्वजोयाणउत्तमंजोयं॥रिद्धीएमहारिद्धी॥समत्तंसव्वसिद्धियरं॥१४
॥अर्थ॥सम्यक्त्वहैसोरत्ननिविषैमहारत्नहैं॥वहुरिसर्वयोगकरिएवस्तुकीसिद्धिक
रनैंकेउपायमंत्रध्यानआदिकतिनिमैंउत्तमयोगहैं॥जातैंसम्यक्तैंमोक्षसाधैहैं॥व
हुरिऋद्धिनिमादिकऋद्धिहैंतिनिमैंवडीऋद्धिहै॥वहुतकहाकहिए॥सर्वसिद्धकरने
वालायहसम्यक्त्वहै॥ब॥पुनः॥गाथा॥समत्तगुणमहाणो॥देविंदणरिंदवंदिउहोई॥ १९६

चत्तवयोवियपावहि॥सग्गसुहंउत्तमंविविहं॥२५॥अर्थ॥सम्यक्तगुणकरिसहि
तजोपुरुषप्रधानहैसोदेवनकेइंद्रकरितथामनुष्यनिकेइंद्रचक्रवर्त्यादिकरि
वंदनीकहोयहैं॥वहुरिव्रतरहितहोयतौउत्तमनानाप्रकारकेस्वर्गकेसुखपा
वैहै॥ब॥भावार्थ॥जामैंसम्यक्तगुणहोयसोप्रधानपुरुषहैदेवेंद्रादिकरिपूज्यहोय
हैं॥वहुरिसम्यक्तमैंदेवहीकाआयुवांधैहैंतातैंव्रतरहितकैभीस्वर्गहीकाजा
नांमुख्यकह्याहै॥वहुरिसम्यक्तगुणप्रधानकाऐसाजीअर्थहोयहैं॥जोसम्यक्त
पचीसमलदोषनितैंरहितहोय॥अरयनैंनिःशंकितआदिगुणनिकरिसहितहो
य[redacted]तथासंवेगआदिगुणनिकरिसहितहोयऐसैंसम्यक्तकेगुणनिकरि
प्रधानपुरुषहोयसोदेवेंद्रादिकरिपूज्यहोयहैं॥अरस्वर्गकूंपासहोयहैं॥ब॥पु
नः॥गाथा॥सम्माइट्ठीजीवोउगाहिईणवंधदेकमंजेवहुनवेसुवरुइक्कमंतो

पिणासेदि ।२६। सम्यग्दृष्टीजीवदेसोदुर्गतिकाकारणजोनअसुभकर्मताकूंनांहीवां
धैहै ।वहुरिजोपापकर्मपूर्वैवहुतभवनविषैवांध्याहैं ।तिसकाभीनासकरैहैं ब
।।गा।। सम्यग्दृष्टीमरणकरिरुतियादिकनरकजायनांही ज्योतिषव्यंतरभवनवा
त्रीदेवहोयनांही स्त्रीउपजैनांही पांचथावरविकलत्रयअसैनीविगादस्ले
छकुभोगभूमिडनिविषैंउपजैनांही जातैंयाकेअनंतानुवंधीकेउदयकेअभा
वतैदुर्गतिकेकारणकषायनिकेस्थानकरूपपरिणमनांहीहै ब इहांतात्प
र्यअैसाजाननां जोतीनकालतीनलोकविषैसम्यक्तसमानकल्याणरूपअ
न्यपदार्थनांहीहै ।वहुरिमिथात्वसमानअसुभनांहीहै तातैंश्रीगुरुनिकायहउ
पदेसदैं जोअयनांसर्वस्वउद्यमकरिपायअैसाकरिमिथात्वकानासकरिसम्यक्त
अंगीकारकरनां ब अागैंग्यारहप्रथधर्मकेवारहभेदनिमैंपहलाभेदसम्यक्तस ११७

हितपणांहैं ताकानिरूपणकीया ब अागैंग्यारहभेदप्रतिमांकेहैंतिनिकास्व
रुपकहैहैं ।तहांप्रथमहीदर्शनिकनामांश्रावककूंकहैहै ब गाथा। वहुतसस
मसिदंजमज्जमंसारिणिंदंदव्वं ।जोणयसेवदिणियमा ।सोदंसणसावउहोरि
।२७।भापा।वहुतत्रसजीवनिकेघातकरिसहितजोमदिरातथा अतिनिंदनीक जो
मांसअादिद्रव्य तिनिकूंजोनियमतैंनसेवैहैं ।नहणावनकरैसोदर्शनिकश्रावा
कहैं ।।गा।। मदिरामंसमज्जरअादिसहितैंसहित ।अरपंचउदंवरफलएवसक
वहुतत्रसजीवनिकेघातकरिसहितहैं ।तातैंदर्शनिकश्रावकहैं ।सोतिनिकूंन
हणावनकरै मद्यतैंमनकूंमोहहैं ।तवधर्मकूंनलैहैं ।वहुरिमांसत्रसघातविनांहो
यहीनांही ।मस्तकीउत्पत्तिप्रसिद्धहैं ।त्रसघातकाविकाणांहीहैं ।वहुरिपीपल
वडपीलूफलनिमैंप्रत्यक्षत्रसजीवउडतेदेखिएहैं ।अन्यग्रंथनिमैंकह्याहैं जो

DR BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी इंस्टीट्यूट आफ इंडोलॉजी
MEMORIAL

एश्रावकके श्रावमूलगुणहैं॥ अरइनिकूंत्रसहिंसाके नपलक्षणरूपकहैं॥ तातैंजिनिव
स्तुनिमैंत्रसहिंसावडुतहोयतेश्रावकैंकेश्रभक्षछै॥ तातैंभक्षणंयोग्यनांही॥ त
थासातविसनश्रन्यायपद्धतिकेमूलहैं॥ तिनिकात्यागहोकह्याहैं॥ जूवांमांस म
दवेश्यांसिकारचोरीपरस्त्रीएसातव्यसनकहैंहैं॥ सोविसननांमश्रापदाकष्टका
हैं॥ सोइनिकेसेवनहारेकूंश्रापदाश्रावैहैं॥ राजपंचनिकाडंड्योंमहोयहैं॥ तथाति
निकासेवनजीश्रापदाकष्टरूपहैं॥ श्रावकश्रैसेश्रन्यायकार्यकरेनांही॥ तहांदर्श
नानामसम्यक्तकाहैं॥ तथामतकीमूर्तिसर्वकेदेखनेमैंश्रावैताकाजीनामदर्शनहै
सोसम्यग्दृष्टीहोयजिनमतकूंसेवै॥ अरश्रनछश्रन्यायकश्रंगीकारकरैतोसम्य
क्कूंतथाजिनमतकूंलजावैं॥ मलिनकरै॥ तातैंइनिकूंनियमकरिछोडैंहीदर्शन
प्रतिमांधारीश्रावकहोयहै॥ ब॥ पुनः॥ ॥ था॥ दिढचित्तोजोकुचरिएवंपियएि॥ १९८

माणपरिहीएोवेरागाभावियमणो॥ सोवियदंसणगुणोस्रोहि॥ २०॥ अर्थ॥ श्रैसेंदृत
कूंदृढचित्तरूवासंताइहानकहिएइसलोकपरलोकके भोगनिकी वांछातांकरि
रहितरूवासंतावैराग्यकरिभावितश्रालोहैंचित्तजाकाश्रैसारूवासंताजोसम्य
ग्दृष्टीपुरुषकहैंहैं॥ सोदर्शनिकश्रावककहियेहै॥ नावार्थ॥ पहलीगाथामैंश्रावक
ज्ञाताकेएतीनविशेषणश्रौरजाननें॥ प्रथमहितौदृढचित्तहोयपरीसहश्रादिक
एश्रावैतोव्रतकीप्रतिज्ञातैंचिगैनांही॥ अरबहुरिइहानकरिरहितहोयविषय
भोगकीयालोकपरलोककीश्राशाकरिव्रतप्रतिज्ञाजाकेनहोय॥ बहुरिवैराग्य
कीभावनांमनमैंहोयश्रनछश्रन्यायकौंश्रत्यंतश्रनर्थजाणित्यागकरै॥ श्रैसाश्रा
वीजोसास्त्रमैंत्यागनेयोग्यकहेतातैंछोडनें॥ परिणाममैंरागमिटैनांही॥ त्यागकेव्य
नेकश्राशयहोयहै॥ सोयाकेश्रन्यश्राशयनांही॥ केवलतीव्रकषायकेनिमित्त

महापापजानित्यागहै इनिकूं त्यागेंदी ग्यारमी प्रतिमांके उपदेशायोग्य होयहैं व्रतीनि-
यत्यकस्याहै सोसत्यरहित त्यागहोयहै ब ऐसें दर्शनप्रतिमांधारीश्रावककास्व
रूपकह्या ब ग्यारमें इजीव्रतप्रतिमाकास्वरूपकहैहैं ॥ अथ ॥ पंचाणुव्रयधरो गु
णवयसिक्कावयेसिंजुत्तो दिढचित्तोसमजुत्तो एणवीवयसावगोहोदि २९ ॥
जोपंचग्रणुव्रतकाधारीहोय वहुरिगुणव्रततीनग्रर सिक्षाव्रतचारिइनिका
रिसंयुक्तहोय वहुरिदृढचित्तहोय वहुरिसमभावकरियुक्तहोय वहुरिग्यानवा
नहोय सोव्रतप्रतिमाकाधारकश्रावकहै ब ॥ ५ ॥ इहां ग्रणुसब्दग्रल्पवचनहै
सोपंचपापमेंजेस्थूलपापहैंतिनिकात्यागहैं तातैंग्रणुव्रतसंग्याहैं वहुरिगुण
व्रतग्रर सिक्षाव्रततिनि ग्रणुव्रतनिकीरक्षाके करनहारेहैं तातैंग्रणु व्रतीति
निकूंभीधारेहैं याकेप्रतिमाव्रतकीहै सोदृढचित्ततैहैं कष्टउपसर्गसहपरीस २१९

हग्राएंसिथलनहोयहैं वहुरिग्रप्रत्याख्यानावरणकषायकेग्रभावतैंयहव्रत
होयहैं ग्रर प्रत्याख्यानावरणकषायके मेरउदयतैंहोयहैं तातैंउपशमभावस
हितपणाविशेषकीयाहैं यद्यपिदर्शनप्रतिमांधारीकेभी ग्रप्रत्याख्यानावरण
काग्रभावतौभयाहैं परंतु प्रत्याख्यानावरणकषायकेतीव्रस्थानकनिकेउदय
तैंग्रतीचाररहितपंचग्रणुव्रतहोयनांही तातैंग्रणुव्रतसंज्ञानांही ग्रावैहैं ग्र
रस्थूलग्रपेक्षाग्रणुव्रतताकेभीहै त्रसकायस्थूलकात्यागहै ग्रहिंसाग्रणुव्रतहै
व्यसनमेंचोरीकात्यागहै सोचसत्यभीयामेंगर्भितहैं परस्त्रीकात्यागहैंवैराग्यभा
वनांहैं तातैंपरिग्रहकीभीमूर्छाकेस्थानघटतेहैं परिमाणभी करैहैं परंतु निरति
चारनहींहोयहैं व्रतप्रतिमानामपावैहैं वहुरिज्ञानीविशेषणहै सोयुक्तहीहैं
सम्यग्दृष्टीहोयकरिव्रतकास्वरूपजानिगुरुनिकीदई प्रतिज्ञालेहैं सोज्ञानी

हीहोयहैं। ऐसें जाननां। ब। आगैं पंचम अणुव्रतमैं पहला अणव्रत कूं कहैहैं। ब।
जो। जीवावर इसदउ। अप्पाणसमं परंपि मण्णंता। णिंदणगरहणजुत्तो। परि
हरमाणो महारंभे। ३०। तसघादं जो ण करदि। मणवयकाएहिं णेव कारयदि। कुव्वं
तंपिणइच्छदि। पढमवयं जायदे तस्स। ३१। अ। जो श्रावक त्रसजीव बेंद्रिय तेंद्रि
य चौइंद्रिय पंचेंद्रिय का घात मन वचन काय करि आप करैनांही। पर पा
सि करावैनांही। अर पर कूं करते कूं इष्ट न जानमानैं। ताकै प्रथम अहिंसा नाम
अणव्रत होय। ब। सो कैसा श्रावक दया सहित तौ आपार कार्यमैं प्रवर्तै हौं। अ
र सर्व प्राणी कूं आपसमान मानता है। बहुरि आपारादिक कार्यमैं हिंसा होय है
ता की अपनैं मनविषैं अपनी निंदा करै हैं। अर गुरुनिपासि अपना पाप कूं क
हैहैं। सो गर्हा हिताकरि युक्त हैं। जो पाप लागै है ताका गुरुनिकी आज्ञा प्रमाण आ १२७

लोचनां प्रतिक्रमण आदि प्रायश्चित लेहैं। बहुरि जिनिमैं त्रसहिंसा बहुत होती
होय। ऐसे बडे आपार आदिता करियुक्त हैं। जो पाप लागै है ताका गुरुनिकी आ
ज्ञा प्रमाण आलोचनां प्रतिक्रमण आदि प्रायश्चित लेहैं। बहुरि जिनिमैं त्रसहिंसा
बहुत होती होय ऐसे बडे आपार आदिके कार्यमहा आरंभतिनिकूं छोडता
संता अवतैहैं। जो। अ। त्रसघात आप करैनांही। पर पासि करावैनांही। करते कूं भ
ला जानैनांही। पर जीवकूं आपसमान जानैं। तब आपके मरणादिकका दुख
होयतैसैं पर कैभी होता जानैं। तब पर घात न करै। बहुरि बडे आरंभ जिनिमैं बहु स
घात बहुत होय तिनकूं छोडै। अर अल्प आरंभमैं त्रसघात होय तिसमैं आपकी निं
दा गर्हा करै आलोचनां प्रतिक्रमणादि प्रायश्चित करै। बहुरि इति के अतीच
र अन्य ग्रंथनिमैं कहे हैं ते टालैं। इहां गाथामैं अन्य जीवकूं आपसमान जाननां

कह्याहै तौभैं अतीचार टलनां नीं आयगया। मरकेवधबंधन अतिभार आरोपण अन्न
पाननिरोधमैं दुखहोयहै। सो आपसमानपरकूं जानैंतबकाहेकूं करै। ब। आगै
दूसरा अणुव्रतकूं कहैहै। ब। गा। हिंसावयणेणवयदि। कक्कसवयणेपिजोण।
भासेदि णिठुरवयणं पितहा णाभासेइ गुज्झवयणेपि। ३२। दिढमित्तवयणं भासदि
सेतोसक्केतुसव्वजीवाणं। धम्मयासणवयणं। अणुवदीहवदिसो विदिउ
३३ ब। जोहिंसाकावचननकहैं। बहुरिकर्कसवचननकहै। बहुरि निष्ठुरबच
ननकहै। बहुरिपरकामुहावचननकहै। ब। तौकैसावचनकहै परके हितरूपता
प्रमाण सत्यवचनकहैं। बहुरिसर्वजीवनिकैसंतोषकाकरनहारा वचनक
है। बहुरि धर्मकाप्रकासनहारावचनकहै सो पुरुष दूसरा अणुव्रतकाधारीहो
यहैं। ब। ना। असत्यवचन अनेकप्रकारहैं। तहांसर्वथात्यागतौसकलचारित्री ११२

मुनिकैहोयहैं। ब। अर अणुव्रतमैंस्थूलकात्यागहैं जिसवचनतैंपरजीवकाघा
तहोय ऐसा तौहिंसाकावचननकहैं। बहुरि जोवचनपरकूं कडवालागै सुणैतै
ही क्रोधादिकउपजै ऐसा कर्कसवचननकहै। बहुरिपरकैनहु गुप्तपणि आ
वैतौकउपजि आवै। कलहउपजिआवै ऐसा निष्ठुरवचननकहै। बहुरिपरके
गोप्यमर्मकाप्रकाशकरनेवालावचननकहै। उपलक्षणतैं और भी ऐसैं जामैंप
रकाबुराहोय सोवचननकहै। बहुरिकैसैतौहितमितवचनकहै। सर्वजीवनि
कैसंतोषउपजै ऐसाकहैं। बहुरि धर्मका जातैं प्रकासहोय ऐसा कहैं। बहुरि
याके अतीचार अन्यग्रंथनिमैंकहेहैं। जो मिथ्याउपदेस रहोभ्याख्यानकूट
लेखक्रियान्यासापहारसाकार मंत्रभेद सो गाथामैंविशेषणकीएतिनिमैंसर्व
गर्भितभए। इहांतात्पर्य ऐसा जानना जोजातैंपरजीवकाबुराहोय जायअ

पनेपरिग्रहपरिमाणव्रतथारइयाप्रलापवचनतेंअपनेप्रमादवडेंजेसास्थूलअसत्य
वचनअणुव्रतीकहेनांही।परपासिकह्यावेनांहीकहनेंवालेकूंभलाजाणेंजा
के दूसराअणुव्रतलीयेहैं।ब।।अगैंतीसराअणुव्रतकूंकहैहैं।ब।।गा।। जोवक्र
मुल्लंवबु अप्पमुल्लेएणलेयगिक्कि दि।वीसरियंपिनगिण्हदिलाहेथूवेहितस
दि२४ जोपरदव्वंणहरदि मायालोहेणकोहमाणेण।दिढचित्तोसुहमईअणु
व्वदीसोस्वेतिदिट्ठे ३५।।अर्थ।। जोश्रावकवक्रमोलकीवस्तुअल्पमोलकरिनले।
वक्रकिपटकरिलोभकरिक्रोधकरिमानकरिपरकाद्रव्यनलेसोतीसराअणु
व्रतधारीश्रावकहोयहैं।सोकैसाहैदृढहैचित्तजाकाकारणपायप्रतिज्ञाविगाडे
नांही।वक्रकरिसुखहैउज्वलहैबुधिजाकी।ब।।भावार्थसातविसनकेत्यागमेंचोरीकेत्याग
तोकीएहैं तामेंइहांदृढविशेषजोवक्रमोलकीवस्तुअल्पमोलमेंलेनीता १२२

मैंनीजगाडानपजैहैअनजानिएकोनकारनतेंपैलाअल्पभेदहैं।वक्रकरिपरकीभूल १
वस्तुतथामार्गमेंपडीवस्तुभीनलेयकुनजाणेंजोपैलानजाणेंताकाडरकहा।।
वक्रकरिव्योपारमेंथोडेहीलाभनकरिसंतोषकरै।वक्रतलालचलोभतेंअन
र्थनपजैहैं।वक्रकरिकपटप्रपंचकरिकारूकाधनलेनहीं।पैलेधरयाहोयतोताकूं
नदेनेंकेभावसेंनांही।वक्रकरिलोभकरितथाक्रोधकरिपरकाधनबोसिनलेत
थामानतेंबोसिनले।तथामानकरिकैरहमवडैहैं जोराखरहैलीयातोलीया।नैं
सेंपरकाधनलेनहीं।नैंसेंहीपरकूंलिवावेनांही।नैंसेंलेतेकूंभलाजाणेंनांही
वक्रकरिअन्यग्रंथमेंयाकेपांचअतीचारकहैहैं।चोरकूंचोरीकेअर्थिउरएंतिस
काल्यायाधनलेनां।राजतेंविरुद्धहोयसोकार्यकरनां।व्योपारकेभोलाहीनाषि
कराखणें।अल्पमोलकीवस्तुकूंवक्रमोलकीदिखायताकाभोहारकरनां।एक

DR BHAU DAJI

तीचारहै सोगाथामैविशेषएकीएतिनिमैंश्रायगए त्रैसेंनिरतिचारस्तेयत्या
गव्रतकूंपालै सोतीसराश्रणुव्रतकाधारीश्रावकहोयहैं ब श्रागैंब्रह्मचर्य
व्रतकाव्याख्यानकरैहैं ब गा ४ श्रसुइमयेदुगंधं महिलादेहंविरच्चमाणोजो
रूवेलावलंपिय मणमोहणकारणं मुणई ३६ जोमणदिपरमहिलं जणणी
वहणीसुश्राइसारिबं मणवयकायेण विवंनवई सोहवेथूले ३७
जोश्रावकस्त्रीकेदेहकूंश्रसुचिमईदुर्गंधजाणतोसे तौतथाताकारूपलावण्य
ताकूंनीरखनकेविषैंमोहउपजावनेकूंकारण जाणैहैं यातैंविरक्तरूवासेता
प्रवर्तैहै ब बहुरि जोपरस्त्रीकूंबडीमातासारिषी वराबरिकीकूंबहणसारिषी
छोटीकूंबेटीसारिषीमनवचनकायकरिकैंजाणैहैं सोस्थूलब्रह्मचर्यव्रतकाधा
रकश्रावकहैं ॥ परस्त्रीकातौमनवचनकाय कृतकारितश्रनुमोदनाकरि १२३

त्यागकरै श्रपनीस्त्रीकेविषैंसंतोषकरै स्त्रीव्रकामकेविनोदस्त्रीडारूपनप्रवर्त्तै जातै
स्त्रीकेशरीरकूंश्रपवित्रदुर्गंधजाणिवैराग्यभावनारूपभावरावै श्ररकामकीती
व्रवेदनाइसस्त्रीकेनिमित्ततैंहोयहैं तातैं ताकेरूपलावण्यश्रादिचेष्टाकूं मनकेमो
हनेकूं ज्ञानकेभुलावनेंकाकामकेउपजावनेंकाकारण जाणिविरक्तरहैं सोचतुर्थ
श्रणुव्रतकाधारकहोयहैं ब बहुरि याकेश्रतीचार परविवाहकरण परकीपरणी
विनापरणीस्त्रीकासंसर्गकामकीक्रीडाकामकातीव्रश्रभिलाषएकसाहैं नेस्त्री
कीदेहतैंविरक्तरहनां इसविशेषणमैंश्रायगए परस्त्रीकात्यागतौपहली प्रतिमां
मैंसातविसनकेत्यागमैंश्रायगया इहां श्रतितीव्रकामकीवासनाकात्यागहै
तातैंश्रतीचाररहितव्रतपलैहै श्रपनीस्त्रीविषैंभीतीव्ररागनांहीहोयहै त्रैसें ब्र
ह्मचर्यव्रतकाकथनकीया ब श्रपरिग्रहपरिमाणपांचमां श्रणुव्रतकाकथनकी

रैहैं॥ब॥ ॥ ॥ जोलोहं णिहणि ता॥ संतोसरसायणेणसंतुठो॥णिहणदितिएहा दुछा
मलतोविणस्सरेसचं॥३०॥ जोपरिमाणंकुव्वदि धणधण्णसुवण्णदिवित्त माईणं ३१
वदुगंजाणिता॥ अणुव्वयंपंचमंतस्स॥३१॥ अथ॥ जोपुरुषलोभकषायकूंदीएकरि
संतोषरूपरसायणकरिसंतुष्टरूवासंता सर्वधनधान्यादिपरियहकूंविनाशीकमा
नतासंताइष्टलाकूं अतिसयकरिहणेहैं॥ब॥ वस्तुरिधनधान्यसुवर्णक्षेत्रवस्त्रादिपरि
ग्रहकाअपनांउपयोगसाधनार्थजाणिकार्यविशेष जाणितिसकेअनुसारिपरिमाण
करेहैं॥ताकेपांचवांअणुव्रतहोयहैं॥भावार्थ॥बाह्यरंगकापरिग्रहतोलोभत्यागहै॥
ताकूंहीणकरै॥अरवाह्यकापरिग्रहकापरिमाणकरै॥ताकूंदिढचित्तकरिग्रहि
ज्ञानेगनकरै॥सोअतीचाररहितपंचमअणुव्रतीहोयहैं॥ब॥ ऐसैंपांचअणुव्र
तनिरतिचारपालेसोव्रतप्रतिमाधारकश्रावकहै॥ऐसैंपांचअणुव्रतका व्या ७ १२४

नकीया॥अवइनिव्रतनिकीरक्षाकरनेंवाला सातशीलहैतिनिका व्याख्यानकरै
हैं॥तिनिमैंपहलैंतीनगुणव्रतहैं॥तामैंपहलागुणव्रतकूंकहैहैं॥ब॥ ॥ ॥ जहलोह
णसमणुछंसंगपमाणंहवेइजीवस्स॥सव्वेदिसिसुपमाणं॥तहलोहंणसयेणिय
मा॥३२॥जेपरिमाणंकीरदि॥दिसाणसचाणसुप्पसिद्धाणं॥उवउंगंजाणिता॥गु
णवदंजाणतंपढमं॥३३॥भावार्थ॥जैमैंलोभकेनाशकरनेंकै अर्थिजीवकेपरिग्रहकापरि
माणहोयछै॥तैसैंसर्वदिशानिविषैंप्रमाणकीयाहूवांनीयमतैंलोभकानाशा
करैहै॥ब॥तातैंजोसर्वही जेपूर्वेक्षादिप्रसिद्धदसदिशातिनिका अपनाउपयोग
प्रयोजनकार्यजाणिकरिपरिमाणकरै॥सोपहलागुणव्रतहैं॥ब॥ ॥ ॥ पहलैं
पांचअणुव्रतकहेतिनिकाएगुणव्रतउपकारीहै॥ यहांगुणसहउपकारवा
चकलेएं॥सोलोभकेनाशकरनेंकूंजैसैंपरिग्रहकापरिमाणकरै॥तैसैंही लो

मकेनाशकरनेकूं हिंसाकानीपरिमाणकरै। जहां तोई परिमाणकी याताकेपरै जो द्र
व्यक्षादिकीप्राप्तिहोतीहोयतोभी तहां जायनांही। ऐसैंलोभजयतां वहुहिंसा
दिकपापनी परिमाणपरैंनजानैंतै तहांसंवेधी नलागै। तवतिससंवेधीमहाव्रततु
ल्यभया। ब। क्षवइसरागुएव्रतक्षनर्थदंडविरतिकूंकरैहै। ब। गा। कज्जेकिं
पिएसाहदि णिच्चंपावंकरेदि जोक्षत्थो। सोखलुदंडोक्षणत्थो पेचपयारोवेसो
विरदो ॥ ॥ जोकार्यप्रयोजन तौक्षपनांकिछूसाधैनाही। क्षरकेवलपापहीकूंउप
जावै। ऐसाकार्यहोयताकूं क्षनर्थकहिए। सोपांच प्रकारहै। तथाक्षनेकप्रकारनीहै।
निप्रयोजनपापउपजावैसो क्षनर्थदंडहै। सोपांचप्रकारकरिकरैहै। क्षपध्यान पापोप
देसैंप्रमादचर्यां हिंसाप्रदान दुःश्रुतिश्रवणदि वहुरिक्षनेकप्रकारनीहै। ब। क्षवप
थमभेदकूंकहैहैं। ब। गा। परदोसाएंगहणं। परलच्छीएंसमीहणंजेच। परइच्छाक्षालो। १२५

उ। परकलहालोयणंपढमं ॥ ॥ जोपरकेदोषनिकूंग्रहणकरनां। परकीलक्ष्मीधनसं
पदाकीवांछाकरनां। परकीस्त्रीकूं रागसहितदेषनां। परकीकलहकादेषनां। इनिकूंकरैसो
पहलाक्षनर्थदंडहैं। ब। परकेदोषनिकाग्रहणकरनेमैंक्षपनेभावतौविगडै। क्षरप्र
योजनक्षयनांकिछूसिद्धिनांही। परकाबुराहोयक्षापकैदुष्टपनोवहरैहैं। वहुरिपरकीसंप
दादेखिक्षापताकीइच्छाकरैतौक्षापकैकछुक्षायजायनांही। यामैंनीनिःप्रयोजनभावविगडै
हैं। वहुरिपरकीस्त्रीकूं रागसहितदेषनेमैंनी क्षापत्यागीहोयकरिनिःप्रयोजनभावकाहेकूं
विगाडै। वहुरिपरकीकलहकादेषनेमैंनीकिछुक्षपनोकार्यनसरै। उलटीक्षापमैंनीकछु
क्षाकुलिक्षायपडै। ऐसैंइनिकूंक्षादिदेकरिकार्यनिविषैंक्षपनेभावविगडै। तहांक्षपध्या
नाभयहलाक्षनर्थदंडहै। सोक्षएकव्रतभंगकाकारणहै। याकेत्यागैव्रतदृढरहैहैं ब क्षप
दूसरापापोपदेसनामक्षनर्थदंडकूंकहैहैं ॥ ॥ जोउवएसोदिज्जदि किसिपसुपालणवणिज्ज

मुहेसु॥ पुरसद्वीसेजोण॥ ण्पणछदंडोहवेविदिई॥४४॥ ण्ण॥ जोयतीकरनोपसूकापालनोविणज
करनोइत्यादिपापसहितकार्यतथापुरुषस्त्रीकासंयोगतैसैंहोयतैसैंकरनो इत्यादिकार्यनिक
परकूंउपदेसदेनो इनिकाविधानवतावनो जामैंकिछुण्पनोप्रयोजनसध्यैनांही केवलपापही
उपजै॥ सोइजापापोदेशनामण्पनर्थदंडहै॥ ब॥ नाथी॥ परकूंपापकेउपदेसमैं ण्पनैंकेव
लपापही बधैहै॥ तातैंव्रतनंगहोयहै॥ तातैंयाकूंछोडैंव्रतकीरक्षाहैं॥ व्रतपरिणुणकरै
हैं॥ उपकारकरैहैं॥ तातैंयाकरनामगुणव्रतहै॥ ब॥ ण्पागैंतीसराप्रमादाचरितनामण्प
नर्थकाभेदकूंकहैहैं॥ ब॥ ॥ विद्लोजोवावारो॥ पुढवीतोयाणण्पगिपवणएंण
हचिवणप्फदिछेउ॥ ण्पणछदंडोहवेतिदिई॥४५॥ ॥ पृथ्वीजलण्पग्निपवनहरि
कापफलनिःप्रयोजनव्यापारप्रवर्त्तनकरनोतथानिःप्रयोजनवनस्पतीहरितकाय
काछेदनभेदनकरनो सोतीसराप्रमादाचरितनामोण्पनर्थदंडहै॥ ब॥ नावध॥ जो १२६

प्रमादकैवसिहोय॥ पृथ्वीजलण्पग्निपवनहरितकायकीनिःप्रयोजनविराधनांकरै
तहोत्रसथावरजीवनिकाघातहीहोय॥ ण्पनोकार्यकछूसध्यैनांही॥ तातैंयाके
करनैमैंव्रतभंगहै॥ छोडैव्रतकीरक्षाहोयहै॥ ब॥ ण्पागैंचौथाहिंसादाननामोण्प
नर्थदंडकूंकहैहैं॥ ब॥ ॥ वज्जारयफरिथरणेण्पाउधलोहादिविक्कणेजेचलो
रकारवलादिगरणेण्पण बदंडोहवेतुरिई॥४६॥ ॥ जोविलावण्पादिहिंसकर
जीवकापालनांवफरिलोहकातथालोहण्पादिकेण्पायुधनिकाओपारकरनांदे
नोलेनांवफरिलाभरवलिण्पादिसहितैंविषवस्तुण्पादिकादेनोलेनोविणजक
रनांसहचौथाहिंसादाननामोण्पनर्थदंडहै॥ ब॥ ॥ हिंसकजीवकापालनोतो
निःप्रयोजनमापप्रसिद्धहीहैं॥ वफरिवकृतहिंसाकेकारणशस्त्रलोहलाभण्पा
दिकाविणजदेनोलेनांजीवकनैंरमैंफलण्पल्पहैपापवकृतहै॥ तातैंण्पनर्थदंडही

है।।यामैंएवर्तैव्रतभंगहोयहैं।। छोडैंव्रतकीरक्षाहैं।।ब।।आगैंऽः श्रुतिनामा पांचमांअ
नर्थदंडकूंकहैहैं।।गा।। जेसवएसबाणि।।नेउएवसियरणकामसबाणं।।परदोसा
एंचतहा।।अणछदंडोहवेचरिमो।।४७।। जोसर्वथाएकातीनिकेमाथेशास्त्र
सरिखेदीषे।।ऐसेकुशास्त्रतथानांऽक्रियाहास्यकुतूहलकेकथनकेशास्त्रत
तावशीकरणमंत्रप्रयोगकेशास्त्रतथास्त्रीनिकीचेष्टाकेवर्णनरूपकामशास्त्र
तिनिकासुननां।।तथाउपलक्षणतैंवाचणंसुनावनोजीजाननां।।वऽरिपरकेदो
षनिकीकथाकरनासुननां।।यहऽःश्रुतिश्रवणनांमध्येतकापांचमांअनर्थदंडहै
ब।।वा।। मोटेमास्त्रसुननेंवाचनेंसुनावनेंरचनेमैंकिछूप्रयोजनसिद्धिनांहीकै
वलपायहीहोयहैं।।अरऽआजीविकानिमित्तेनांऽनिकामोहश्रावककूंयोग्यनां
ही।।मोपरऽआदिकीयोग्यआजीवेकाहीश्रेष्टहैं।।जामैंव्रतभंगहोयसोकाहेकूंकरै १२७

व्रतकीरक्षाहोकरनी।।ब।।आगैंइसऽअनर्थदंडकेकथनकूंसंकोचेहैं।।ब।।गा।।एवंप
चयारं।।अणछंदंडुहावएंणिच्चं।।जोपरिहरेइएणंगुणव्वएसोहवेविरिई।।
।।४८।।अर्थ।।जोज्ञानीश्रावकऽसपंचप्रकारअनर्थदंडकूंऽरक्काभिंतरउपजावन
हराजाणिजोऽहै।।सोऽसरागुणव्रतकाधारीश्रावकहोयहैं।।तावा।।यऽअनर्थदं
डकात्यागनामागुणव्रतअएकव्रतनिकावडाउपकारीहै।।तातैंश्रावकनिकूंअ
वऽश्यपालनांयोग्यहैं।।ब।।।।आगैंजोभोपभोगनामांतीसरागुणव्रतकूंकहैहैं।
।ब।।गथाजाणित्तासंपत्तीजोयणतंबोलवत्थमाईणं।।जेपरिमाणंकीरऽजोउवभो
यंवयंतस्स।।४९।।अर्थ।।जोअपणीसंपदासामर्थीसामर्थ्यजाणिअरऽजोजननां
चूलवस्त्रआदिकापरिमाणमर्यादकरै।।तिसश्रावककैजोभोगोपभोगनामगुणव्रत
होयहैं।।ब।।भोगतौजोजननांचूलआदिएकबारभोगमैंआवैसोकहिए।।ऽऊ

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

रिउपभोगवस्त्रग्रहणं॥आदिकेरिकरिभोगमेंआवेसोकहिए तिनिकापरिमाण
यमरूपनीहोयहै॥अरनियमरूपनीहोयहै सोयथाशक्तिअपनीसामग्री।
कूंविचारियमरूपकरिलेतथानियमरूपनीकरैहै॥तिनितैंतिसकालजाऐतिस
अनुसारकरवोकरै॥यहअएकव्रतकाबडाउपकारीहै॥ब॥आगैंजोभोपभोगकी
छतीवस्तुकूंछोडैहैं॥ताकीप्रसंसाकरैहै॥ब॥गा॥ जोपरिहरेइसंतेतस्सव
यंथुच्चयैंहेसुरिंदेहिं॥जोमणलद्धुवमकदितस्सवयंअप्पसिद्धिकरं॥पू॥
जोपुरुषछतीवस्तुकूंछोडैहै॥ताकेव्रतकूंसुरेंद्रअीसराहैहैं॥प्रसंसाकरैहैं व
फुरिअएछतीकाछोडणंतोअैसाहैजैसेंलाडूतौहोयनांही॥अरसंकल्पमात्रमनमैं
लाडूकीकल्पनाकरिलाएपायतैसारै॥सोअएछतीवस्तुतोसंकल्पमात्रछोडी॥ताकेव
हछोडनांव्रततौहै॥परंतुअल्पसिद्धिकरनेवालाहै॥ताकाफलथोडाहै॥ब॥इहांकोईपूछै १२८

भोगोपभोगपरिमाणकूंतीसरासिष्याव्रतकह्याहैसोयहकैसैं॥ताकासमाधान॥जोयह
आचार्यनिकीविवक्षाकाविचित्रपणांहैं॥स्वामिसमंतभद्रआचार्यनैंतीसरेव्रतकरेश्रावक
चारमैंइहांकह्यातैसैंहीकह्याहै॥सोयामैंविरोधनांही॥इहांतौअएकव्रतकूंउपका
रकीअपेक्षालईहै॥अरतहांसचित्तआदिभोगछोडनेंकीअपेक्षासुनिव्रतकीसिष्या
देनेंकीअपेक्षालईहै॥किछूविरोधहैनांही॥ब॥अैसैंतीनगुणव्रतकाव्याख्यानकीया
ब॥आगैंचारिसिष्याव्रतकाव्याख्यानकरैहैं॥तहांप्रथमहीसामाथैकसिष्याव्रतकूं
कहैहैं॥गा॥ सामाइस्सकरणे॥खेत्तंकालंचआसणंविलंबी॥मणवयणकायसुद्धी
णायव्वाकुंतिसत्तेव॥पू१॥ अ॥पा॥पहलैंतौसामायिककैकरणैंविषैंक्षेत्रकालआ
सनवऊरिलय॥बऊरिमनवचनकायकीसुद्धताएसातसामग्रीजाननेंयोग्यहैं॥ब॥
तहांक्षेत्रकूंकहैहैं॥ब॥गा॥ जत्थणकलयलसद्दंबहुजणसंघट्टणंणजत्थि॥जत्थ

दसादीया॥एसपस्सछोहवेरेसे॥५२॥नामाथ॥जहांकलकलाटसहनाहीहोय॥वफुरिजहावफुरत
लोककासंघट्टभावनाजावनानहोय॥वफुरिजहांडांसमांछरकीडीपीपलाइत्यादिशरीर
कूंवाधाकरमहारेजीवनहोयऐसाक्षेत्रसामायिककरणेकूंयोग्यहैं॥नाथ॥जहांचि
त्तकूंक्षोभउपजनेंकेकारणनहोयतहांसामायककरनो॥बाकालकूंकहैहैं॥गाथ॥पुच्छ
एहमकूंएहं॥अवरएहंतिहिविणलयाछक्को॥सामायस्सकालो॥सविणयणिस्सम
णिहिट्ठो॥५३॥नथ॥पूर्वाह्नकहिएप्रभातिकाल॥मध्याह्नकहिएबीचिकाल॥अ
पराह्नकहिएपाछिलादिन॥इनितीनूंकालविषैंछहछहघडीकाकालसामायिककाहैं
सोयहविनयसहितजेनधकहिएपरियहरहितमुनितिनिकेईसजेगणधरदेवतिनि
नेंकह्याहैं॥ब॥प्रभातितीनघडीकातउकासंलगायतीनघडीदिनचढयांताईं॥ऐसे
सेंछहघडीपूर्वाह्नकाल॥होयपहरपहलांतीनघडीतैंलगायपीछैंतीनघडीऐसैं १२९

छहघडीमध्याह्नकाल॥तीनघडीदिनसंलगायतीनघडीरातिताईं॥ऐसैंछहघडीअपरा
काल॥यहसामायिकाकाउत्कृष्टकालहैं॥वफुरिहोयदोयघडीकानीकह्याहैं॥ऐसेतो
नूंकालकीछहघडीहोयहैं॥ब॥आसनतथालय॥अरमनवचनकायकीसुधताकूं
कहैहैं॥॥५॥वेधिसापज्झंकं॥अहवाउदेएकमणोविचा॥कालपमाणंकिच्चा॥इं
दियवावारचनिरोहोऊं॥५४॥जिणवयणेमणमएणं॥संपुडकाउंयजेजलिकच्चा॥स
सरूपेसंलीएणं॥वंदएअहंविचिंतेतो॥५५॥किच्चादेसपमाणं॥सव्वेसावज्जव
ज्जादोहोऊं॥जोकुच्चदिसामईयांसोमुणिसरिसोहवेसाउ॥५६॥अथ॥जोपर्यं
कआसनवाधिकरि॥अथवाऊभोखडोआसनतिष्ठिकरिकालकाप्रमाणक
रिइंद्रियनिकेव्यापारविषयनिविषैंनांहीहोनेंकैअर्थिजिनवचनविषैंएका
ग्रमनकरिकायकूंसंकोचिकरिहस्तकीअंजुलीजोडिकरि॥वफुरिअपनास

रूपमैंलीनरूवासंतात्रथवासामायिककाबंदनाकापाठकेत्रर्थकूंचितवतासंतात्रवर्त्तै
छेछवद्रिक्षेत्रकापरिमाणकरिसर्वसावद्ययोगजोयहव्यापारत्रादिपापयोगतात्का
त्यागकरिपापयोगतैंरहितहोयसोसामायिकवैसोश्रावकतिसकालमुनिसारिषाहै
॥ यहसिक्षाव्रतहैतहांत्रर्थसूंचैरै जोसामायिकहैसोसर्वरागद्वेषसंरहितहोय
सर्वबाह्यकेपापयोगक्रियासूंरहितहोयत्रपनैंत्रात्मस्वरूपकेविषैलीनरूवासुनि
प्रवर्त्तैहै सोयहसामायिकचारित्रमुनिकाधर्मैहैसोसिक्षाश्रावककूंदीजिएहै।जो
सामायिककाकालकीमर्यादकरितिसकालमैंमुनिकीरीतिप्रवर्तौ॥मुनिमनवचत्रैसे
सदारहनांहोयगाइसहीत्रर्थकूंकरितिसकालमुनिसारिषाश्रावककूंकहोहैं
॥ त्रागैंइसरासिक्षाव्रतपोषधोपवासकूंकहैहैं॥ ॥ एहाणविलेवणा
भूषणइत्थीसंसग्गवंधपुव्वरीवादि।जोपरिहरेहिएगणी॥वेणभएणभूसणंकि १३५

चा॥५७॥दोसुविपव्वेसुसयाणुववासेएयभत्तेणिच्चियडी।जोकुणदिएवमाई।
तस्सवयंपोसहविहियं॥५८॥ ॥ जोप्रानीश्रावकएकपक्षविषैहोयपर्वत्रा
वैचौदसिविषैस्नानविलेपनत्राभूषणस्त्रीकासंसर्गसुगंधधूपदीपत्रादिजो
गोपभोगवस्तकूंछोडैत्ररवैराग्यभावनोसोईजयाश्रारणतिसकरित्रात्म
कूंसोभायमांनकरितपवासतथाएकभक्ततथानीरसत्राहारकरैतथात्रा
हिसहकरिकांजीकरैकेवलप्रातपाणीहीलेयत्रैसैंकरैताकैपोषधव्रतनांम
सिक्षाव्रतहोयहै॥ ॥ जैसैंसामायिककरनेकूंकालकानियमकरिसर्वपापा
योगसूंनिवृत्तिहोयकरिएकांतस्थानकधर्मध्यानकरतासंतावैवैतैसैंहीसर्व
ग्रहकार्यकूंत्यागकरिसमस्तभोगउपभोगसामग्रीकूंछोडिकरिसातैंतैसि
कैदोयपहरदिनमांझैंएकांतस्थानकवैवैधर्मध्यानकरतासंतासोलहपहर

रतांई मुनिकी ज्योरहे॥ नवमी पूर्णमासी कूंदोय पहरां प्रतिज्ञा पूरणहोय तौए कवार
भोजन करे॥ तथा नीरस भोजन करे तथा कांजी आदि अल्प आहार करिले॥ काल
धर्मध्यान मैंषोवे सोलह पहर आगें प्रोषधप्रति मा मैं कही है॥ तैसें करे परंतु इहां
थामैंन कही जातैं सोलह कौनियत जानना॥ यह नी मुनिव्रत की सिक्षा रीहै॥ ब
॥ आगें अतिथि संविभाग कौंनामांतीसरा सिक्षाव्रत कहे है॥ ब॥ ग॥ तिविहे प
त्ताम्हि सया॥ सद्धा इ गुणेहिं संजुदो णाणी॥ दाणं जोदेसयं॥ एवदाण विहीहिं संजु
तो॥ ५ए॥ सिकाक्यं चतइयं तस्सहवेसद्ध सिद्धि सोक यरं॥ दाणं चउव्विहं पिय
सद्धेदाणए सारयरं॥ ६०॥ अर्थ॥ जोज्ञानी श्रावक उत्तम मध्यम जघन्य तीनप्रकार पा
त्रकै निमित्त दातारके सप्त आदि गुणनिकरि युक्त होय करि अपने हस्त करि नव
धा भक्ति करि संयुक्त हूवा सदा निति प्रति दान देहै॥ ब॥ तिस श्रावक के तीसरा सि

क्षाव्रत होवहै॥ सो दान केसा है॥ आहार॥ औषधि॥ अभय॥ सास्त्र॥ दान नेद करि
चारप्रकार है॥ बहुरि यह अन्य जे लौकिक धनादिक का दान तिनि मैं अतिसय करि
सार है उत्तम है॥ बहुरि सर्व सिद्धि अरु सुख का करनहारा है॥ ब॥ भा॥ तीन प्रकार
पात्र मैं उत्कृष्ट तौ मुनि॥ मध्यम अणुव्रती श्रावक॥ जघन्य अविरत सम्यग्दृष्टी
है॥ बहुरि दाता के सात गुण॥ श्रद्धा तुष्टि भक्ति विज्ञान अलुब्धता क्षमा शक्ति ए
सात है॥ तथा अन्य प्रकार भी कहे है॥ इस लोक के फल की वांछा न करे॥ १॥ समो वान
होय॥ २॥ कपट रहित होय॥ ३॥ पर दातार तैं ईर्षा न होय॥ ४॥ दीएं का विषाद न करे॥
५॥ दीएं का हर्ष करे॥ ६॥ गर्व न करे॥ ७॥ ऐसें भी सात कहे हैं॥ बहुरि नवधा भक्ति॥ १॥
उच्चस्थान॥ २॥ पाद प्रक्षालन॥ ३॥ पूजन करे॥ ४॥ प्रणाम करे॥ ५॥ मन की सुद्धता॥ ६॥ वच
न की सुद्धता॥ ७॥ काय की सुद्धता॥ ८॥ आहार की सुद्धता॥ ऐसें नवधा भक्ति है॥ ऐसे

सैंदातारकेगुणसहितपात्रकूंनवधाभक्तिकरैनित्यचारिप्रकारदानदेहै॥ताकै
तीसराशिक्षाव्रतहै॥यहश्रीमुनिपदेनेकीसिक्षाकेअर्थिहैं॥जोदेनासीमैतैसैंही
आपकूंमुनिभएलेनांहोयगा॥ब॥आगैंआहारआदिदानकामहात्मकहैहैं
॥ब॥गा॥ जोयणदाऐएसोक्कं॥उसहदाऐएसन्नुदाएंच॥जीवाणअभयदा
एं॥सुउत्तदेसन्नदाणएं॥६१॥भाषार्थ॥जोजनदानकरिसर्वकैसुखहोयहै॥बहु
रिऊषधदानकरिसहितसास्त्रदान॥अरजीवनिकूंअभयदानदै॥सोसर्वदा
निमैंऊर्द्धभएपाईएहै॥उत्तमदानहैं॥भावार्थ॥इहांअभयदानकूंसर्वतैंश्रेष्ठकह्याहै
॥ब॥आगैंआहारदानकूंप्रधानकरिकहैहैं॥ब॥गा॥ जोयणदाऐदिलतिप्पि
वि॥दाणाणिहोंतिदिण्णाणि॥सुक्कतिसाएवादी॥दिऐदिऐहोंतिदेहीएं॥६२॥
जोयणकलेणसाहू॥सक्कंसेवंदिरत्तिदिवंपि॥जोयणदाणंदिण्णे॥पाणावियरंकि

याहोंति॥६३॥अर्थ॥॥जोजनदानदीयेंसेतैंतीनूंहीदानदीएहोयहैं॥जातैंभू
षधानामरोगप्राणीनिकेदिनदिनप्रतिहोयहैं॥ब॥बहुरिजोजनकेबलकरि
साधरात्रिदिनशास्त्रकाअभ्यासकरैहै॥बहुरिजोजनकेदेनेकरिप्राणनिकी
भीरक्षाहोयहैं॥ऐसैंजोजनकोदानकरिऔषधिशास्त्राभयदानतीनूंही
दीएजानने॥ब॥भावार्थ॥भूखविषारोगमेटनेतैंतौआहारदानहीकौमदिदान
भया॥आहारकेबलतैं॥शास्त्राभ्यासमुखसंहोतैं॥ज्ञानदानभीएहीभया॥आ
हारहीतैंप्राणनकीरक्षाहोयतातैंएहीअभयदानभया॥ऐसैंआहारदानमैं
तीनूंगर्भितभए॥ब॥आगैंदानकामहात्मकूंफेरिकहैहैं॥गाथा॥इहपरलो
यनिरीहो॥दाणंजोदेहिपरमभत्तीए॥रयणत्तयेसुविरो॥संघोसयलोहवे
तेण॥६४॥उत्तमपत्तविसेसे॥उत्तमभत्तीएउत्तमंदाणं॥एयदिएवियदिण्णं॥६२

DR BHAU DAJI

सुहं उत्तमं देहि ॥ ६५ ॥ जो पुरुष श्रावक इस लोक परलोक के फल की वांछा रहित रूवा संता परम भक्ति करि संघके निमित्ते दान दे है ॥ ता पुरुष नै सकल संघकूं रत्नत्रय सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र विषै स्थाप्या ॥ बहुरि उत्तम पात्र का विशेषकै अर्थि उत्तम भक्ति करि उत्तम दान एक दिन प्रति दीया रूवा उत्तम इंद्रपद कूं पावै है ॥ ब ॥ मा व ... दान के दीयें चतुर्विध संघ की थिरता होय है ॥ सो दान के देनेवाले मोक्ष मार्ग ही चलाया कहिए ॥ बहुरि उत्तम ही पात्र उत्तम ही दाता की भक्ति श्रर उत्तम ही दान सर्व सै एक सी विधि मिले ता का उत्तम ही फल होय ॥ इंद्रादिक पद ई का सुख मिलै है ॥ ब ॥ आगैं चौथा सिक्षाव्रत देसावकासिक कूं कहै है ॥ ... पुव्व पमाणकदाणं सव्वदिसीणं पुणो विसंवरणं इंदियविसयाण तहा पुणोवि जो कुणदि संवरणं ईई ॥ वासादिकयपमाणं दिणे दिणे लोहकामसमणट्ठं १३३

सावज्जवज्जणठं ॥ तस्स चउत्थं वयं होदि ॥ ६७ ॥ ता अर्थ ॥ जो श्रावक पहलैं सर्व दिशा निका परिमाण कीया था ताहि निका करि संवरण करै संकोचै ॥ बहुरि तैसैं ही पूर्वै इंद्रिय निका विषय निका परिमाण ॥ भोगोपभोग परिमाण मैं कीया था ताहि निकूं करि संकोचै ॥ ब ॥ कैसैं सो कहै है ॥ वर्षा दिन था दिन दिन प्रति काल की मर्यादा दली एं करै ॥ ता का प्रयोजन कहै है ॥ अंतरंग तौ लोभ कषाय श्रर काम कहिए इच्छा ताके समन करिए घटावने के अर्थि ॥ तथा बाह्य पापहिंसादिक के वर्जने के अर्थि करै ॥ ऐसे श्रावक के चौथा देसावकासिक शिक्षाव्रत होय है ॥ ब ॥ मा व ... पहलैं दिग्विरति व्रत मैं मर्यादा करी थी सो यम रूप थी ॥ अब इहां तिस मैं नीकाल की मर्यादा दली एं धरै है ॥ गांव आदि गांई की गमनागमन की मर्यादा करै तथा भोगोपभोग व्रत मैं यम रूप इंद्रिय विषयनि की मर्यादा करी थी ॥ तामैं नीकाल

की मर्यादा लीएं नियम करै॥ इहां सतरा नियम कहे हैं तिनिकूं पालै॥ दिन प्रति मर्म्या दिक करबो करै॥ यामैं लोभ का तथा वाछा का दृष्टा का संको च होय है॥ बाह्य हिंसा दि पाप की हाणि होय है॥ ब॥ ऐसें च्यारि सिक्षाव्रत कहे॥ सो ए च्यारौं ही श्रावक कूं अणुव्रत के यत्नतैं पालने का तथा महाव्रत के लेने की सिक्षा रूप है॥ ब॥ श्रा मैं अंतसल्लेषना कूं संबंध करि कहै हैं॥ ब॥ गा॥ बारसवए हि जुत्तो॥ जो सल्लेह एकरेदि उवसंतो॥ सो सुरसोक्खं पाविय॥ कमेण सोक्खं परं लहदि॥ ६॥ अर्थ जो श्रावक बारह व्रत नि करि सहित हूवा अंतसमय उपसमभाव नि करि युक्त हो य सल्लेषना करै है॥ सो स्वर्ग का सुख पाय करि अनुक्रमतैं उत्कृष्ट सुख जो मो क्ष का सुख सो पावै है॥ ब॥ गा॥ सल्लेखना नामक षायका अर काय का क्षीण कर नेका है॥ सो श्रावक बारह व्रत पाले॥ पीछै मरण का समय जाणै तब पर १३५

ली सावधान होय सर्व बस्तु संबंध मत्व छोडि कषाय नि कूं क्षीण करि उपसमभाव रूप मंद कषाय रूप होय रहै॥ अर काय कूं अनुक्रमतैं ऊणोदर नीरस आदि तप करि क्षीण करै॥ यद्यपि अंसैं काय कूं क्षीण करै तो सरीर मैं मल के निमित्त तैं होय नैसो सारो गतउपजै॥ ऐसे समैं असावधान न होय॥ ऐसैं संल्लेखना करै॥ अंतस मय सावधान होय अपनैं स्वरूप मैं तथा अरहंत सिद्ध परमेष्ठी का स्वरूप चिंतव नमैं लीन हूवा॥ तथा व्रत रूप संवर रूप परिणाम सहित हूवा संता पर्याय कूं छोडै तो स्वर्ग के सुख नि कूं पावै॥ वज्रसहित नीयत वाछा रहै॥ जो मनुष्य होय व्रत पालै॥ ऐसैं अनुक्रमतैं मोक्ष सुख की प्राप्ति होय है॥ ब॥ वज्र व्रत का महात्म्य कहै हैं॥ ब॥ गा॥ एकंपि वयं विमलं॥ सहिवी वि जइ कुणइ दिढ चित्तो॥ तो विविहरि द्धिजुत्तं॥ इंदत्तं पावए णियमा॥ ६०॥ नाम अर्थ॥ जो सम्यग्दृष्टी जीव दृढ चित्त हूवा स

ताएकभी व्रतअतीचाररहितनिर्मलपालेतोनानाप्रकारकीरिद्धिनिकरियुक्त
इंद्रपणांनियमकरिपावै॥ब॥॥॥॥इहांएकभीव्रतअतीचाररहितपालनेका
फलइंद्रपणांनियमकरिकह्या तहांऐसाआशयसूचैहैं॥जोव्रतनिकेपालनें
केपरिणामसर्वकेसमानजातिहैं॥जहांएकव्रतदृढचित्तकरिपालै॥तहांअ
न्यतिसकेसमानजातीयव्रतपालनेकैअविनाभावीपणांहैं॥सोसर्वहीव्रत
पालेकहिए॥बहुरिऐसानींहैंजोएकआदरीत्यागकूंअंतसमैदृढचित्त
करिपकरिताथिथैंलीनपरिणामनएंसंतैपर्य्यायछूटैतोतिसकालअन्म
उपयोगकेअनावतैंषडाधर्मध्यानसहितपरगतिकूंगमनहोयतबउच्चग
तिहीपावैहै॥यहनियमहै॥ऐसाआशयतैंएकव्रतकाऐसामहात्म्यकह्या
है॥यहांऐसानजाननां॥जोएकव्रतलोपालै॥अरअन्यपापसेवोकरैता १३५

कामीऊंचाफलहोय॥ऐसेंतोचोरीछोडै॥परस्त्रीसेवोकरै॥हिंसादिकरवो
करै॥तोकामीउंचफलहोयहैं॥तोऐसानांहीहैं॥ब॥ऐसेंश्रीप्रतिमाकानि व्रत
रूपणकीया॥बारहभेदकीअपेक्षायहतीसराभेदजया॥ब॥आगैतीजीसा
मायिकप्रतिमांकानिरूपणकरैहैं॥ब॥गा॥॥जोकुणइकालसमं॥वारस
आउत्तसंजुदोधीरो॥एमणुवएविकरंतो॥चउप्पएणमोपसएणप्पा॥७०॥
चिंतंतोससरूवं॥जिणबिंबं अहवअक्खरंपरमं॥ज्ञायदिकम्मविवायं॥तस्स
वयंहोइसामइयं॥७१॥जोसम्यक्दृष्टीश्रावकबारआवर्तसहितचारि
प्रणामसहितहोयनमस्कारकरतासंताप्रसन्नहैआत्मांजाकाधीरहृद
यितरूवासंताकायोत्सर्गकरै॥ब॥तहांअपनैचैतन्यमात्रसुद्धस्वरूपकूं
ध्यावताचित्तवनकरतासंतारहै॥अथवाजिनबिंबकूंचित्तवतारहैं॥अथ

वापरमेष्ठीकेवाचकपंचनमोकारादिकूंचितवतारहै अथवाकर्मकेरसकीज ।
तिकाचितवनकरतारहै ताकेसामायिकव्रतहोयहै ब॥ सामायिक ।
वर्णनतोपूर्वैसिप्याव्रतविषैकीयाहीथा जोरागद्वेसतजिसमभावकरिए
कांतस्थानमैंबैठे सर्वसावद्ययोगकात्यागकरिधर्मध्यानरूपप्रवर्तै ऐसे
कसाहीथा इहांविसेषकथा जोकायसूंममत्वछोडिकायोत्सर्गकरे तहां
अरिहंतविषैदोयतोनमस्कारकरै अरबाकीसिद्धादिसातकेसन्मुखहोयम ।
स्तिरोनतिकरै वहुरिएकएकसिरोनतिकेविषैमनवचनकायकीसुद्ध
ताकीसूचनारूपतीनतीनआवर्त्तकरैतेबारहआवर्त्तभए ऐसैकरिका
यसूंममत्वतजोडिनिजस्वरूपलीनहोय तथाजिनप्रतिमासूंउपयोग
लीनकरै तथापंचपरमेष्ठीकावाचकअक्षरनिकाध्यानकरै तथाउपयो १३६

गकोईबाधाकीतरफजायतोतहांकर्मकेउदयकीजातिविचारवे यहसातावेदनीयकाफल
है यहअसाताकाउदयकीजातिहै यहअंतरायकेउदयकीजातिहै इत्यादि
कर्मकेउदयकूंचितवै यहविसेषकथा वहुरिऐसाभीविसेषजाननां जोसि
प्याव्रतमैंतो मनवचनकायसंबंधीकोईअतीचार नीलागै तथाकालकीम
र्यादाआदिक्रियामैंहीएथिकनीहोयहै वहुरिप्रतिमाकीप्रतिज्ञाहैसो अ
तीचाररहितसुद्धपलैहै उपसर्गआदिकेनिमित्तसेंप्रतिज्ञातैंटलेनांहीहै
ऐसाजाननां याकेपांचअतीचारहैं मनवचनकायकौंदुलावनां अनादरक
रनां भूलिजाएंएएअतीचारनलगावै ब ऐसैंसामायिकप्रतिमावारहनेद
अपछाचौथाभेदभया आगैंपोषधप्रतिमाकास्वरूपकहैहै ब॥ गाथा॥ प
व्वमितेरसिदिवसे अवरएहेजायऊणजिणभवणे किरियाकम्मकाऊ

उववासंचउविहंगहियं॥७२॥गिहवासंचत्तारितिगमिऊणधम्मचिंताए॥पच्च
सेउचिता॥किरियाकम्मंचकाईए॥७३॥सबासासेणपुणो॥दिवसंगमिऊण
वंदणंकिच्चारतिएहूणतहा॥पच्चूसेवंदणंकिच्चा॥७४॥पुज्जणविहिंचकि
च्चा॥पत्तंगहिऊणणचरितिविहंपि॥भुंजाविऊपत्तं॥भुंजंतोपोसहोहोदि
॥७५॥भाषार्थ॥सातैंतेरसिकैदिनदोयघडांपीछैं जिनचैत्यालयजायअपरा
ह्णकासामायिकआदिक्रियाकर्मकरिचारिप्रकारआहारकात्यागकरि
उपवासग्रहकरै॥ग्रहकाव्यापारकूंसमस्तकूंछोडिकरिधर्मध्यानकरिते
रसिसातैंकीरातिगमावै॥प्रभातिऊठिकरिसामायिकक्रियाकर्मकरै॥ब्रा
रैंचौदसिकादिनशास्त्राभ्यासधर्मध्यानकरिगमाय॥अपराह्णकासामा
यिकक्रियाकर्मकरिरातितेसैंहीधर्मध्यानकरिगमायनवमीपूर्णवासी॥ १३७

कैप्रभातिसामायिकवंदनांकरि॥ब॥जिनेस्वरकापूजनविधानकरितीनप्रकारकेपात्रकौं
पडगाहि॥वकरितिसपात्रकूंभोजनकरायप्रभोजनकरेताकैप्रोषधहोयहै॥ब॥
॥भावार्थ॥पहलैंसिप्याव्रतप्रोषधकीविधिकहीथीसोजानीयहांजाननी॥ग्रहव्यापारभो
गउपभोगकीसामग्रीसमस्तकात्यागकरिएकांतजायबैठिसोलहपहरधर्मध्या
नमैंगमावणी॥इहांविशेषइतनांजोतहांतोसोलहपहरकाकालकानियमनांही
कह्याथा॥अरअतीचारजीलागै॥अरइहांप्रतिमांकीप्रत्यक्षहै॥यामैंसोलहप
हरकाउपवासनियमकरिअतीचाररहितकरैहैं॥याकेअतीचारपांचहैं॥वस्तु
जोनिसकालराखीहोयतिसकाउलघनांमहलापणं॥सोवनैंबैठनैंकासंथाराकर
नासोविनांदेख्यांमाज्यांविनांयतनकरैतोअतीचारतीनतोए॥अरउपवासकेप
विषैंअनादरकरैप्रीतिनांहीकरै॥अरक्रियाकर्मभैंहूलिजाय॥एपांचअतीचा

DR BHAU DAJI

रत्नगावैनाही॥ब॥आगैप्रोषधकामहात्मकहैहै॥ब॥गाथा॥ एक्केणिनिरारंभे॥उववासेजोकरेदिउवसंतो॥चक्कुनवसंचियकम्मं॥सोएणीरवविलीलाए॥७६॥अर्थ॥जोज्ञानीसम्यग्दृष्टीश्रारंभकात्यागकरिउपसमभावभैदकषायसहितएकवासंतोएकनीउपवासकरैहै॥सोबहुतभवमेंसंचितकीएबांधेजेकर्मतिनिकूंलीलामात्रमेंक्षयकरैहै॥ब॥॥भावार्थ॥कषायविषयश्राहारकात्यागकरिइसलोकपरलोकके भोगकी श्रासा छोड़ि एकनीउपवासकरै॥सोबहुतकर्मकी निर्जरा करैहैं॥तौजोप्रोषधप्रतिमाश्रंगीकारकरिमुखैभैदोयउपवासकरैताकाकहाकहणं॥स्वर्गकूंसुखभोगिमोक्षकूंपावैहै॥ब॥श्रागैश्रारंभश्रादिकात्यागविनांउपवासकरैताकैकर्मनिर्जरानांहीहोहै॥तैसैंकहैहैं॥ब॥ उपवासंकुव्वंतो॥श्रारंभंजोकरेदिमोहादो॥सोणिमदेहंसोसहि॥नरूहायकम्मलेसेपि॥७७॥अर्थ॥ जोउपवासकरतासंताग्रहकार्यकेमोहतैंग्रहका

श्रारंभकरैहैंसोश्रपनीदेहहीकूंसोषैहैं॥कर्मनिर्जराकातौलेसमात्रभीताकैनांही होयहैं॥ब॥भावार्थ॥जोविषयकषायछोड़िविनांकेवलश्राहारमात्रही छोड़ैहै॥ग्रहकार्यसमस्तकरैहैतौसोपुरुषदेहहीकूंकेवलशोषैहै॥ताकैकर्मनिर्जरालेसमात्रभीनांही होहै॥ब॥श्रागैंसचित्तत्यागप्रतिमाकूंकहैहैं॥गा॥सचित्तपत्तफलं॥छल्ली मूलंचकिसलयंवीजं॥जोणयभक्खिएणएसचित्तविरएहवेसोवि॥७८॥भावार्थ॥ जोज्ञानीसम्यग्दृष्टीश्रावकपत्रफलछालिमूलकूंपलडीराएवीजसचित्तनांहीभक्षणकरै॥सोसचितविरतश्रावक कहिए॥ब॥भावार्थ॥जीवकरिसहितहोयताकूंसचित कहिएहैं॥सोपत्रफलछालिमूलवीजडीराकूंपलइत्यादिहरितवनास्पतीसचित्तकैनखाय॥सोसचित्तविरतप्रतिमाकाधारकश्रावकहोयहैं॥ब॥पुनः॥गा॥जोणयभक्खिसयं॥तस्साणश्रण्णस्सुज्जदेदाणं॥भत्तस्सोजिहैतस्सहि॥एक्किविसे

सोतदोकोवि॥अर्थ॥ज॥ वकुरिजोआपनभषैताकूंअन्यकूंदेनांयोग्यनांहीहैं॥ज॥
तैंअन्नन करनेवालेमैंअरअन्नएकरावनेवालेमैंकछूविशेषनांहीहै॥ध॥अर्थ॥
जातैंपाननेवालेमैंअरपुवानेवालेमैंकछूविशेषनांहीहै॥कृतकारितका
कालसमांनहै॥तातैंजोवस्तुआपनषायसोअन्यकूंभीनषुवाइए॥तवसचि
त्तत्यागप्रतिमांपालै॥ब॥पुन॥गाथा॥जोवजेदिसचित्तंडजायजीहाविलिज्जेदत्ते
एदयभावोहोहिकिउजिणवएणपालियंतेए॥८७॥ज॥जोश्रावकसचित्तकात्य
गकरैहैं॥तिसनैंजिकाइंद्रीयजाकाजीतनांकठिनसोभीजीती॥वकुरिदयाभाव
प्रगटकीया॥वकुरिजिनेसुरहैवकेवचनपाले॥गाथा॥सचित्तकात्यागमैंचवडे
गुएहैं॥जिकाइंद्रियकाजीतनांहोयहैं॥प्राणीनिकीदयापलैहैं॥वकुरिभगवान
के वचनपलै॥जातैंहरितकायादिकसचित्तमैंभगवानजीवकहैहैं॥सोश्रा २३९

ज्ञायतेनभक्षया॥याकाअतीचारजोसचित्तमैंमिलीवसकासतथासचित्तसंबंध
रूपछल्यादिकहैंतेअतेचारलगावैनांही॥तवअरुत्यागहोय॥तवप्रतिमो
कीप्रतिज्ञाहैं॥भोगोपभोगव्रतमैंतथादेशावकासिकव्रतमैंभीसचित्तकात्या
गकरावा॥परलविरतिचारनियमरूपनाही॥यहांनियमरूपनिरतिचारत्य
गहोयहैं॥ब॥केवेसेंसचित्तत्यागपंचमीप्रतिमावारहवेरमैंछगभेदवर्णनक
या॥ब॥अहोरात्रिभोजनत्यागप्रतिमाकूंकहैहैं॥ब॥गा॥जोचउविहंपिभोज॥
रयणीएएवजुजदेणाणी॥एयजुजावयेअण॥सिसिविरउसोइवइभोजो॥
॥८२॥गाथार्थ॥जोभव्यानीसम्यग्दृष्टीश्रावकरात्रिविषैंचारिप्रकार॥अशन॥पान
॥खादि॥स्वादि॥अहारकूंनांही भोगवैहै॥नांहीखायहैं॥वकुरिपरकूंनाहीभो
जनकरावैहैं॥सोश्रावकरात्रिभोजनकात्यागीहोयहैं॥गा॥रात्रिभोजनकातौ

मांसके दोषकी अपेक्षा॥ तथा त्रिविधैं वकृत आरंभतैं त्रसघात की अपेक्षा॥ पर
लीइसी प्रतिमा मैंही त्यागकरा एहैं॥ परंतु तहां॥ कृतकारित अनुमोदनामनवच
नकायके कोईदोषलागै॥ तातैं सुकृत्यागनांही॥ तातैं यहां प्रतिमांकी प्रतिज्ञाविषै
सुकृत्यागहोयहैं॥ ताते प्रतिमांकहीहैं॥ ब॥ पुनः॥ गाथा॥ जोणिसिनुत्तिवज्जदि॥ सो
उववासंकरेदिवमासंसेचउरत्तमज्झे॥ आरंभमुयदियणीये॥ छ२॥ नो
जोएरुमरात्रिभोजनकूंछोडैहैं॥ सोवरसदिनमैंछमही नाकाउपवासकरैहैं॥ व
कुरिरात्रिभोजनकेत्यागतैंभोजनसंबंधीआरंभनीत्यागैहैं॥ तथा व्यापारआ
दिकाभीआरंभछोडैहैं॥ यामैंमहादयापलैहैं॥ ब॥ नाचार्य॥ जोरात्रिभोजनत्यागे
सोवरसदिनमैंछमहीनांकाउपवासकरैहैं॥ वकुरिअन्यआरंभकाभीरात्रि
मैंत्यागकरैहै॥ वकुरिअन्य ग्रंथनिमैंइसप्रतिमांमैंदिनविषैंस्त्रीसेवनकी १५॥

नीमनवचनकाय कृतकारितअनुमोदनांकरि॥ त्यागकरयोहै॥ ऐसैंरात्रिभक्त
त्याग प्रतिमांका निरूपणकीया॥ यह प्रतिमांग्वी बारहनेदमैंसातवांप्रतिमा
ब॥ आगैं ब्रह्मचर्यप्रतिका निरूपणकरैहैं॥ ब॥ गाथा॥ सव्वेसिंइत्थीणं॥ जो आदि
लाएसंकुव्वदेणवीमणवायाकायेण॥ वह्मचेरंसोहवेसदउ॥ छ३॥ अर्थ॥ जो
ज्ञानीसम्यग्दृष्टीश्रावकसर्वही चारिप्रकारकीस्त्री॥ देवांगना॥ मनुष्यणी॥ तिर्य
चणी॥ चित्रामकी॥ यत्यादिस्त्रीकात्यागिलाभ॥ मनवचनकायकरिनकरै॥ सोब्रह्म
चर्यव्रतकाधारकहायहैं॥ कैसाहैदयाकापालनहाराहैं॥ भावार्थ॥ सर्वस्त्रीका
मनवचनकायकृतकारितअनुमोदनांकरिसर्वथात्यागकरै॥ सोब्रह्मचर्यप्रति
मा हैं॥ ब॥ आगैं आरंभविरतिप्रतिमांकूंकहैहैं॥ ब॥ गा॥ जोआरंभणकुणदि॥ अण्णंकारवदिएववआरंभमणो॥ हिंसातंतुलमणो॥ चत्तारंजोहवेसोहि॥ छ४

॥ ना ४ ॥ जो श्रावक ग्रह कार्य संबंधी कछू नी ग्रारंभ न करै ॥ बहुरि ग्रन्य पासि करावै नांही ॥ च
हुरि करता कूं भला जानै नांही ॥ सो निश्चय तैं ग्रारंभ का त्यागी होय है ॥ केसा है हिंसा तैं
भय भीत है मन जाका ॥ ब ॥ ना ५ ॥ ग्रह कार्य का ग्रारंभ का मन वचन काय कृत कारित ग्र
नुमोदना का त्याग करै सो ग्रारंभ त्याग प्रतिमा का धारक श्रावक कहीये है ॥ प्रतिमा
ग्राठमी है ॥ चार भेद में नवमो भेद है ॥ ब ॥ ग्रागे परिग्रह त्याग प्रतिमा कूं कहै है ॥ ब ॥ गा ॥
जो परिवज्जइ गंथं ग्रब्भंतर बाहिरं च साएं दो ॥ पावइ तिय मल मा एो ॥ सो गंथो सो दुवे
एा एी ॥ छ ५ ॥ ग्रर्थ ॥ जो ज्ञानी सम्यग्दृष्टी श्रावक परिग्रह ग्रभ्यंतर का ग्रर बाह्य काय
दो परिग्रह है ॥ सो पाप का कारण पाप रूप है ॥ जैसे सो मन्ता संता ग्रानंद सहित छोडै
है ॥ सो परिग्रह का त्यागी श्रावक कहीये है ॥ ब ॥ ना ५ ॥ ग्रभ्यंतर का ग्रंथ में मिथ्यात्व ग्र
नंतानुबंधी ग्रप्रत्याख्यानावरण कषाय तो पहिलै ही छूटि गए हैं ॥ बहुरि प्रत्याख्या

नावरण ग्ररति सोग कै लारलगे हास्यादिक ग्ररवेद तिनि कूं धरावै हैं ॥ बहुरि बाह्य के
धनधान्य ग्रादि सर्व के त्याग करै ॥ बहुरि परिग्रह के त्याग तैं बडा ग्रानंद मांहै हैं ॥ जातै
जिनि कै सांचो वैराग्य होय है ॥ ति नि कूं परिग्रह पाप रूप ग्ररवडी ग्रापदा दीसै है ता
तैं त्याग कर तैं बडा सुख मांहै हैं ॥ ब ॥ पुनः ॥ गा ॥ बाहिरि गंथविहीणा दुक्खिदमणो
वासदावदो होंति ॥ ग्रब्भंतर गंथ पुणा ण सक्कदे कोवि छंडेडं ॥ छ ६ ॥ ग्रर्थ ॥ बाह्य
परिग्रह करि रहित तो दरिद्री मनुष्य ही तैं होय है ॥ याके त्याग में ग्रविरोध नां
ही ॥ बहुरि ग्रभ्यंतर परिग्रह कूं कोई जी छोडनें कूं समर्थ न होय है ॥ ब ॥ ना ६ ॥ जो
ग्रभ्यंतर परिग्रह कूं छोडै है ता की बडाई है ॥ ग्रभ्यंतर का परिग्रह सामान्य पणें म
मत्व परिणाम है ॥ सो याकूं छोडै सो परिग्रह का त्यागी कहिए ॥ ग्रैसें परिग्रह त्याग प्र
तिमा का स्वरूप कह्या ॥ प्रतिमा नवमी है ॥ भेद नि भेद सऊं नव भेद है ॥ ब ॥ ग्रागें ग्रनु

मोदनविरतिप्रतिमाकूंकहैहैं॥ब॥गाथा॥जोअणुमणुणंणकुणदि॥मिहलकज्जपु
पावमूलेसु॥मणवित्तचेमावेतो॥अणुमणविरउंहवेसोउ॥छ७॥अर्थ॥जोश्रावकपापके
मूलजेग्रहस्थकेकार्यतिनिविषैअनुमोदनानकरै॥कैसाहूवासंताजोभव्यचित
है सोहोयहै॥ऐसेभावनांकरतासंतासोअनुमोदनविरतिप्रतिमाधारीश्राव
कहोत॥भावार्थ॥ग्रहस्थकेकार्यकीआहारकेनिमित्तआरंभादिककीभीअनुमोद
नाकरै॥उदासीनभयाघरमेंभीवैठै॥वासचैत्यालयमठमंडपमेंभीवैठै॥भोजन
कूंग्रहकातथाअन्यश्रावकबुलावै॥ताकेभोजनकरिआवै॥ऐसाभीनकरैजोह
मारेताईफलाणीवस्तुतयारकीजो॥जोग्रहस्तजिमावैसोभीभिआवै॥सोश्रा
वकप्रतिमाकाधारकश्रावकहोयहै॥ब॥पुनः॥गाथा॥जोपुणचित्तइकंसुहा१
सुहंरायरोससंजुत्तो॥उवउंगेणविहीणं॥सघुणदिपावंविणकज्जं॥छ८॥अर्थ

जोविनाप्रयोजनरागद्वेषकरिसंयुक्तरूवासंतासुभतथाअसुभकार्यकूंचितवन
करैहै॥सोपुरुषविनाकार्यपापउपजावैहै॥ब॥भावार्थ॥आपतोत्यागीभया॥अर
परविनाप्रयोजनग्रहस्तसंबंधीशुभकार्यपुत्रजन्मधनप्राप्तिविवाहादिकअ
सुभकार्यकाहूकूंपीडादेनांमारनांवाधनांइत्यादिकअसुभकार्यतिनिकूंचि
तवनकरै॥रागद्वेषपरिणामकरैतौनिर्थकपापउपजावै॥ताकेदसमीप्रतिमा
कैसेंहोय॥सोऐसीबुझिरहै॥जोजेसीतरैंजबतमहैतैसेंहोगा॥जैसेंआहार
मिलणांहैं॥तैसेंमिलिरहैगा॥ऐसेपरिणामरहैंअनुमतत्यागयलेहै॥ब॥ऐ
सैंवारंभेदनिमैंगयारकोभेदभया॥ब॥आगैउद्दिष्टविरतिप्रतिमाकास्वरूपकरै
हैं॥ब॥गाथा॥जोणवकोडिविशुद्धं॥भिक्कायरणेनभुंजदेभोजं॥जायरणेरियं
जोगं॥उद्दिठाहारविरउसो॥छए॥नाथार्थ॥जोश्रावकजोउपजोआहारताहिनव

DR BHAU DAJI MUSEUM

कोडिकरिविशुद्धकहिएमनवचनकाय।कृतकारितअनुमोदनाकाआपकूंदोष
लागैनांही।ऐसानिर्दोषचरणकरिले।तहांभीजाचनारहितले।मागिकरिनले।
सोभीयोग्यले।सचित्तादिकअयोग्यनले।सोउद्दिष्टआहारकात्यागीहै।।।

॥ब॥तहां छटी प्रतिमा ताईतो जघन्य श्रावक कहीहैं। अर सातमी श्रावमी नवमी प्रति
मा का धारक मध्यम श्रावक कहीहैं। अर दसमी ग्यारमी प्रतिमा वाला उत्कृष्ट श्रावक क
हीहैं। वहु रि कहीहै जो समिति सहित प्रवर्त्तै तो अणुव्रत सफल है। अर समिति
रहित प्रवर्त्तै तो व्रतपाल ता भी अव्रती है। वहु रि कहीहैं जो गृहस्थ के असि मसि
कृषि वाणिज के आरंभ त्रस थावर की हिंसा होय है। सो त्रस हिंसा का त्याग मया
के के सेवक ऐसे है। सो याका समाधान के अर्थि कहे हैं। जो पक्ष चर्य्या साधकता ती
न प्रकृति श्रावक की कही हैं। सो याका समाधान। तहां पक्ष का धारक तो पाक्षि
क श्रावक कहिए। अर चर्या का धारक नैष्ठिक श्रावक कहिए। अर साधकता का
धारक साधक श्रावक कहिए। तहां पक्ष तो ऐसा जो जिन मार्ग मैं त्रस हिंसा का त्या
गी श्रावक कहा है। सो मैं त्रस जीव कूं मेरे प्रयोजन के अर्थि तथा पर के प्रयोजन को १४५

अर्थि मारूं नांही। धर्म के अर्थि तथा देवता के अर्थि तथा मंत्र साधन के अर्थि तथा
औषधि के अर्थि। तथा आहार के अर्थि। तथा अन्य भोग के अर्थि मारूं नहीं। ऐसा
पक्ष जाके होय सो पाक्षिक है। सो याके असि मसि कृषि वाणि ज्य आदि कार्य नि मैं
हिंसा होय है। तो कु मारने का अभिप्राय नांही है। कार्य का अभिप्राय है। तहां या
त होय है ता की अपनी निंदा करे है। ऐसे त्रस हिंसा न करने की पक्ष मात्र तैं पाक्षि
क कहिए है। इह अप्रत्याख्यानावरण कषाय के मंद उदय के परिणाम तैं। तातैं अ
व्रती ही है। व्रत पालने की इच्छा है। परंतु निरतिचार व्रत पलै नांही तातैं पाक्षिक ही
कहा है। वहु रि नैष्ठिक होय है। तब अनुक्रम तैं प्रतिमा की प्रतिज्ञा पलै है। याके
अप्रत्याख्यानावरण कषाय के तीव्र मंद के भेद नितैं ग्यारा प्रतिमा के भेद हैं। ज्यों ज्यों
कषाय मंद होती जाय त्यों त्यों अगिली प्रतिमा की प्रतिज्ञा होती जाय तहां ऐसे अगिली

कह्याहै जोथरकास्वामित्वपणां छोडि ग्रहकार्यतौ पुत्रादिकनूंसोंपे॥ अरनूंआपयथा
कषायप्रतिमाकी प्रतिज्ञाअंगीकारकरताजाय॥ जेतैं सकलसंयमनाग्रहेतैंगा
रवीप्रतिमाताईनैषिकश्रावककहावे॥ वहुरिजबमरणकालआया जाणेतबग्र
हधनांसहितहोयएकाग्रचित्तकरिपरमेष्टीकाध्यानमैंतिष्टे समाधिसंथाणो
ए सो साधककहावे॥ ऐसा व्याख्यान नहीं॥ वहुरिकह्याहै जो ग्रहस्थइमकाजुपा
जिनिकरे॥ ताकेछहभाग करे॥ तामैंएकभागतोधर्मकैअर्थि॥ अरएकभागकुटु
वकेपोषनैंमैंदे॥ एकभागअपनां जोगकैअर्थिधरचे॥ एकभागअपनैंस्वजन
समूहकैअर्थिव्योहारमैंधरचे॥ वाकीदोयभागरहे ते आपांनतउडारराखे॥ तिनिकूं
वडापूजनातथाप्रभावनांतथाकालदुकालमैंअर्थिआवे॥ ऐसैंकीएंग्रहस्थके
आकुलताननउपजैहैं॥ धर्मसधैहै॥ इहांकथनसंस्कृतटीकाकारवहुतकीयाहै १४५

तथापहलैंगाथाकाकथनमैंअमृतचंद्रनिकाकथनवहुतकीयाहै॥ सोसंस्कृतटीकातैंजा
ननो॥ यहांतौगाथाहीकाअर्थसंक्षेपकरिलिख्याहै॥ विसेषजाननेंकीइछाहोयतौ रयण
सारवसुनंदिश्रावकाचारअरश्रावकाचार॥ पुरुषार्थसिद्ध्युपायप्राकृतदो
हावंधश्रावकाचारइत्यादि ग्रंथनितैं जानूं॥ इहांसंक्षेपकथनहै॥ ब॥ ऐसैंचारहजारूप
श्रावकधर्मकाकथनकीया॥ ब॥ आगैंमुनिधर्मकाव्याख्यानकरैहैं॥ गाथा॥ तोरयणत्तय
जुत्तो॥ खमादिभावेहिंपरिणदोणिच्चं॥ सव्वविमत्तो॥ सोसाहुभणदेधम्मो॥ ९॥ अर्थ॥ जो
जोपुरुषसम्यक्त्रयकहिएनिश्चयविकल्पसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकरिसंयुक्तहोय
वहुरिक्षमादिभावकहिए उत्तमक्षमांकूंआदिदेकरिदसप्रकारकाधर्मनिसिकरिनि
त्यकरिए॥ निरंतरपरिणामसहितहोय॥ वहुरिमथवाकहियेसुखदुःखतृणकं
चनलाभअलाभशत्रुमित्रनिंदाप्रसंसाजीवनमरणआदिविषैंसमभावरूपपरणैं

रागद्वेषकरिरहितहोयसोसाधकहिए।तिसहीधर्मकहिए।जातैंजामेंधर्महैंसोही धर्म
कीमूर्तिहैंसोधर्महीहैं।ताते।इहांरत्नत्रयकरिसहितकरनेमैंचारित्रतेरहप्रकारहैं सो
मुनिकाधर्ममहाव्रतआदिहैं।सोवर्णनकीयाचाहियेसोयहांदशप्रकारधर्मकावे
शेषवर्णनहैं।तामैंमहाव्रतआदिकानीवर्णनगर्भितहैंसोजाननां।ब।अबदशप्र
कारकाधर्मकावर्णनकरैहैं।ब।गाथा।सोचेवदसप्पयारो।खमाहिभावेहिंसुसकसारे
हिं।तेपुणलिङ्गमाणा।मुणियव्वापरमभत्तीए।।९२।।अर्थ।।सोमुनिधर्मक्षमादिक
भावनकरिहसप्रकारहैं।कैसाहैसोरत्नसारकरिए।सुखयातैंहोयहैं।अथवासुख
याविषैहैं।अथवासुखकरिसारहैंऐसाहै।बहुरितेंहसप्रकारआगैंकहासोउत्तमक्षमा
भक्तिकरिउत्तमधर्मानुरागकरिजाननेयोग्यहैं।ब।।।उत्तमक्षमा।मार्दव।आर्ज
व।सत्य।शौच।संजम।तपः।त्याग।आकिंचन्य।ब्रह्मचर्य।ऐसेंदसप्रकारमुनिध १४६

र्महैं।सोयाकान्पारान्पाराव्याख्यानआगैं करैहैंसोजाननां।ब।।आगैंउत्तमक्षमा
धर्मकूं कहैहैं।ब।गाद्य।। कोहेएजोणप्पदि।सुरनरतिरिएहिंकीरमाणेवि उवस
ग्गोविरुद्दे।।तस्सखमाणिम्मलाहोदि।ए३।।अर्थ।।जोमुनिदेवमनुष्यतिर्यंचआ
दिकरिरौद्रध्यानकघोरउपसर्गीकरतैंसंतैंनीक्रोधकरितप्तायमाननहोयतिमु
निकैनिर्मलक्षमाहोयहै।ब।।।।।।जैसैंश्रीदत्तमुनिक्यैंदैत्यदेवकृतउपसर्गकूंजीति
केवलज्ञानउपजायमोक्षगये।।तथाचिलातीपुत्रमुनिक्यैंतरीकृतउपसर्गजीति
सर्वार्थसिद्धिगये।।तथास्वामिकार्त्तिक्यमुनिक्रौंचराजाकरितउपसर्गजीतिदेव
लोकपाया।।तथागुरुदत्तमुनिकपिलब्राह्मणकृतउपसर्गकूंसहिकरिकेवलज्ञान
उपजायमोक्षगए।।तथाश्रीभव्यमुनिचित्रराजकृतउपसर्गजीतिकेवलउपजाय
मोक्षगए।।तथापांचसैमुनिदंडकराजाकृतउपसर्गजीतिसिद्धिपाई।।तथाराजकृ

मारनिमुपाशुलश्रेष्टीकृतउपसर्गजीतिसिद्धिपाई॥तथाचाणिक्यश्रादिपांचसेमुनिमें
त्रीकृतउपसर्गकूंजीतिमोक्षगए॥तथासुकुमालमुनिस्यालनीकृतउपसर्गसहिक
रिदेवभए॥तथासुकोशलमुनिव्याघ्रीकृतउपसर्गजीतिसर्वार्थसिद्धिगए॥तथाश्री
पणिकमुनिजलकाउपसर्गसहकरिमुक्तिगए॥तथावाईसश्रेष्टीकेपुत्रनदीप्रवा
हविषेंपड्यासुभध्यानकरिमरणकरिस्वर्गमेंदेवभए॥श्रैसेदेवमनुष्यपसुश्रचेतन
कृतउत्कृष्टउपसर्गसहे॥तहांक्रोधनकीया॥तिनिकेउत्तमक्षमाभई॥तेसेंउपसर्ग
करनेवालेतैंक्रोधउपजेउत्तमक्षमांहोयहै॥ब॥तहांक्रोधकेनिमित्तश्राविमहांश्रे
साचितवनकरे॥जोमेरेकोईदोषकहेतेसोविषेंविद्यमानहैं तोयहकहामिथ्याकहैहैं
श्रैसेंविचारिक्षमाकरणी॥बहुरिसोविषेंदोषनांहीहैतोयहविनांजाणेंकहैहै
तहांश्रज्ञानीपरकहाकोप॥श्रैसेंविचारिक्षमाकरणी॥बहुरिश्रज्ञानीकावाल

सुभावचिंतनां॥जोपरोक्षकुंवचनकरेतोयहविचारनांजोबालकतोप्रतक्षभीकरे॥यहतो
परोक्षकरेहैं॥यहीभलाहै॥बहुरिजोप्रतक्षभीकुवचनकरेतोयहविचारनांजोबाल
कतोताडनभीकरे॥यहतोकुवचनहीकहेहैं॥ताडनांहीहैयहहीभलाहैं॥बहुरिजो
ताडनकरेतोयहविचारनांजोबालकश्रज्ञानीतोप्राणघातभीकरे॥यहताडेही
है॥प्राणघाततोनकीया॥यहहीभलाहै॥बहुरिप्राणघातभीकरेतोयहविचारनां
जोश्रज्ञानीतोधर्मकाविध्वंसकरे॥यहप्राणघातकरेहीधर्मविध्वंसतोनांहीकरे
है॥बहुरिविचारेजोमैंपापकर्मपूर्वैउपजायेथेताकायहदुर्वनादिकउपसर्गफ
लहैं॥सोमेराहीश्रपराधहैं॥परतोनिमित्तमात्रहै॥इत्यादिचितवनतैंउपसर्ग
श्रादिकेनिमित्ततैंक्रोधनांहीउपजेहैं॥तबउत्तमक्षमांधर्महोयहै॥ब॥श्रागै
उत्तममार्दवधर्मकूंकहैहैं॥ब॥गाथा॥उत्तमगुणपहाणे॥उत्तमतपयरणसी

DR BHAU DAJI MEMORIAL

लोविअप्पाणं जोहीलविमहुवयणंअचेतस्स॥एष्ठ॥अ॥ जोमुनिउत्तमपान करि
तोअधानहोय।वऊरिउत्तमतपश्चरण करणेकाजाकास्वभावहोय तोऊजोअ
पनेआत्मांकूं मदरहितकरे।अनाश्वररूपकरे।तिसमुनिके मार्दवनामांधर्म
धर्महोयहै॥ब॥भावार्थ॥सकलशास्त्रकाजाननहारापंडितहोयतोऊज्ञानमदकू न
रे।यहविचारे जोमोतैंबडे।अवधिमनपर्यकेज्ञानीहैं।केवलज्ञानीसर्वोकू
ष्ठज्ञानीहैं।मैंकहा हौं अल्पज्ञहौं।वऊरिउत्तमतपकरैतोऊजाकामदनकरे
।आपसर्वजातिकुलबलविद्याऐश्वर्यतपरूपआदिकरिसर्वतैंबडेहैं तो
ऊपरकृतअपमानकूं भीसहैहैं।तहांगर्वकरिकषायनउपजावैतहांउत्त
मार्दवधर्महोयहै॥ब॥आगैआर्जवधर्मकूं कहैहैं॥ब॥गाथा॥जोचिंतेइएवंकं
कुणइएवंकणंजंपएवंकं णयगोवइणियदोसं॥अज्जवधम्मोहवेतस्स॥ १४८

॥एष्ठ॥भावार्थ॥जोमुनिमनविषैंवक्रताननचिंतवै।वऊरिकायकरिवक्रताननकरै॥
वऊरिवचनकरिवक्रताननबोलै।वऊरिअपनेदोषकूं गोपैनांही छिपावैनां
ही।तिसमुनिकेआर्जवधर्मउत्तमहोयहै॥ब॥भावार्थ॥मनवचनकायविषैं
सरलताहोय॥जोमनमैंविचारसोही वचनकरिकहैं सोही कायकरिकरै॥
परकूंछलावाहेतैं विगतैंनिमित्तविचारनां औरकहनां औरकरनां।अरतहां
मायाकषायप्रबलहोयहैं सोआपसेंनकरै।निःकपटहोयप्रवर्तै।वऊरिअप
नांदोषछिपावैनांही।जैसाहोयतैसाबालककीज्यौं गुरुनिपासिकहै।तहांउ
त्तमआर्जवधर्महोयहै॥ब॥आगैंसोचधर्मकूं कहैहैं॥ब॥गाथा॥समसंतोसजल
सेएं।जोधोवइतिण्हलोहमलपुंजं॥जोयणगिद्धिविहीणो।तस्ससुचितंहवे
विमलं॥एष्ठ॥अ॥ जोमुनिसमभावकरिएरागद्वेषरहितपरिणंमअरसंतो

यकहिए संतुष्टभावसोही मया जलताकरित्व लाभ्रलोभसोही मया मलकासष
हताकूं धोवैवकुरि जो जनकी गटठिकहिए अतिचाहिताकरि रहितहोय। तिस
मुनिकाचित निर्मलहोयहैं। ताकै सौचधर्महोयहैं। ब। ता। प। समभावतोत्रणकं
चनसमानजननो। अरसंतोषसंतुष्टपनांतृप्तिभाव अपनेस्वरूपाही विषै
सुखमानन। ऐसेभाव रूपजलकरित्व लाभ तौ आगामी मिलनेकी चाहि। अ
रलोभपाए इत्यादिकविषेअतिलिप्तपनांताके त्याग विषेंअतिषेदकरनां
सोही मया मलताके धोवनेतैं मनपवित्रहोयहैं। वकुरि मुनिके अन्मतोत्पा
गहोयहै। अरआहारका ग्रहणहैं। ताविषेंभी तीव्रचाहिनांही रागै। लजा
अलाभ सरसनीरस विषैंसमबुद्धिरहैं। तवउत्तमसौचधर्महोयहैं। ब। वकु
रिलोभकी चारिप्रकारप्रवृत्तिहैं। जीवितकालोभ आरोग्यरहनेकालोभ। इंद्रि

यवनीरहनेकालोभ। उपभोगकालोभ। तहां अपनो अरअपनेसंबंधीस्वजनमित्रआदि
केदोऊकै चाहैतव आवनेदरूपप्रवर्तिहैं। सो जहांसर्वही कालो भनांही होय त
हांसौचधर्महै। ब। आगैसत्यधर्मकूं कहैहैं। गाथा। जिणवयणमेवभासदि। संपा
लेउअसक्कमाणोवि। ववहारेणविअलियं। णवदिजो सच्चवाईसो॥९७॥ भा। पा
जोमुनिजिनसूत्रके वचनही कूं कहैं। वकुरितिनिमैं जो आचारआदिकहा है ताकूं
आपपालनेकूं असमर्थहोय तौ ऊ अन्यप्रकारनकहै। वकुरि अवहारकरिभी अ
लीकहिए असत्यनकहै। सोमुनिसत्यवादी है। ताकै उत्तम सत्यधर्महोयहैं। ब।
भा। पा। जो जिनसिद्धांतमैं आचारआदिका जैसास्वरूपकहा होयनैसा ही कहै
ऐसा नांही जो आपसंपाल्या न जाय तव अन्यप्रकारकहै। यथावत्कहै। अपनां
अपमान होयतातैं जैसैं तैसैं कहै। अरअवहार जोभोजन आदिका व्यापार तथापू

जाप्रभावनो आदिकाभोहार तिसविषैं नीजिनसूत्र अनुसार वचनकहैं॥ अपनीइछातैं जैसैंतैसैंनकहै॥ वहुरिइहांदस प्रकारसत्यका वर्णनहै॥ नामसत्य॥ रूपसत्य॥ स्था॰ पनासत्य॥ प्रतीतसत्य॥ संयोजनासत्य॥ जनपदसत्य॥ दिससत्य॥ भावसत्य॥ समयस त्य॥ सोमुनि निकामुनैनितैं॥ तथाश्रावकनितैं॥ वचनालापकाव्यवहार है॥ तहांवहु तेनीवचनालापहोय॥ तबसूत्रसिद्धांत अनुसारि॥ इसदसप्रकारका सत्यरूपवचन कीनीप्रवृत्तिहोयहैं॥ तहां अर्थ गुण विनानीवक्ताकीइछातैं॥ काहूवस्तुकानामसंज्ञ करैसोतौनामसत्यहै॥ वहुरिरूपमात्रकरिकहिएजैसैंचित्रामेंकारूकारूपलिखि कहैयहसुपेदवर्णफलाणंपुरुषहैंसोरूपसत्यहैं॥ वहुरिकिसीप्रयोजनकै अर्थका रूकीमूर्तिस्थाप्यकरैं॥ यहवहहैसोस्थापनासत्यहैं॥ वहुरिकारूप्रतीतिकै आश्रय करिकहिएसोप्रतीत्यसत्यहै॥ जैसैंताल अरसाप्रमाण विसेषहैं॥ ताकै आश्रयकरै १५७

यहैपुरुषतालहैं॥ अथवालेवाकहै॥ तौ छोटेकूं प्रतीत्यकरिकरै॥ वहुरिलोकव्यव हारकै आश्रयकरिकहैंसोसंवृतिसत्यहै॥ जैसैंकमलउपजनेकूं अनेककारणहैं तौऊपंकविषैंनया तौतैंपंकजकहिए॥ वहुरिवस्तुनिकूं अनुक्रमतैंस्थापनेका वचनसोसंयोजनासत्यहैं॥ जैसैंदसलक्षणाकामंडलमांडे तामैंअनुक्रमसैंचूर्ण केकोठेकरै॥ कहैयहउत्तमक्षमांकाहैं॥ इत्यादिजोडरूपनामकहैं॥ अथवाहसराज र रएजैसैंजोहरीमोतिनिकीलडीकरै॥ तिनिमैंमोतिनिकीसंख्यायविलीनीहैं॥ सोज हांजोचाहिए॥ तिसही अनुक्रमतैंमोतीपोवै॥ वहुरिजिसदेसमैंजेसी भाषाजोकहः नासोजनपदसत्यहैं॥ वहुरिग्रामनगर आदिकाउपदेशकवचनसोदेससत्यहैं॥ जैसैं वाडिचोगिरदहोयताकूं ग्रामकहिए॥ वहुरिछहप्रकैज्ञान अगोचर असंख्य मारि पालनेकैं अर्थिजोवचनसोभावसत्यहैं॥ जैसैंकाहूवस्तुमैंछह प्रकैप्रमानकै अ

यहप्रासुकहै॥वऊरिजो आगमआगोचरवस्तुहैतिनकूं आगमकेवचनअनुसारकरै॥२

जोचरजीवहोयतोऊ अपनीदृष्टिमेंजीवनदेखितथाआगमअनुसारकरैनांमोसम
यसत्यहैजैसेपल्यसागरइत्यादिककहनो॥वऊरिइससत्यकाकथनगोमट
सारमेंहै॥तहांसातनांमतोएहीहै॥अरतीनकेनांमइहांतोइससंयोजनासमयएहै
अरतहांसमावनांमवहारउपमांएहै॥वऊरिउदाहरणअन्यप्रकारहैं सोविचक्षण
कानेदजाननांविरोधनांहीहैं॥ऐसेसत्यकीप्रवृत्तिहैं॥सोजिनसूत्रअनुसारवचन
प्रवृत्तिकरैताकेसत्यधर्महोयहै॥ब॥आगैंसंयमधर्मकूंकहैहैं॥ब॥गा॥जीवरक्षणं
मरोः॥गमणागमणादिसुवकमेसु॥तणछेदंपिणइच्छदि॥संयमणावोदवेतस्स॥एई
॥नाधार्थ॥जोमुनिगमनआगमनआदिसर्वकार्यनिविषैतिणकाछेदमात्रजीनां
हीचाहैनकरै॥कैसाहैमुनिजीवनिकीरक्षाविषैतत्परहैं॥ऐसेमुनिकेसंयमभाव
होयहै॥ब॥नावार्थ॥संयमहोयप्रकारकह्याहै॥इंद्रियमनकावशिकरलैंविषैगैमनैं २५२

णां॥अरछहकायकेजीवनिकीरक्षाकरणी॥सोइहांमुनिकेआहारविहारकाकरनै
विषैगमनआगमनआदिकाकामपडैहैं॥तिनिकार्यनिमैंअैसेपरिणामहैंजो
मैंत्रणमात्रकाभीछेदनोहीकरूं॥मेरेनिमित्ततैंकाहूकाअहितनहोय॥ऐसैं
यत्नरूपप्रवर्तैहैं॥जीवदयाहीविषैतत्परहैंहैं॥ब॥इहांटीकाकारअन्यग्रंथ
नितैंसंयमकाविसेषवर्णनकीयाहैं॥ताकासंक्षेपजोसंयमहोयप्रकारहैं॥उप
क्षासंयम॥अपहृतसंयम॥तहांजोस्वभावहीतैंरागद्वेषकूंछोडिगुप्तिधर्मविषै
कायोत्सर्गध्यानकरितिष्ठैं॥तहोताकेउपक्षासंयमकहिए॥उपक्षानामउदासी
नतावीतरागताकाहै॥वऊरिअपहृतसंयमकेतीनभेदहैं॥उत्कृष्ट॥मध्य॥जघं
न्य॥तहांचालतांवैठतां॥जोजीवदीखैतासूंआपटलिजाय॥जीवकूंसरकावैनं
हीं॥सोउत्कृष्टहै॥वऊरिकोमलमयूरपीछीकरिजीवकूंसरकावैसोमध्यमहैं॥व

ऊरि अन्यत्रणादिक सूं मरकावे सो जयन्यहै॥ इहां अपहृतसंजमी कूं पंचसमि
ति का उपदेस है॥ तहां आहार विहार के अर्थि गमन करे सो प्रासुक मार्ग देखि
चिजुडा प्रमाण भूमि देख तें मंद मंद प्रतियन्नतें गमन करै॥ सो ईर्यासमिति
है॥ बहुरि धर्म पोषक वचन कहै सो हितरूप मर्यादा लीयें
संदेहरहित स्पष्ट अक्षरसूप वचन कहै॥ बहुरि लाय आदि वचन के दोष हैं ति
तिनितें रहित बोलै सो भाषासमिति है॥ बहुरि काय की स्थिति के अर्थि आहार
करै सो मनवचनकायकृतकारित अनुमोदना का दोष जामें न लागै॥ ऐसा
एषणासमिति याविधि लीयें होवती सो अंतरायादि चौदह मलरहित अप
नेहाथविषें खडा प्रतियन्नतें सुद्ध आहार करै॥ सो एषणासमिति है॥ बहु
रि धर्म के उपकरण निकूं उठावना धरना सो प्रतियन्नतें भूमि कूं देखि उठाव

ना धरना सो आदाननिक्षेपणसमिति है॥ बहुरि अंगका मलमूत्रादि क्षेपणां
सो त्रसथावर जीवनिकूं देखि टालि करि यन्नतें क्षेपणसमिति
है॥ ऐसें पांचसमिति पाले॥ तिनिके संयम पलै है॥ जामें ऐसा कह्या है॥ जोया
चाररूप वर्तै है ताकै बाह्य जीवकूं बाधा होयतो कबंधना ही है॥ अरयन्नरहि
तरूप वर्तै है ताकै बाह्य जीवमरो तथा मति मरो बंधन्नवश्य होय है॥ बहुरि अपहृत
संयम के पालनेकै अर्थि आवश्यकादि का उपदेश है॥ भावशुद्धि॥ कायशुद्धि॥ विनय
शुद्धि॥ ईर्यापथशुद्धि॥ भिक्षाशुद्धि॥ प्रतिष्ठापनाशुद्धि॥ शयनासनशुद्धि॥ तहां भाव
शुद्धि तो कर्म का क्षयोपसम जनित है सो ति सविना तो आचार प्रगट ही न होय
शुद्ध उज्जल नीतिमें चित्त रामसो लाय मोक्षमार्ग में ऐसें॥ बहुरि दिगंबररूप सर्वविका
रनितें रहित यथाजातरूप जाविधें प्रशांतमुद्रा जाकूं देखें अन्यकै नयन उप

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

जो। तथा आपनि नमस्कार है। ऐसी काय सुद्धि है। वहुरि जहां आरंभ आदि विषै भक्ति
गुरुनि के अनुकूल रहना। ऐसैं विनय सुद्धि है। वहुरि सुनिजीवनि के विका
नैं सर्वज्ञा नैं है। ता तैं आपनैं गमनतैं सूर्य के उद्योततैं नेत्र इंद्रियतैं मार्ग कूं
नियत तैं देखि करि गमन करना। सोई ईर्यापथ सुद्धि है। वहुरि जोजन कूं गमन क
रै। तब पहलैं तौ आपनैं मलमूत्र की वाधा कूं परखै। आपना अंग कूंनीकै प्रतिले
खैं। वहुरि आचारसूत्र मैं कह्या है। तैसैं देस काल स्वभाव विचारै। वहुरि ए तीजा
यगा आहार कूं पवित्रा करै नही। गीत नृत वाजित्र की जिनिकै आजीविका होय
तिनिकै घर जायनही। जहां प्रसूति भई होय तहां जायनही। जहां रत्नभई होय
तहां जायनांही। वेश्यां कै जायनांही। पापकर्म हिंसा कर्म होय जहां जायनांही
दीनका घर। अनाथका घर। दानसाला। यज्ञ पूजनसाला। विवाह आदि मंगल १५३

जहां होय तिनिकै आहार निमित्त जायनांही। धनवान कै जानांकि निर्धन कै जान
ऐसा विचारै नांही। लोक निंद कुल कै घर जायनांही। दीनवृत्ति करै नांही। प्रासु
क आहार लेना। मन मैं एक स्यातैं सेंदोष अंतराय टालि निर्दोष आहार लेसोपि
सुद्धि है। इहां लाभ अलाभ सरस निरस विषै समान बुधि राखै है। सो भिक्षा पांच प्रक
रकही है। गोचार अक्षम्रक्षण उदराग्नि प्रा मन। अमरा आहार। शून्यघरण्त
हांगऊकी ज्यौंदातार की संपदादिक की तरफ न देखै। जैसा पाया। तैसा आहा
र लेनेंही मैं चित्त राखै सो गोचार है। वहुरि जैसैं गाडी कूंवांगिगा मपरूचै। तैसैं सं
यम का साधक काय ताकूं निर्दोष आहार देय संयम साधै सो अक्षम्रक्षण है। व
हुरि शीत गीकूंजैसैं तैसैं वुझाय घर चावै तैसैं क्षुधा अग्नि कूं सरस नीरस
आहार करि वुझावै। आपणां परिणाम मऊज्वाला राखै सो उदराग्नि प्रशमन है। व

कुरिक्षमजैसैंफूलकूंवाधानांही॥वासनांलेतैसैंमुनिदातारकूंवाधानउपजाय
हो॥औरलेसोक्षमरा॥आहारहै॥वहुरिजैसैंसुचकहिएखाडाताकूंजैसैंतैसैंम
तकरिजानिएतैसैंमुनिखाडुनिखाडुआहारकरिउदरभरैसोगर्तेपूरणेकहि
ए॥ऐसैंनिहाभुहिहैं॥वहुरिमलमूत्रश्लेष्मथूकआदितैंपैसोजीवनिकूंदेखि
यत्नतैंचैपैसोप्रतिष्टापनभुहिहै॥वहुरिसयनासनभुहिजहांस्त्रीकुटजीवनपु
सचोर॥मद्यपानी॥जीववधकैकरनहारेनीचलोकवसतेहोयतहांनवसै॥वहु
रिशृंगारविकारआभूषणसुंदरवेषऐसीजोवेस्यादिकतिनिकीक्रीडाजहांहो
य॥सुंदरगीतनृत्यचारित्रजहांहोय॥वहुरिजहांविकारकेकारणनग्नरुपप्रदेश
जिनिमैंदीवतेऐसेचित्रामहोय॥वहुरिजहांहास्यमहोत्सवघोडाआदिकू
सिष्याद्येनेकाविकानांतहांव्यायामभूमिहोयतहांमुनिनवसै॥जिनितैंक्रोधा १५४

स्किउपजैऐसेविकानैंनवसैं॥सोसयनासनसुहिहैं॥जेतैंकायोत्सर्गषडारह
नेकीशक्तिहोय॥तितैंस्वरूपमैंलीनहोयखडारहै॥पीछैवैठै॥तथाऐसैंमेरमैं॥
अल्पकालसोवै॥छ॥वहुरिवाक्यसुहिजहांआरेनकीप्रेरणारहितवचनप्रवर्तै
॥युद्धकामकर्कसप्रलापपैशून्यकठोरपरपीडाकरवाक्यनप्रवर्तै॥अरआनेक
विकथाकैभेदहैंतिनिरूपवचनप्रवर्तै॥जिनमैंव्रतशीलकाउपदेसआपनो
परकाजामैंहितहोय॥मीवामनोहरवैराग्यकूंकारणआपनीप्रसंसापरकी
निंदातैंरहित॥संयमीकैयोग्यवचनप्रवर्तै॥सोवाचनाभुहिहैं॥ऐसैंसंयमधर्म
हैं॥संयमकैपांचभेदकहेहैं॥सामायिक॥छेदोपस्थापना॥परिहारविसुद्धि॥सू
क्ष्मसांपराय॥यथाख्यात॥ऐसैंपांचभेदहैं॥इनिकाविशेषआगमग्रन्थआन्यग्रंथ
तितैंजानवो॥छ॥आगैंतयधर्मकूंकहेहैं॥छ॥गाथा॥इहपरलोयसुहाणं॥णिरवे

रको जोकरेरिसमभावे॥विविहंकायकलेसं॥तवधम्मोएिम्मलोतस्स॥एए॥
॥भावार्थ॥जोमुनिइसलोकपरलोककेसुखकीअपेक्षासंरहितरूचासंता॥बहु
रिसुखदुःखसत्रुमित्रएणकेचन॥निंदाप्रसंसाआदिविषैरागद्वेषरहितस॥
मभावीरूचासंता अनेकप्रकारकाकायक्लेशकरेहैं॥तिसमुनिकेनिर्मलतपध॥
र्महोयहै॥भावार्थ॥चारित्रकेअर्थिजोउद्यमअरुउपयोगकरेसोतपकहाहैसो
जहांउद्यमहैतहांकायक्लेससहितहीहोयहैं॥तातैंआत्माकेविभावपरि
तिकासंस्कारहैं॥ताकूमेटनेकाउद्यमकरै॥अपनेशुद्धस्वरूपचारित्रविषैउ
पयोगकूंधारनै॥तहांबडाजोरसूंथंभैहैं॥सोजोरकरनांसोईतपहै॥सोबाह्य
भ्यंतरकेभेदसूंबारहप्रकारकह्याहै॥ताकावर्णनआगैंहोयगा॥ऐसेतपधर्म
कह्या॥ब॥आगैंत्यागधर्मकूंकरेहैं॥ब॥॥गाथा॥जोचयरिमिठभोजं॥उवयरणं॥ १५५

दोससंजणयं॥वसदिंममत्तहेदुं॥चायगुणेसोहवेतस्स॥१००॥भावार्थ॥जोमुनिमिष्ट
भोजनछोडै॥रागद्वेषकाउपजावनहाराउपकरणछोडै॥ममत्वकाकारणवसतिका
छोडै॥तिसमुनिकेत्यागनांमागुणधर्महोयहै॥ब॥भावार्थ॥मुनिकेसंसारदेहभोगके
ममत्वकात्यागतोपहलैहैही॥बहुरिजिनिवस्तुनिमैंकार्यपरैहैंतिनिकूंमुरझकरै
कह्याहै॥आहारसंकामपरैतहांतौसरसनिरसकाममत्वनांहीकरै॥बहुरिधर्मोप
करणपुस्तकपिछिकाकमंडलुजिनिसंरागतीव्रबधैऐसेरागभावनांही॥ऐसेरागभे
यहवस्तुजनकेकामिनआवे॥बहुरिवसतिकारहनेकीजायगांसंकामपरैसोऐस १
जायगांनवसैजातैंममत्वउपजै॥ऐसैंत्यागधर्मकह्या॥ब॥आगैंआकिंचनधर्म
कूंकहैहैं॥गाथा॥तिविहेएजोचिवज्जइ॥चेयणियरंचसद्वहासंगं॥लोयविवा
हारविरदो॥णिग्गंथत्तंहवेतस्स॥१०१॥भावार्थ॥जोमुनिचेतनअचेतनपरिग्रहकूंसर्व

थामनवचनकायकृतकारितअनुमोदनाकरिछोडै॥ कैसा रूवासंता लोक के अव
हारसं॥ थिरकरूवासंतातिसमुनिकेनिग्रंथपणो होयहै॥ ब॥ नावार्थ॥ मुनिअनुप
रिग्रहतो छोडेही है॥ परंतुमुनिपणामेंमोग्यअैसें॥ चेतनतो सिरयसंघअरअचे
तनपुस्तकपिछिकाकमंडलुधर्मोपकरणअरआहारवस्तिकादेहयेअचेतन
तिनिसूंसर्वथाममत्वछोडेअैसाविचारे जोमैंतो आत्माहीहों॥ अन्यमेराकिछू
नीनाहीं॥ मैंअकिंचनहों॥ अैसा निर्ममत्वहोयताकेआकिंचन्यधर्महोयहै॥ ब॥
आगैब्रह्मचर्यधर्मकूंकहैहैं॥ ब॥ गाथा॥ जोपरिहरइसंगं॥महिलाणंएव पस्सदेरूवं॥ कामकहादिणियत्तो॥णवहावंभंहवेतस्स॥१७॥ अर्थ॥ जोमुनिस्त्रीनिकी
संगतिनकरैतिनिकारूपकूंनाहीनिरषै॥ वकुरिकामकीकथाआदिग्रहकरि
स्मरणादिकरिरहितहोय॥ अैसैनवधाकरिए॥ मनवचनकायकृतकारितअ १५६

नुमोदनाकरिकरै तिसमुनिकेब्रह्मचर्यधर्महोयहैं॥ ग॥ नावार्थ॥ इहांअैसाजानना जोब्रह्मचर्ये
आत्मांहैं॥ ताविषैलीनहोयसोब्रह्मचर्यहैं॥ सोपरब्रह्मविषैआत्मांलीनहोयतिनिविषैस्त्री
मेलीनहोनां प्रधानहैं॥ जातैंकाममनविषैउपजैहैं॥ सोअनंतकायनिमैंमोयहप्रधानहै॥
अरइसकामका आलंबनस्त्रीहै॥ सोयाकासंसर्गछोडै अरपैतैंस्वरूपविषैलीनहोनांहो
यहै॥ तातैंयाकीसंगतिकरनां रूपनिरखनां॥ याकीकथाकरनांस्मरणकरणं छोडैतांके
ब्रह्मचर्यधर्महोयहैं॥ इहांटीकामैंवृद्धलोकेअठारहहजारभेदअैसैलिखेहैं॥ अचेतन
स्त्रीकाष्ठपाषाणलेपनकृतनौ॥ ९॥ तिनिकूंमनवचनकायकृतकारितअनुमोदना ९
निछहतैंगुणैं अठारहहोय॥ १८॥ तिनिकूंपांचइंद्रियतैंगुणैंनिवेदोया॥ ९०॥ इसभावतैं
गुणेएकसोअसीहोय॥ १८०॥ क्रोधमानमायालोभइनिचारतैंगुणैंसातसैंबीसहोयहै॥
॥ ७२०॥ वकुरिचेतनस्त्रीदेवीमानुषीतिर्यंचणी तीन॥ ३॥ तिनिकूंकृतकारितअनुमोदना

तैंगुणैंतबनवहोय॥तिनिकूंमनवचनकायतैंइमितीनतैंगुणैंसत्ताईसहोय॥२७॥पांचइं
द्रीयतैंगुणैंएकसोपैंतीसहोय॥१३५॥इत्यभावकरिगुणैंहोयसैंसत्तरिहोय॥२७०॥इनि
कूंआदिसंज्ञा॥आहार॥भय॥मैथुन॥परिग्रहतैंगुणैंएकहजारअसीहोय॥इनिकूंअनंता
नुबंधीअप्रत्याख्यानावरण॥प्रत्याख्यानावरण॥संज्वलनक्रोधमानमायालोभरूपसोलह
कषायनितैंगुणैंसतराहजारदोयसैंअसीहोय॥तिनिअचेतनस्त्रीकेसातसैंवीसमिला
एअठारहहजारहोय॥१८०००॥ऐसैंभेदहैं॥बहुरिइनिभेदनिकूंअन्यप्रकारजीकीएहै
सोअन्यग्रंथनितैंजाननैं॥ए आत्माकीपरणतिकेविकारकेभेदहैं॥सोसर्वहीछोडि॥अप
नैंस्वरूपमैंरमैं॥तबब्रह्मचर्यधर्मउत्तमहोयहै॥आगैंइसीलवानकीबडाईकरैहैं॥छ॥गाथ
जोएविजाहिवियारं॥तरुणियणकडक्खबाणविद्धोविसोचेवसूरसूरो॥एसूरोएोवेसू
रो॥१०२॥तथा॥जोपुरुषस्त्रीजनकेकटाक्षरूपबाणनिकरिवींध्योभीविकारकूंप्राप्तनहोयहै

सोसूरवीरनिमैंप्रधानहै॥अरजोरणविषैंसूरवीरहैसोसूरवीरनांहीहैं॥छ॥भावार्थ॥युद्धमैं
सामाहोयमरनैंवालेतोसूरवीरबहुतहैं॥अरजेस्त्रीकेवसिनहोयहै॥ब्रह्मचर्यव्रतपालै
हैं॥ऐसेचिरलेहैं तेहीघडेसारसीहैं॥सूरवीरहैकामकाजीतनेंवालेसांचेसुभटहैं॥छ॥ऐसैं
भेदसप्रकारधर्मकाव्याख्यानकीया॥छ॥आगैंयाकूंसंकोचैहैं॥गाथा॥एसोदहप्पयारो
धम्मोदहलक्खणोहवेणियमा॥अण्णोणहवदिधम्मो॥हिंसासुहभावजुत्तेहि॥१०४॥ऐसैं
ऐसैंदसप्रकारधर्मदैंसारीदसलक्षणस्वरूपधर्मनियमकरिहैं॥बहुरिअन्यजहांसूक्ष्म
भीहिंसाहोयसोधर्मनांहीहैं॥छ॥भावार्थ॥जहांहिंसाकरिअरतिसकूंकोईअन्यमतीध
र्मथापैहै॥तिसिकूंधर्मनकहिए॥यहदसलक्षणस्वरूपकहयाहैं॥सोहीधर्मनियमकरिहै
॥छ॥आगैंइसगाथामैंकहयाजोजहांसूक्ष्मभीहिंसाहोयतहांधर्मनांही॥तिसहीअर्थ
कूंस्पष्टकरिकहैहैं॥छ॥गाथा॥हिंसारहिओएसुहो॥देवणिमित्तंगुरूणकज्जे॥सुहिंसा१

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

पावेतिमदो॥ दयापहाणोजदोधम्मो॥१०५॥ अर्थ॥ जातेंहिंसाहैसोपापहैअरैसेंकहाहै
वऊरिधर्महैसोदयाप्रधानहै॥ अरैसेंकहाहैं॥ तातेंदेवकेनिमित्ततथागुरुकेकार्य
केनिमित्तहिंसाकाआरंभसोसुजनहीहै॥ ब॥ भावार्थ॥ अन्यमतीहिंसामेंधर्मथापेहै॥
मीमांसकतौयज्ञकरैहैंतहांपसूनिकूंहोमैहैं॥ ताकाफलसुजनकहैहैं॥ वऊरिदेवीके
भैरूंकेउपासकबकरेआदिमारिदेवीनैरूंकैचढावैहैं॥ ताकासुभफलमानैहैं॥ बोध
मतीहिंसाकरिमासादिकआहारसुजकहैहैं॥ वऊरिसतांवरनिकेकेईसूत्रनिमैंअरै
सेंकहीहैं॥ जोदेवगुरुधर्मकेकार्यकेनिमित्तचऊवर्तिकेसेनानैंभीचूरिजेजोसाधू
अरैसेंकरैतोअनंतसंसारीहोय॥ करूंमद्यमांसकाआहारभीलिष्याहै॥ इनिसर्व
निकानिषेधइसगाथामैंजाननां॥ जोदेवगुरुकेकार्यनिमित्तहिंसाकाआरंभकरैहै
सोसुभनांही॥ धर्मदयाप्रधानहीहैं॥ वऊरिअरैसैंभीजाननां॥ जोपूजाप्रतिष्ठाचैत्या

लयकानिर्मापणसंघयात्रा॥ तथावस्तिकानिर्मापण ग्रहस्तनिकेकार्यहैं तेभीमुनिआ
पनकरैनकरावैनअनमोदनाकरै॥ इहधर्मग्रहस्तनिकाहैं॥ सोजैसैंइनिकासूत्रमैं
विधानलिष्याहैं तैसैंग्रहस्तकरै॥ ग्रहस्तमुनिकूंइनिकाप्रश्नकरैतोकरै॥ जिनिसिद्धां
तमैंग्रहस्तकाधर्मपूजाप्रैंभावनांप्रतिष्ठाआदिलिष्याहैं तैसैंकरै॥ अरैसैंकहनैं
मैंहिंसाकातौदोषग्रहस्तकोंहैही॥ इसमैंतिसअज्ञानभक्तिधर्मकीप्रधानताअरै
तिससंबंधीपुण्यजयातिसकेसीरीमुनिभीहैं॥ हिंसाग्रहस्तकीरै॥ ताकेसीरीनं
ही॥ वऊरिग्रहस्तभीहिंसाकरनेकाअभिप्रायकरैतोअसुभहीहैं॥ पूजाप्रतिष्ठा
यत्नपूर्वककरैहैं॥ कार्यमैंहिंसाहोय॥ सोग्रहस्तकेकैसैंटलै॥ सिद्धांतमैंअरै
सैंभीकह्याहैजोअल्पआरंभथलगैवऊतपुण्यनिपजै॥ अरैसाकार्यग्रहस्तकूं
योग्यहै॥ ग्रहस्थजिसमैंनफाजाणैंसोकार्यकरैं॥ थोडाद्रव्यदीएंवऊतद्रव्यआ

वैसो कार्य करै॥ मुनि निकै तैसे सो कार्य नाहीं होय है॥ तिनि कै सर्वथा यत्न ही है॥ ऐसें
जानना॥ ब॥ फेरि गाथा कहै हैं॥ ब॥ गाथा॥ देव गुरु णिमित्तं॥ हिंसारंभो वि होइ जत्थि
म्मो॥ हिंसा रहिउ धम्मो॥ इदि जिणवयणं हवे अलियं॥ १०६॥ अर्थ॥ जो देव गुरु कै नि
मित्त भी हिंसा का आरंभ न करै॥ जैसे तीव्र कहै सो मिथ्या है॥ ब॥ आगैं इस धर्म का
दुर्लभपणां दिखावै है॥ गाथा॥ इदि एसो जिण धम्मो॥ अलद्धपुव्वो अणाइ कालेवि
मिच्छत्त संजुदाणं॥ जीवाणं लद्धिही णाणं॥ १०७॥ अर्थ॥ ऐसें यह जिनेसुरदेव का
धर्म अनादि काल विषैं मिथ्यात्व करि संयुक्त जे जीव तिनिकै काल लब्धि भएं ही
आई तिनिकै अलब्धपूर्व है॥ पूर्वैं कबहूं पाया नांही॥ ब॥ भावार्थ॥ मिथ्यात्व की अस
त्र जीवनिकै अनादि काल तैं ऐसी है॥ जो जीव अजीवादि तत्वार्थनि का श्रद्धान क
बहू कबहू वा नांही॥ बिना तत्वार्थ श्रद्धान अहिंसा धर्म की प्राप्ति कैसें होय॥ ब॥ आगैं

कहै है कि ऐसा अलब्धपूर्व धर्म कूं पाय करि केवल पुण्य ही का अभिलाष करि मसे
वणां॥ ब॥ गाथा॥ दूरे दूरे पियारा पावक्कम सणासणा सयाणिया॥ पुण्णस्स य संं
जणया॥ परपुण्ण हेणा कायव्वा॥ १०८॥ भाषा॥ एह सप्रकार धर्म के भेद कहे तें पापकर्म
के तौ नास करणेंवाले कहे॥ बहुरि पुण्यकर्म के उपजावनहारे कहे॥ परंतु केवल
पुण्य ही का अर्थ प्रयोजन लेकरि नांही अंगीकार करनें॥ भावार्थ॥ सातावेदनी शुभ
आयु शुभनाम शुभगोत्र तौ पुण्य कर्म कहे है॥ असाता वेदनी अशुभनाम॥ अशुभ आयु॥ अशुभ गोत्र पापकर्म कहे हैं॥ सो ए सत्कृष्ट
धर्म कूं पाय कर नास करनेंवाला पुण्य का उपजावनहारा कह्या॥ तहां केवल पु
ण्य उपजावने का अभिप्राय करि जिनकूं न सेवनें जातैं पुण्य बंध ही है॥ ए धर्म
तौ पापजो घातिकर्म ताका नास करनेंवाला है॥ अर अघाति में अशुभ प्रकृति

है तिनिका नाश करैहैं। अरु पुण्यकर्म हैं तेसंसार के अभ्युदय कूंदेहै। सो इनितैंति
सकानी व्यवहार अपेक्षा बंध होयहै तो स्वयमेव होयही है। तिसकी वांछा करि
एतो संसार की वांछा करनो है। सो यह तो निदान नाम या। मोक्ष का अर्थी कै यह
होय नांही। जैसैं किसा एक खेती नाज के अर्थि करै है ताकै घास स्वयमेव होयहै
ताकी वांछा काहे कूं करै। मोक्ष के अर्थी पुण्य बंध की वांछा करनो योग्य नांही। ब
॥ आगैं इसही कथन कूं हेतु करि दृढ करैहैं। ब॥ पुण्णंपि जो समिच्छदि संसारो ते
णईहिदो होदि। पुण्णं सुगईहेउं पुण्णक्खयएव णिच्चाए॥१९॥ भावार्थ। जो पुण्य
कूं नीचा है। तिस पुरुषनैं संसार चाह्या। जातैं पुण्य है सो सुगति का बंध का
रण है। अरु मोक्ष है सो पुण्य का नीक्षय ही करि होय है। ब॥ भावार्थ। पुण्यतैं सुगति
होय है। सो जानैं पुण्य चाह्या। तिसनैं संसार चाह्या। सुगतितैं सो संसार ही है॥ १६०

मोक्ष तो पुण्य का नीक्षय भए होय है। सो मोक्ष का अर्थी कूं पुण्य की वांछा करनो
योग्य नांही। ब॥ बहुरि कहैहैं। गा॥ था॥ जो अहिलसेदि पुण्णं सकसाओ विसयसो
क्खतण्हाए। दुरेत स्संविद्दो दि। विसोही मूलाणि पुण्णाणि॥१२॥ अर्थ। जो कषाय
सहित तथा संतापि विषयसुख की त्रिष्णा करि पुण्य की अभिलाषा करैहैं। ताकै वि
शुद्धता मंद कषाय जा वहरि वर्तै है। बहुरि पुण्य कर्म हैं सो विशुद्धता हैं मूलक का
रण जाका ऐसा है। भावार्थ। जो विषयनि की त्रिष्णा करि पुण्य कूं चाहैहैं। सो तीव्र
कषाई हैं। अरु पुण्य बंध हो य सो मंद कषाय रूप विशुद्धता तैं होय है। सो पुण्य
चाहैता कै आगामी पुण्य बंध नी नांही होय है। निदान मात्र फल होय तो होय
ब॥ फेरि कहैहैं। गा॥ था॥ पुण्णासएण पुण्णं जदो णिरीहस्स पुण्णसंपत्ती। इय जाणि
ऊण जइणो पुण्णे वि म आयरं कुणह॥१९॥ अर्थ। जातैं पुण्य की वांछा करि

तो पुण्यबंध नांही होय है। अर वांछा रहित पुरुष के पुण्य का बंध होय है। तातैं तो यती श्व
रहो। ऐसैं जाणि करि पुण्य विषैं भी आदर वांछा मति करो। भावार्थ। इहां मुनि जन कूं उप
देश का कह्या है। जो पुण्य की वांछा तैं पुण्य बंध नांही। पुण्य तो आप ही मिटै बंध है। ता
तैं आसा पुण्य की भी मति करो। आपने स्वरूप के ग्राहक की आसा करो। बा। फेरि कहैं
हैं। गाथा। पुण्ण बंधइ जीवो। मंद कसाएहि परिणदो संतो। तह मंद कसाया। हवइ पु
ण्ण स्सण हि वांछा। ११२। भावार्थ। जातैं जीव है सो मंद कषाय रूप परिणया संता पुण्य
कूं बांधै है। तातैं पुण्य बंध का कारण मंद कषाय है। वांछा पुण्य बंध का कारण नां
ही। भावार्थ। पुण्य बंध मंद कषायतैं होय है। अर या की वांछा है सो तीव्र कषाय है। तातै
वांछा के नेरणी। निर्वांछी कपुरुष के पुण्य बंध होय है। यहलोकि कहीं कहै है। जो
चाहि करै ताकूं किछू मिलै नांही। विनां चाहि वा लेकूं बहुत मिलै है। तातैं वांछा १६१

का तो निषेध ही है। बा। इहां कोई पूछै। अध्यात्म ग्रंथ निमैं तो पुण्य का निषेध बहुत की
या। अर पुराण निमैं पुण्य ही का अधिकार सो हम तो यह जाणै हैं। संसार मैं पुण्य ही
बडो है। याही तैं तो इंद्रिय के सुख मिलै हैं। अर या ही तैं मनुष्य पर्याय मनवांछित
नला शरीर मोक्ष साधने के उपाय मिलै है। पाये तैं नरक निगोद जाय तब मोक्ष का भी
साधन कहां मिलै। तातैं ऐसैं पुण्य की वांछा क्यों नें कीजिए। ताका समाधान। यह क
ह्या सो तो सत्य है। परंतु जोगनि के अर्थि केवल पुण्य की वांछा का अभाव तो निषेध है
भोग के अर्थि पुण्य की वांछा करै ताके प्रथम तो सातिसय पुण्य बंध ही नांही। अर ब
इहां तप आदि क्रिया करि किछू पुण्य बांधि भोग पावै तहां अति तृष्णा तैं भोगनि कूं से
वै। तब नरक निगोद ही पावै। अर बंध मोक्ष का स्वरूप जानि मोक्ष के साधने के
अर्थि पुण्य सेवै ताका निषेध है नांही। पुण्य तैं मोक्ष साधने की सामग्री मिलै ऐसे

सा उपाय राषै तौ तहां परंपरा मोक्ष ही की वांछा भई। पुण्य की तौ वांछा नाही जैसैं कोई पु
रुष भोजन करनै की वांछा करि रसोई की सामग्री भेली करै तिनि की भी वांछा पहली ही।
य तौ भोजन ही की वांछा करि है। बहुरि भोजन की वांछा विना केवल सामग्री ही की वां
छा करै तौ सामग्री मिलै भी। प्रयास मात्र ही भया कि छूफल तौ नाही तैसैं जानना। पु
राण नि मैं पुण्य का अधिकार है अरु ठिहै। संसार का तौ तहां भी निषेध ही है। ब।
आगैं द्वादश लक्षण धर्म है सो दया प्रधान है। अरु दया है सो ही सम्यक्त का मुख्य वि
शेष है। जो तें सम्यक्त है सो जीव अजीव आश्रव बंध संवर निर्जरा मोक्ष इनि सात
त्वार्थ नि के ज्ञान पूर्वक श्रद्धान स्वरूप है। सो यह होय तब सर्व जीव नि कूं आप
समान जानै। तिनि के दुःख होय तब आप की ज्यौं जानै। तब तिनि की करुणा भी होय ही। अरु आपणें शुद्ध स्वरूप जानै। कषाय नि कूं अपराध रूप जानै। इनितैं अपनो घात जानै। तब आप की दया कषाय भाव का अभाव कूं भावै। ऐसैं अहिंसा कूं धर्म जानै। हिंसा कूं अधर्म जानै। ऐसा श्रद्धान सो ही सम्यक्त है। ताके नि:शंकित कूं आदि करि आठ गुण हैं तिनि कूं जीव दया ही प्रधान कहे हैं। तहां प्रथम नि:शंकित कूं कहे हैं। ब। गाथा। किं जीव दया धम्मो जण हिंसा वि हो हि किं धम्मो इच्चेवमादि संका तदकरणं जाणि एं संका। ११३। अर्थ। वि चारे जो का जीव दया धर्म है कि यज्ञ विषै पशु नि का वध रूप हिंसा होय है सो धर्म है इत्यादिक धर्म विषै संशय होय सो संका है। याका न करणां सो नि:शंका है। ना वार्थ। इहां आदि शब्द तैं कहा दिगंबर यती नि कौं ही मोक्ष है। अथवा केवली कवला हार करै है नाही करै है। अथवा स्त्री नि कूं मोक्ष है कि नाही है। अथवा जिन देव व स्तु कूं अनेकांत रूप साधै सो सत्य है कि असत्य है। ऐसी आशंका कूं करै सो नि:

DR BHAU DAJI MEMORIAL

संकितत्र्यंग है॥ब॥फेरि कहैहै॥ गाथा॥ दयाभावो वियधम्मो॥ हिंसाभावो णभणदेधम्मो
इहिंसदेहा भावो॥ निस्संकाएिम्मला होति॥१५॥ भावार्थ॥ निश्चयतैं दया भावही ध
र्म है॥ हिंसाभाव धर्मनिकरिए॥ ऐसैं निश्चयनयतैं सदेहका अभावहोय सोही निर्म
लनिःसंकितगुण है॥ब॥ अमतीनैं मान्यां जो विपरीतदेव धर्मगुरुका तत्वका
स्वरूपता का सर्वथा निषेधकरि जिनमतका कह्या श्रद्धानकरना॥ सोनिःकांकि
तगुण है॥ ओंकार है जैतैं श्रद्धान निर्मल होय जाही॥ब॥ आगैं निकांक्षितगुणकूं
कहैहैं॥ गाथा॥ जो सग्गसुहणिमित्तं॥ धम्मं णायरदिसहतवेहिं॥ मुक्कंसमीह
भावो॥ णिक्कंखा जायदे तस्स॥१५१॥ भावार्थ॥ जो सम्यग्दृष्टी दुद्धरतपकरि स्वर्ग
सुखके अर्थि धर्मकूं आचरण करै॥ तिसकै निःकांक्षितगुण होय है॥ कैसाहै
तिस दुद्धरतपकरि मोक्षही की वांछा करतासंतादै॥ भावार्थ॥ जो धर्मकूं आचरण १६२

करै दुद्धरतपकरै सो मोक्षही के अर्थि करै॥ स्वर्गआदिकेसुखन चाहै ताकै निःकां
क्षितगुण होय है॥ब॥ आगैं निर्विचिकित्सागुणकूं कहैहैं॥ब॥ गाथा॥ दंसणविहधम्म
जुदाणं॥ सहावदुगंधअसुइदेहेसु॥ जेणिंदणकीरई॥ णिव्विदिगिंछा गुणेसो
दु॥१५२॥ अर्थ॥ नोदसप्रकारके धर्मकरिसंयुक्तजोमुनिराजतिनिकादेह सो स्व
यमतौदेहका स्वभावही करि दुर्गंधअसुचिहैं॥ बहुरि स्नानादिसंस्कारके अ
भावतैंवा सविशेषकरि अशुचिदुर्गंधदीखैहैं ताकी अवज्ञानकरै॥ सोनिर्वि
चिकित्सागुण है॥ब॥ भावार्थ॥ सम्यग्दृष्टी पुरुषकी प्रधानदृष्टि॥ सम्यक्ज्ञानचा
रित्रगुणनिपरिपूर्ण है॥ देहतौस्वभावही करि अशुचिदुर्गंधहै॥ तातैं मुनिराज
निकी देहकी तरफकहादेखै॥ तिनिकै रत्नत्रयकी त्रयकदेखैं॥ तवकाहेकूं गिल
निआवै॥ यहग्लानिन उपजै सोही निर्विचिकित्सागुण है॥ जाकैसम्यक्त्व

णप्रथानहोयतावेदृष्टिपरलीदेहपरिपडैतवग्लानिउपजै॥जबइहगुणनहोय॥ब
म्रागैंम्रमूढदृष्टिगुणकौंकहैहै॥गाथा॥धनयलज्जालाहादो॥हिंसारंभोणमण्णदेध
म्मो॥जोजिणवयणेलीणो॥म्रमूढदिट्ठीहवेसोदु॥११७॥म्रर्थ॥जोभयकरितथा
लज्जाकरितथालाभकरैहिंसाकेम्रारंभकूंधर्मनांहीमानैंसोपुरुषम्रमूढदृष्टि
गुणसंयुक्तहैं॥कैसाहैजिणवचनविषैंलीनहै॥भगवानधर्मम्रहिंसाहीकह्या
है॥ऐसीदृढश्रद्धायुक्तहैं॥ब॥भावार्थ॥म्रन्यमतीयज्ञादिहिंसाधर्मथापैहैं॥ता
कूंराजाकेभयतैं॥तथाकाहूंमंत्रीकेभयतैं॥तथालोककीलज्जातैं॥तथाकिछु
द्रव्यम्रादिकेलाभतैं॥इत्यादिकम्रनेककारणहै॥तिनितैंधर्मनमानैं॥ऐसी श्रद्ध १
रायैजोधर्मतौभगवांनम्र हिंसाहीकह्याहै॥ताकैम्रमूढदृष्टिगुणहैं॥इहांहिंसार
भकैकहनेमैंहिंसाकेप्रसूयक॥देवशास्त्रगुरुम्रादिविषैंमूढदृष्टिनहोयहैऐ १६

समजाननां॥ब॥म्रागैंउपगूहनगुणकूंकहैहैं॥ब॥गा॥॥जोपरदोसंगोवदि॥णियसुकम्मं
णोपयासदेलोए॥म्रवियत्तजावणरई॥उवगूहणकारगेसोई॥११८॥भावार्थ॥जोसम्य
ग्दृष्टीपरकेदोषकूंतौगोपैटांकै॥म्रकुरित्तपनांसुकृतपुण्यगुणलोकविषैंप्रकाशै
नांहीकरतानफिरै॥ब्रकुरित्तऐसीभावनांमैंलीनरहै॥जोम्रवितम्हैसोहोयहैतथा
होयगा॥सोउपगूहनगुणकाकरनेंवालाहै॥ब॥भावार्थ॥सम्यक्दृष्टीकैम्रैसीभाव
नांरहैहै॥नोकर्मकाउदयहैं॥तिसम्रनुसारमैंहैलोकमैंप्रवर्त्तिहै॥जोहोणीहैसो
होयहै॥म्रैसीभावनांतैंम्रपनांगुणप्रकासताफिरैनांही॥परकेदोषप्रगटकरैनां
ही॥ब्रकुरिसाधरमीजनतथापूज्यपुरुषनिमैंकोईकर्मकेउदयतैंदोषलागैतौताकूं
छिपावै॥उपदेसादिकरिदोषछुडावै॥ऐसैंनकरै जामैंउनिकीनिंदाहोयधर्मकी
निंदाहोय॥धर्मीधर्मीतांमैंसूंदोषकाम्रभावकरनांहै॥सोछिपावनांभीम्रभाव

हीकरनोहैं॥जाकूंलोकनजानैंसोअजावतुल्यहीहै॥अैसैंउपगूहणगुणहोयहै॥ब॥आ
गैंस्थितीकरणगुणकूंकहैहैं॥ब॥गाधा॥धम्मादोचलमाणं॥जोअप्पाणंसंवदिधम्म
मि॥अप्पाणंथिसुदिढम्मं॥ठिदिकरणंहोदितस्सेव॥१२९॥भाषार्थ॥जोअन्यकूंध
र्मतैंचलायमानहोतेकूंधर्मविषैंस्थापै॥तथाअपनैंआत्माकूंभीचलनेतैंदृढक
रैतिसकैनिश्चयतैंस्थितीकरणगुणहोयहै॥ब॥भावार्थ॥धर्मतैंचिगनेंकैअनेक
कारणहैं॥सोनिश्चयव्यवहाररूपधर्मतैंपरकूंतथाआपकूंचिगताजाणिउपदे
सतैं॥तथाजैसैंहोयतैसैंदृढकरैताकैस्थितीकरणगुणहोयहैं॥ब॥आगैवात्स
ल्यगुणकूंकहैहैं॥ब॥गाधा॥जोधम्मिएसुजणो॥अकिच्चरणंकुणंदिपरमसद्धाए
पियवयणंजंपंतो॥वच्छल्लंतस्सजंबस्स॥१३०॥अर्थ॥जोसम्यग्दृष्टीजीवधार्मि
ककरिए॥सम्यग्दृष्टीश्रावकमुनिनिविषैंतोअकृत्रिमानहोय॥बहुरितिनिकैअनुसा

रप्रवर्त्तैपरमश्रद्धाकरिप्रियवचनबोलतासंताप्रवर्तै॥तिसजयकैवात्सल्यगुणहो
यहैं॥भावार्थ॥वात्सल्यगुणमैंधर्मानुरागप्रधानहैं॥उत्कृष्टश्रद्धाकरिधर्मात्मांपुरुषा
निसूंजाकैअकृत्रिमअनुरागबहुतहोयतिनितैंप्रियवचनसहितप्रवर्तैं॥तिनिकूं
जोअनगमनआगमनकीक्रियाकाअनुचरहोयप्रवर्तैगा॥ऐवहेकीसीप्रीतिजि
ताकैवात्सल्यगुणहोयहैं॥ब॥आगैअनावनागुणकूंकहैहैं॥ब॥गाथा॥जोदस
णेयधम्मं॥अच्चणएंपयासदिविमलं॥अप्पाणंपियपासदि॥णाएणपरावणं
तस्स॥१३१॥भाषार्थ॥जोसम्यग्दृष्टीदसभेदरूपधर्मकूंअन्यजीवनिकैनिकटिअप
नैंप्रगटकरिप्रगटकरैतथाअपनांआत्मांकूंदसप्रकारधर्मरूपकासेताकैअनाव
नांगुणहोयहैं॥भावार्थ॥धर्मकाविख्यातकरनांसोप्रभावनांगुणहैं॥सोउपदेशादिक
करितौपरकैधर्मप्रगटकरै॥अरअपनांआत्मांकूंदसविधिधर्मअंगीकारकरि

कर्मकलंकतैंरहितकरिप्रगट करै ताकै प्रभावनागुण होयहै॥ब॥फेरिकैहैहै॥गा॥ण्हि
णसासणमारप्पं॥वकुविहजुत्तीहिंजोपयासेदि॥तहतिच्चेणतवेणय॥पहावणं
णिम्मलातस्स॥१२३॥भावार्थ॥जोसम्यग्दृष्टीपुरुषआपनेप्रभावकेबलतैंअनेकप्रकार
युक्तिकरि॥बाहीनिकानिराकरणकरि॥तथाआगमाकरणछंदअलंकारसहि
तविद्याकरिवक्तापणांशास्त्रनिकीरचनाकरि॥तथाअनेकअतिसयचमत्का
रपूजाप्रतिष्ठातथामहानउद्यैरतप्रकरणकरिजिनसासनकामहात्मप्रगट
करै॥ताकै प्रभावनागुण निर्मलहोयहै॥भावार्थ॥यहप्रभावनागुणबडागुणहै॥यातैंअ
नेकजीवनिकै धर्मकीरुचिश्रद्धाउपजिआवैहै॥तातैंसम्यग्दृष्टीपुरुषनिकैअब
श्यहोयहै॥ब॥आगैंनिसंकितआदिगुणजिसपुरुषकैहोयताकूंकहैहैं॥
॥ब॥गा॥जोणकुणदिपरतत्तिं॥पुणपुणणावेदिसुद्धमप्पाणं॥इंदियसुहणिरवे १६६

क्खो॥णिस्संकाईगुणातस्स॥१२४॥अर्थ॥जोपुरुषपरकीनिंदाकरै॥वकुरिशुद्धआ
त्माकूंवारवारभावै॥वकुरिइंद्रियसुखकीअपेक्षावांछारहितहोयताकैनिः
शंकितआदिअष्टगुणअहिंसाधर्मरूपसम्यक्तकाहोयहै॥ब॥भावार्थ॥इहांती
नविशेषणहैं॥तिनिकातात्पर्ययहहै॥जोपरकीनिंदाकरैताकैनिर्विचिकि
त्सा॥अरउपगूहनगुण स्थितीकरणगुणकैसैंहोय॥तथावात्सल्यकैसैंहोय॥ता
तैंपरकानिंदकनहोय॥तबएआठगुणहोय॥वकुरिजाकैअपनोआत्मावस्तु
स्वरूपमैंसंकासंदेहहोय॥तथामूढदृष्टिहोयसोअपनेआत्माकूंवारवारकै १६७
सैंभावै॥तातैंशुद्धआपाकूंजानै॥ताहीकैनिशंकित तथाअमूढदृष्टिगुणहोय
तथाप्रभावनांभीताहीकैहोय॥वकुरिजाकैइंद्रियसुखकीवांछाहोयताकैनि
कांक्षितगुणनांहीहोय॥इंद्रियसुखकीवांछातैंरहितभएहीनिकांक्षितगुणहो

य॥ऐसैं श्रावगुणकेसंजवकेतीनविसेषणहै॥ब॥श्रागैं कहैहैं ए श्रावगुणजैसैंधर्म विषैंकरे तैसैंदेवगुरुश्रादिविषैंजाननें॥ब॥गाथा॥ णिस्संकामडहिगुण॥जहधम्मेतहय देवगुरुतच्चे॥जाणेहि जिणमयादो॥समत्तविसोहयाणदे॥१२४॥श्रर्थ॥एनिसंकित श्रादिश्रावगुणकहे तेधर्मविषैंप्रगटहोतेकहे॥तैसेंही देवकेस्वरूपविषैं॥तथागुरु केस्वरूपविषैं॥तथामद्रव्यपंचास्तिकायसप्ततत्वनवपदार्थनिकेस्वरूपविषैं होयहैं॥तिनकूंप्रवचनसिद्धांततैंजाननें॥ए श्रावगुणसम्यक्तकूंनिरतिचारविसुद्ध करनेंवालेहैं॥नावार्थ॥देवगुरुतत्वविषैंसंकानकरणी॥तिनिकीयथार्थश्रद्धातैं इंद्रियसुखकीवांछारूपकांक्षानकरणी॥तिनिमैंग्लानिन्यावणी॥तिनिविषैं मूढदृष्टनरावणी॥तिनिकेदोषनिकाढकावकरनांतथाढाकनां॥तिनिकाश्र द्धानदृढकरनां॥तिनितैंवात्सल्यविनोषश्रनुरागकरनां॥तिनिकीमहिमाप्रग

व्यकरनी॥ऐसैंश्रावगुणइनिविषैंजाननें॥इनिकीकथाश्रागैंसम्यग्दृष्टीश्र तिनिकीजिनसिद्धांततैंजाननी॥श्रएसम्यक्तकेश्रतीचारइकिरिनिर्मल करनहारेहैं॥ऐसैंजाननां॥श्रागैंइसधर्मकेकरनेंवालातथाजाननेंवालाऊ र्ध्वजेंश्रैसैंकहैहैं॥ब॥गाथा॥धम्मेणमुणहिजीवो॥श्रहवाजाणेइकरवकट्ठे ण॥कालंतोविणसकहि॥मोहविसाएणमोलविदे॥१२५॥नावार्थ॥यासंसारमैं प्रथमतोजीवधर्मकूंजाणैंहीनांहीहै॥वहुरिकोईप्रकारवडाकष्टकरिजोजाणैभी तौमोहरूपविसाचकरि श्रमरूपकीयाहुवाकरनेंकूंसमर्थनांहीहोयहैं॥ब॥ ॥नावार्थ॥श्रनादिसंसारतैंमिथ्यात्वकरिमोहविसाचकरि श्रमितजोयहप्राणी सोप्रथमतोधर्मकूंजाजाणैंहीनांहीहै॥वहुरिकोईकाललब्धिगुरुकेसंजो गतैंज्ञानावरणीकेक्षयोपसमतैंजानैंभीतौताकाकरनांऊर्ध्वश्रहै॥ब॥श्रा

DR BHAU DAJI

गैधर्मके ग्रहण कामहात्म्यदृष्टांत करिकैहैहै॥ब॥गाथा॥ जहजीवो कुणइरई॥पुत्तकलित्तेसुकामभोगेसु॥तहजइजिणिंदधम्मे॥तोलीलाए सुहं लहइ॥१२६॥अर्थ॥ जैसें यह जीव पुत्रकलित्रविषैं तथा कामभोगविषैं अति प्रीतिकरैहै॥ तैसें जो जिनेंद्रके वीतरागधर्मविषैं करै तो लीलामात्रही घ्रकालमैंसुखकूं प्राप्तहोयहै॥भावार्थ॥जैसीया प्राणीकेसंसारविषैं तथा इंद्रियनिकेविषैं प्रीतिहैतैसी जोजिनेश्वरकेहसलक्षणधर्मस्वरूपजोवीतरागधर्मतावि मैं प्रीतिहोय॥तोथोडेसेही कालविषैं मोक्षसुखकूंपावे॥ब॥आगैंकहैहैं जोजीवलक्ष्मीचाहैहैसोधर्मविनाकैसैंहोय॥ब॥गाथा॥ तंचिवंछेइइणारो॥जेचसुधम्मेसुआयरंकुणई॥वीएणविएणकज्जवि॥किंदीसइसिसणिप्पत्ती॥१२७॥अर्थ॥ यहजीवलक्ष्मीकूंचाहैहै॥ वकरिजिनेंद्रकाकह्यासुश्रावकाधर्मविषैं आदरप्रीतिनांहीकरैहै॥तोलक्ष्मी १६६

काकारणतोधर्महै॥तिसविनांकैसैं आवे॥जैसैं वीजविनांधान्यकीनिष्पत्तिनिपजनांकरूंदीसैहैनांहीदीसैहै॥भावार्थ॥वीजविनांधान्यनहोयतैसैंधर्मविनांसंपदानहोययहप्रसिद्धहै॥आगैंधर्मांतरजीवकीप्रवृत्तिकरैहैं॥ब॥गाथा॥ जोधम्मछोजीवो॥सोरिउवगोविकुणइरवमभावं॥तापरहत्थंवजई॥जाणिसमंगणइपरदारं॥१२८॥भावार्थ॥जोजीवधर्मविषैंतिष्ठैहैं सोवैरिनिकेसमूहविषैंसमानभावकरैहै वकरिपरकाद्रव्यकूंवांछैहै॥अंगीकारनांहीकरैहैं॥वकरिपरस्त्रीकूंमातावहण समानगिणैहैं॥ब॥वकरिकहैहैं॥गाथा॥ तासचछविकित्ती॥तासचछविहवईवीसासो॥तासचंपियजासइ॥तासुहंमाणसंकुणइ॥१२९॥भावार्थ॥जोजीवधर्मविषैंतिष्ठैहै॥तोसर्वलोकमैंताकी कीर्तिहोयहै॥वकरिताका सर्वलोकविश्वासकरैहै॥वकरिसोपुरुषकूंप्रियवचनकहैहैं॥यातैंकोईदुषनपावैहै॥वकरिसोपुरुषआप

नेत्र आपके मनकूं प्रियबचनकहैहैं॥ मुहउज्जलकरैहैं॥ कोईकै यासूंका लिमानरहैं तै
सैंयाकेकोईसूंकालिमानरहैहैं॥ गा॥ ध॥ धर्मसर्वप्रकारसुखदाईहै॥ व॥ आगैधर्मका
महात्म्यकहैहैं॥ व॥ गाथा॥ उत्तमधम्मेणजुदो॥ होदितिरक्कोविउत्तमोदेवो॥ चेडालो
विसुरिंदो॥ उत्तमधम्मेणसंभवदि॥ १३०॥ अर्थ॥ सम्यक्तसहितउत्तमधर्मकरिसंयुक्त
जीवहै॥ सोतिर्यंचभीदेवपदकूंपावैहैं॥ बहुरि चांडालहैसोभीदेवनिकाइंद्रसा
मानिकसहितउत्तमधर्मकरिहोयहै॥ व॥ बहुरिकहैहैं॥ भावार्थ॥ अणुवीयहोदिहि
मंहोहिनुयंगोउत्तमंसयणं॥ जीवस्सुहमादो॥ देवावियकिंकरासोत्ति॥ १३१॥ अर्थ॥
याजीवकेउत्तमधर्मतैं अग्नितौहिशीतलपालाहोयजायहै॥ बहुरिसर्पहैसोउ
त्तमरत्नकीमालाहोयजायहै॥ बहुरिदेवहैतेभीकिंकरदासहोयहैं॥ व॥ भावार्थ॥ ध
र्मकेप्रभावतैं अग्निका प्रवेशतौ जलप्रवेशवतहोयहै॥ अरसर्पभी रत्नकीमाला

होयहैं॥ बहुतकहाकहैंदेवभीदासहोयहैं॥ व॥ बहुरिकहैहैं॥ गाथा॥ तिरक्खोमो
लाउज्जयरिउणोसुहंकरासुयणा॥ हालाहलंपिअमियं॥ महापयासंपयाहोदि
॥ १३२॥ अर्थ॥ उत्तमधर्मसहितजीवकैनीचकुलमालाजाकैहोयहैं॥ व
हुरिदुर्जयवैरीसुखकाकरनेवालासज्जनहोजायहैं॥ बहुरिहालाहलविषहैसोअ
मृतहोजायहैं॥ बहुतकहाकहिएमहाबलीन्यायदानीसंपदाहोयजायहै॥ व
हुरिकहैहैं॥ गाथा॥ अत्थियवयणंपिसचं॥ उज्जमरहियंविलक्खिसंपत्ती धम्मप
भावेणणरो॥ अणहंविसुहंकरोहोदि॥ १३३॥ नाथा॥ धर्मकेप्रभावकरिजीवकै
झूठवचनभीसत्यवचनहोयहैं॥ बहुरिउद्यमरहितकैभीलक्ष्मीकीप्राप्तिहोयहै
बहुरिन्यायकार्यभीसुखकाकरनहाराहोयहैं॥ व॥ भावार्थ॥ इहांयहअर्थजा
ननां॥ जोपूर्वधर्मसेबांध्योहैतौताकेप्रभावकरिइहांझूठवचोभैसोभीसांचीहो

जायहैं॥उद्यम विनानी संपति मिले॥अन्याय चालैतो नीकुवीरहै॥अथवाको
ईझूठवचनकातूटालगावैतोधीजमैंसांचाहोय॥अन्यायकीयांलोकक है
न्यायवालेकीसहायहीहोय॥ऐसानीजाननो॥ब॥आगैधर्मरहितजीवकी
निंदाकरैहैं॥ब॥गाथा॥देवोविधम्मचत्तो॥मिच्छत्तवसेणतरवरोहोइ॥चक्की
विधम्मरहिउ॥णिवडइणरएसंयदेहोइ॥१३४॥भावार्थ॥धर्मरहितजीवहैसो
मिथ्यात्वकावसकरिदेवजीवनस्तीकाजीवएकेंद्रीयआयहोयहै॥चक्री
चक्रवर्तिनीधर्मकरिरहितहोयतवनरकविषैंपडैहैं॥यापरहैसोसंपदाकेअ
र्थिनोहीहै॥ब॥वहुरिकहैहैं॥गाथा॥धम्मविरूएणजीवो॥कुणइअसंपिसाह
सेजइवि॥ताणविपावइदुक्खं॥सुहआणिइंपरलहई॥१३५॥भावार्थ॥धर्मरहित
जीवहैसोयद्यपिवडाअसाहसेंकूयोगपसाहसपराक्रमकरैतोऊताकेइष्ट २७०

वस्तुकीप्राप्तिनहोय॥केवलउलटाअतिशोकसेंअनिष्टकूंप्राप्तहोय॥ऐसाभावार्थ॥पा
पकेउदयसैंजीवदुखीहोयहैंयहप्रसिद्धहै॥ब॥फेरिकहैहैं॥गाथा॥डय
पच्चक्कंपिछिय॥धम्माधम्माणविविहभारूप्पं॥धम्मंआयरहसया॥पावंदूरेण
परिहरह॥१३६॥भावार्थ॥हेप्राणीहोयाप्रकारधर्मअरअधर्मकाअनेकप्रकार
महात्मपतत्क्षणदेखिकरिशुधर्मकूंतोआदरो॥अरपापकूंदूरहीतेंपरिहरो
॥भावार्थ॥आचार्यदयाप्रकारकोंधर्मकास्वरूपकहिकरिअरधर्मअधर्मकाफल
दिखाया॥अबउद्देशयहउपदेसकीयाहै॥जोहेप्राणीहोजोप्रत्यक्षधर्मअध
र्मकाफलसर्वलोकविषैंदेखिधर्मकूंआदरोपापकूंपरिहरो॥आचार्यबडेउपकारी
हैंनिःकारणआपकूंकछूचाहिएनांही॥निस्पृहअएसंतैंजीवनिकेकल्या
णकेअर्थिवारवारकहिकरिप्राणीनिकूंचेतकरावैहैं॥ऐसेश्रीगुरुवंदनेयो ही

ग्य पूजने योग्य हैं॥ अरहंत निके वचन धारने योग्य हैं॥ ब॥ ऐसें यतिधर्म का व्याख्या न की या॥ गाथा॥ मुनिश्रावक के भेद तें॥ धर्म दोय परकार॥ ता कूं सुनि चित्त वो सत त॥ ग हिया वो भव पार॥१॥ब॥ आगें धर्मानुप्रेक्षा की चूलिका कूं कहे ता सें ता व्या चार्य वार प्रकार का तप का विधान का निरूपण करे हैं॥ गाथा॥ वा रस भेउ भणि उ॥ णिज्जरहेउ तवो सव्वासेए॥ तस्स पयाराए हे॥ जणिज्जमाणमुणेयव्वा॥ ॥१३७॥ अर्थ॥ तप हे सो सर्व रह प्रकार सें हेय करि जिनागम विषें कह्या हैं॥ केसा हैं क र्म निर्जरा का कारण हैं॥ तिस के प्रकार आगें कहेंगे ते जानने॥ भावार्थ॥ निर्जरा क ा कारण तप हे सो बारह प्रकार हैं॥ बाह्य के॥ अनसन॥ अवमोदर्य॥ वृत्तिपरिसं ख्यान॥ रसपरित्याग॥ विविक्तसय्यासन॥ कायक्लेस॥ ऐसें छह प्रकार॥ बहु रि अभ्यंतर तप का॥ प्रायश्चित्त॥ विनय॥ वैयावृत्य॥ स्वाध्याय॥ व्युत्सर्ग॥ ध्यान॥ ऐसें ११२

छह प्रकार॥ इनिका व्याख्यान अब करिए हैं॥ ब॥ तहां प्रथम ही अनसन नामा तप कूं च्यारि गाथा नि करि कहे हैं॥ गाथा॥ उवसमणेअ प्पकाएं॥ उववासो वण्णिउ णिदेहिं॥ तम्हा जुंजंताविय॥ जइंदियाहोंति उववासा॥१३८॥ गाथा॥ मुनिंद हे तिनें इंद्रियनिका उपसमन करिए विषयनि में जाने न देना॥ मन कूं अपने आत्म स्वरूप विषें लगावणां सो उपवास कह्या हैं॥ तातें यतींद्रियहैं ते आहार करते भी उपवासक हिए ही कहिए॥ भावार्थ॥ इंद्रियनिका जीतना सो उपवास सोयती जो जन करते भी उपवासे ही हैं॥ जातें इंद्रियनि कूं वशीभूत करि पवर्त्ते हैं॥ ब॥ पुनः ॥गाथा॥ जोमणइंदियविजई॥ इहभवपरलोयसोक्खनिरवेक्खो॥ अप्पाएो वियलिवसइ सज्झायपरायणो होइ॥१३९॥ गाथा॥ जो मनइंद्रियनिका जीतनहारा हे॥ वर्त्तमान भव अर पर भव के विषय सुखनि विषें अपेक्षा रहित हे वांछा नांही क

रैहैं वहुरि अपने आत्मस्वरूपही विषै वसैहैं। अथवा स्वाध्याय के विषै तत्पर हैं
॥ इ ॥ वहुरि कैसे हैं॥ गाथा॥ कम्माण णिज्जरट्ठं॥ आहारं परिहरेइ लीलाए॥ एगदि
णादियमाणे॥ तस्स तवो अण सणं होदि॥ १४७॥ अर्थ॥ वहुरि जो एक दिन आदि
की मर्यादा तैं कर्म निकी निर्जरा के अर्थि लीला कहिए क्रीडा मात्रही लेस रहित
हर्ष तैं आहार कूं छोडैहैं। ताके अनसन तप होय है॥ इ॥ भावार्थ उपवास का अर्थ
सो आत्मा मैं च इंद्रिय मन विषै। य निविषै पणा तैं रहित होय॥ आत्मा मैं च
से सो उपवास है॥ सो इंद्रिय नि का जीतनां विषय नि की इस लोक परलोक से
वंधी वांछा न करनी॥ केवो आत्मस्वरूप विषै लीन रहनां॥ केसा स्त्री के अर्था
स्वाध्याय विषै मन लगावणां॥ एतो उपवास विषै प्रधान है॥ वहुरि लेसन
उपजै जैसैं क्रीडा मात्र एक दिन होय दिन आदि की मर्यादा रूप आहार का त्या १७२

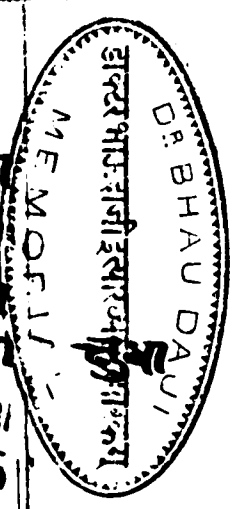

गकरनो॥ ऐसें उपवास नामो अनसन तप होय है॥ इ॥ पुनः॥ गाथा॥ उववासे कुच्चा
एो॥ आरंभं जो करेहि मोहादो॥ तस्स किले सो अपरं कम्माणं णो वणिज्जरणं
॥ १४९॥ अर्थ॥ जो उपवास करतासेता मोह तैं आरंभ ग्रह कार्यादिक कूं करैहै ता
केमरू लैं तो यह उपवास कार्य का क्लेस थारी॥ वहुरि दूसरा नो जन विनां खुद्या तृषा
का क्लेश नया॥ ऐसें होसैं क्लेश ही वधा॥ कर्म नि का निर्जरण तो नन्या॥ इ॥
भावार्थ॥ आहार कूं तो छोडै॥ अर विषय कषाय आरंभ कूं न छोडै॥ ताकै आगै
तो क्लेस थारी॥ दूसरा क्लेश नूपति सका नया॥ ऐसे उपवास में कर्म नि की
निर्जरा कैसें होय॥ कर्म की निर्जरा तो समता भाव करें होय है॥ ऐसे
सा जाननां॥ इ॥ आगें अनसन तप कूं गाथा दोय करि कहैहैं॥ इ॥ गा॥
आहारमिहिरहिज्जे चरियापमोण यासुजोगं॥ अप्पयरं जो लुंजइ॥ अवमोद

रियंतवंतस्स॥१४२॥ जोतपस्वीकआहारकीकप्रतिचाहिरहितहूवासूत्रोक्त
चर्याकामार्गकरियोग्यप्रासुकआहारकप्रतिसयकरिकप्रत्यलेतिसकेअवमो
दर्यतपहोयहै॥छ॥मुनिआहारकेबत्तीसदोषटालेहै॥बत्तीसअंतराय
टालेहै॥चौदामलरहितप्रासुकयोग्यभोजनलेहैं॥तोऊनोदरतपकरै॥तामें
कवनेंआहारकेप्रमाणतैंथोडालै॥एकग्रासतैंलगायबत्तीसग्रासताईआ
हारकाप्रमाणकह्याहैं॥तामेंयथाइछाघटतीलेसोअवमोदर्यतपहैं॥छ॥पुनः
॥गा॥जोपुणकिंसिलिमित्तं॥मायाएमिहिमिरकलाहवं॥अप्पंभुंजइभोत्तुं॥तं
स्सतवंतिकलंविदियं॥१४३॥अर्थ॥जोमुनिकीर्तिकैनिमित्तथामायाकपट
करि॥तथामिष्टभोजनकेलाभकैअर्थिअल्पभोजनकरैहैं॥तपकानामकरैहैं॥ता
केसोअवमोदर्यतपनिःफलहै॥छ॥भावा॥जोमैंसाविचारैअल्पभोजनकीएं १७३

मेंमेरीकीर्तिहोयगी॥तथाकपटकरिलोककूंभुलावैकिंचुएयोजनसाधनें
केनिमित्ततथायहविचारै जोथोडाभोजनकीएं भोजनमिष्टरससहितमिलैगा
ऐसेअतिप्रायसैंऊनोदरतपकरैतोताकेनिफलहैं॥यहतपमांहीपायेजैहैं॥
छ॥आगैंवृतिपरिसंख्यानतपकूंकहैहैं॥छ॥गाथा॥एगादिगिहपमाणं॥किच्चा
भिग्गहमप्पगिप्पियं चिरसं॥जोजंपसुद्धभुंजइ॥विहिपमाणंतवोतस्स॥१४४॥अर्थ
जोमुनिआहारकूंउतरै॥तबयहलैमनमेंऐसीमर्यादकरिचालै॥जोआजि
एकहीघरमहितैंमिलैगातोआहारलेवैंगे॥नोतरिफिरिआवैंगे॥तथादो
यघरताईजायगे॥तथातीनघरताईजायगे॥ऐसैंमर्यादकरै॥तथाएकर
सताकीमर्यादकरैं॥तथादेनेवालाकीमर्यादकरैं॥तथापात्रकीमर्यादकरैं॥
ऐसेआहारऐसीरीतिऐसेपात्रमेंलेकरिदेगातोलेवैंगे॥तथाआहारए

की मर्यादकरे सरसतथानिरसतथाफलाएगं॥प्रेन्तप्रिलागातोलेवैगे॥इत्या
दिवृत्तिकीसंख्यागणनामर्यादामनमेंविचारिचालेतैसेंही मिले तोले अ
न्यथानले॥वहुरिआहारलेतवसूकहिएगऊआदिकीज्योंकरे॥जैसेंगऊड
तउतदेषेनोही॥चरनेहीकीतरफदेषे॥तैसेंलेनिसकेवृत्तिपरिसंख्यानतपहे
॥ब॥भावार्थ॥भोजनकीआसाकानिरासकरनेकूंयहतपहे॥संकल्पमाफिकवि
धिमिलनांदेवयोगहैं॥यहवड़ाकठिनतपहे॥महामुनिकरेहैं॥ब॥आगेरस
परित्यागतपकूंकहेहैं॥गाथा॥संसारदुःखक्षयार्थे॥विसमंविसएविचिंतमा
णो जो॥णीरसभोजुंजइ॥रसचायतस्ससुविसुद्धो॥१४५॥अर्थ॥जोमुनिसं
सारदुःखसंतप्तायमानहूवा॥ऐसेंविचारकरतारहे॥जोएइंद्रियनिकेवि
षयहैंतेविसमारिषेरे॥विषमाएंएकवारमेरेहे॥विषयसेयेंवहुतजन्ममर १७५

एहोयहै॥ऐसाविचारिनीरसभोजनकरैहै॥ताकेरसपरित्यागतपनिर्मलहोयहै॥ब
भावार्थ॥रसछहप्रकारकहेहैं॥घृत॥तेल॥दधि॥मिष्ट॥लवण॥दुग्ध॥ऐसें॥वहुरि॥मा
ठ॥मीठा॥कडुवा॥तीषा॥एनीरसकहाहै॥तिनिकाजैसेयिछाहोयजैसेंत्यागकरे
एकहीरसछोडै॥तथाहोयछोडै॥सर्वहीछोडै॥ऐसेंरसपरित्यागतपहोयहैं॥इहां
कोईपूछैरसत्यागकूंकोईजाणैंनांहीमनमेंत्यागकरैतोवृत्तिपरिसंख्यानहैया
मैंवामैंनामेंकहाविसेष॥ताकासमाधान॥वृत्तिपरिसंख्यानमेंतौअनेकरीतिव
त्तिकीसंख्याहै॥इहांरसहीकात्यागहैंमहाविसेषहै॥वहुरिमहाविरोधभीहैं जोरस
परित्यागतोवहुतदिनकाभीहोय॥ताकूंश्रावकजाणिभीजाय॥अरवृत्तिपरिसं
ख्यानवहुतदिनकाहोयनांही॥ब॥आगैंविविक्तसय्यासनतपकूंकहैहैं॥ब॥गाथा॥
जोरायदोसहेऊ॥आसण्णंजाइयंपरिच्चयई॥अप्पाणिचिमयसया॥तस्सतवोपं

चमोपरमो ॥१४६॥ नाथा ॥ जोमुनिरागद्वेषकेकारणनेआसनअरसय्याइनआदिककूंछो
डेवकुरिसदाअपनेआत्मस्वरूपविषेंवसे अरनिर्विषयकरिएइंद्रियनिकेविषय
नितेंविरक्तहोयतिसमुनिकेपंचमांतपविविक्तसय्यासनउत्कृष्टहोया ॥ नावार्थ ॥ आसन
कहिएबैठनेकेस्थानक ॥ अरसय्याकहिएसोवनेकास्थानक आदिसहितैंमलमूत्रादि
कक्षेपनेकास्थानक ऐसाहोयजहांरागद्वेषनउपजे ॥ अरवीतरागतावधैसैसाएकां
तस्थानकहोयतहांवैठेसोवैजातैं मुनिनिकूं अपनास्वरूपसाधनोहैं इंद्रियवि
षैसेवनेनांहीहैं तातैंएकांतस्थानकहैरे ॥ व ॥ पुनः ॥ गाथा ॥ पूजादिसुनिरवेरकोसंसा
रसरीरजोगणिव्विण्णो ॥ अभंतरतवकुसलोउवसमसीलोमहासत्तो ॥१४७॥ जोणिव
सेदिमसाणे ॥ वणगहणेणिज्झणे महाभीमेअलवणिए अंते तस्सविएदंतवंहोदि
॥१४८॥ नाथा ॥ जोमहामुनिपूजाआदिविषैतोनिरपेक्षहै अपनीपूजामहिमादिक १७५

नांहीचाहैहै ॥ वकुरिसंसारदेहभोगसंविरक्तहै ॥ वकुरिस्वाध्यायध्यानआदिजेअंतरंग
तपतिनिविषैंप्रवीणहैध्यानाध्ययनकानिरंतरअभ्यासरावैहै ॥ वकुरिउपसमशी
लकहिएमंदकषायरूपशांतपरिणामहीहैस्वभावजाका ॥ वकुरिमहापराक्रमीहै
क्षमादिपरिणामयुक्तहै ॥ व ॥ ऐसामहामुनिमसाणभूमिविषैंतथागहनवनविषैं
तहांजहांलोकनआवतैं ऐसानिर्जनस्थानविषैं तथामहाभयानकउद्यानविषैंता
थाअन्यभी ऐसाएकांतस्थानकविषैंजोवसैताकैनिश्चयएकविविक्तसय्यासनत
पहोयहै ॥ नावार्थ महामुनिविविक्तसय्यासनतपकरैहैं सोअैसैएकांतस्थानकमैं
सोवैवैठैहैं जहांचित्तकूंक्षोभकेकारनहोरकछुनीपदार्थनहोय ऐसासूनेघरणि
रिकीगुफाबृक्षकेमूलतथास्वयमेवप्रदत्तनिर्दोषउद्यानमैंवसतिकादिकहैवमै
हिरतथामसाणभूमिइत्यादिकएकांतस्थानकतहांध्यानाध्ययनकरैहैं जातैंहै ह

तैं तौ निर्ममत्व है। विषयनितैं विरक्त है। अपने आत्मस्वरूप विषैं अनुरक्त है। सो मुनि विविक्त सय्यासंयुक्त है। ब। आगैं काय क्लेश तप कूं कहैं हैं। गा था। दुस्सहउवस गजई। आतावणसीयवायरिमोवि। जोण विरवेइगवरि। कायकिलेसो तितव स्स। २५०। अर्थ। जो मुनि दुस्सह उपसर्ग का जीतन हारा आतप सीत वात करि पीडित होय तो ऊ खेद कूं प्राप्त न होय। चित्त में क्षोभ कूं स न उपजै। ति स मुनि के काय क्लेश नामा तप होय है। ब। भावार्थ। महा मुनि ग्रीष्म काल में तो पर्वत के सिखर आदि विषैं महा सूर्य के किरण नि का अति तप्त आताप होय। तले जमीं सिला आदि क तप्त भाय मां न होय। तहां आतापन योग धारै हैं। बहुरि शीत काल में नदी आदि के तट विषैं चौडे जहां अति शीत पडै। शहा तैं हस्ती दाहै जाय तहां मडे रहैं। बहुरि चतुर्मास में वर्षा वरसै पवन चालै। देस में मसक काटै। ऐसे समै हस्त के तले योग धारै हैं। त

था अनेक विकट आसन करै हैं। ऐसें अनेक काय क्लेश के कारण मिलावै हैं। अर साम्य भावतैं चिगै नांही हैं। जातैं अनेक प्रकार के उपसर्ग जीतन हारे हैं। तातैं चित्त विषैं जिनके खेद नांही उपजै है। अपने स्वरूप के ध्यान में लगे रहैं हैं। तिनि के काय क्लेश नामा तप होय है। जिनि के काय तथा इंद्रिय नि सम मल होय हैं। तिनि के चित्त क्षोभ न होय है। ए मुनि सर्व तैं निस्पृह वर्तै हैं। तिनि के काहू का भेद होय। ब। ऐसे छह प्रकार बाह्य तप का निरूपण कीया। ब। आगैं छह प्रकार अंतरंग तप का व्याख्यान करै हैं। तहां प्रथम प्रायश्चित तप कूं कहै हैं। ब। गाथा। दोसंण करे हिसयं अ णेपिण कारणेहि जातिविहं। कुव्वाणेपिण इच्छदि। तस्सविसोही परा होदि। २५०। ब। गाथा। जो मुनि आपो घन करै। अन्य पासि दोष न करावै। दोष करतां होय तां कूं इष्ट न जाणै। तिस के उत्कृष्ट विशुद्धि होय है। ब। गाथा। इहं विशुद्धि नोम भाय

श्चित्त कहै। जातैं प्रायः सहज करि तौ उत्कृष्ट चारित्र काय रहणे हैं। ऐसा चारित्र जाके होय सो प्राय कहिए। साधु लोक ताका चित्त जिस कार्य विषैं होय सो प्रायश्चित्त कहिए। सो आत्मा के विशुद्ध करै सो प्रायश्चित्त है। बहुरि इस्या ऐसा नीका अर्थ है जो प्रायः नाम अपराध का है। ताका चित्त कहिए शुद्ध करना सो भी प्रायश्चित्त कहिए। ऐसे पूर्वोक्त अपराध तैं जाते शुद्धता होय सो प्रायश्चित्त है। ऐसे जो मुनि मन वचन काय कृत कारित अनुमोदना करि दोषन लागै वो ताके उत्कृष्ट विशुद्धता होय। यही प्रायश्चित नाम मंत्र पद है। ब। केरि कहिए है। गाथा। अट्ठविहं कम्मादो। णयरो सो जहिए दितं विणयडेहि। णिद्दोस सारु मूले। दसदोस विवज्जिदो होदु। ब।१५१। अर्थ। अथवा कोई प्रकार प्रमाद करि अपने चारित्र मैं दोष आया होय तो ताकूं निर्दोष जैसा धर्माचार्य तिनिके निकट दस दोष वर्जित होय करि प्रगट करै आलो

चना करै। ब। भावार्थ। अपने चारित्र मैं दोष प्रमाद करि लाग्या होय तो। आचार्य पास जाय करि दस दोष वर्जित आलोचना करै। ते प्रमाद तो इंद्रिय निद्रा कषाय विकथा ऐसे पांच है तिनिके पंद्रह भेद है। नैगमनै की अपेक्षा बहुत भेद होय है तिनिकरि दोष लागै है। बहुरि आलोचना के दस दोष है तिनिके नाम। आकंपिता। अनुमान्य तद्दृष्ट। बादर। सूक्ष्म। छन्न। शब्दाकुलित। बहुजन। अव्यक्त। तत्सेवी। ए दस दोष है। तिनिका अर्थ ऐसा। जो आचार्य कूं उपकरण दिए करि आपकी करुणा उपजाय आलोचना करै। जो ऐसें कीए प्रायश्चित्त थोरा देसी। ऐसा विचारै यह आकंपित दोष है। बहुरि वचन दीनकरि आचार्य निकी चटाई आदि करि आलोचना करै। अभिप्राय ऐसा या है। जो आचार्य मोसूं प्रसन्न रहै तो प्रायश्चित्त थोरा दे। ऐसैं अनुमान्य नाम दोष है। बहुरि यत्पक्ष दृष्ट दोष होय सो कहै हैं। अवगुण करै सो दृष्ट दोष है। बहुरि

DR BHAU DAJI MEMORIAL

जो स्थूल बडा दोष तो करे सूक्ष्म न करैं सो बादर दोष ही करैं बा
दर न करैं। यह जनावे या नैं सूक्ष्म ही करी या सो बादर काहे कूं छिपावै गा। सो सू
क्म दोष हैं। बहुरि छिपाय करि ही करै कोई अन्य नैं प्रगट न दोष कह्या है तब करै
ऐसा ही दोष मो कूं लाग्या है। ताका नाम प्रगट न करै सो प्रच्छन्न दोष है। बहुरि बहु
तर दोषां कौं को लाहल विषै दोष करै। अभिप्राय ऐसा कोई और न सुनै तहां ऐसा
कुलिंग दोष है। बहुरि गुरु पासि आलोचना करै प्रायश्चित लीया दे विकरि ति
स समान आप कूं दोष लाग्या होय ताकौं फेरि अन्य गुरु पासि आलोचना करै।
अभिप्राय ऐसा जो या का प्रायश्चित दे यैं अन्य गुरु कहावता वै। ऐसैं बहु जना
नां मांहि दोष है। बहुरि जो दोष जाकै होय सो करै। अभिप्राय ऐसा जो पर छिपा
या छिपेनां ही। कहा ही चाहिए। बहुरि अन्य मुनि नैं लाग्या दोष की गुरु पासि आ १७८

लोचना करि प्रायश्चित्त लीया दे विकरि तिस समान आप कूं दोष लाग्या होय तानै
आलोचना गुरु पासि न करै। आप ही प्रायश्चित्त लेवै। अभिप्राय दोष प्रगट करना
का न होय सो तत्सेवी दोष है। ऐसे सदोष रहित सरल चित्त होय बालक की
ज्यों आलोचना करै। बालक कैसा कहै है। गाथा। जेकिं पि तेण दिट्ठं। तं सव्वं सो करेइ स
ल्लेण। णो पुणहियएसे का दिकिंयो वंकिं सुबहुवं य। २५। भावार्थ। दोष की आलोच
ना करे यो चाहै जो कोई आचार्य प्रायश्चित दीया सो थोडा है कि बहुत है। बा। भावार्थ। प्राय
श्चित के तत्वार्थ सूत्र मैं नव भेद कहे हैं। आलोचन। प्रतिक्रमण। तदुभय। विवेक।
व्युत्सर्ग। तप। छेद। परिहार। उपस्थापना। तहां आलोचना तो दोष कायथावत क
हना। प्रतिक्रमण दोष का मिथ्या तक करावना। तदुभय आलोचन प्रतिक्रमण दो
ऊ करावना। विवेक आगामी त्याग करावना। व्युत्सर्ग काय उत्सर्ग करावना। तप

करावनां॥छेदकहिए दिक्षा छेदनां॥बकुतदिनका दिक्षाकूं थोडादिनका करनां॥परि
हारसंयवासकरनां॥उपस्थापनांकेरिनवासिरथेदिक्षादेनां॥ऐसैंनवहैंइनिके
भीअनेकभेदहैं॥तहांदेशाकाल॥अवस्थासामर्थ्य॥इत्यादिकाविधानदेखियथावि
धिआचार्यप्रायश्चित्तदेहैं॥ताकीअद्धाकरिअंगीकारकरै तामैंसंसयनकरै॥ब॥
केरिकहैहैं॥गाथा॥पुणरविकालंलिद्धिं तंदोसंजइविजायसयखंडं॥एवंलिद्ध
यसहिदो॥पायछित्तंतत्वोहोदि॥१५३॥अर्थ॥लाग्यादोषकाप्रायश्चित्तलेकरितिस
दोषकूंकीयानचाहै॥जोआपकासतखंडभीहोयतोनकरै॥ऐसेनिश्चयसहितप्रा
यश्चित्तनामतपहोयहैं॥ब॥नाना॥ऐसादिढचित्तकरै॥जोलाग्यादोषकूंकेरिअप
नांशरीरकेसतखंडहोयजायतोभीसोदोषनलगावै॥सोप्रायश्चित्ततपहैं॥ब॥करि
कहैहैं॥ब॥गाथा॥जोचिंतइअप्पाणं॥णाणसरूवंपुणोपुणो॥णाणीविकहादिवि १०७

रत्तमाणो॥पायछित्तंवरंतस्स॥१५४॥गाथा॥जोज्ञानीमुनिआत्माकूं ज्ञानस्वरूपके
रिकेरिचारवारचितवनकरै॥बकुरिविकथादिकप्रमादनितैंविरक्तरूवासेतार
ज्ञानहीकूंनिरंतरसेवैताकेश्रेष्ठप्रायश्चित्तहोय॥ब॥आचार्य॥निश्चयप्रायश्चित्तयह
है॥जामैंसर्वप्रायश्चित्तकेभेदगर्भितहैं॥जोप्रमादतैंरहितहोय॥अपनाशुद्धज्ञा
नस्वरूपआत्माकाध्यानकरनां॥यातैंसर्वपापनिकाप्रलयहोयहैं॥ऐसैंप्राय
श्चित्तनामंभअभ्यंतरतपकाभेदकह्या॥ब॥आगैंविनयतपकूंगाथातीनकरि
हैहैं॥ब॥गाथा॥विणओपंचपयारो॥देसणणाणेतहाचरित्तेय॥वारसभेयमितवे
उवयारोवकुविहोएक्क॥१५५॥अर्थ॥विनयपांचप्रकारहै॥दर्शनविषैज्ञानविषै
तथाचारित्रविषैबारहभेदरूपतपविषैं॥अरुउपचारविनयसोयकुवकुतप्र
कारकरिजानना॥ब॥पुनः॥गाथा॥देसणणाणचरित्ते॥सुविसुद्धोजोहवेइपरिणामो

वारसनेरेवितवेसोविणयविणहवेतेसिं॥१५६॥ना॰ दर्शनज्ञानचारित्रसनिविषैंव
रुरिवारहनेदरूपतपकेविषैं जोविनुहपरिणमहोयसोही तिनिकाविनयहैं॥ब
नी॰ सम्यग्दर्शनकेशंकादिकअतीचाररहितपरिणमसोदर्शनकाविनयहैं॥
वरुरिज्ञानकासंशयादिकरहितपरिणमनअभ्यासकरनोसोज्ञानकावि
नयहैं॥वरुरिचारित्रकूंअहिंसादिकपरिणमकरिअतीचाररहितपालनोसोचा
रित्रकाविनयहैं॥वरुरितेसैंही तपकेभेदनिकूंनिर्दोषपालनेसोतपकाविनयहैं॥ब
॥सुन॥॥गाथा॥रयणत्तयजुत्ताणं॥अणुकूलंजोचरेहिभत्तीए॥सिक्खोजहरायाणं॥उव
यारोसोहवेविणओ॥१५७॥अर्थ॥जोरत्नत्रयसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकाधारकमु
निनिकेभक्तिकरिअनुकूलआचरणकरैतैसैराजाकेचाकरराजाकेअनुकूलप्र
वर्तैहैं॥तैसैं साधुनिकेअनुकूलप्रवर्तैसोउपचारविनयहैं॥ब॥भावा॰॥जैसैंराजाके १८॥

चाकरकिंकरलोकराजाकेअनुकूलप्रवर्तैहैं॥ताकीआज्ञामांनैंकुकमहोयसोकरै
तथाउत्पत्तदेखिउठिखडाहोयसनमुखहोयहाथजोरै॥अणमकरैचालेतबपीछैहोयचालै॥ता
केपोसामग्रीदिउपकरणसंवारै॥तैसैंही मुनिनिका॥तक मुनिनिकाविनयकरैं॥तिनिकी
आज्ञामांनैं॥उत्पत्तदेखैतबउठै॥सनमुखहोयहाथजोरै॥अणमकरैचालेतबपीछैहोयच ७
लै॥उपकरणसंवारै॥इत्यादिकतिनिकाविनयकरै॥सोउपचारविनयहैं॥ब॥अबैवैया
वृत्यतपकूंहोयगाथाकरिकहैहैं॥ब॥गाथा॥जोउग्गयरहिभत्तीए॥उवसगाजराइखीए
कायाए॥पूजादिसुनिरवेक्खं॥विज्जावच्चंतवेरतस्स॥१५८॥नाथार्थ॥जोमुनियतीउप
सर्गकरियाहितहोयतिनिकातथाजरारोगादिकरिहीणकायहोयतिनिकाअपनीका
यचेष्टातैंतथाउपदेसतैं॥तथाअन्यवस्तूतैंउपकारकरैंताकेसवैयावृत्यनामांतपहो
यहैं॥सोकैसैंकरै॥आपअपनेपूजादिमांनादिविषैंअपेक्षावांछातैंरहितजैसैंहो

यतैसैकरै॥ ना॰ निस्यदूरुवा मुनिनिकी चाकरीकरैसोवैयावृत्यहै॥तहां आचार्यउपाध्या
यतपस्वी रोगग्लानगणकुलसंघ साधुमनोज्ञएहसप्रकारकेयतीवैयावृत्तियोग्यकरैहैं
तिमिकायथायोग्यअपनीसक्तिसारूवैयावृत्यकरै॥ब॥ पुनः॥गा॰॥जोवावरइससूवे समा
दमभावम्मिसुद्धिउवजुत्तो लोयविवहारविरदो॥वेज्जावच्चेपरंतस्स॥१५९॥ अर्थ॥ जो मु
निसमदमभावस्सजोअपनो आत्मस्वरूपताविषैंसुद्धउपयोगकरियुक्तहूवाप्रवर्तै
अरलोकव्यवहारवाह्यवैयावृत्यसूविरक्तहोयताकैउत्कृष्टनिश्चयवैयावृत्यहोयहै॥ब॥
॥नाथा॰॥जोमुनिसमकहिएरागद्वेषरहितसाम्यभावधरिदृढकहिएइंद्रियनिकूंविषयनि
विषैंनजानेदेनां॥ऐसाजोअपनां आत्मस्वरूपताविषैंलीनहोयताकैलोकव्यवहारू
पवाह्यवैयावृत्यकाहेकूंहोय॥ताकैनिश्चयवैयावृत्यहीहोयहैं॥सुद्धोपयोगीमुनिनिकी
इहरीतिहैं॥ब॥आगैंस्वाध्यायतपकूंछहगाथानिकरिकहैहैं॥ब॥गा॰॥परमतीनिरवे १८२

रको॥इंछविय्पाएणएणसएणसमणो॥नच्चवेणिच्चयेइ॥सम्मोईजाएसिद्धियरो॥१६०॥
॥नाथार्थ॥जोमुनिपरकीनिंदाविषैंनिरपेक्षहोय॥वांछारहितहोयहैं॥वक्रुरिद्धिसिद्धिनमनकेषो
टेविकल्पतिनिकेनाशकरनेंकूंसमर्थहोयताकैतत्वकानिश्चयकरनेंकाकारण॥अरभ ७
नकीसिद्धिकरनेंवालास्वाध्यायतपहोयहैं॥ब॥नाथार्थ॥जोपरकीनिंदाकरनेविषैंपरिण
मरावैं॥अरआर्तरौद्रध्यानरूपखोटेविकल्पमनमैंचिंतवनकीयाकरै॥ताकैशास्त्र
निकाअभ्यासरूपस्वाध्यायकैसैंहोय॥तातैंतिनिकूंछोडिजोस्वाध्यायकरै॥ताकैत
त्वकानिश्चयहोय॥अरधर्मशुक्लध्यानकीसिद्धिहोय॥ऐसास्वाध्यायतपहै॥ब॥
पुनः॥गाथा॥पूयादिसुनिरवेक्खो॥जिणसत्थंजोपढेइभत्तीए॥कम्ममलसोहणट्ठं॥
सुयलाहोसुहयरोतस्स॥१६१॥नाथार्थ॥जोमुनिअपनीपूजामहिमाआदिविषैंतो
निरपेक्षहोय॥वांछारहितहोय॥अरभक्तिकरिजिनशास्त्रनैंपढै॥वक्रुसिकर्ममल

केसोधनेकेअर्थिपढे ताकेश्रुतकालाभसुखकारीहोय॥ भावार्थ॥जोपूजालाभहिकेअर्थिसास्त्रकूंपढेहै ताकेशास्त्रकापढनोसुखकारीनोंही॥अपनेकर्मक्षयकेनिमित्त जिनशास्त्रनिहीकोंपढे ताकेसुखकारीहै॥ब॥पुनः॥गाथा॥ जोजिणसत्थसेवदि॥पंडियमाणीफलंसमीहंतो॥साहम्मियपडिकूलो॥संबंधिविसंहवेतस्स॥१६२॥भावार्थ॥जोपुरुषजिनसास्त्रतोपढेहै॥अरआपकेपूजालाभसत्कारकूंचाहेहै॥अरसाधर्मीसम्यग्दृष्टीजैनीजननिसैंप्रतिकूलहैसोपंडितमान्यहै॥पंडिततौनांही अरआपकूंपंडितमानैं॥ताकूंपंडितमेंन्यकहिएसोऐसाकैसोसास्त्रहीविषरूपपरिणमैहै॥ग॥भावार्थ॥जैनशास्त्रमींपढिकरितीव्रकषायीभोगनिलाभी होयतौजैनीनिसैं प्रतिकूलहैरसोऐसा पंडितमान्यकैशास्त्रहीविषभया॥शास्त्रभयाकहिए॥जोवहमुनिनींहोयतौभेषीपाषंडीहीकहिए॥घ॥पुनः॥गाथा॥जोजुत्तकामसत्तोरायाहोसेहिंपरिणदोपढई॥लोयावंचणहेदुंसोसुत्तविणिष्फलोतस्स॥१६३॥ अ

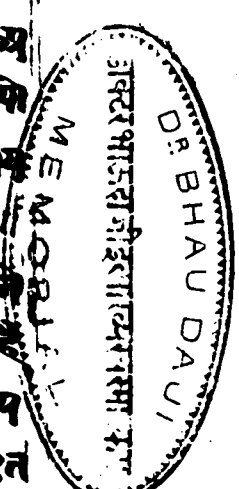

जोपुरुषयुद्धकेशास्त्रकामकथाकेशास्त्ररागद्वेषरूपपरिणमकरिलोकनिकूंरंजमनेकेअर्थिपढेहै ताकेस्वाध्यायनिःफलहोहै॥ घ॥भावार्थ॥जोपुरुषयुद्धकेकामकतूहलकेमंत्रजोतिषवैद्यकज्यादिलौकिककोंशास्त्रलोकनिकूंरंजमनेकूंपढेहै॥ताकेकाहेकास्वाध्यायहै॥तहांकोईपूछैमुनिपंडितौसर्वेहीसास्त्रपढेहैं तेकाहेकूंपढेहैं॥ताकासमाधानजोरागद्वेषकरिइन्द्रियविषयआजीविकापोषनेकूंलोकनिकूंरंजमनेकूंपढे ताकानिषेधहै॥बहुरिजोधर्मबुद्धीहूवाकछूप्रयोजनजानिशास्त्रनिकूंनीपढे ताकानिषेधहैनांही॥ज्ञानवदावनांपरकाजपकारकरनेंपुण्यपापकाविशेषनिर्णयकरणेंस्वरूपमतकीचरचाजाननांपंडितहोयतौधर्मकाप्रभावनांहोनां॥जोजैनमतमैंऐसेपंडितहैं॥इत्यादिकप्रयोजनहैहुएभलेभिप्रायतैंपढे ताकानिषेधहै॥ब॥गाथा॥जोअप्पाणंजाणदि॥असुइसरीरादुतच्चदोभिण्णं॥जाणगरूवसरूवं॥सोसव्वं जाणदेसव्वं॥८॥

॥दूहा॥ अर्थ॥ जो मुनि अपनें आत्मा कूं इस अपवित्र शरीरतैं निश्चयतैं भिन्न मुद्रउपयोग रूप होय जाणैहै॥ सो सर्वही शास्त्र जाणैहै॥ अपनें स्वरूप न जान्यां अर बहुत शास्त्र पढे तौ कहा साध्यहैं॥ ब॥ पुनः॥ गा॥ था॥ जो ण विजाणदि अप्पं॥ णाणसरूवं सरीरदो भिण्णं॥ सो ण विजाणदि सत्थं॥ आगम पाढं कुणंतो वि॥ १६५॥ अर्थ॥ जो मुनि अपनें आत्मा कूं ज्ञानस्वरूप सरीरतैं भिन्न नांही जाणैहैं॥ सो आगम का पाठ करैहै तौ शास्त्र कूं नांही जाणैहैं॥ ब॥ भावार्थ॥ जो मुनि शरीरतैं भिन्न ज्ञानस्वरूप आत्मा कूं नाहीं जानैहै॥ तौ बहुत शास्त्र पढैहै॥ तौ कछु विनां पढ्यां ही है॥ शास्त्र का पढनें का सार तौ अपनां स्वरूप जानि रागद्वेषतैं रहित रहो नांथा सो पढि करि भी ऐसा न भया तौ काहे का पढ्या॥ अपनां स्वरूप जानि ताविषैं स्थिर रहो नां निश्चय स्वाध्याय तप है॥ वाचना॥ प्रच्छना॥ अनुप्रेक्षा॥ आम्नाय॥ धर्मोपदेश॥ ऐसैं पांच प्रकार व्यवहार स्वाध्याय है॥ सो यह व्यव

हार निश्चय के अर्थि होय सो व्यवहार भी सत्यार्थ है॥ विनां निश्चय व्यवहार थोथा हैं॥ ब॥ आगैं व्युत्सर्ग तप कूं कहैहैं॥ ब॥ गा॥ जत्तमत्तलित्तगतो॥ दुस्सहवाहीसुणिप्पडीयारो॥ मुहधोवणादिविरओ॥ णायणसेज्जादिणिरवेक्खो॥ १६६॥ ससरूवचिंतणरओ॥ दुज्झाणपणासणो जोगो॥ देहे विणिम्ममत्तो॥ काउस्सग्गो तवो तस्स॥ १६७॥ अर्थ॥ जो मुनि जत्तकहिए पसेव अरमलतिनिकरि लिप्त तो शरीर होय॥ बहुरि स्नान न जाय ऐसा भी तीव्र रोग आवै ताके प्रतीकार न करै॥ इलाज न करै॥ मुखका धोवणां आदि शरीर का संस्कार न करै॥ जो मन अर सेज्या आदिकी वांछा न करै॥ ब॥ बहुरि अपनें स्वरूप चिंतवन विषैं रत होय लीन होय॥ बहुरि जो दुर्जन सुजन विषैं मध्यस्थ होय॥ सबु मित्रवर्ग जानैं॥ बहुत कहा कहिए॥ देह विषैं भी ममत्व रहित होय ताके कायोत्सर्ग नाम तप होय है॥ ब॥ नाम अर्थ॥ मुनि का योत्सर्ग करैहै तब सर्व बाह्य अभ्यंतर परिग्रह

त्यागकरिसर्ववाह्याहारविहारादिकक्रियासूंरहितहोय।कायसूंममत्वछोडिअ
पनोज्ञानस्वरूपआत्माविषैरागद्वेषरहितशुद्धोपयोगरूपहोयलीनहोयहैंतिस
कालजोकोअनेकउपसर्गआवै।रोगआवै।कोईशरीरकूंविनाशकाढिडारै।स्वरू
पतेंचिगैनांहीहैं।काहूसूंरागद्वेषनांहीउपजावैहैं।ताकेकायोत्सर्गतपहोयहै।ब।
।गाथा।जोदेहपाखणपरो।उवयरणादीविसेससंसत्तो।वाहिरववहारउज्जो।काउस
ग्गोकुदोतस्स।१६८।अर्थ।जोमुनिदेहकेपालनेविषैतत्परहोय।उपकरणआदि
कविषैविशेषसंसक्तहोय।वहुरिवाह्यववहारलोकरंजनकरनेविषैंरतहोयता
कैकायोत्सर्गतपकाहेकूंतैंहोय।ब।भावार्थ।जोमुनिवाह्यववहारपूजाप्रतिष्ठा
दितथाआंहिंईर्यासमितिआदिक्रियातालूंलोकजानैयहमुनिहैंऐसीक्रिया
मैंतत्परहोयअरदेहकाआहारादिकतैंपालनांउपकरणादिककाविशेषसंचार १०५

नां शिष्यजनादिकतैंवहुतममत्वरागविषसन्नहोनांइत्यादिकमैंलीनहोयअरआ
पनोस्वरूपकायथार्थसंचारजाकैनांहीतामैंकबहूलीनहोयहीनांही।कायोत्स
र्गनीकरैतोखडारहनांआदिवासविधानकरिलेतोताकैकायोत्सर्गतपनहोय।नि
श्चयविनांवाह्यववहारनिरर्थकहै।ब।आगैंध्यानतपकूंकहैहैं।ब।गाथा।अंतोम
हुत्तमेत्तं।लीणंवत्थुम्हिमाणसंएणं।झाणंभणईसमए।असुहंचसुहंचतंदुवि
हं।१६९।अर्थ।जोमनसंवेधीज्ञानवस्तुविषैअंतमहूर्त्तमात्रलीनहोय।एकाग्रहो
य।सोसिद्धांतविषैंध्यानकह्याहैं।सोशुभअरअशुभऐसैंदोयप्रकारकह्याहैं।ब
।भावार्थ।ध्यानपरमार्थतैंज्ञानकाउपयोगहीहैं।जोज्ञानकाउपयोगएकज्ञेयवस्तूमैं
अंतर्महूर्त्तमात्रएकाग्रवाहरैसोध्यानहै।सोशुभअरअशुभहीहैं।अरअशुभहीहैं।ऐसैंदोयप्र
कारहैं।ब।आगैंशुभअशुभध्यानकेनामस्वरूपकहैहैं।ब।असुहंनैंअहरउद्दं

धर्मसुक्लचसुहपरहोहि॥ अहंतिव्वसोकेयं॥तिव्वतमकसायदोरुद्द॥१७॥भावार्थ॥ आर्तध्यानरौद्रध्यानएदोकृतौ असुभध्यानहैं॥वहुरिधर्मध्यान अरसुक्लध्यान एदोऊशुभअरशुभतरहै॥तिनिमैं आर्तिका आर्तध्यानतौतीव्रकषायतैंहोयहै आररौद्रध्यान अतितीव्रकषायतैंहोयहैं॥ब॥वहुरिगाथा॥ मेरुकषायेधम्मं॥मंदतमकसायदोहवेसुक्कं॥अकसायेविसुयहु॥केवलणाणेचित्तंहोहि॥१७१॥भावार्थ॥ धर्मध्यानहै सोमंदकषायहोतैंहोयहैं॥अरकसायकर्म्मावजएं अरतज्ञानीउपसांतकषायक्षीणकषाय॥तथाकेवलज्ञानीसयोगी अयोगीजिनकेभीकहिएहै॥भावार्थ॥ धर्मध्यानतौव्यक्तरागसहितपंचपरमेष्ठीतथादेवलक्षणस्वरूपधर्मतथाआत्मस्वरूपविषैंउपयोगएकाग्रहोयहैं॥तातैंयाकूं मंदकषायसहितहै॥ऐसाकह्याहैं॥वहुरिशुक्लध्यानहैंसोउपयोगमैंव्यक्तरागतौनांही॥अरअपनेअनुभवमैंन आवै १०५

ऐसासूक्ष्मरागसहितश्रेणी चढैहैं॥तहांआत्मपरिणामउज्ज्वलहोयहैं॥यातैंशुद्धिगुणकेयोगतैंशुक्लकह्याहै॥ताकूं मंदतमकषायकहिए॥अतिसयकरिमंदकषायतैंहोयहैं ऐसाकह्याहै॥तथाकषायकेअभावजएं क्षीणकह्याहै॥ब॥आगैंआर्तरौद्रध्यानकूंकहैहै॥ब॥गा॥डरकयरविसयजोए॥केमयमंचयदिईरि॥विचिंतसो॥चहरि जोविविरिकतो॥अहसाणंहचेतस्स॥१७२॥मणहरविसयवियोगे॥करसंपावेमिथिरिवियप्पोजो॥संतावेणपवट्टो॥सोचिय अट्टंहवेझाणं॥१७३॥भावार्थ॥जोपुरुषडरकारीविषयकासंयोगहोतैं ऐसाचिंतवन करै॥जोयहमेरैकैसैंरहोय॥वहुरितिसकेसंयोगतैंचित्तमैंचिंतनयासेंताचेष्टाकरैरुदनादिकरै॥तिसकेआर्तध्यानहोयहैं॥ब॥वहुरिजोमनोहरप्यारीविषयसामग्रीकावियोगहोतैंऐसाचिंतवन करैजोताहिमैंकैसैंपाऊं॥तिसकेवियोगतैंसंतापरूपदुःखस्वरूपपरिणतीसोभी

आर्तध्यानहै॥ छ॥ भावार्थ॥ आर्तध्यानसामान्यतौ दुःखकेउपजूसपरिणामहै॥ तिसदुःखमैं लीनरहै॥ अन्यकिछूचेतरहैनांही ताकूंहोयप्रकारकरिकह्या॥ प्रथमतौ दुःखकारी सामग्रीकासंयोगहोय॥ ताकूंदूरिकरनेकाध्यानकरैहै॥ इसराइष्टसुखकारीसा मग्रीकावियोगहोयताकेमिलावनेकाचितवनध्यानहैसो आर्तध्यानहैं॥ अन्यग्रंथ निमैंचारिभेदकरैहैं॥ इष्टवियोगकाचितवन॥ अनिष्टसंयोगकाचितवन॥ पीडा काचितवन॥ निदानबंधकाचितवनसोइहोदोयकहे॥ तिनिमैंही॥ अंतर्मुहूर्तमएक अनिष्टसंयोगकेदूरिकरनेमैंतौपीडाचितवनआयगया॥ अरइष्टकेमिलावनेकी वाछामैंनिदानबंधआयगया॥ यहुध्यानअसुभहैपापबंधकूंकरैहै॥ धर्मात्मापुरु षनिकेत्यजनेयोग्यहैं॥ छ॥ आगैरौद्रध्यानकूंकरैहै॥ गा॥ हिंसानंदेएजुदो॥ असच्च वयणेएपरिणदो जोदु॥ तच्चेवअथिरचित्तो॥ रुद्दज्झाणंहवेतस्स॥ २७॥ अर्थ॥ जो

पुरुषहिंसाविषैआनंदकरिसंयुक्तहोय॥ बहुरिअसत्यवचनकरिपरिणमतारहै तहांहीविक्षप्तचित्तरहैं॥ तिसकैरुद्रध्यानहोयहैं॥ छ॥ भावार्थ॥ हिंसा जोजीवमिका यातातिसकूंकरिअतिहर्षमानैंमिकारआदिमैंआनंदरूंपवर्तै॥ परकेविघ्नहो यतवअतिसंतुष्टहोय॥ बहुरिझूठबोलिकरिअपणंजचीएपणंमानैं॥ परके दोषनिकूंनिरंतरदेखकरै॥ तामैंआनंदमानैं॥ ऐसेएहोयनिदरौद्रध्यानकेकहे॥ छ॥ आगैंहोयनिदरौद्रकरैहैं॥ गा॥ २८॥ परविसयहरणसीलो॥ सगीयविसएसुरक णेवरको॥ तग्गयचित्तोविण्णेयरंतरंतंविरुहंपि॥ २७५॥ अर्थ॥ जोपुरुषपरकेविषय सामग्रीकूंहरणेंकास्वभावसहितहोय बहुरिअपनीविषयसामग्रीकीरक्षाकर णंविषैप्रवीणहोय॥ तिनिदोऊकार्यनिविषैलीनचित्तनिरंतरजेतिसपुरुषकै यहरौद्रध्यानहीहै॥ छ॥ परकीसंपदाकूंचोरनेविषैंप्रवीणहोयचोरीकरिहर्षमानैं

वकरि अपनी विषयसामग्रीकूं राखनेका अतियत्न करे। ताकी रक्षा करि अपनेकूं मानें
ऐसैं एहो यनेद रूप ध्यानके जाणो। ऐसैं ए आर्तनेद रूप रौद्रध्यान अतिती व्रकषा
यके योग तैं होय हैं। महा पाप रूप है महा पाप बंधकूं कारण है। सो धर्मात्मा पुरुष तो
से ध्यानकूं दूरि ही तैं छोडे है। जे तें जगतकूं उपद्रवके कारण हैं। तेते यारौद्रध्यान
युक्त पुरुष तें बणैं जातें पापकरि हर्ष मानें सुख मानें। ताकूं धर्मका उपदेस जीवां
हीलागै है। अति प्रमादी रूवा अचेत पापही में मस्त रहे है। ब। आगें धर्मध्यानकूं
कहे है। ब। गा॥ विलिविन्मसुहेसाए। पावणिसाए यडुक्कसंत्ताए। णाच्चारुख
क्रहथम्मे। पुणआयरंकुणहे॥ १७६॥ अर्थ। हे भव्य जीव हो आर्त रौद्र ए दो कुध्या
नअसुनहैं। पापके निधानदुख के संतान जाणि करि दूरि ही तें छोडो वकरि धर्मध्या
नविषैं आदर करो। ब॥ गा॥ आर्त रौद्र दो कुध्यान असुनहैं। अरु पापके जरे

अरदुःखही की संतति इनि में चली जाय है। ताते छोडि करि धर्मध्यान करने का श्री गु
रुनिका उपदेस है। ब। आगें धर्मका स्वरूप कहे है। ब। गा॥ धम्मो वत्थुसहावो। ख
मादिभावो यदसविहो धम्मो। रयणत्तयं च धम्मो। जीवाणं रक्खणं धम्मो॥ १७७॥ अर्थ।
वस्तुका स्वभाव सो धर्म है। जैसैं जीवका दर्शन ज्ञान स्वरूप चैतन्य स्वभाव सो याका ए
ही धर्म। वकरि क्षमादिक भाव दस प्रकार सो धर्म है। वकरि रत्नत्रय सम्यग्दर्शन ज्ञा
नचारित्र सो धर्म है। वकरि जीव निकी रक्षा करनां सो धर्म है। ब। गा॥ अनेक वि
धाकरि तो वस्तुका स्वभाव सो धर्म है। जीवका चैतन्य स्वभाव सो ही याका धर्म
वकरि नेक विधाकरि दस लक्षण उत्तम क्षमादिक तथा रत्नत्रय सो धर्म है। वकरि
निश्चय तैं तो आपनें चैतन्य की रक्षा विभाव परणति रूप न परिणमना। अरु व्यव
हारकरि पर जीवकों विभाव रूप न करनां ताही का नेम जीवनिकूं पा

DR. BHAU DAJI MEMORIAL

णंतनकरनो।यहधर्मध्यानहै।।अबागैधर्मध्यानकैसेजीवकैहोयहै सोकहैहै।।ब।।गा।।धम्मो
यगामणो।।जोणवेदेहियंदियविसयं।वेरग्गमईणाणी।।धम्मझाणंहवेतस्स।।७७
।।तात्पर्य।।जोपुरुषज्ञानीधर्मविषैएकाग्रमनहोयप्रवर्तै।बहुरिइंद्रियनिकैविषय।
निकूंनवेदै।बहुरिवैराग्यमईहोयतिसज्ञानीकैधर्मध्यानहोयहै।।ब।।भावा।।ध्यानका
स्वरूपएकज्ञेयकैविषैज्ञानकाएकाग्रहोनांहै।।जोपुरुषधर्मविषैएकाग्रचित्तकरैजि
सकालइंद्रियविषयनिकूंनवेदै।।ताकैधर्मध्यानहोयहै।।याकामूलकारणसंसार
भोगसंवैराग्यहै।विनावैराग्यधर्ममैंचित्तथंभैनांही।।ब।।कैसिकहैहैं।।ब।।गा।।सुचि
सुरुरायरोसो।।बाहिरसंकप्पवज्जिउधीरो।।एयग्गमणोसंतो।।जंचिंतइंतंपि सुहज्झा
णं।।७७।।अर्थ।।जोपुरुषरागद्वेषतैंरहितरूवासंतावाह्यकेसंकल्पकरिवर्जितरू
वाधीरचित्तएकाग्रमनहूवासंता जोचिंतवनकरैसोभीशुभध्यानहै।।ब।।भावार्थ।। १७५

जोणयंदेहमईबाह्यवस्तुनिसंबंधीसंकल्पछोडिएकाग्रचित्तहोयकादूकालकैचेयानकरै
कैसाहोयचिंतवनकरैसोभीसुभध्यानहै।।ब।।बहुरिकैसैहैं।।ब।।गा।।।।ससरूवसमुन्ना।
सोणहममतोजिहिंदिउसंतो।।अप्पाणंचिंतंतो।।सुहझाणरुहवेसारू।।७८।।अर्थ
जोसाधकआपनैस्वरूपकाहैसमुन्नासकरिएप्रगटहोनाजाकै।।ऐसारूवासंता
आत्मांकूंचिंतवनकरतासंता प्रवर्तैसोसाधकशुभध्यानकैविषैलीनहोय।।ब।।भावा
र्थ।।जाकैआपनांस्वरूपकातौप्रतिभासनयाहोय।।अरपरद्रव्यविषैममत्वनकरै अर
इंद्रियनिकूंवसिकरै ऐसैआत्माकाचिंतवनकरै।।सोसाधकशुभध्यानविषैलीनहोय
आपकैशुभध्याननहोय।।ब।।कैसिकहैहैं।।ब।।गा।।।।वज्जियसयलवियप्पो।।आपसरू
वेमणंणिरुंभित्ता।।जंचिंतइसाणंहं।।तंधम्मंउत्तमंझाणं।।७९।।अर्थ।।जोसमस्तआप
विकल्पनिकूंवर्जिकरिआत्मस्वरूपविषैमनकूंरोकिकरिज्ञानदर्शनसहितचिंतवना

रहैसोउत्तमधर्मध्यानहैं॥ ब॥ इहांसंस्कृतटीकाकारधर्मध्यानका अनिर्देश्यनिकेअनुसारविशेषकथनकीयाहैं॥ ताकासंक्षेपकरिलिखिएहैं॥ तहांधर्मध्यानकेचारिभेदकहे॥ आज्ञाविचय॥ अपायविचय॥ विपाकविचय॥ संस्थानविचय॥ असैं तहांजीवादिकछहद्रव्यपंचास्तिकायसप्ततत्वनवपदार्थनिकाविशेषस्वरूपविसिष्टगुरुकेअभावतैंतथाअपनीमंदबुद्धिकेवसतैंप्रमाणनयनिक्षेपनितैंसाधिएजैसाजान्यानजायतबजैसाश्रद्धानकरै॥ जोसर्वज्ञवीतरागदेवनैंकह्याहैसोहमारैप्रमाणहैं॥ ऐसैं आज्ञामानिताकैअनुसारपदार्थनिमैंउपयोगथांभैसो आज्ञाविचयधर्मध्यानहैं॥ बहुरिअपायनांमनासकारैसोजैसैंकर्मनिकानाशहोयतैसैंचिंतवै॥ तथामिथ्यात्वभावधर्मविषैंविघ्नकेकारणहैं॥ तिनिकाचिंतवनराखै॥ अपनैनहोनैंकाचिंतवनकरै॥ परकैमेटनैंकाचिंतवनकरैसोअपायविचयहैं॥ बहुरिविपाकनाम

कर्मकाउदयकहैं॥ सोजैसाकर्मउदयहोयताकातैसास्वरूपकाचिंतवनकरै सोविपाकविचयहैं॥ बहुरिलोकाकास्वरूपचिंतवनासोसंस्थानविचयहैं॥ बहुरिएसप्तराजीकस्याहै॥ अपायविचय॥ उपायविचय॥ जीवविचय॥ आज्ञाविचय॥ विपाकविचय॥ अजीवविचय॥ हेतुविचय॥ विरागविचय॥ भवविचय॥ संस्थानविचय॥ ऐसैंएनिएसमुद्रातकाचिंतवनसोएच्यारिभेदहीकैविशेषकीएहैं॥ ब॥ बहुरिपरस्थपिंडस्थरूपस्थरूपातीत॥ ऐसैंच्यारिभेदरूपधर्मध्यानभयहै॥ तहांपदस्थीअक्षरनिकेसमुदायकानामहैं॥ सोपरमेष्ठीकेवाचकअक्षरहैं॥ जिनिकूंमंत्रसंज्ञाहैं सोतिनिअक्षरनिकौंप्रधानकरिपरमेष्ठीकाचिंतवनकरैसोतहांतिसकेअक्षरमैंएकअहंचित्तहोयसोतिसकाध्यानकरिए॥ तहांॐसोकारमंत्रकेपैंतीसअक्षरहैं॥ तेप्रसिद्धहैंतिनिविषैंमनलगावै॥ तथातिसहीभेदरूपकीयेसंक्षेपसोलहअक्षरहैं॥ अर

मंत्रके

हंतसिद्ध आइरियउवझायसाहू ॥ ॐ ह्रीं सैं सोलह अक्षर हैं ॥ वफुरि इसही के मेद रूप ॥
अरहंतसिद्ध ॥ ॐ ह्रीं सैं छह अक्षर हैं ॥ वफुरि इसही का सेहेप ॥ असिआउसा ॥ ए पां
दि अक्षर रूप पांच अक्षर हैं ॥ वफुरि अरहंत ए आदि अक्षर हैं ॥ वफुरि सिद्ध तथा
अहँ ॥ ॐ ह्रीं सैं दोय अक्षर हैं ॥ वफुरि ॥ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं सा ए क अक्षर हैं ॥ यामें पंच परमेष्ठी का पां
दि अक्षर सर्व हैं ॥ अरहंत का अकार ॥ असरीरजे सिद्ध तिन का अकार ॥ आचार्य
का आकार ॥ उपाध्याय का उकार ॥ मुनि का मकार ॥ ॐ ह्रीं सैं पांच अक्षर ॥ अ अ आ उ म
इनिकें सेथिकें सूचतैं ॥ ह्रीं ॥ ऐसा सिद्ध होय हैं ॥ ॐ ह्रीं सैं ए मंत्र वाचक हैं ॥ सो इनि का उचार
रूप करि मन विषैं मन विषैं चितवन रूप ध्यान करे ॥ तथा इनि का वाच्य अर्थी जो पर
मेष्ठी तिनिका अनंत ज्ञानादि रूप स्वरूप विचारि ध्यान करनां ॥ वफुरि अन्य बीजा
हजार श्लोक रूप नमस्कार ग्रंथ हैं ॥ ताकें अनुसारि ॥ तथा लघु बृहत् सिद्धचक्र प्रति १५७॥

ष्टा ग्रंथनिमें मंत्र कहे हैं ॥ तिनिका ध्यान करनां ॥ मंत्रनि का केता एक कथन संस्कृत टी
का में हैं सो तहांतैं जानना ॥ इहां सेहेपलिख्या हैं ॥ ॐ ह्रीं सैं पदस्थ ध्यान हैं ॥ वफुरि
पिंड नाम सरीर का हैं ॥ तिस विषैं पुरुषाकार अमूर्तीक अनंत चतुष्टय करि सं
युक्त जैसा परमात्मा का स्वरूप हैं सा आत्मा का चिंतवन करनां सो पिंडस्थ ध्या
न हैं ॥ ब ॥ वफुरि रूपक हिए अरहंत का स्वरूप समवसरण विषैं घातिकर्म रहित
चौतीस अतिसय ॥ आठ प्रातिहार्य करि सहित अनंत चतुष्टय मंडित इंद्रादि
करि पूज्य परम ॥ औदारिक सरीर करि युक्त ॥ ऐसा अरहंत कूं ध्यावो तथा ऐसा
ही सकल आपनें आत्मा का करि आपकूं ध्यावै सो रूपस्थ ध्यान हैं ॥ वफुरि देह वि
नां वाणी के अतिसयादिक विनां आपनां पर का ध्याता ध्यान ध्येय का भेद विनां
सर्व विकल्प रहित परमात्म रूप विषैं लय कूं प्राप्त होय सो रूपातीत ध्यान हैं ॥ ऐसा

ध्यानसातवेंगुणस्थानहोयतवश्रेणीकूंयह ध्याननिमित्तहोयहैं तेसैंधर्मध्यानकासंक्षेप
स्वरूपकह्या॥सोयहधर्मानव्यक्तरागसहितचतुर्थगुणस्थानतैंलगायसातवांगुणस्था
नतांई अनेकभेदरूपप्रवर्तैहैं॥ब॥आगैंशुक्लध्यानकूंपांचगाथाकरिकहैहैं॥ब॥गा॥
जबगुणसुविसुद्धा॥तवसमखयमणंचजबकम्माणं॥लेसाविजबसुक्का॥तंसुक्कंभण
देसाणं॥१७२॥अर्थ॥जहांलेश्याकारविसुद्धव्यक्तकषायनिकेअनुभवरहितउज्जलगुण
करिएज्ञानोपयोगआदिहोयबहुरिकर्मनिकाजहांउपसमतथाक्षयहोयबहुरिज
हांलेश्याशुक्लहीहोयतिसकूंशुक्लध्यानकहिएहैं॥ब॥यहसामान्यशुक्लध्यानका
स्वरूपकह्या॥विसेषआगैंकहैहैं॥बहुरिकर्मकेउपसमनकाअरक्षपणकाविधानग्रं
थनितैंटीकाकारलिख्याहैंसोआगैंलिखिएगा॥ब॥अबविशेषनैरनिकूंकहैहैं॥गा॥
पडिसमयंसुद्धंतो॥अणंतगुणदाएउपयसुद्धीए॥पढमंसुक्कंझायदि॥आरूढोउवसमसे

भावार्थ

ढीसु॥१७३॥अर्थ॥उपसमकअरुक्षपकउनिहोयश्रेणीनिविषैंआरूढरूवासंतासमयस
मयप्रतिअनंतगुणविशुद्धताकरैकाउपशमरूपतथाक्षयरूपकरिशुद्धहोयैसंतामुनिश्
रेष्ठशुक्लध्यानप्रथमत्ववितर्कवीचारनामाध्यावैहैं॥ब॥तादार्थ॥पहलैंमिथ्यात्वतीनक
षायअनंतानुबंधीचारिप्रकृतिनिकाउपसमतथाक्षयकरिसम्यग्दृष्टीहोयपीछैंअ
प्रमतगुणस्थानविषैंसातिसयविशुद्धतासहितहोयश्रेणीकाप्रारंभकरैतबअपूर्व
करणगुणस्थानहोय॥शुक्लध्यानप्रथमपायाप्रवर्त्तैतहांकैतोमोहकीप्रकृतिनिकूंउप
शमावनेकाप्रारंभकरैतौअपूर्वकरणअनिवृत्तिकरणसूक्ष्मसांपरायइतीनूंगुण
स्थानविषैंसमयसमयप्रतिअनंतगुणविशुद्धताकरिवर्द्धमानहोतासंतामोहनीयकर्मकी
इकईसप्रकृतिकूंउपसमकरिउपसांतकषायगुणस्थानकूंप्राप्तहोयहैं॥अरकैमोह
नीयकीप्रकृतिनिकूंक्षपावनेकाप्रारंभकरैतौतीनूंगुणस्थानविषैंइकईसमोहकीप्रक

तिकासत्तामैंसंनासकरिहीएकसमयवारमात्रगुणस्थानकूंप्राप्तहोयहै॥ऐसैंसुक्लध्या
नकापहलापायाउपशांतकषितर्कवीचारनामांपवर्तैहै॥तहांपृथक्कहिएन्यारान्यार
वितर्ककहिएश्रुतज्ञानकेअक्षरअरअर्थअरवीचारकहिएअर्थकाअरव्यंजनक
हिएअक्षररूपवस्तुकानामकाअरमनवचनकायकेयोगइनिकापलटनांसोई
सपहलेशुक्लध्यानमैंहोयहै॥तहांअर्थतोद्रव्यगुणपर्यायसोपलटै॥द्रव्यसूंद्रव्यांत
र॥गुणसूंगुणांतर॥पर्यायसूंपर्यायांतर॥वक्रगतिसैंहीवर्णसूंवर्णांतर॥वक्रगति
सैंहीयोगसूंयोगांतर॥इहांकोईपूछै॥ध्यानतौएकाग्रचिंतानिरोधहै॥पलटैध्यानके
सैंकहिए॥ताकासमाधान॥जोजेतीवारएकपरिणामरहैसोतोध्याननया॥पलट्याता
दूसरेपरिणामसोभीध्याननया॥ऐसैंध्यानकेसंतानकूंभीध्यानकहिए॥इहांसंतान
कीजातिएकहै॥ताकीअपेक्षाएसी॥वक्रगतियोगपलटैहैसोइसकेध्याता १७१

केपलटावनेंकीईछानांहीहै॥जोइछाहोयतोरागसहितयहशुभध्यानहीवहरै॥इ
हांरागअंशकषायकेबलज्ञानगम्यहै॥ध्याताकेज्ञानगम्यनांही॥आपशुद्धउपयो
गरूपहूवापलटनेंकाभीगम्याताहीहै॥पलटनांक्षयोपसमज्ञानकास्वभावहै॥सोय
हउपयोगषटकालएकाग्ररहैनांही॥याकूंशुक्लऐसानामरागकेअभावकहो॥
नेतैकस्याहै॥ब॥ब्यौरोंदूसरानेटकेहैहै॥ब॥गा॥ णिस्सेसमोहविलये खीणकसा
उयअंतिमेमले॥ससरूवचिंतीणो॥सुक्कंझाणंहिरायतं॥१८४॥अर्थ॥आत्मोसमस्त
मोहकर्मकानासनएचीणकषायगुणस्थानकाअंतकेकालविषैंआपनेस्वरूपवि
षैंलीनरूचासेताएकत्ववितर्कअवीचारनामांदूसराशुक्लध्यानकूंध्यावैहै॥ब॥
अर्थ॥ पहलेपाएमैंउपयोगपलटैथासोपलटतारहगया॥एकद्रव्यतथागुणतथा
पर्यायपरितथाएकमैंजनपरितथाएकयोगपरिणमियाआपनेंस्वरूपमैंलीनहैं

DR. BHAU DAJI MEMORIAL डाक्टर भाऊदाजीदस्मारकसमा

हो। अब घातिकर्मका नाशकरि उपयोग पलटैगा सो सर्व प्रकार प्रत्यक्ष ज्ञाता होयलो
कालोक कूं जानना यह पलट्या है। ब। आगें ती सरा भेद कहे हैं॥ गाथा॥ केव
लणाणसहावो सुहुमे जोगह्मि संविरओ काएजोयह्मि जोगिजिणो तत्तदियं सुहु
मकरियं च॥ १५५॥ अर्थ॥ केवलज्ञान है स्वभाव जाका ऐसा सयोगी जिन सो जब सू
क्ष्म काययोग में तिष्ठै तिस काल जो ध्यान होय सो तीसरा सूक्ष्मक्रिया नामा शुक्ल
ध्यान है। ब॥ भावार्थ॥ जब घातिकर्म का नास करि केवल उपजै तब तेरा गुणस्थान
वर्ती सयोगकेवली होय है। तहां तिस गुणस्थान का काल अंत में अंतर्मुहूर्त्त शेष र
हैं। तब मनयोग वचनयोग तो रुकि जाय। अर काययोग की सूक्ष्मक्रिया रह जाय त
बै शुक्लध्यान का तीसरा पाया करि एहै॥ सो इहां उपयोग तो केवलज्ञान उपज्या त
वहीतैं अवस्थिति है। अर ध्यान में अंतर्मुहूर्त्त चहर्‌या कह्या है। सो इस ध्यान की अ

पेक्षा तो इहां ध्यान है नांही॥ अर योग के थंभने की अपेक्षा ध्यान का उचार है। अर उ
पयोग की अपेक्षा करिए तो उपयोग थंभि रह्या है। किछू जानना रह्या नांही। तथा
पलटावनेवाला प्रतिपक्षी कर्म रह्या नांही॥ तातैं सदा ही ध्यान है॥ आपने स्वरूप में
रमि रहे हैं। ज्ञेय अर सा की ज्यों समस्त वस्तु विदित होय रही है॥ मोह के नास तैं का
रू विषै इच्छा निश्चल नांही है॥ ऐसें सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति तीसरा शुक्लध्या
न प्रवर्ते है। ब। अब चौथा भेद कहे हैं॥ गाथा॥ जोगविणासे किच्चा। कम्मचउक्क
सरवणकरणं च। जं झायदि अजोगिजिणो। णिक्किरियं तं च उच्चंइ॥ १५६॥ अर्थ॥ के
वली भगवान् योग नि की पद्धति का अभाव करि जब अयोगि जिन होय हैं। तब अघा
तिया की प्रकृति सत्ता में पिछासी रही है। तिनि का क्षय करने कै अर्थि जो ध्यावै सो चौ
था सूक्ष्मक्रियानिवृत्ति नामा शुक्लध्यान होय है। ब॥ भावार्थ॥ चौदहा गुणस्थान अ

योगी जिनहै तहां खिति पेंचलघ अक्षर प्रमाण एहै तहां योगनिकी प्रकृति का अभाव है सो सता मैं अघाति कर्म की पिचासी प्रकृति हैं तिनिके नास का कारन यह योगनिका रुकनो है तातैं इस कूं ध्यान कह्या है सो तेरा गुण स्थान की जो यहां ध्यान का उपचार जानना किंचू इछा पूर्वक उपयोग का थामनें रूप ध्यान है नांही इहां कर्म प्रकृति निके नाम अरु तथा औरु कथन विशेष अन्य ग्रंथनि के अनुसारहैं सो संस्कृत टीका तैं जानना ॥ब॥ ऐसें ध्यान तप का स्वरूप कह्या ॥ब॥ आगें तप के कथन कूं संकोचै हैं ॥ब॥ गाथा ॥ एसो बारस भेओ उग्गतवो जो चरेइ उवजुत्तो सो खवियकम्म पुंजो मुत्ति सुहं अरुयं लहदि ॥१७॥ अर्थ ॥ यह बारह प्रकार का तप कह्या ताकूं जो मुनि उपयोग या विधैं लगाय उग्रती व्रत पकूं आचरण करैहैं सो मुनि मुक्ति के सुख कूं पावैहै के सा है मुक्ति सुख ॥ खैं कहैं कर्म के पुंज जानें ११५

वहुरि अक्षय है अविनासी हैं ॥ब॥ ना वार्थ तप तैं कर्म की निर्जरा होय है अरु संवर होय हैं सो एही मोक्ष के कारण एहैं सो मुनि छत्तलेय करि वाह्य अभ्यंतर भेद करि कह्या जो तप ताकूं तिस विधान करि आचरैहैं सो मुक्ति पावैहै तहां कर्म का अभाव हैं याही तैं अविनासी बाधा रहित आत्मीक सुख की प्राप्ति हैं ऐसे बारह प्रकार के तप के धारक तथा इस तप का फल पावै ते साधु चारि प्रकार के हैं ॥ अणगार ॥ यति ॥ मुनि ॥ रिषि ॥ तहां साधु सर्व परिग्रह वास के त्यागी मूलगुण निके धारक ते अणगार हैं वहुरि ध्यान में तिष्ठे श्रेणी मांडे ते यति हैं ॥ वहुरि जिनि कूं अवधि मनपर्यय ज्ञान होय तथा केवलज्ञानी होय ते मुनि हैं ॥ वहुरि ऋद्धि धारी होय ते ऋषि हैं ॥ तिनिके चारि भेद ॥ राजऋषि ॥ ब्रह्मऋषि ॥ देवऋषि ॥ परमऋषि ॥ तहां विक्रिया ऋद्धि वाले ते राजऋषि अक्षीण महानस ऋद्धि वाले ब्रह्म

ऋषि ग्राकासगामिदेवऋषि केवलज्ञानीपरमऋषि ग्रैसैं जाननां ब ग्रागैंयाग्रंथा
काकर्त्तास्वामिकार्त्तिकेयनामामुनिसो ग्रपनांकर्त्तव्यप्रगटकरैहै ब॥ ग॥
जिणवयणभावणं सामिकुमारेण परमसद्धाए रइया ग्रणुपेहाइं चंचलम
णरुंभणट्ठं च ॥ ग॥ याग्रंथकी ग्रनुप्रेक्षा नामग्रंथसोस्वामिकुमार जोस्वामिका
र्त्तिकेयनामामुनितानैंस्या गाथारूपरचनाकरीहै इहांकुमारशब्दकरिग्रैसा
कह्याहै जोयहमुनिजन्महीतैं ब्रह्मचारीहैं सोरचीहैयह सोग्रहाकरिरचीहैं ग्रै
सानांहीजोकथनमात्रकरिदीहै इसविशेषणतैं ग्रनुप्रेक्षातैं ग्रतिप्रीतिसूचै
हैं बहुरिप्रयोजनकरैहै जिनवचनकी भावनांके ग्रर्थिरच्याहैं इसवचनतैं ग्रै
साजनायाहैजोख्यातिलाभपूजादिक लौकिकप्रयोजनके ग्रर्थिनांहीरचीहै इ
जिनवचनकाज्ञानश्रद्धानभयाहैं ताके वारंवारभावनांस्पष्टकरनेंयातैं ज्ञानकीद्द १५५

हिहोय कषायनिकाप्रलयहोय ग्रैसाप्रयोजनजानैनोयाहैं बहुरिइहाप्रयोजन
चंचलमनकूंथाजिनेकै ग्रर्थिरचीहै इसविशेषणतैं ग्रैसा जाननां जोमनचंचल
हैसोएकाग्ररहैनांही ताकूंइससास्त्रमैंलगाईए तोरागद्वेषके कारणजेविषयतिन्है
विषैंनजाय इसप्रयोजनके ग्रर्थियहग्रनुप्रेक्षा ग्रंथकीरचनांकरीहैं सोभव्यजीव
निकूंइसका ग्रभ्यासकरनांयोग्यहैं जातैं जिनवचनकी श्रद्धाहोय सम्यग्ज्ञानकीव
धवारीहोय ग्ररमनचंचलहैसो इसके ग्रभ्यासमैंलगै ग्रन्यविषयनिविषैंनज १
य ग्रागैंग्रनुप्रेक्षाका महात्म्यकरिभव्यनिकूंउपदेसरूपफलका वर्णनकरैहैं
॥ गा ॥ बारसग्रणुवेक्खाभणिया कुजिणागमाणुसारेण जोपढईसुणइभा
वइसोपावइउत्तमसोक्खं ॥ ग॥ एवारह ग्रनुप्रेक्षाजिनग्रागमके ग्रनुसा
रतैप्रगटकरिकही है ग्रैसावचनकरियहजनायाहैं जोमैंकल्पितनकरीहैं पूर्वग्र

नुसारतैं कहीहै सोइसकूं जोभव्यजीव पढै अथवासुणै अरइनिकी भावनाकरै वारंवा
रचितवनकरै सोउत्तमसुख जोवाधारहित अविनासीस्वातमीकसुखकूं पावै यह
सेवाचमारूपकर्त्ता अर्थकाउपदेस जाणणो भव्यजीवहे सोपढौसुणौ वारवार
इनिकोचितवनरूपभावना करो ब अागैं अतिमंगलकरेहैं ब गाथा तिहुवा
णपहाणसामि कुमारकालेवितवियतवयरणं वसुपूज्जसुयमल्लिं चरमतियसं
थुवेणिच्चे १९०॥ अर्थ॥ तीनभुवनकै प्रधानस्वामीतीर्थंकरदेव जिनैं कुमारकालवि
षैंतपश्चरणलीया अरनैसेवसुपूज्यराजाकेपुत्रवासपूज्यजिन अरमल्लिजिन अर
चरमकहिए अंतकेतीन नेमिनाथजिन पार्श्वनाथजिन वर्द्धमानजिन एपांच
जिनतिनकूं मैंनित्यहीस्तऊं तिनिकेगुणानुवादकरूंहूं वंदौहौं ब गाथा
अरनैसैंकुमारश्रमणजेपांच तीर्थंकरतिनिकूं भावनमस्काररूप अंतमंगलकी १९६

याहै ब इहां अरनैसासूंवैसे अापभुनिकुमार अवस्थामैंभयेहैं तातैंकुमारतीर्थंक
रतितैंविशेषपणो तिहुपजीहै तातैंतिनिकेनामरूप अंतमंगलकीयाहै ब अरनैसै
श्रीस्वामिकार्त्तिकेयमुनिइहअनुप्रेक्षानामग्रंथसमाप्तकीया ब अागैंइसव
चनिकाहोमेंकासंबंधलिखियेहैं दोहा प्राकृतस्वामिकुमारकृत अनुप्रेक्षासु
मग्रंथ देसवचनिकातासकी पदोलगोसिवपंथ १ चौपई देसदुढाहडजयपु
रथांन जगतसिंहनृपराजमहांन न्यायवुद्धिताकैनितिरहै ताकीमहिमाकोक
बिकरै २ ताकैमंत्रीचहुंगुणवांन तिनिकै मंत्रराजसुविधांन ईतिभीतिलो क
निकेनांहि जोव्यापैतौजटमिटिजांहि ३ धर्मनेदसवमतकेनलैं अपमेंअपनें
इष्टरुचलैं जैनधर्मकीकथनीतनी भक्तिप्रीतिजैनिनकेघनी ४ तिनिमैंतेरा
पंथकहायैव थेरैगुनीजनकरैवदाव तिनिकैमथनामजयचंद मैंहूंआतम

रामऋतेज॥५॥धर्मरागतैंग्रंथविचारी॥करिऋम्नासलयेमनधारि॥भावनवारहवितर
वनसार॥सोरूलषिनपज्यौसुविचार॥ह्वदेसवचनिकाकरियेजोय॥सुगमहोय
वोवैसवकोय॥यातैंरचीवचनिकासार॥केवलधर्मरागनिरधार॥७॥मूलग्रंथतैं॰
घटिवढिहोय॥ज्ञानीपंडितसोधोसोय॥ऋल्पबुधिकीहांसीनकरै॥संतपुरुषमा
रगयहधरैं॥८॥वारंवारभावनाभावनां॥वहुलैपुण्यजोगपावनां॥तीर्थंकरवैरागजु
होय॥तवनावैसवरागजुवोय॥९॥दीक्षाधरैतवनिरदोष॥केवललैऋरुपावै
मोष॥यहविचारिभावोभविजीव॥सवकल्याणसुधरोसदीव॥१०॥पंचपरमगुरु
ऋरुजिनधर्म॥जिनवानीजोयैसत्यमर्म॥चैत्यचैत्यमंदिरपडिमोम॥नमूंमाजिन
वरदेवसुधाम॥११॥दोहा॥संवत्सरविक्रमतनूं॥ऋष्टादससतजानि॥त्रेसविसाव
णतीजवदि॥पूरणभयोसुमानि॥१२॥जैनधर्मजयवंतजग॥जाकोमर्मसुपाय॥व १९७

स्तुत्यथारथसूपलहि॥ध्याएंसिवपुरजाय॥१३॥इतिश्रीस्वामिकार्त्तिकेयानुप्रेक्षाना
मग्रंथकीदेशनामामयवचनिकासंपूर्णं॥संवत१९०१कार्तिकसुक्ल१०पूर्णं॥
॥श्रीरस्तु॥ ॥कल्याणमस्तु॥ ॥ऋानंदकर्त्तृ॥ ॥शुभंभवतु॥

१९८

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June, 2017

DR. BHAU DAJI
डाक्टर भाऊदाजी हास्पिटल स्मारक
MEMORIAL